TEXT CROSS WITHIN THE BOOK ONLY

TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

TIGHT BINDING BOOK

TEXT CUT WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180605

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

Call No. H 83 K45B

Accession No. H 1825

Author

Title रवीन्द्र देवकी संचयन

This book should be returned on or before the date last marked below.

॥ श्री: ॥

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

भूतनाथ की जीवनी

(दूसरा खंड)

(भाग ४ से ६ तक)

190605

लेखक

बाबू देवकीनन्दन खत्री

लहरी बुक डिपो

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

काशी

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

चौथा हिस्सा

पहिला बयान

रोगा के चले जाने बाद थोड़ी देर तक वहा सन्नाटा रहा, इसके बाद उन
। इस तरह बातचीत होने लगी :—
मना० । देखा बहिन ! किस्मत ने कैसा पलटा खाया है !
रस्वती० । बहिन ! किस्मत ने तो बहुत दिनों मे पलटा खाया हुआ है,
हो कि इतना दुःख देकर भी विधाता को चैन न पड़ा, अब वह अपनी
। आखों के सामने एकदम से हम लोगो का निपटारा किया चाहता है,
। में लोग किस तरह कहा करते हैं कि धर्म्म की सदा जय रहती है !!
मना० । हाय ! अब मै क्या करूं ? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता !
मति से) बहिन, तुम चुप क्यों हो ? तुम ही कुछ बताओ कि अब क्या
ाय ? इस कैदखाने से छुटकारा मिलना बड़ा कठिन जान पड़ता है ।
दु० । बहिन ! मैं क्या कहूँ ? मेरी किस्मत तो बिल्कुल ही फूटी हुई है,
याय कहा हूं कि कुछ राय दू !
मा० । नहीं बहिन, तुम्हारी किस्मत फूटी हुई नहीं थी, मेरे साथ रहने
ारी किस्मत फूट गई ! बदकिस्मतो के साथ रहनेवाला भी कुछ दिन में
हो जाता है, मेरी ही संगत ने तुम्हें भी बर्बाद कर दिया। आह! हम
वास्तव में.....

सरस्वती० । अब इन सब बातों के सोचने विचारने का यह समय नहीं है, इस समय अपना कर्त्तव्य सोचना चाहिये और बहुत जल्द निश्चय करना चाहिये कि अब जो थोड़ी देर में दारोगा आवेगा तो उसे क्या जवाब दिया जायगा। हाय! हम लोगों की नादानी और जल्दबाजी ही के सबब से यह बुरा दिन देखना नसीब हुआ है नहीं तो बड़े मजे में उस घाटी के अन्दर हम लोग पड़े हुए थे, अगर थोड़े दिन और प्रगट न होते तो अच्छा था, शीघ्रता से उछल पड़े यही बुरा हुआ।

जमना० । (ऊंची सांस लेकर) खैर जो हुआ सो हुआ !

सर० । मेरी राय में तो अब दारोगा की बात मान लेनी चाहिये।

जमना० ! वह जरूर कहेगा कि तुम एक चिट्ठी लिख दो कि भूतनाथ बेकसूर है इत्यादि इत्यादि।

सरस्वती० । बेशक ऐसा लिखने के लिये कहेगा परन्तु यह बताओ कि इस कैद में पड़े पड़े सड़ने से लाभ ही क्या है। हां, कुछ उम्मीद हो तो कहो !

जमना० । उम्मीद तो कुछ भी नहीं है।

सरस्वती० । बस फिर, जो कुछ दारोगा कहे सो लिख दो और भूतनाथ से सुलह करके बखेड़ा तै करो, अपने साथ क्यों बेचारी इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को भी जहन्नुम में मिला रही हो ?

जमना० । और अगर उसकी इच्छानुसार लिख देने पर भी वह बदल जाय अर्थात् अपना काम पूरा करके हम लोगों को मार डाले तब ?

सरस्वती० । तब क्या ? जो होगा सो होगा, उसकी बात न मानने से तो निश्चय है कि वह हम लोगों को कभी भी जीता न छोड़ेगा और लिख देने पर आशा होती है कि शायद वह अपने कौल का सच्चा निकले और हम लोगों पर रहम करे।

जमना० । हां, हो सकता है। (कुछ गहरी चिन्ता कर के) अच्छा निश्चय हो गया कि ऐसा ही किया जायगा अर्थात् जो कुछ दारोगा कहेगा उसे मंजूर कर लेंगे।

सरस्वती० । (ऊपर की तरफ हाथ उठा कर) हे ईश्वर ! क्या हम लोगों के पाप का प्रायश्चित्त नहीं है ? क्या हम लोग इस योग्य नहीं हैं कि तू हम

लोगों पर दया करे? तू तो बड़ा दयालु कहलाता है! क्या इस समय हमारे लिये यहां कोई मददगार नहीं भेज सकता?

कुछ देर तक जमना और सरस्वती में इसी तरह की और भी बातें होती रहीं, इसके बाद समय पूरा हो जाने पर कैदखाने का दरवाजा खुला और तिलिस्मी दारोगा किवाड़ बन्द करता हुआ आकर उन तीनों के सामने खड़ा हो गया।

दारोगा०। कहो क्या निश्चय किया?

जमना०। हम लोगों को क्या निश्चय करना है जो कुछ कहोगे करने के लिये तैयार हैं।

दारोगा०। शाबाश! यही बुद्धिमानी है, अच्छा तो तुम अपने हाथ से एक चिट्ठी भूतनाथ के नाम की लिख दो जिसमें यह मजमून होना चाहिये :—"मेरे प्यारे गदाधरसिंह!

बड़े अफसोस की बात है कि तुम अभी तक हमारे पति के घातक का पता लगा कर अपना वादा पूरा न कर सके, मुझे पता लग चुका है कि दलीपशाह मेरे पति का घातक है, इसके लिये मुझे कई सबूत मिल चुके हैं, अब तुम शीघ्र मेरे पास आओ तो मैं वह सब सबूत तुम्हें दिखाऊं, आशा है कि उसके सहारे तुम बहुत जल्द असली बातों का पता लगा लोगे।"

बस इसी मजमून का पत्र लिख दो और तुम दोनों बहिनें उस पर अपना हस्ताक्षर भी कर दो, कलम दावात और कागज मैं अपने साथ लेता आया हूँ।

जमना०। (कुछ बिगड़ कर) वाह वाह!! क्या खूब! तुम तो ऐसी बात लिखाना चाहते हो जिससे कि मैं जीती रह कर भी किसी के आगे मुंह न दिखा सकूं! इससे तो साफ जाहिर होता है कि ये बातें लिखाने के बाद तुम हम लोगों को मार डालोगे। बेशक ऐसी ही बात है! दलीपशाह बेचारे ने मेरा क्या बिगाड़ा है जो मैं उसे इस तरह हलाल करूं?

दारोगा०। ऐसा लिखने में तुम्हारा कोई भी नुकसान नहीं है, और बिना इस तरह पर लिखे तुम्हें छुटकारा भी नहीं मिल सकता।

जमना०। चाहे जो हो, मगर मैं दलीपशाह के बारे में कदापि ऐसा न लिखूंगी, वह बेचारा बिल्कुल निर्दोष है।

दारोगा०। देखो नादानी मत करो, मुफ्त में अपने साथ इन्दुमति और

प्रभाकरसिंह की भी जान मत लो!

जमना०। खैर जो कुछ किस्मत में लिखा है सो होगा मगर मैं ऐसा अन्धेर नहीं कर सकती।

दारोगा०। खैर जब तुम्हें यही धुन समाई हुई है तो देखो तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया जाता है, अच्छा मैं जाता हूँ। थोड़ी देर में बन्दोबस्त करके पुनः आऊंगा।

इतना कह कर दारोगा वहां से चला गया और आधे घण्टे के बाद पुनः लौट आया, अबकी दफे और भी दो आदमी उसके साथ थे जिनके चेहरे पर स्याह नकाब पड़ी हुई थी और हाथ में नंगी तलवार थी।

दारोगा ने पुनः उसी सुरंग का दर्वाजा खोला जिसमें जमना सरस्वती और इन्दुमति को कैद की अवस्था दिखाने के लिये ले गया था। इसके बाद दोनों नकाबपोशों से कुछ कहा जिसे सुनते ही वे जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास चले गये और उन तीनों को खम्भे से खोल कर उसी सुरंग में ले गये। वह खिड़की खोल दी गई थी जिसमें से पहिली दफे उन तीनों ने झांक कर प्रभाकरसिंह को देखा था। दारोगा की आज्ञानुसार दोनो नकाबपोशों ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को उस खिड़की के पास खड़ा कर दिया और स्वयं नंगी तलवार लिये उनके पीछे खड़े हो गये, उस समय दारोगा ने पुनः उन तीनों से कहा, "एक दफे फिर नीचे की तरफ झांक कर अपने प्रभाकरसिंह की दुर्दशा देखो, मैं उनके पास जाता हूँ और तुम्हारे देखते ही देखते उनका काम तमाम करता हूँ।"

इतना कह दारोगा वहां से चला गया और वे तीनों बड़ी ही बेचैनी के साथ नीचे की तरफ देखने और रक्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने लगीं।

हथकड़ी बेड़ी से मजबूर और पेड़ के साथ बंधे हुए प्रभाकरसिंह सिर झुकाये जमीन की तरफ देख रहे थे। उसी समय हाथ में नंगी तलवार लिये दारोगा उनके पास जा पहुँचा।

दूसरा बयान

जमना सरस्वती और इन्दुमति डबडबाई हुई आंखों से झांक रही थीं और देख रही थीं कि प्रभाकरसिंह हथकड़ी बेड़ी से मजबूर पेड़ के साथ बंधे हुए हैं

और दारोगा नंगी तलवार लिये उनके सामने खड़ा है। दारोगा और प्रभाकरसिंह में कुछ बातें होने लगीं जो कि उन दोनों की आकृति और हाव भाव से मालूम होता था मगर दूर होने के कारण उनके शब्द जमना सरस्वती और इन्दुमति को सुनाई नहीं देते थे। कुछ देर बाद मालूम हुआ कि दारोगा उन्हें किसी काम के लिये मजबूर किया चाहता है मगर प्रभाकरसिंह लापरवाही के साथ इन्कार कर रहे हैं। दारोगा की धमकियों तथा क्रोध में आ कर उसके दांत पीसने पर कुछ भी खयाल नहीं करते।

उसी समय इन्दुमति की निगाह एक मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ के नीचे जा पड़ी जो बहुत ही बड़ा और छतनारा था, तथा उसके ऊपर मालती की लता चढ़े रहने के कारण उसकी अवस्था घने कुञ्ज की सी हो रही थी। वह पेड़ वहाँ से थोड़ी ही दूर पर था जहां दारोगा खड़ा प्रभाकरसिंह से बातें कर रहा था।

इन्दु ने देखा कि उस कुञ्ज के अन्दर से एक नकाबपोश झांक कर दारोगा और प्रभाकरसिंह की तरफ देख रहा है। इन्दु ने जमना और सरस्वती को भी उसी तरफ देखने का इशारा किया और वे भी बड़ी दिलचस्पी के साथ उस नकाबपोश की तरफ देखने लगीं जिसका बदन धीरे धीरे पत्तों की झुरमुट में से बाहर निकलता चला आ रहा था और अब उसका आधा बदन और दाहिना हाथ जिसमें नङ्गी तलवार थी नजर के सामने आ चुका था।

मौत के पंजे में फंसे हुए बेचारे प्रभाकरसिंह की अवस्था की तरफ से ध्यान हटा कर उस नकाबपोश की तरफ दिलचस्पी के साथ देखने का कारण है। इन्दुमति को और साथ उसके जमना सरस्वती को भी विश्वास हो गया कि यह नकाबपोश जो पत्तों की आड़ में से ताक झांक कर रहा है जरूर दारोगा का दुश्मन है और प्रभाकरसिंह की मदद के लिये आया है। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। जिस समय अपनी बात न मानने के कारण झुंझला कर दारोगा ने प्रभाकरसिंह को मारने के लिये तलवार वाला हाथ उठाया उसी समय वह नकाबपोश जो दूर न था दारोगा पर झपट पड़ा और उसके पीछे पहुँच कर उसने दारोगा का तलवार वाला उठा हुआ हाथ पकड़ लिया, दारोगा ने घबड़ा कर पीछे की तरफ देखा मगर चेहरे पर नकाब पड़े रहने के कारण उसे पहिचान न सका। झटका देकर हाथ छुड़ाना और घूम जाना चाहा मगर ऐसा भी न कर

सका। मालूम होता था कि किसी फौलादी पंजे ने उसकी कलाई पकड़ ली है। कुछ देर तक दोनों की हालत तस्वीर की सी बनी रही और इसके बाद नकाब-पोश ने डपट कर दारोगा से कहा, "क्यों बे कम्बख्त बेईमान! यहां के सूधे सादे राजा ने क्या इसीलिये तुझे इतना अधिकार दे रक्खा है कि तू अपने स्वार्थ के लिये अन्धा हो कर उनके रिश्तेदारों पर और गरीबों पर हद दर्जे का जुल्म करे और उनकी जान तक ले लेना खिलवाड़ समझे? अफसोस! उस बेचारे सूधे राजा को तेरे करतूतों की कुछ भी खबर नहीं है! वह तेरी खुशामदों से अन्धा हो रहा है, वह नहीं जानता कि एक दिन तू इसी तरह उसके ऊपर भी बेईमानी और नमकहरामी का हाथ साफ करेगा, बल्कि यों कहना चाहिये कि एक दिन तू उसे और उसके खानदान को मिट्टी में मिला देगा और स्वयं राजा बन बैठेगा (कुछ रुक कर और दारोगा की तरफ कड़ी निगाह से घूर कर) नहीं नहीं मैं तुझे ऐसा न करने दूँगा! (दारोगा का हाथ झटक कर और उसे एक लात मार कर) तुफ है तेरी औकात पर, निस्सन्देह तेरी पैदाइश में फर्क है और अवश्य तू हरामी पिल्ला है!!"

इस आदमी के चेहरे पर यद्यपि नकाब पड़ी हुई थी मगर आवाज सुन कर दारोगा ने पहिचान लिया और डर तथा ताज्जुब की निगाह से उसकी तरफ देखने लगा। उधर खिड़की में से झांकती हुई जमना सरस्वती और इन्दुमति ने भी पहिचान लिया कि यही बहादुर हमारा तिलिस्मी मददगार नारायण है।

नारायण की डपट और बातों ने दारोगा का कलेजा हिला दिया। डर के मारे उसका दिल बेतरह उछलने लगा क्योंकि उसके खयाल से नारायण ने नहीं बल्कि यमराज ने अपने पंजे में उसे दबा लिया था, उसमें इतनी ताकत न थी कि नारायण की बातों का जवाब देता या उसका मुकाबला करता, अगर ताकत होती तो भी उसके हाथ नारायण से मुकाबला करने के लिये तैयार न होते।

यहां पर हम अपने पाठकों को नारायण का कुछ परिचय दे देना उचित समझते हैं।

हमारे पाठक जमानिया के राजा गोपालसिंह को बखूबी जानते हैं तथा इन्दिरा के बयान में उनके पिता राजा गिरधरसिंह का भी कुछ जिक्र सुन चुके

हैं। इस समय वहीं राजा गिरधरसिंह जमानिया का राज्य कर रहे हैं और यह कम्बख्त तिलिस्मी दारोगा उन्हीं का प्यारा मुसाहब है तथा यह नकाबपोश जिसे हम नारायण के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं राजा गिरधरसिंह के छोटे भाई शंकरसिंह हैं।

राजा गिरधरसिंह बिल्कुल ही सीधे सादे और सरल स्वभाव के आदमी हैं। छल प्रपञ्च को यह लेश मात्र भी नहीं जानते तथा राज काज के मामलों और बारीकियों को भी वे अच्छी तरह नहीं समझ सकते। परन्तु उनके छोटे भाई शङ्करसिंह बड़े बुद्धिमान तेज समझदार और बहादुर आदमी हैं। हिम्मत उत्साह और जवांमर्दी इनके रग रग में भरी हुई है तथा दुष्टों को सजा देने में और सज्जनों को प्रसन्न करने में वे वैसे ही दत्तचित्त रहते हैं जैसा कि राजा लोगों का धर्म्म है। उनकी रियाया का कथन है कि यदि शङ्करसिंह जी हमारे जमानिया के राजा होते तो बहुत ही अच्छा था परन्तु नियमानुसार बड़े भाई होने के कारण गिरधरसिंहजी जमानियाँ के राजा हुए, वहां की प्रजा बल्कि स्वयं राजा गिरधरसिंह की इच्छा होने पर भी शङ्करसिंह ने धर्म्म विरुद्ध कार्य्य करना और बड़े भाई के रहते राजा बनना स्वीकार नहीं किया। राजा हो जाने पर भी गिरधरसिंह अपने छोटे भाई शङ्करसिंह की इज्जत करते हैं और एक तौर पर इनसे दबते ही रहते हैं। तिलिस्मी मामले में सब से ज्यादे जानकारी शङ्क सिंह ही को है।

यह तिलिस्मी दारोगा जिसका असल नाम यदुनाथ शर्म्मा था इस राज्य के गुरु तथा पुरोहित खानदान का लड़का था अर्थात् इसके बुजुर्ग लोग राजा साहब के बुजुर्गों के गुरु और पुरोहित होते आये हैं और सदैव से इन लोगों को मुसाहिब की इज्जत मिलती आई है। आज भी उसी पुराने सम्बन्ध से राजा गिरधरसिंह इसे मानते और इसकी इज्जत करते हैं।

इस दारोगा के बुजुर्ग लोग चाहे जैसे नेक और ईमानदार होते आये हों मगर यह बड़े ही दुष्ट प्रकृति का आदमी है। लालच बेईमानी नमकहरामी बदमाशी ऐयाशी और दगाबाजी का तो इसे पुतला ही समझना चाहिये, मगर यह अपने भेद और भाव को ऐसा छिपाये और बनाये रहता है कि किसी को इसके ऊपर बदगुमान होने का मौका नहीं मिलता। यह अपनी चापलूसियों से राजा गिरधरसिंह को अपना आशिक बनाये हुए था मगर शङ्करसिंह इस पर

विश्वास नहीं करते और हमेशा इसके भेदों की खोज में लगे रहते हैं, इसी तरह दारोगा भी इनसे चौकन्ना बना रहता है।

शङ्करसिंह को किसी तरह इस बात का भी पता लग गया था कि दारोगा ने कोई गुप्त कमेटी * बनाई हुई है। जिसके सभासद लोग इसी शहर के रहने वाले तथा इसी दरबार के बड़े बड़े ओहदेदार लोग हैं, मगर उसका ठीक ठीक पता शङ्करसिंह को अभी तक मालूम नहीं हुआ था, तथापि उन्होंने अपने बड़े भाई राजा साहब से इसका जिक्र कर दिया था और उन्होंने यह कह कर बात टाल दी थी कि यह खबर बे बुनियाद है, हमारा दारोगा ऐसा बेईमान नहीं है बल्कि वह जती सती और महात्मा आदमी है।

शङ्करसिंह की तरह दारोगा भी इनसे बराबर चौकन्ना बना रहता था और इनको अपना जानी दुश्मन समझता था और इस बात की धुन में लगा रहता था कि किसी तरह इन्हें इस दुनिया से उठा दिया जाय, मगर बात यह थी कि जमानिया के सभी आदमी बल्कि दारोगा वाली गुप्त कुमेटी के मेम्बर लोग भी शंकरसिंह को दिल से प्यार करते थे इस लिये बेईमान दारोगा की इच्छा पूरी नहीं होती थी।

अब हम अपने किस्से की तरफ झुकते हैं।

शंकरसिंह ने दारोगा को कई कदम पीछे हटा कर उसका हाथ छोड़ दिया और कहा, "दारोगा साहब! यह तो बताइये कि इस बेचारे प्रभाकरसिंह ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप इनकी जान लेने के लिये तैयार हो रहे हैं?"

दारोगा ने तलवार जमीन पर फेंक दी और हाथ जोड़ कर शङ्करसिंह के सामने खड़ा हो कर बोला, "यद्यपि आपके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है मगर मैं आपको पहिचान गया, मेरा दिल गवाही देता है कि आप मेरे मालिक भैया-राजा हैं † अगर मेरा विचार ठीक है तो कृपा करके चेहरे पर से नकाब हटा दीजिये जिसमें मेरी दिलजमयी हो जाय और मैं भी खोल कर जो कुछ कहना है

* इस कुमेटी का खुलासा हाल (इन्दिरा के बयान में) चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है। इस लिये इस ग्रन्थ में इसका जिक्र जरूरत के माफिक ही किया गया है ज्यादे नहीं।

† शंकरसिंह को लोग भैयाराजा कहते थे।

कहूँ, मेरी बातें सुनने के बाद आप मेरे विषय में फैसला करें।

शंकर०। (नकाब उलट कर) लो मुझे अच्छी तरह पहिचान लो कि मैं कौन हूँ! मैं तुम्हारी सभी बातें सुनने के लिये तैयार हूँ मगर पहिले उस बात का जवाब दो जो मैं पूछ चुका हूँ अर्थात् प्रभाकरसिंह ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो उसे कत्ल किया चाहते थे?

दारोगा०। (हाथ जोड़े हुए) प्रभाकरसिंह ने मेरा तो कुछ नहीं बिगाड़ा है मगर हमारे महाराज के साथ और इस राज्य के साथ उन्होंने बहुत बुरा बर्ताव किया है। आपको कदाचित् मालूम नहीं है कि जमानिया तिलिस्म के अन्दर घुस कर उन्होंने बहुत उपद्रव मचाया है, जो कुछ किया सब नियम विरुद्ध किया है, उसकी सजा ही यह है कि ये कत्ल किये जायँ, आप खूब जानते हैं कि तिलिस्मी नियम कैसे कड़े हैं।

शंकर०। तिलिस्मी नियमों को जो मैं जानता हूँ वह तुम क्या तुम्हारे बाप भी नहीं जानते होंगे और प्रभाकरसिंह ने तिलिस्म के अन्दर जो कुछ खराबी की है उसे भी मैं खूब जानता हूँ। यह कोई भी नहीं कह सकता कि प्रभाकरसिंह किसी बदनीयती से या अपने फायदे के लिये तिलिस्म के अन्दर आये हों। वास्तव में उन्हें तिलिस्म के अन्दर लाने वाला या लाने का कारण भूतनाथ ही है जो तुम्हारा दोस्त है और जिसकी प्रसन्नता के लिये तुम अनुचित से अनुचित कार्य करने के लिये तैयार हो। अगर जमना सरस्वती और इन्दुमति को भूतनाथ धोखा देकर तिलिस्म में न फँसा देता तो प्रभाकरसिंह कदापि तिलिस्म के अन्दर न आते। कहो इसके विपरीत कोई बात साबित करने के लिये तुम्हारे पास क्या मसाला है?

दरोगा०। आप बड़े हैं और मालिक हैं, मैं आपका गुलाम हूँ, अतएव मुझे उचित नहीं है कि मैं आपसे बहस करूँ, मुझे इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि प्रभाकरसिंह इस तिलिस्म के अन्दर क्यों आए? मुझे तो इस बात की खबर लगी कि प्रभाकरसिंह कई औरतों को साथ लेकर तिलिस्म के अन्दर विचर रहे हैं अस्तु मैंने अपने मालिक की भलाई सोच कर इन्हें गिरफ्तार कर लिया है.....

शंकर०। (बात काट कर) भला यह भी कोई समझाने की बात है! तुम्हें

इनके विषय में क्योंकर खबर लगी ? क्या तुम्हारे जासूस तिलिस्म के अन्दर घूमा करते हैं ? या तिलिस्म का कोई खास शैतान तुम्हें रोज रोज की खबर सुना जाया करता है ? या खुद तुम ही नियमित रूप से रोज तिलिस्म के अन्दर घूम घूम कर उसके दरोदीवार तथा पेड़ पत्तों की खबरदारी किया करते हो और ऐसा करने के लिये महाराज ने तुम्हें ताकीद की है ?

दारोगा० । (कुछ लाजवाब सा हो कर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि आप से बहस करने की मेरी नीयत नहीं है और न ऐसा करना मुझे उचित है ।

शंकर० । यह कोई बहस की बात नहीं है । मैं सिर्फ यह बात तुमसे पूछता हूँ कि इनके विषय में तुम्हें किसने खबर दी और किसने कहा कि प्रभाकरसिंह तिलिस्म के अन्दर ऊधम मचा रहे हैं ?

दारोगा० । (घबड़ाना सा हो कर) जी ई... ई... ई... मुझे कुछ यों ही सा खुटका हो गया और मैं.....

शंकर० । (रोक कर) बस बस बस, खबरदार ! झूठ बोलना तुम्हारे हक में अच्छा न होगा, तुम ठीक ठीक जवाब देने के लिए तैयार हो जाओ ! (प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर) कृपा कर आप ही कह जाइये कि इनके फन्दे में आप क्योंकर फंस गये ?

प्रभाकरसिंह ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया और तब शंकरसिंह ने फिर पूछा, "आप मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देते ?" (कुछ आगे बढ़ कर) आपका चुप रहना मुझे ताज्जुब में डालता है ! (और आगे बढ़ कर और उनके चेहरे की तरफ गौर से देख कर) क्या आपके चुप रहने की कोई खास वजह है ? हैं ! यह क्या ? आपका शरीर काँपता क्यों है ? बस ठीक ठीक बोल ! मैं समझ गया, ओ बेईमान, तू कभी भी प्रभाकरसिंह नहीं है, सच बता तू कौन है ? अच्छा मैं तेरे हाथ पैर खोल देता हूँ !"

इतना कह कर शंकरसिंह ने नकली प्रभाकरसिंह के हाथ पैर खोल दिये और कहा, "ले अब ठीक ठीक बोल कि तू कौन है और प्रभाकरसिंह की सूरत बनने की तुझे क्या जरूरत पड़ी ? यह क्या ! तू दारोगा की तरफ क्यों देखता है ? क्या इशारे ही इशारे में इससे सलाह करता है ! खबरदार जल्द बोल तू कौन है !"

जब शंकरसिंह ने देखा कि नकली प्रभाकरसिंह उनकी बातों का कुछ जवाब

नहीं देता तब उन्होंने पीछे की तरफ घूम कर देखा और जोर से चार दफे सीटी बजाई, सीटी की आवाज के साथ ही चार आदमी उसी झाड़ी के अन्दर से निकल कर शंकरसिंह के पास चले आये जिसके अन्दर से स्वयं शंकरसिंह प्रगट हुए थे। शंकरसिंह की आज्ञा पाकर दो आदमी तो दारोगा के पास खड़े हो गये, एक आदमी नकली प्रभाकरसिंह के पास जा खड़ा हुआ, और एक आदमी पानी लेने के लिये कहीं चला गया और बात की बात में पानी से भरी हुई गगरी लेकर वहां आ मौजूद हुआ।

शंकरसिंह ने आज्ञा दी कि नकली प्रभाकरसिंह का चेहरा पानी से साफ किया जाय। उसी समय उसका चेहरा साफ किया गया और असली सूरत पर निगाह पड़ते ही आश्चर्य में आकर शंकरसिंह बोल उठे, "अख् आह! आप जयपालसिंह हैं!!"

शंकर०। (दारोगा की तरफ देख कर) जब अपने दोस्त जयपाल को तूने प्रभाकरसिंह बना रक्खा है तो इसमें कोई खास बात जरूर है, निश्चय है कि तेरा तलवार का हाथ उठाना इसे मारने के लिये न था बल्कि किसी को धोखा देने के लिये था। (कुछ सोच कर और इधर उधर देख कर) तुम जिसको धोखा दे रहे थे वह जरूर इसी जगह कहीं पास ही में होगा।

ऊपर की दरीची में से जमना सरस्वती और इन्दुमति बड़ी दिलचस्पी के साथ यह तमाशा देख रही थीं, इस बात का पता लग जाने पर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई कि प्रभाकरसिंह वास्तव में प्रभाकरसिंह न थे बल्कि यह दारोगा का कोई दोस्त था और हम लोगों को धोखे में डालने के लिये ढङ्ग रचा गया था। अस्तु उन्होंने जब शंकरसिंह को किसी की खोज में चारो तरफ निगाह दौड़ाते देखा तो जमना ने हाथ उठाया। उसी समय शङ्करसिंह की भी निगाह उन तीनों पर जा पड़ी जिन्होंने बड़ी खुशी के साथ अपना हाथ उठा कर उनके हाथ उठाने का जवाब दिया और यह भी कहा कि, घबड़ाना नहीं, अब मैं आ पहुँचा हूँ।

इसके बाद शंकरसिंह ने पुनः दारोगा की तरफ देख कर कहा, "देखते हो उस (ऊपर की तरफ हाथ का इशारा करके) दरीची में से कौन झांक रहा है? भला इन तीनों औरतों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? तुम साफ साफ

क्यों नहीं कहते कि यह सब कार्रवाई केवल गदाधरसिंह की मदद के लिये की गई है ! बोलो ! बोलो ! वास्तव में यही बात है या नहीं !"

दारोगा ने शंकरसिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया और सिर नीचा करके जमीन की तरफ देखता रहा। शंकरसिंह ने क्षणमात्र तक कुछ विचार किया और इसके बाद पुनः दारोगा से कहा, "अच्छा मैं इस समय तुम दोनों को छोड़ देता हूं, इस मामले का फैसला भाई साहब (महाराज) के सामने ही किया जायगा। तुम मुझे अपने साथ जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास ले चलो जो उस दरीची में से झांक कर तुम्हारी बेईमानी का तमाशा देख रही हैं।"

"चलिये मैं आपको ले चलता हूं" इतना कह कर दारोगा मकान की तरफ रवाना हुआ और शंकरसिंह उसके साथ साथ चलने लगे।

यह दारोगा का मकान कुछ अजीब ढंग का बना हुआ था, देखने वाला यही कहता कि इस मकान को भी किसी तिलिस्म से जरूर सम्बन्ध है मगर ऐसी बात न थी। दारोगा ने सिर्फ अपनी ही कारीगरी और बुद्धिमानी से इस मकान को तैयार कराया था। इस मकान में कई दालान, कई कमरे, कई कोठड़िया, कई तहखाने और कई सुरंग बने हुए थे। एक एक कमरे और कोठड़ी में जाने के लिये कई रास्ते थे। किसी अनजान आदमी को यदि अकेले उस मकान में छोड़ दिया जाय तो वह घूमता ही घूमता परेशान हो जाय और घबड़ा जाय तथा उसे बाहर निकलने के लिये रास्ते का भी पता न लगे। शङ्करसिंह को आज के पहिले इस मकान में आने का कभी इत्तिफाक न पड़ा था, अस्तु वे इस मकान की कैफियत को देखकर आश्चर्य करने लगे। जैसे जैसे दारोगा उन्हें कोठड़ियों कमरों और दालानों में घुमाता था तैसे ही तैसे उन्हें उसकी चालबाजी और बदनीयती का खयाल बढ़ता जाता था। दारोगा यह नहीं चाहता था कि शंकरसिंह को जमना सरस्वती और इन्दुमति के सामने ले जाय, इस लिये वह उन्हें अन्दाज से ज्यादा घुमाता और चक्कर दिलाता हुआ धीरे धीरे ऊपर की तरफ लिये जाता था।

इसी तरह घूमते फिरते वह एक ऐसे दर्वाजे के पास पहुँचा जिसमें बहुत बड़ा ताला लगा हुआ था और उसी के बगल में एक और भी छोटा सा दरवाजा था जिसके दोनों पल्ले खुले हुए थे। वहां पर दारोगा रुक गया और

उसने शंकरसिंह की तरह देख कर कहा, "जरा सा आप यहां पर खड़े रहने की तकलीफ गवारा कीजिए तो मैं जाकर इस दर्वाजे को खोलने के लिये ताली ले आऊं क्योंकि वे तीनों औरतें इसी के अन्दर हैं।

इसके जवाब में शंकरसिंह न मालूम क्या सोच कर कुछ क्षण तक तो दारोगा का मुंह देखते रहे और फिर बोले, "खैर कोई चिन्ता नहीं आप जाइये और ताली लेकर जल्द आइये।"

दारोगा फुरती के साथ उस दूसरे छोटे दरवाजे के अन्दर घुस गया और शङ्करसिंह वहां खड़े रह कर उसके आने का इन्तजार करने लगे। ज्यों ज्यों दारोगा के आने में देर होती थी त्यों त्यों शंकरसिंह का क्रोध बढ़ता जाता था और इस बात का शक होता था कि वह हमें धोखा देकर यहां से निकल भागा।

घण्टे भर तक शंकरसिंह चुपचाप वहां खड़े रह गए और दारोगा लौट कर नहीं आया, अन्त में वह बहुत ही झुंझलाये और वहां से दारोगा की खोज में चल खड़े हुए। जिस छोटे दर्वाजे के अन्दर दारोगा घुस गया था उसी दर्वाजे के अन्दर शङ्करसिंह भी चले गये मगर आगे जाने के लिये उन्हें कोई रास्ता न मिला, क्योंकि उस दर्वाजे के अन्दर घुसने के बाद वे एक कोठड़ी में पहुँचे जिसके दोनों बगल और भी दर्वाजे थे मगर वे दोनों इस समय बन्द थे। शंकरसिंह झुंझलाते हुए उस कोठड़ी में से बाहर निकले और मकान के बाहर हो जाने के लिये उद्योग करने लगे।

यह मकान वास्तव में पूरा "भुलभुलैया" था। शंकरसिंह को घूमते हुए कई घण्टे बीत गये, यहां तक कि सूर्य्यभगवान अस्ताचल की तरफ चले गये और उस मकान के अन्दर अन्धकार ने धीरे धीरे अपना दखल जमाना शुरू कर दिया।

घूमते फिरते उन्हें कई बन्द दरवाजे भी मिले जिन्हें देख उन्होंने समझा कि यह दारोगा की शैतानी है, भागती समय उसने उन दरवाजों को बन्द कर दिया जिनके जरिये से बाहर हो जाने की उम्मीद हो सकती थी अस्तु उन्होंने पुनः घूमना आरम्भ किया मगर जब कोठड़ियों और कमरों में पूरा अन्धकार छा गया तब लाचार होकर एक ठिकाने बैठ गये और चिन्ता करने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

तीसरा बयान

जमना सरस्वती और इन्दुमति उस दरीची में से झांक कर देख रही थी और इस आशा में थीं कि अब शङ्करसिंह शीघ्र यहाँ आकर हम लोगों को इस कैद से छुटकारा देंगे। जब शंकरसिंह दारोगा को साथ लिये हुए उस मकान की तरफ बढ़े तब उन तीनो औरतों ने अपने विचार की पुष्टि समझी और जमना के मुँह से निकल पड़ा, "लो अब तो वे हमारी तरफ चले आ रहे हैं!"

हम ऊपर लिख आये हैं कि, "जमना सरस्वती और इन्दुमति के पीछे दारोगा के दो आदमी नकाबपोश नङ्गी तलवार लिये खड़े हो गये थे जब कि वे तीनों खिड़की के नीचे झांक रही थीं।" अस्तु उन दोनों नकाबपोशों ने भी झांक कर नीचे की अवस्था देख ली थी। दारोगा का दिल चाहे कैसा ही मजबूत हो परन्तु उन दोनों नकाबपोशो के कलेजे हिल गये और उन दोनों ने निश्चय कर लिया कि अगर शंकरसिंहजी हम दोनों को यहां देख लेंगे तो निश्चय हम दोनों जान से मारे जायंगे, यह विचार उनका बराबर मजबूत ही होता चला गया और जब उन दोनों ने देखा कि दारोगा को साथ लिये हुए शंकरसिंह हमारी तरफ चले आ रहे हैं तब तो वे दोनों एक दम भाग खड़े हुए। जमना सरस्वती और इन्दुमति को मालूम भी न हुआ कि हमारे निगहबान कब और कहां भाग गये। शंकरसिंह को अपनी तरफ आते देख प्रसन्नता के साथ जमना ने घूम कर इन्दुमति से कुछ कहने के लिये पीछे की तरफ देखा तब मालूम हुआ कि वे दोनों नकाबपोश गायब हो गये। तीनों को आश्चर्य हुआ और विश्वास हो गया कि शंकरसिंह के डर से वे दोनों भाग गये।

कई क्षण तक आश्चर्य करने के बाद जमना ने इन्दुमति और सरस्वती की तरफ देख कर कहा :—

जमना०। क्या हम लोगों को इसी जगह खड़े रहना चाहिए?

सरस्वती०। फिर और क्या किया जायगा?

जमना०। अगर उस कमरे में जहां हम लोग कैद थे चलें तो क्या हर्ज है? शायद हमारे नारायण जी उसी तरफ से आवें!

इन्दु०। इसका कौन ठिकाना है! देखो इधर भी तो एक दर्वाजा है। शायद

इसी राह से आवें, इसके अतिरिक्त उन्होंने इस ठिकाने हम लोगों को देख लिया है इस लिये उनका सब से ज्यादा विचार इसी स्थान पर आने का होगा, दूसरी जगह चले जाने से कदाचित् मुलाकात में देर हो।

सरस्वती०। तुम्हारा विचार बहुत ठीक है।

जमना०। बेशक हम लोगों को इसी जगह अटकना चाहिये! (रुक कर और किसी आहट की तरफ ध्यान देकर) मालूम नहीं क्या बात है! उन्हें आने में इतनी देर क्यों हुई!!

इन्दु०। हां बेशक देर तो जरूर हुई, कहीं दारोगा को साथ लिये हुए दूसरी तरफ तो नहीं चले गये!!

सरस्वती०। ईश्वर ही जाने!

इसी तरह के विचारों के साथ जमना सरस्वती और इन्दुमति को इन्तजार करते हुए कई घण्टे बीत गये, मगर शंकरसिंह उनके पास न आये, अन्त में पहर भर से ज्यादे रात बीत जाने के बाद लाचार होकर वे तीनों वहां से हटीं और धीरे धीरे उस कमरे की तरफ रवाना हुईं जिसमें कैद थीं, उसी समय पीछे की तरफ से किवाड़ खुलने की आवाज आई और जब जमना सरस्वती और इन्दुमति ने घूम कर पीछे की तरह देखा तो दो नकाबपोशों पर निगाह पड़ी।

बात की बात में वे दोनों नकाबपोश जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास जा पहुंचे। बिना कुछ कहे सुने उन दोनों ने अपनी अपनी कमर से एक एक चादर खोल कर उन तीनों औरतों के ऊपर फेंक दी और चेहरे पर दो तीन दफे लपेट कर हाथ से कुछ क्षण के लिये थाम लिया। उस चादर में से एक तरह की बहुत तेज खुशबू आ रही थी जो बेहोशी पैदा करने वाली थी, अस्तु उसकी खुशबू से बहुत जल्द बेहोश होकर जमना सरस्वती और इन्दुमति जमीन पर गिर पड़ीं और जब कई पहर बीत जाने के बाद उनकी बेहोशी दूर हुई और उन्होंने आंख खोल कर आश्चर्य से चारो तरफ देखा तो अपने को एक भयानक जंगल में पड़े और भूतनाथ को अपने सामने खड़े देखा। दिन अनुमान एक पहर से ज्यादा चढ़ा हुआ था।

चौथा बयान

आंख खुलने के साथ ही भूतनाथ को देख कर जमना सरस्वती और इन्दुमति चौंक पड़ीं और घबड़ा कर अपनी अवस्था की तरफ देखने लगीं। कपड़े से उन तीनों के हाथ पैर बंधे हुए थे और कलम दावात तथा कागज का एक सादा टुकड़ा जमना के सामने पड़ा हुआ था।

भूत०। (तीनों की तरफ देख के) बस मुझे विशेष कहने की कोई जरूरत नहीं, जितना ही तुम लोगों का मुलाहजा किया गया उतना ही तुम लोग शेर होती गईं अस्तु अब यह तुम लोगों के साथ अन्तिम व्यवहार किया जाता है, यह कलम दावात और कागज का टुकड़ा तुम लोगों के सामने पड़ा हुआ है, तुम तीनों में से कोई एक इस कागज पर जो कुछ मैं कहूँ सीधी तरह लिख दो तब तो तुम लोगों को छोड़ दूँगा नहीं तो खूब समझ रखना कि बेंत और कमाचियों से मार मार कर तुम लोगों की खाल उड़ा दूँगा और तड़पा तड़पा कर तुम लोगों की आत्मा को उस दुनिया में रवाना कर दूँगा जहां का जाने वाला फिर इस सूरत में लौट कर नहीं आता.....

जमना०। बस बस! अपना लम्बा चौड़ा व्याख्यान रहने दे, हम लोगों को तेरे हाथ से जान बचाने की अब कोई जरूरत नहीं!

सर०। चाहे किसी तरह की मौत मिले हम लोगों को वह जरूर प्यारी होगी।

इन्दु०। हम लोग इस दुनिया को छोड़ जाना ही पसन्द करते हैं, इस दुनिया से कूच कर जायंगे मगर तुझे खुश करने के लिये पूरा सामान छोड़ जायंगे!

जमना०। हम लोगों के साथ वैसा ही सलूक कर जैसा कि तू बर्दाश्त कर सके, उतना ही मार जितना कि तेरा शरीर सह सके और उसी जगह भेज जहां जाना तू पसन्द करे।

भूत०। (क्रोध से दांत पीस कर) मालूम होता है कि तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है, तुम लोगों को.....

भूतनाथ और कुछ कहा ही चाहता था कि पीछे की तरफ से आवाज आई,

"जरा ठहरना, जल्दी न करना!" भूतनाथ ने पीछे फिर कर देखा तो दारोगा साहब के प्यारे दोस्त जयपाल पर निगाह पड़ी। थोड़ी दूर और आगे बढ़ कर जयपाल रुक गया और उसने हाथ का इशारा करके भूतनाथ को अपने पास बुलाया।

भूतनाथ ने समझा कि वह कोई ऐसा सन्देशा कहने के लिये आया है जो जमना सरस्वती और इन्दुमति के सुनने लायक नहीं है, इसी लिये वह इन लोगों के पास से हटा कर अलग बुला रहा है, अस्तु वह तेजी के साथ जयपाल * के पास चला गया और बोला, "कहो क्या खबर है?"

जय०। मैं दारोगा साहब का भेजा हुआ आपके पास आया हूँ।

भूत०। क्या उनके पास कोई और आदमी भेजने के लिये न था जो उन्होंने आपको परेशान किया?

जय०। आदमी तो बहुत थे मगर मामला कैसा नाजुक है इसे भी तो सोचिये।

भूत०। बेशक इस मौके पर दूसरे आदमी का आना अच्छा न होता। जमना सरस्वती और इन्दुमति पर किसी की भी निगाह न पड़नी चाहिये।

जय०। आप समझते ही हैं तो ऐसा सवाल क्यों करते हैं।

भूत०। (मुस्कुराता हुआ) मेरी भूल थी जो मैंने ऐसा पूछा! अच्छा बताइये आपका आना किस लिये हुआ? क्या कोई पत्र भी लाये हैं?

जय०। नहीं पत्र तो नहीं लाये हैं परन्तु जुबानी सन्देशे के साथ ही साथ एक डिबिया दी है जिसके विषय में कहा है कि इसे खोल कर जमना सरस्वती और इन्दुमति को दिखा देना, इस पर भी अगर वे तीनों तुम्हारी बात न मानें तो उन्हें अवश्य कत्ल कर डालना। इसके अतिरिक्त यह भी कहा कि सन्ध्या के समय मुझसे 'बसन्तबाग' में जरूर मिलना।

इतना कह कर जयपाल ने अपनी कमर में से एक चांदी की डिबिया निकाली और भूतनाथ के हाथ में दे दी। डिबिया हाथ में लेने के साथ ही भूतनाथ का बदन कांपा परन्तु उसने जोर करके उस डिबिया को खोला जिसका ढकना बहुत सख्त बैठा हुआ था। भूतनाथ ने देखा कि उस डिबिया में मरहम की तरह

* जयपाल का कुछ परिचय चन्द्रकान्ता सन्तति में दिया जा चुका है।

जङ्गारी रंग का कोई जमाया हुआ पदार्थ रक्खा है और उसके बीचोबीच में एक हीरे का टुकड़ा अपनी तड़प दिखा रहा है। मरहम नेहायत ही खुशबूदार था, बिना नाक के साथ लगाये ही उसकी खुशबू से दिमाग मुअत्तर हो रहा था और खूशबू भी ऐसी प्यारी थी कि बिना सूंघे भूतनाथ से रहा न गया। भूतनाथ ने नाक के साथ डिबिया लगा कर उस मरहम को सूंघा और साथ ही चक्कर खा कर जमीन पर गिरा और बेहोश हो गया।

भूतनाथ यदि नाक लगा कर उस मरहम को न सूंघता तो भी बेहोश हो जाता परन्तु कुछ सायत के बाद, क्योंकि बेहोश करने वाली उसकी प्यारी खूशबू से उसका दिमाग मुअत्तर हो चुका था।

जमना सरस्वती और इन्दुमति दूर से इस तमाशे को देख रही थीं।

बेहोश भूतनाथ को उसी जगह छोड़ कर जयपाल जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास चला आया और बोला, "मैं हूँ आदित्यमण्डल!" यह अनूठा शब्द सुनते ही वे तीनों प्रसन्न हो गईं। प्रेम से गद्गद् हो जाने के साथ ही उनकी आंखें डबडबा आईं और तीनों ने सर झुका कर नकली जयपाल को प्रणाम किया।

जयपाल ने फुरती के साथ उनके पैर खोल दिये और तीनों को साथ लिये हुए घने जगंल में घुस कर बात की बात में नजरों से गायब हो गया।

इस वारदात को दो घण्टे गुजर गये, भूतनाथ अभी तक बेहोश पड़ा हुआ है। यद्यपि दोपहर की करारी धूप बड़ी ही दुःख दायी हो रही थी परन्तु बेहोश भूतनाथ एक घने पेड़ के नीचे पड़ा हुआ था जहां और भी घण्टे दो घण्टे तक धूप के आने की उम्मीद नहीं थी। पाठक महाशय, देखिये पुनः जमना सरस्वती और इन्दुमति उस स्थान की तरफ चली आ रही हैं जहां उनकी बेहोशी दूर हुई थी और जहां आंख खुलने के साथ ही उन्होंने अपने सामने भूतनाथ को मौजूद पाया था।

जमना सरस्वती और इन्दुमति अपनी खुशी से वहां नहीं आ रही हैं बल्कि जबर्दस्ती के साथ लाई जा रही हैं। तीन आदमी मजबूती के साथ उन्हें पकड़े हुए उसी स्थान पर ले आये तथा पहिले की तरह मजबूती के साथ उनके हाथ पैर बांध दिये और जमीन पर बैठा दिया, उसी समय चौथा आदमी भी आया

जो अपनी पीठ पर बेहोश जयपाल को लादे हुए था। उसने भी भूतनाथ के पास पहुँच कर गठड़ी उतारी और जैपाल को जमीन पर सुला कर जिधर से आया उधर ही चला गया। वे तीनों आदमी भी जमना सरस्वती और इन्दुमति को गिरफ्तार कर लाये थे अपना काम पूरा करके चले गये और फिर लौट कर न आये।

कुछ देर और बीत जाने के बाद बेहोशी दूर हो जाने पर भूतनाथ ने करवट बदली और दो चार दफे अंगड़ाई ले कर उठ खड़ा हुआ। उसे विश्वास हो गया कि हमारे साथ चालाकी खेली गई, जयपाल की सूरत बन कर ऐयार आया और हमें धोखा देकर बेहोश करने बाद अपना काम कर गया, परन्तु उसी समय उसकी निगाह बेहोश जैपाल पर पड़ी और साथ ही इसके जमना सरस्वती और इन्दुमति पर भी निगाह पड़ी जो हाथ पैर बंधे रहने के कारण ज्यों की त्यों बैठी हुई लम्बी लम्बी सांसें ले रही थीं, अस्तु भूतनाथ का विचार पलट गया और अब वह सोचने लगा कि—"नहीं जयपाल ने मुझे धोखा नहीं दिया, अगर वह कोई ऐयार होता तो अपना काम कर चला जाता, मैं देखता हूँ कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति भी ज्यों की त्यों मौजूद हैं और मेरे शरीर में भी किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा है यहां तक कि ऐयारी का बटुआ भी कमर में मौजूद है। साथ ही इसके जयपाल भी इसी जगह बेहोश पड़ा हुआ है। मालूम होता है कि जिस डिबिया को सूँघ कर मैं बेहोश हो गया था उसी की खुशबू ने जयपाल को भी बेहोश कर दिया है (कुछ सोच कर और चौंक कर) मगर आश्चर्य की बात है कि वह डिडिया नहीं दिखाई देती! शायद जयपाल ने उठा कर अपने पास रख ली हो, अब इसे होश में लाया जाय तो पता लगे।" इत्यादि बातें सोच कर भूतनाथ जयपाल के पास गया और अपने बटुए में से लखलखा निकल कर उसे सुंघाया मगर वह होश में न आया। भूतनाथ बोल उठा, "ओफ बड़ी कड़ी बेहोशी है, ईश्वर की कृपा थी कि मैं जल्द होश में आया।"

दो तीन बार लखलखा सुंघाने पर भी जब वह होश में न आया तब भूतनाथ ने कुछ सोच कर उसे छोड़ दिया और जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास आया और क्रोध भरी निगाह से उनकी तरफ देख कर बोला, "बस अब मैं ज्यादे इन्तजार नहीं कर सकता, साफ जवाब दो कि जो कुछ मैंने कहा था वह

लिख देने के लिये तुम तैयार हो या नहीं ?"

इसके जवाब में उन औरतों ने मुंह से कुछ भी नहीं कहा मगर हाथ से उन तीनों ने कुछ इशारा किया जिसे भूतनाथ कुछ समझ न सका परन्तु विश्वास कर लिया कि मेरे कहे मुताबिक ये औरतें कदापि न लिखेंगी अस्तु भूतनाथ ने चिन्ता और क्रोध से व्याकुल हो कर तलवार खैंच ली और यह कह कर कि "अच्छा फिर जो कुछ होगा देखा जायगा" एक ही वार में जमना का सर अलग कर दिया, इतने पर भी भूतनाथ को सब्र न हुआ और लगे हाथ वह सरस्वती और इन्दुमति को भी मार कर अपने हिसाब से निश्चिन्त और बेफिक्र हो गया।

हाय हाय ! भूतनाथ ने कैसी सङ्गदिली का काम किया ! कैसी बेदर्दी के साथ उन बेचारियों पर तलवार का वार किया ! उसका कलेजा कैसा सख्त पत्थर का सा था कि ऐसा अन्धेर करती समय जरा भी न हिला और मामूली ढंग पर बकरी या भेंड़ समझ कर उन्हें लापरवाही के साथ मार डाला। आह ! भूतनाथ तूने यह काम अच्छा नहीं किया निस्सन्देह इसका बहुत बुरा नतीजा तुझको भोगना पड़ेगा।

उस भयानक जंगल में इन लोगों को गाड़ने के लिये एक गड़हा भी भूतनाथ ने पहिले ही तजबीज कर रक्खा था जो कि उस स्थान से थोड़ी ही दूर था। तीनों लाशों को उसी गड़हे में ले जाकर भूतनाथ ने फेंक दिया और ऊपर कुछ मिट्टी और कतवार वगैरह डाल कर अच्छी तरह से ढँक दिया इसके बाद जहां जहां पर उनका खून गिरा था वहां की मिट्टी रगड़ कर उनका निशान भी मिटा दिया।

इन सब बातों से निश्चिन्त हो कर भूतनाथ पुनः जयपाल के पास आया मगर उसे उसी तरह से बेहोश पाया। पुनः लखलखा सुंघाया मगर कुछ भी फायदा न हुआ। नब्ज पर हाथ रख कर देखा तो नब्ज बहुत बारीक और सुस्त चल रही थी जिससे भूतनाथ को गुमान हुआ कि कहीं इस बेहोशी के कारण यह मर न जाय मगर नहीं, ऐसा नहीं हुआ और कुछ देर बाद दो चार करवटें बदल कर जयपाल उठ बैठा और उसने अपने सामने भूतनाथ को देख कर सलाम किया। भूतनाथ ने उससे मिजाज का हाल पूछा मगर उसने कुछ जवाब न दिया, भूतनाथ ने समझा कि अभी इसका मिजाज ठिकाने नहीं हुआ है कुछ

और ठहर जाने पर यह इस लायक हो जायगा कि मेरी बातों का जवाब दे। कुछ समय तक और ठहर जाने के बाद पुनः भूतनाथ ने उसके मिजाज का हाल पूछा, अब की दफे वह कुछ इशारा करके उठ खड़ा हुआ और आश्चर्य के साथ चारो तरफ देखने लगा। उसी समय दूर से कई सवार आते हुए दिखाई दिये जिन्हें भूतनाथ ने भी अच्छी तरह देखा और तुरत वहां से हट जाने का इरादा किया, जयपाल से इशारे में और जुबानी भी यह कहा कि, "खैर तुम दारोगा साहब के पास लौट जाओ मैं कल्ह उनसे आ कर मिलूंगा।"

इशारा पाकर जयपाल वहां से चला गया और भूतनाथ ने भी एक तरफ का रास्ता लिया।

पाँचवाँ बयान

शंकरसिंह को धोखा दे कर दारोगा निकल गया और उन्हें उस भूलभुलैये में उलझा हुआ छोड़ गया। शंकरसिंह का वह किसी तरह मुकाबला नहीं कर सकता था, उसका भेद शंकरसिंह को मालूम हो गया यह उसके लिये अच्छा न हुआ, उसे विश्वास हो गया कि शंकरसिंह अब मुझे सताये बिना न रहेंगे और यदि वे महाराज से इन बातों की शिकायत करेंगे तो उनके दिल से मैं उतर जाऊँगा और ताज्जुब नहीं कि फिर मुझे जन्म भर के लिये कैदखाने की अन्धेरी कोटड़ी नसीब हो।

दारोगा कम्बख्त बड़ा ही बेरहम आदमी था, किसी की जान ले लेना उसके लिये एक अदनी बात थी, अस्तु शंकरसिंह के विषय में भी उसने यही मुनासिब समझा कि इन्हें गुप्त रीति से मार कर बखेड़ा तय किया जाय। फिर किसी को मेरे इस मामले की खबर न होगी। यही सबब था कि वह शंकरसिंह को अपने मकान की उलझाऊ कोठड़ियों में कैदी बना कर चल दिया और उनकी जान लेने की फिक्र करने लगा।

दारोगा भाग कर अपने उस कमरे में चला गया जो उसका गुप्त घर था और जिसमें वह अपने लिये तरह तरह का ऐयारी का सामान, अजीब अजीब ढंग की पोशाकें, तरह तरह के औजार और हर्बे तथा इसी तरह के और बहुत से सामान रक्खा करता था। यद्यपि वह घबड़ाया हुआ था परन्तु फिर भी उस

एकान्त में बैठ कर सोचने लगा कि इस समय क्या करना चहिये ? बहुत जल्द उसने निश्चय कर लिया कि फलाने ढंग से शंकरसिंह को मार कर बखेड़ा तै कर डालना चाहिये फिर जो कुछ होगा देखा जायगा। ऐसा विचार करने के साथ ही वह उठ खड़ा हुआ और जो कुछ पौशाक पहिरे हुए था उसे उतार कर दूसरी स्याह पौशाक पहिनी और मामूली तौर पर अपना चेहरा रंग कर ऊपर से स्याह नकाब डाली इसके बाद एक छुरा, एक खंजर और एक तमंचा तथा एक चोर लालटेन लेकर कमरे के बाहर निकला और अपने विचित्र मकान की कोठड़ियों में घूम घूम कर शंकरसिंह को खोज निकालने के लिये रवाना हुआ। दोनल्ला तमंचे में दो गोलियां भरी हुई थीं और रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी।

शंकरसिंह घूमते फिरते किस कोठड़ी में पहुँचे होंगे और किस अवस्था में होंगे इसे कौन कह सकता है। अस्तु उनका पता लगाने के लिये उस मकान में दारोगा विचित्र ढंग से खोजने लगा। उस मकान के बहुत से कोठड़ियों और कमरों में कोई सूराख दरीची रौशनदान या बालाखाना जरूर था जिनमें से झांक कर दारोगा उन कोठड़ियों और कमरों की अवस्था दूर से देख सकता था। दारोगा ने निश्चय किया कि पहिले उन्हीं कोठड़ियों और कमरों में उन्हें देखना चाहिये जिनमें हम दूर से देख सकते हैं, अगर वहां का पता न लगेगा तब बाकी कोठड़ियों में घूम कर उनके सामने जायंगे।

आखिर दारोगा ने ऐसा ही किया। उस अन्धकार के समय में घूम फिर कर थोड़ी ही देर की मेहनत में शंकरसिंह को खोज निकाला, ऊपर ही ऊपर एक ऐसे बालाखाना में पहुँचा जिसके नीचे छोटा सा चौखूटा कमरा था, चोर लालटेन के जरिये से देखने पर मालूम हुआ कि इसी कमरे में शंकरसिंह जमीन के ऊपर बेहोश पड़े हुए हैं। दारोगा ने उनके चेहरे पर लालटेन की रोशनी डाली परन्तु उनकी निद्रा भग नहीं हुई, साथ ही इसके यह भी दिखाई दिया कि शंकरसिंह का दाहिना हाथ छाती के ऊपर है और वहां से निकला हुआ बहुत सा खून चारो तरफ फैल रहा है। शंकरसिंह की ऐसी अवस्था देख कर दारोगा चौंक पड़ा और बोल उठा, "मालूम होता है कि इन्होंने आत्महत्या कर ली। घूमते घूमते जब निकल जाने के लिये कहीं रास्ता न मिला तब ऐसा कर

लिया। खैर अच्छा ही हुआ मुझे इनके खून से अपना हाथ रंगना न पड़ा।"

जिस जगह पर दारोगा खड़ा हो कर शंकरसिंह को देख रहा था उसके दोनों बगल दो छोटे छोटे दरवाजे थे। एक दरवाजा जिसमें से होकर दारोगा यहां आया था, खुला हुआ था मगर दूसरा बन्द था। दारोगा ने उस बन्द दरवाजे को खोला, अन्दर जाकर एक सुरंग में पहुँचा जो दस बारह हाथ से ज्यादे लम्बी न थी, उस सुरंग के अन्त में भी एक दरवाजा था जिसे खोल कर दारोगा अन्दर गया, यहां पर नीचे उतर जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं अस्तु उन्हीं सीढ़ियों की राह नीचे उतर कर दारोगा उस कमरे में पहुँचा जिसमें शंकरसिंह पड़े हुए थे। दारोगा को इस बात का निश्चय नहीं था कि वे मर गए या जीते हैं इस लिये यकायक पास जाते वह डरा, दूर ही से कुछ सायत तक वह देखता रहा इसके बाद हाथ में भरा हुआ तमञ्चा लिये आगे बढ़ा, लालटेन की रोशनी उनके चेहरे पर डाल कर गौर से देखता रहा। अन्त में उसे निश्चय हो गया कि ये जीते नहीं बल्कि मरे हुए हैं। पास गया और नब्ज पर हाथ रख कर अपना शक मिटाने के बाद देखा कि दाहिने हाथ में छुरे का कब्जा है और छुरा कलेजे के अन्दर घुसा हुआ है।

"अब इन्हें ठिकाने पहुँचाना चाहिये" यह कह कर दारोगा वहां से चला गया और थोड़ी ही देर में और दो आदमियों को साथ लिये हुए पुनः शङ्करसिंह की लाश के पास आ पहुँचा। इन दोनों के चेहरे पर भी नकाब पड़ी थी। दारोगा की आज्ञानुसार दोनों नकाबपोशों ने शङ्करसिंह की लाश उठाई और दारोगा के पीछे रवाना हुए। इस कमरे में तीन दरवाजे थे, एक तो वह जिस राह से दारोगा आया था, दूसरा दरवाजा वह था, जिस राह से शङ्करसिंह आये थे, इसके अतिरिक्त तीसरा दर्वाजा भी था जो इस समय बन्द था। उसी तीसरे दर्वाजे को खोल कर दारोगा उसके अन्दर गया और लाश उठाये हुए दोनों नकाबपोश भी उसके अन्दर चले गये। यह पहिले कमरे की तरह एक चौखूटा कमरा था, इसके चारो तरफ दीवार में चार बड़ी बड़ी आलमारियां थीं जिन्हें खोलने या बन्द करने के लिये कोई खास खटका बना हुआ था। दारोगा ने एक आलमारी का पल्ला खोला। उसमें किसी तरह का कोई सामान न था और न वह वास्तव में आलमारी ही थी बल्कि उसके अन्दर एक छोटी सी

कोठड़ी थी जिसमें मुश्किल से चार या पांच आदमी खड़े हो सकते थे। उस कोठड़ी में नीचे उतर जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं। शङ्करसिंह की लाश को लिये हुए दारोगा नीचे तहखाने में उतर गया जो कि गोल कमरे के ढङ्ग का बना हुआ था। इस कमरे के नीचे एक और तहखाना था जिसमें उतर जाने के लिये कमरे के बीचोबीच में रास्ता बना हुआ था और उसका मुंह लकड़ी के तख्ते से ढँका हुआ था। दारोगा ने तख्ता उठाया और शंकरसिंह की लाश उसके अन्दर फेंक देने के लिये अपने दोनों आदमियों को कहा।

शंकरसिंह की लाश उसके अन्दर फेंक दी गई, तख्ता गिरा कर तहखाने का मुँह ढंग दिया गया और तीनों आदमी नाक दबाये हुए जल्दी जल्दी ऊपर की तरफ रवाना हुए क्योंकि तख्ता खोलने के साथ ही उसके अन्दर से बदबूदार वास कर देने वाली सड़ी बदबू निकली थी जिससे कि वे तीनों आदमी परेशान हो गये थे।

दरवाजे बन्द करते हुए तीनों आदमी ऊपर चले आये। दारोगा ने अपने दोनों साथियों को बिदा किया और स्वयं गुप्त बैठकखाने में चला गया जहां पहिले ही से भूतनाथ बैठा हुआ दारोगा का इन्तजार कर रहा था। दारोगा वहां ठहरा नहीं बल्कि भूतनाथ को साथ लेकर पुनः उसी मकान की तरफ पलट पड़ा जहां जमना सरस्वती और इन्दुमति शङ्करसिंह के आने का इन्तजार कर रही थीं। वहां उन तीनों औरतों के साथ जो कुछ सलूक इन दोनों ने किया वह पहिले के बयान में लिखा जा चुका है। मतलब यह है कि दारोगा ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को भूतनाथ के हवाले कर दिया।

छठवाँ बयान

आधी रात का समय है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, सिर्फ गली कूचों में कभी कभी पहरा देने वालों की आवाज 'जागते रहियो, होशियार रहियो' सुनाई दे जाती है। जमानिया तिलिस्म के दारोगा साहब भी जिनका दिमाग तरह तरह के तरद्दुदों का शिकार हो रहा था बहुत देर तक जाग कर और सैकड़ों करवटें बदल कर अब सो गये हैं मगर थोड़ी थोड़ी देर में उनका शरीर चौंक जाता है और क्षण भर के लिये उनकी निद्रा भङ्ग हो जाती है।

जिस कमरे में दारोगा साहब सो रहे हैं वह बहुत ही खूबसूरती के साथ बेशकीमत सामान से सजा हुआ है। चारो तरफ की दीवारों पर बहुत अच्छा रङ्गसाजी का काम किया हुआ है, दरवाजों पर कमूखाब के पर्दे पड़े हुए हैं, मौके मौके पर दीवारों के साथ बिल्लौरी दीवारगीरें लगी हुई हैं तथा छत के साथ बेशकीमती कन्दीलें और कई झाड़ लटक रहे हैं। आलों पर सुन्दर जड़ाऊ गुलदस्ते सजाये हुए हैं जिनमें रक्खे हुए खुशबूदार फूल पत्तों के गुच्छे तमाम कमरे को मुअत्तर कर रहे हैं। इस समय वहां रोशनी बहुत कम है सिर्फ दो या तीन दीवारगीरों में काफूरी मोमबत्तियां जल रही हैं (205)

कई घण्टे तक बेआरामी की नींद लेने के बाद दारोगा घबड़ा कर चौंक पड़ा और उठ कर चारपाई के ऊपर बैठ गया। उसे मालूम हुआ कि उसके पैर में किसी जानवर ने काट लिया है परन्तु उठ कर बैठ जाने के बाद उस कमरे की अवस्था देख कर वह घबड़ा गया और आंखें फाड़ कर चारो तरफ देखने लगा। उसने देखा जिन दीवारगीरों में काफूरी बत्तियां जल रही थीं वे बुझी हुई हैं सिर्फ एक बत्ती जल रही है, उस पर भी किसी ने स्याह चादर या इसी तरह की कोई चीज डाल दी है जिससे रोशनी बहुत गँदली हो रही है यहां तक कि कमरे की चीजें भी साफ नहीं दिखाई देतीं।

दारोगा के दिल में एक प्रकार का डर पैदा हो गया और उस समय तो उसका कलेजा और भी उछलने लग गया जब उसे कमरे के कोने में कोई स्याह रंग की मूरत धुंधली सी दिखाई दी।

निस्सन्देह पापियों का हृदय बड़ा ही छोटा, बहुत ही कमजोर और अत्यन्त डरपोक होता है। दारोगा कोई बहादुर आदमी नहीं था, बहादुर लोग ऐसे नीच कामों को पसन्द नहीं करते जिन्हें दारोगा ने अपना नित्य कर्म ही समझ रक्खा था। दारोगा केवल चलाकी और दगाबाजी से अपना काम निकालता था। यद्यपि किसी की जान लेने के विषय में वह बड़ा ही निर्दय था परन्तु इस काम में उसका दिल उन बहादुरों का सा न था जो लड़ाई के मैदान में खुल्लमखुल्ला लड़ कर दुश्मनों का सर काटते हैं बल्कि उसका दिल उन पापियों का सा था। जो केवल अपनी प्रसन्नता के लिये निर्दोष पुरुषों को अन्धकार के समय छिप कर मारते हैं या जहर से किसी की जान ले कर छिपे फिरते हैं और डरते

हैं कि हमारा यह भेद किसी पर खुल न जाय। इन दोनों दिलों में जमीन आसमान का फर्क है। इससे भी बढ़ कर उस आदमी का दिल पापमय और कमीना है जो अपने मालिक के साथ नमकहरामी और अपने राजा के साथ दगाबाजी करता है। शंकरसिंह के साथ दगाबाजी करके और उनको जमीन के अन्दर दफन करके दारोगा का दिल बहुत ही घबड़ाया और बेचैन हुआ। उसे दिन रात की साठ घड़ियों में से कोई भी घड़ी बेफिक्री की नसीब नहीं होती थी। शंकरसिंह की लाश को जमीन के अन्दर पहुँचाने के बाद दूसरे दिन वह दरबार में राजा साहब के पास गया परन्तु उसके दिल ने घण्टे भर भी उसे बैठने की इजाजत न दी। राजा साहब के मुँह से एक दफे केवल इतना ही निकल गया "आज भैया राजा नहीं दिखाई दिये क्या मामला है।" बस दारोगा के हवास जाते रहे और वह सर का दर्द तथा बीमारी का बहाना करके वहां से चलता बना। घर आने पर उसका दिन बड़ी बेचैनी के साथ गुजरा और रात को जब वह खा पी कर सोने के लिये अपने पलंग पर गया तो बड़ी मुश्किल से उसे नींद आई। दूसरा दिन उसी तरह बेचैनी के साथ गुजरा और राजा साहब के पास दरबार में न गया सिर्फ अपनी बीमारी का संदेशा कहला भेजा। वहां आज भी शंकरसिंह के न जाने से बड़ी बेचैनी फैली हुई थी और सैकड़ों आदमी उनकी खोज में चारों तरफ भेजे जा चुके थे। रात्रि के समय आज भी दारोगा की वही दशा रही अर्थात् बड़ी कठिनता से उसे नींद आई और किसी कारण से जब उसकी आंख खुली तो उसने वही कैफियत देखी जो हम ऊपर बयान कर चुके हैं।

धुंधली सी स्याह रंग की सूरत देख कर वह डर गया। अपने सिरहाने से उसने तलवार उठा ली और कुछ देर तक एक टक उस सूरत की तरफ देखता रहा। अब वह सूरत हिलती हुई दिखाई दी और फिर धीरे धीरे दारोगा की तरफ बढ़ने लगी यहां तक कि चारपाई के पास आकर खड़ी हो गई। इस बीच में दारोगा ने कई दफे उठ कर चारपाई के नीचे खड़े हो जाने की कोशिश की मगर कृतकार्य न हुआ अर्थात् उसके पैरों ने वहां से हिलने की इजाजत न दी, मालूम हुआ कि पैरों में कुछ भी दम नहीं है, इस कैफियत से दारोगा का डर और भी बढ़ गया। वह घबड़ाना सा होकर एक टक उस सूरत की तरफ देखने

लगा, उसे मालूम हुआ कि कोई आदमी सिर से पैर तक कपड़ा ओढ़े सामने खड़ा है।

कुछ सायत के बाद उस सूरत ने अपने चेहरे पर से स्याह कपड़ा हटा दिया, अब दारोगा को ठीक शंकरसिंह की सी सूरत दिखाई दी। देखने के साथ ही वह चिल्ला उठा और उसके सर में चक्कर आने लगे जिससे घूम कर वह चारपाई पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

अबकी दफे जब होश में आया अर्थात् उसकी आंख खुली तो उसने देखा कि सवेरा हो चुका है और कमरे के अन्दर कुदरती रोशनी पहुँच कर वहां की हर एक चीज को अच्छी तरह दिखा रही है मगर वह सूरत वहां नहीं दिखाई देती और न किसी दीवारगीर के ऊपर स्याह कपड़ा ही दिखाई पड़ता है। और दीवारगीरों के ऊपर निगाह डालने से मालूम होता है कि सभी बत्तियां जो सन्ध्या के समय जलाई गई थीं रात भर जल कर बुझी हैं क्योंकि कोई काफूरी बत्ती का टुकड़ा इतना बड़ा नहीं दिखाई देता जिससे समझा जाय कि वह थोड़ी देर तक जलने के बाद बुझा दी गई थी।

कमरे की ऐसी अवस्था देखकर दारोगा तरह तरह की बातें सोचने लगा, "क्या मैंने कोई स्वप्न देखा है? नहीं नहीं, यह स्वप्न नहीं हो सकता! वह स्याह सूरत मैंने स्वप्न में नहीं देखी थी वह जरूर कोई आदमी था, साथ ही इसके मैंने यह भी देखा था कि दीवारगीरों की मोमबत्तियां एक छोड़ कर सभी बुझा दी गई हैं परन्तु अब उन बचे हुए टुकड़ों पर ध्यान देने से जाना जाता है कि सभी बत्तियां एकसा रात भर जली हैं, इसीसे विश्वास होता है कि मैंने जरूर कोई स्वप्न देखा है, मगर नहीं, देखो यह तलवार जो कि मेरे सिरहाने थी इस समय बगल में पड़ी हुई है क्योंकि मैंने उस स्याह सूरत को देख कर सिरहाने से तलवार उठा ली थी, तो क्या वास्तव में वह बात सच थी? सच क्योंकर हो सकती है! शंकरसिंह को मैं अपने हाथ से जमीन के अन्दर दफन कर आया हूँ, वह मेरे सामने क्योंकर आ सकता है? तो क्या कोई ऐयार उनकी सूरत बन कर आया? नहीं, किस ऐयार को यह बात मालूम हो सकती है जो वह मुझे डराने के लिये शंकरसिंह की सूरत बन कर आवेगा? क्या मेरे दोनों साथी ऐसा कर सकते हैं? नहीं नहीं, राम राम! उन बेचारों पर किसी तरह का शक

करना अपने ही ऊपर शक करने के बराबर है, फिर क्या शंकरसिंह भूत बन कर मेरे कमरे में आया था? छिः छिः, भूत का शक करने से हमलोगों का काम चल सकता है भूत कोई पदार्थ नहीं है, वह जरूर स्वप्न था जो कि मैंने देखा।"

दारोगा चारपाई के ऊपर बैठा हुआ बड़ी देर तक इसी प्रकार की चिन्ता करता रहा और आखिर उसने निश्चय कर लिया कि जो कुछ मैंने देखा वह जरूर स्वप्न था।

यह सोच कर दारोगा आंखें मलता हुआ चारपाई के नीचे उतरा और धीरे धीरे चल कर कमरे के बाहर आया जहां कई खिदमतगार खड़े उसके आने का इन्तजार कर रहे थे। हाथ मुंह धोने के बाद कुर्सी पर बैठा ही था कि राजा साहब का एक चोबदार आ पहुँचा और उसने कहा कि, "महाराज ने आपको याद किया है।"

दारोगा०। (चोबदार से) क्यों क्यों? आज गैर मामूली बात कैसी? खैरियत तो है?

चोब०। सो तो मुझे कुछ मालूम नहीं सिर्फ यही हुक्म हुआ है कि आपको जल्द हाजिर होने के लिये इत्तला दी जाय। मगर हां, आज महाराज कुछ चिन्तित से दिखाई देते हैं, वे सूर्योदय के पहिले ही स्नान तथा संध्योपासना से निवृत्त हो जाया करते थे परन्तु आज उन्होंने चारपाई से उठ कर मुँह तक नहीं धोया है चारपाई से उठ कर सीधे 'मुक्ताभवन' में चले आये हैं और आपको याद किया है। आज्ञा है कि बिना कुछ विलम्ब किये शीघ्र उनके पास पहुँचें।

दारोगा०। निस्सन्देह कोई बात जरूर है।

चोब०। जी हां, तभी तो ऐसी अवस्था है।

चोबदार की बातें सुन कर दारोगा साहब और भी परेशान हुए, महाराज के पास जाने की इच्छा तो नहीं होती थी परन्तु लाचार बिना वहां गये रह भी नहीं सकते थे। कई क्षण तक चिन्ता करने बाद वे उठे और अपने तोशेखाने के कमरे में चले गये। कुछ देर बाद मरीजों की सी सूरत बनाये हुए दारोगा कमरे के बाहर निकला और चोबदार के साथ महाराज की तरफ रवाना हुआ।

सातवां बयान

जमानिया के राजा गिरधरसिंह अपने मुक्ताभवन में एक चांदी की आराम कुर्सी पर बैठे हुए दारोगा के आने का इन्तजार कर रहे हैं। यह स्थान खास महाराज के रहने का है। जनानी महल या दर्बार तथा खास बाग से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। हां जनानी महल इस मकान के साथ ही सटा हुआ है तथा खास बाग में जाने का रास्ता भी इस मकान ही में से है।

इस मकान के पीछे की तरफ एक छोटा सा नजर बाग तथा एक सुन्दर बारहदरी है। इसी बारहदरी में इस समय महाराज उदास और विषण्ण बदन बैठे न मालूम किस विषय की चिन्ता कर रहे हैं। उनके पास किसी तरह की भीड़भाड़ नहीं है केवल खास खास चार पांच आदमी और पांच सात खिदमतगार नजर आते हैं और वे सब भी महाराज की उदासी के कारण उदास हो रहे हैं।

कुछ देर के बाद दारोगा साहब आ पहुँचे। महाराज के पास कुछ हट कर एक कुर्सी रक्खी हुई थी, उसी पर बैठने के लिये महाराज ने इशारा किया और दारोगा साहब बैठ गये। महाराज ने कहा, "आपको कुछ भैयाराजा की खबर है?"

दारोगा०। जी मुझे कुछ खबर नहीं, क्या उनका पता नहीं लगता?

महाराज०। हां, दो दिन से पता नहीं लगता, क्या आपको किसी ने खबर नहीं दी? आश्चर्य है कि आप हम लोगों की तरफ से इस तरह बेखबर रहते हैं!!

दारोगा०। (हाथ जोड़ कर) महाराज मैं सरकार की तरफ से बेफिक्र नहीं रह सकता परन्तु यह एक मामूली बात थी जिसके विषय में मैंने कुछ विचार नहीं किया। इसके अतिरिक्त मुझे किसी ने इस मामले की खबर भी नहीं की। शायद इसका यह सबब हो कि मैं दो दिन से सख्त बीमार हूँ। सर और पेट के दर्द ने मुझे अधमुआ कर डाला है। मगर महाराज! भैयाराजा के लिये आपको इतनी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। आप जानते ही हैं कि वे प्रायः गायब रहा करते हैं और जब जाते हैं तो दस दस पन्द्रह पन्द्रह दिन तक घर की खबर नहीं लेते.....

महा० । ठीक है मगर वे ऐसा कभी नहीं करते कि मुझसे आज्ञा लिये बिना या मुझे इत्तला दिये बिना कहीं चले जाते हों, अगर कभी ऐसा मौका पड़ गया है कि दो दिन के लिये कह कर कहीं बाहर गये हैं और कई दिन लग गये हैं तो बाहर रहने पर भी नित्य अपने कुशल मंगल का समाचार भेजते रहे हैं परन्तु अबकी दफे उनका गायब होना मामूल के खिलाफ है.....

महाराज ने इतना कहा था कि बाहर से चोबदार आया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया, जब महाराज ने उसकी तरफ देखा और इशारे में अर्ज करने की इजाजत दी तब उसने अर्ज किया कि इन्द्रदेवजी आये हैं और सरकार में हाजिर हुआ चाहते हैं।

इस समय इन्द्रदेव के आने से महाराज खुश हुए और उन्हें बहुत जल्द ले आने के लिये चोबदार से कहा। खिदमतगार ने महाराज की मर्जी समझ कर एक कुर्सी वहां लाकर रख दी और जब इन्द्रदेव हाजिर हुए तो सलाम करने के बाद इशारा पाकर उस कुर्सी पर बैठ गये। मामूली कुशल मंगल पूछने के बाद महाराज ने प्रश्न किया।

महा० । अबकी तो बहुत दिनों के बाद तुम्हारा आना हुआ है !!

इन्द्रदेव० । जी हां, कई झंझटों में फंसे रहने के कारण मैं बहुत दिनों तक हाजिर न हो सका, इधर कई दिनों से मेरे श्वसुर किसी कार्यवश मुझे बुला रहे थे, कल उनका बहुत शिकायत भरा हुआ पत्र पहुँचा तो लाचार आना पड़ा, सबसे पहिले महाराज का दर्शन करना फर्ज था इसीलिये हाजिर हुआ हूँ, परन्तु महाराज कुछ खिन्न से दिखाई पड़ते हैं इससे आश्चर्य होता है.....

महा० । हां ठीक है मैं जरूर उदास और दुःखी हो रहा हूँ और इसका कारण यह है कि आज तीन दिन से भैयाराजा का पता नहीं लगता। उनकी यह आदत नहीं थी कि बिना मुझसे पूछे एक दिन से ज्यादे के लिये कहीं जाते।

इन्द्रदेव० । निस्सन्देह यह आश्चर्य की बात है परन्तु महाराज ! वे कुछ नादान बालक तो हैं नहीं, होशियार हैं, बुद्धिमान हैं, बहादुर हैं, तथा नीतिकुशल हैं अतएव उनका गायब होना जरूर किसी खास कारण से होगा।

महाराज० । खयाल तो मेरा भी ऐसा ही है परन्तु न मालूम क्यों उनके लिये मेरा जी बहुत बेचैन हो रहा है।

इन्द्रदेव० । यह सच्चे प्रेम का कारण है ।

महाराज० । इसके अतिरिक्त एक बात और भी है ।

इन्द्रदेव० । वह क्या ?

महाराज० । तुम लड़के हो, दामोदरसिंह के लेहाज से तथा तुम्हारी लेयाकत हमदर्दी और प्रेम के कारण मैं तुम्हें अपने लड़के के बराबर समझता हूँ, इसके अतिरिक्त मेरे लड़के के तुम मित्र हो इसलिये भी तुम लड़के के बराबर ही हुए अतएव तुमसे मैं कोई बात छिपाना पसन्द नहीं करता आज रात को जब कि मैं अपने सोने के कमरे में बेखबर सो रहा था एक अजीब घटना देखने में आई ।

इन्द्र० । (आश्चर्य प्रकाश करता हुआ) वह क्या महाराज ?

महाराज० । (कुछ सोच कर) मैं चाहता हूँ कि गोपाल भी आ जाय तो मैं इस किस्से को बयान करूं ।

इन्द्रदेव० । क्या चिन्ता है जरा देर के लिये ठहर जाइये गोपालसिंहजी भी आते ही होंगे मैं यहां ड्योढ़ी तक उनके साथ ही साथ आया था, किसी कार्यवश वे महल में चले गये और मुझसे कह गये कि तुम महाराज के पास चलो मैं अभी शीघ्र ही आता हूँ (चौंक कर) वह देखिये वे भी आ गए ।

इतने ही में गोपालसिंह भी आ गए, उनके लिए भी कुर्सी लाई गई और वे महाराज को प्रणाम करके कुर्सी पर बैठ गए ।

महाराज० । (गोपालसिंह से तुम तो जानते ही हो कि आज तीन दिन से भैयाराजा गायब हैं ।

गोपाल० । (हाथ जोड़ के) जी हां आज तीसरा दिन है, बिना इत्तला किए कहीं चले जाने की आदत तो चाचाजी में नहीं थी । यह बड़े आश्चर्य की बात है ! उनका पता लगाने के लिए मैं बहुत उद्योग कर रहा हूँ परन्तु अभी तक मेरी मेहनत का कोई नतीजा नहीं निकला ।

महाराज० । इसके अतिरिक्त मैं रात की एक अपूर्व घटना का बयान करने वाला हूँ जिसके लिये मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ ।

गोपाल० । आज्ञा ।

महाराज ० । रात को भैयाराजा की चिन्ता में मैं समय के कुछ पहिले ही

सोने के लिए अपने कमरे में चला गया था, बहुत देर तक पड़ा तरह तरह की बातें सोचता रहा अन्त में नींद आ गई और मैं बेखबर सो गया, रात दोपहर बीत जाने के बाद मेरी आंख खुली तो मैंने कमरे में अन्धकार पाया, सिर्फ पूरब तरफ वाली एक खिड़की खुली हुई थी, और उसमें से आई हुई चन्द्रमा की चांदनी फर्श के ऊपर पड़ रही थी, उसी से कमरे के अन्दर इतना उजाला हो रहा था कि नित्य मिलने जुलने वाले आदमी को हम पहिचान सकते थे। उसी चांदनी के पास एक आदमी दिखाई पड़ा मुझे आश्चर्य हुआ कि इस समय छिप कर मेरे कमरे में कौन आया! अस्तु मैं बगल से तलवार लेकर उठ खड़ा हुआ और धीरे धीरे उस आदमी की तरफ बढने लगा। मुझे अपनी तरफ बढ़ते देख वह आदमी चन्द्रमा की रोशनी में चला गया और इस ढंग से खड़ा हो गया कि चन्दमा की रोशनी बखूबी उसके चेहरे पर पड़ने लगी मैंने साफ साफ पहिचान लिया कि यह भैयाराजा हैं।

भैयाराजा को देख कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ मगर जब उनके पास जाने लगा तो उन्होंने हाथ के इशारे से मुझे मना किया और जब मैंने इसका सबब पूछा तो उन्होंने अपनी उंगली से फर्श के ऊपर लिख कर जवाब दिया, चांदनी में काले हर्फ बहुत अच्छी तरह पढ़े जाते थे। मैंने पढ़ा, यह लिखा हुआ था, "मैं जीता नहीं हूँ, मुझे दारोगा ने मार कर अपने मकान में गाड़ दिया है।"

बस इतना लिख कर वह खिड़की के बाहर कूद गये। मैं बड़ी देर तक खड़ा खड़ा उन बड़े बड़े हरफों को देखता रहा, इसके बाद झांक कर खिड़की के बाहर देखा तो किसी की सूरत दिखाई नहीं पड़ी। मैं घबड़ाता हुआ चारपाई पर जा कर लेट रहा और इस खयाल से खिड़की की तरफ देखने लगा कि शायद वह सूरत पुनः दिखाई दे मगर फिर कुछ दिखाई न दिया और बहुत जल्द मुझे नींद आ गई। फिर जब आंख खुली सवेरा हो चुका था। जहां पर वे अक्षर लिखे गये थे वहां जाकर देखा तो फर्श पर एक अक्षर भी दिखाई न पड़ा। तब से इस समय तक मेरे दिल की विचित्र अवस्था हो रही है।

इस किस्से को सुन कर सभों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और जब गोपालसिंह की निगाह दारोगा पर पड़ी तो देखा कि उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है और उसका बदन कांप रहा है। महाराज ने भी दारोगा की वह अवस्था देख

आश्चर्य में आकर पूछा, "यह क्या ! आपका शरीर इतना कांप क्यों रहा है ?"

दारोगा० । मैं निवेदन कर चुका हूँ कि दो तीन दिन से बुखार ने मुझे पीड़ित कर रक्खा है, मैं यहां आने के योग्य नहीं था परन्तु महाराज की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता था इस लिये किसी तरह उठता बैठता चला आया इस समय पुनः सर्दी मालूम हो रही है जान पड़ता है फिर बुखार चढ़ेगा ।

महाराज० । ठीक है, अच्छा तो इस समय आप घर जाइये, जब आपकी तबियत ही ठीक नहीं है तो मेरे इस तरद्दुद में आप किस तरह शरीक हो सकते हैं ।

दारोगा० । (हाथ जोड़ता हुआ) जो आज्ञा, मैं बिदा होता हूँ, जी ठिकाने होने पर पुनः हाजिर होउंगा, आपने जो कुछ रात का हाल बयान किया है उसे सुन कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ ! मैं वास्तव में इस समय कुछ भी निश्चय नहीं कर सकता कि यह क्या मामला है । आश्चर्य नहीं कि यह किसी ऐयार की ऐयारी हो और वह आपको अथवा भैयाराजा को धोखे में डाला चाहता हो और यह किसी विशेष घटना की भूमिका बांध रहा हो, अथवा किसी ढंग का स्वप्न आपने देखा हो जो कि...मैं क्या कहूँ कुछ समझ में नहीं आता ! आश्चर्य तो यह है कि उसने बदनाम करने के लिये मुझी को ताक रक्खा है ।

महाराज० । आप को कोई क्या बदनाम करेगा ! मुझे कब विश्वास हो सकता है कि आप हम ही लोगों की जान के ग्राहक हो जायंगे ! नहीं मुझे ऐसा खयाल नहीं हो सकता परन्तु यह मामला क्या है इसका पता जरूर लगाना चाहिये ।

दारोगा० । (जोर देने के ढग पर) जरूर इसका पता लगेगा, जरा मेरी तबियत ठिकाने हो जाय तो मैं उद्योग करूँ।

महाराज० । (इन्द्रदेव से) कहो बेटा ! तुम इस बारे में क्या खयाल करते हो ?

इन्द्र० । महाराज ! मैं इस विषय में यकायक अपनी राय कैसे दे सकता हूँ, इसके अतिरिक्त दुनिया में भूत प्रेत तथा आत्मा के विषय में जो कुछ कहानियां लोग कहते हैं मैं उसे अवश्य मानता हूँ, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आदमी मरने के बाद नाश नहीं होता, इस पञ्चभौतिक स्थूल शरीर को छोड़ने के साथ ही आत्मा

को जो अविनाशी और अमर है एक दूसरा सूक्ष्म शरीर मिल जाता है जिसे पाकर वह जीव इधर उधर घूमा या उड़ा करता है अथवा अपने कर्म्मानुसार तब तक दुःख सुख का भोग करता है जब तक वह किसी ऊंचे पद को न प्राप्त करे अथवा पुनः पंचभौतिक शरीर में प्रवेश न करे अर्थात् जब तक उसका पुनर्जन्म न हो। जब तक जीवात्मा का पुनर्जन्म नहीं होता तब तक उसकी वासनानुसार उसको तरह तरह के तमाशे दिखाई दे सकते हैं और यदि मरती समय कोई प्रबल वासना उसके अन्दर रह गई हो तो निश्चय रूप से किसी के शरीर में प्रवेश करके अथवा योंही छाया की तरह लोगों को दिखाई दे जाता है और कभी कभी इसी ढंग पर अपनी थोड़ी बहुत वासना भी पूरी कर लेता है। इस विषय में मेरे पिताजी ने मुझे बड़े बड़े तमाशे दिखलाये हैं और बहुत सी बातें सिखलाई भी हैं। मैं निश्चय रूप से कह सकता हूँ कि यदि चाचाजी (भैयाराजा) की अकाल मृत्यु हुई है और किसी ने धोखा देकर उन्हें मार डाला है तो उनका आत्मा बदला लेने की नीयत से इस रूप में जरूर दिखाई दे सकती है जैसा कि आपने रात को देखा है। अगर वह वास्तव में भैयाराजाजी की आत्मा है तो कम से कम एक दो दफे आपको और जरूर दिखाई देगी क्योंकि भूत प्रे॰ जब दिखाई देता है तब केवल एक ही दफे नहीं दिखाई देता और अगर वह भैयाराजा की आत्मा नहीं किसी ऐयार की ऐयारी है तो मैं बहुत जल्द इसका पता लगा कर आपसे निवेदन करूँगा।

महा०। (आश्चर्य से) क्या तुम भूत प्रेतादि का होना मानते हो ?

इन्द्रदेव०। निस्संदेह ! जैसा कि मैं अर्ज कर चुका हूँ उस पर मेरा दृढ़ विश्वास है और मैंने इसके बहुत से खेल भी देखे हैं यदि महाराज देखा चाहेंगे तो मैं इस विषय के कई अपूर्व तमाशे दिखा भी सकूंगा।

महाराज०। तो मैं समझता हूँ कि तुम्हारे खयाल से भी भैयाराजा का मारा जाना सम्भव है !

इन्द्रदेव०। जी सम्भव भी है और असम्भव भी है, दोनों बातों में से किसी पर मैं जोर नहीं दे सकता, दो दिन की मुझे मोहलत मिले इसके बाद मैं निश्चय करके जवाब दूँगा (दारोगा की तरफ देख कर) भाई साहब ! आपकी तबीयत अब बहुत खराब होती जाती है आप अब पधारिये।

महा० । (दारोगा से) हां हां अब आप जाइये फिर देखा जायगा ।

दारोगा उठ खड़ा हुआ और सलाम करके धीरे धीरे बीमारों की सी नकल करता हुआ वहां से रवाना हुआ । उसके चले जाने के बाद इन्द्रदेव ने महाराज से कहा, "महाराज ! यदि पुनः आपको वह जीव दिखाई पड़े तो आप उससे बातचीत चाहे जिस तरह करें तरन्तु उसे छूने या पकड़ने का उद्योग न करें यह मेरी प्रार्थना है ।"

महाराज० । क्यों ?

इन्द्रदेव० । सम्भव है कि कोई प्रेत आपको धोखा देने के लिये भैयाराजा की सूरत बन कर आपके पास आया हो और पुनः आवे अस्तु जो लोग उपासक होते हैं और सन्ध्योपासन से विमुख नहीं होते उनके शरीर को प्रेत स्पर्श नहीं कर सकता ऐसी अवस्था में अपने को भी उसे स्पर्श करने का उद्योग न करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से उसके पुनः आने की आशा नहीं रहती ।

महाराज० । हाय ! भैयाराजा के विषय में कोई भी निश्चय नहीं कर सकता और कोई भी पता नहीं लगा सकता । यह हमारे मन्द भाग्य की निशानी है...

इतना कहते कहते उनकी आंखें डबडबा आईं और आंसू की बून्दे टपाटप गिरने लगीं ।

इन्द्देव० । महाराज ! आप हताश क्यों होते हैं ? मैं कह चुका हूँ कि दो तीन दिन के अन्दर ही मैं उनका ठीक ठीक पता लगा कर आप को समाचार दूँगा, मुझे विश्वास है और मैं जोर देकर कहता हूँ कि भैयाराजा जीते हैं परन्तु किसी कष्ट में पड़ गये हैं ।

महाराज० । (रूमाल से आंसू पोंछते हुए) अच्छा मैं तुम्हारे भरोसे पर और भी दो तीन दिन किसी तरह बिताऊंगा । फिर.....

इन्द्रदेव ने महाराज को बहुत समझाया और हर तरह पर दिलजमई करा कर वहां से बिदा हुए और कुंअर गोपालसिंह को भी अपने साथ लेते गये ।

आठवाँ बयान

जमानिया राजमहल में शंकरसिंह के गायब होने से बड़ा ही कोलाहल मच गया था । उन्हें लड़के, लड़कियां औरत और मर्द सभी कोई मुहब्बत की निगाह

से देखते थे इसलिये औरतों को भी उनके गायब होने का बड़ा ही दुःख हुआ परन्तु उनकी स्त्री के चेहरे पर विशेष दुःख की कोई निशानी नहीं पाई जाती थी इसका और औरतों को बड़ा ही आश्चर्य था। यह नहीं कहा जा सकता कि शंकरसिंहजी की स्त्री रोती या कलपती न थी। नहीं, उनका रोना धोना और बावेला मचाना बहुत चढ़ा बढ़ा था मगर लोगों का खयाल यही था कि यह सब बनावटी है क्योंकि जब कोई औरत धोखे में उन्हें एकान्त में देख लेती तब उनके चेहरे पर कोई भी गम की निशानी नहीं पाती बल्कि कई दफे लोगों ने उन्हें एकान्त में मुस्कुराते हुए भी देखा था, इसीलिये औरतें खयाल करती थीं कि शंकरसिंहजी के गायब होने का उनकी स्त्री को कोई दुःख नहीं है, परन्तु ऐसा क्यों है ? इसके लिये निश्चय रूप से कोई भी कुछ नहीं कह सकता था हां ताक झांक में सभी कोई लगे रहते थे और सभी औरतों की निगाह में वे चढ़ गई थीं।

राजा गिरधरसिंह की एक विधवा साली थी, वह यद्यपि बहुत नेक थी और सनातनधर्म के ऊपर उसका बड़ा विश्वास था तथा दिन रात का बहुत बड़ा हिस्सा उसका पूजा पाठ ही में बीतता था परन्तु उसमें एक ऐब बहुत बड़ा था अर्थात् वह लोगों का ऐब ढूंढ़ने में बड़ी ही निपुण थी और एक छोटी सी बात झूठ सच के सहारे बड़ी खूबी के साथ बढ़ा कर बयान करती थी। उसका नाम द्रौपदी था।

एक दिन आधी रात के समय राजा गिरधरसिंहजी की स्त्री अकेली अपने कमरे में पलंग पर लेटी हुई तरह तरह की बातें सोच रही थीं, चिन्ता के कारण निद्रादेवी ने उनका साथ छोड़ दिया था और इसीलिये वे करवटें बदल कर समय बिता रही थीं, कमरे के अन्दर एक बहुत बड़ा फर्राशी पंखा चल रहा था जिसकी डोरी कमरे के बाहर बैठी हुई एक लौंडी के हाथ में थी।

करवटें बदलते बदलते एक दफे राजरानी की निगाह दर्वाजे पर जा पड़ी, देखा कि बीबी द्रौपदी खड़ी एक टक उनकी तरफ देख रही हैं। हाथ के इशारे से उन्होंने बीबी द्रौपदी को कमरे के अन्दर आने की इजाजत दी और जब वे उनके पास आईं तब रानी साहेबा ने पूछा, "क्या है जो तुम इस समय यहां ताक झांक लगा रही हो ?"

द्रौपदी० । यों ही मैं इस तरफ चली आई तो कमरे का दरवाजा खुला देख ठहर गई ।

रानी० । आखिर कोई बात जरूर है, आओ मेरे पास बैठ जाओ ।

द्रौपदी० । (रानी साहेबा के पास बैठ कर) अभी तक आपको नींद नहीं आई क्या बात है ?

रानी० । मुझे तो तरह तरह की चिन्ताओ ने दबा रक्खा है अगर मुझे नींद न आवे तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है परन्तु तुम अभी तक जाग रही हो और इधर उधर घूम रही हो यह बेशक आश्चर्य की बात है !!

द्रौपदी० । क्या आपकी चिन्ता से मुझे चिन्ता नहीं है ? मैं आपके सुख दुःख की साथी नहीं हूँ ?

रानी० । क्यों नहीं ।

द्रौपदी० । बस फिर समझ लीजिये कि जिस चिन्ता के कारण आप अभी तक जाग रही हैं उसी चिन्ता ने मेरी नींद भी उड़ा दी है, हां भेद इतना है कि आप चुपचाप पड़ी सोचा करती हैं और मैं इधर उधर घूम फिर कर समय बिताती हूँ और इससे बहुत सा काम भी चल जाता है, कई छिपे हुए भेद भी खुल जाते हैं ।

रानी० । (आश्चर्य से) क्या आज भी कोई भेद की बात तुम्हें मालूम हुई ?

द्रौपदी० । हां आज एक अनूठी बात देखने में आई ।

रानी० । वह क्या ?

द्रौपदी० । नींद न आने के कारण मैं चारपाई पर न ठहर सकी उठ कर इधर उधर घूमने लगी, अकस्मात् छोटी भाभी (भैयाराजा की स्त्री) के कमरे की तरफ जा निकली, देखा तो दरवाजा बन्द पाया जिससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । कान लगा कर इस बात की आहट लेने लगी कि देखें वे सोती हैं या जागती मगर कमरे के अन्दर से किसी मर्द की आवाज सुन कर मैं चौंक पड़ी, मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि इनके एकान्त के कमरे में कौन मर्द आया और किस राह से आया ।

रानी० । (बात काट कर) मर्द की आवाज !!

द्रौपदी०। जी हां मर्द की आवाज पहिले तो मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ मगर जब अच्छी तरह ध्यान देकर मैंने सुना तो शक जाता रहा क्योंकि उसे छोटी भामी से बातें करते हुए मैंने सुना।

रानी०। और वे बातें क्या थीं?

द्रौपदी०। सो तो मैं साफ साफ न समझ सकी, हां कई छोटे छोटे शब्द मेरी समझ में आये और वे ये थे, "देखो मेरा भेद किसी पर खुलने न पावे—" "तुम किसी तरह की चिंता न करना मैं तुम्हारे पास बराबर आया जाया करूंगा—" "कल मैं फिर इसी समय आऊंगा तुम खिड़की खुली रखना।" इत्यादि कई बातें मेरी समझ में आईं। जब मैंने उस मर्द को यह कहते सुना कि "कल मैं फिर इसी समय आऊंगा तुम खिड़की खुली रखना।" तब मुझे विश्वास हो गया कि वह बाहर से कमन्द लगा कर उस कमरे के अन्दर खिड़की की राह से आया है। फिर मेरे जी में यह आया कि किसी तरह इस मर्द को देखना चाहिये। यह सोचते ही मैं वहां से चल पड़ी और घूमती हुई भण्डार के पीछे से होती हुई उस कमरे के पास चली गई जिसमें ठाकुरजी के जन्माष्टमी का सामान रहता है, वहां बरामदे में खड़े हो कर देखिये तो छोटी भामी के कमरे की खिड़की साफ साफ दिखाई देती है।

रानी०। हां वहां से बखूबी दिखाई देती है, अच्छा तब क्या हुआ?

द्रौपदी०। थोड़ी देर बाद मैंने एक आदमी को उस खिड़की की राह कमन्द लगा कर नीचे उतरते देखा। नीचे और भी दो आदमी उसके साथी खड़े थे जिन्हें लेकर वह बाग में घुस गया, फिर न मालूम कहां गया और क्या हुआ। उसके बाद मैं घूमती फिरती तुम्हारे पास चली आई।

बीबी द्रौपदी की अनहोनी बातें सुन रानी साहेबा उठ कर बैठ गईं और आश्चर्य के साथ द्रौपदी का मुंह देखने लगीं और कुछ देर के बाद फिर बोलीं।

रानी०। तुम सच कह रही हो या किसी स्वप्न की बातें मुझे सुनाती हो? भला भैयाराजा की स्त्री और किसी गैर आदमी से बातें करे! सो भी अकेले कमरे में दरवाजा बन्द करके! बेशक वह कोई गैर आदमी था तभी तो कमन्द लगा कर चोरी से आया और गया।

द्रौपदी०। (रानी का पैर छू कर) मैं तुम्हारी ही शपथ खा कर कहती

हूँ कि मैंने एक शब्द भी तुमसे झूठ नहीं कहा।

रानी०। अच्छा तो मैं महाराज से इसका जिक्र करूं? मुझे झूठा तो नहीं बनना पड़ेगा?

द्रौपदी०। अगर वह मर्द जो कह गया है कि कल मैं इसी समय फिर आऊंगा अपने कौल का सच्चा निकला तो तुमको कदापि झूठा न बनना पड़ेगा।

रानी०। इसका क्या मतलब?

द्रौपदी०। यही कि अगर कल वह न आया तो आज जो कुछ मैंने सुना है उसकी सचाई के लिये मैं किसकी गवाही दे सकूंगी?

रानी०। (कुछ सोच कर) खैर देखा जायगा, तुम किसी लौंडी को तो बाहर से बुलाओ।

आज्ञा पाते ही द्रौपदी बाहर चली गई और एक लौंडी को बुला लाई, रानी साहेबा ने उसे आज्ञा दी कि तू महाराज के पास जाकर मेरी तरफ से निवेदन कर कि मैं इसी समय महाराज का दर्शन किया चाहती हूँ। अगर वे निद्रा में हों तो किसी अच्छे ढंग से उन्हें जगा दीजियो।

"जो आज्ञा" कह कर लौंडी वहां से चली गई। उसके बाद रानी साहेबा की आज्ञानुसार द्रौपदी भी सोने के लिये अपने कमरे में चली गई।

थोड़ी देर के बाद महाराज महल में आये और दो घण्टे तक रानी साहेबा के पास बैठे, इस बीच में क्या क्या बातें हुईं सो कोई नहीं जानता, हां दूसरे दिन इस बात की तैयारी जरूर हुई कि भैयाराजा की स्त्री के पास जो आदमी आने वाला है उसकी बातें सुननी चाहियें और उसे गिरफ्तार भी करना चाहिए।

नौवाँ बयान

आधी रात का समय है और चारो तरफ अन्धकार छाया हुआ है। शहर के गली कूचों में भी अच्छी तरह सन्नाटा हो रहा है। सिवाय पहरा देने वालों के और किसी आने जाने वाले की सूरत दिखाई नहीं पड़ती। सम्भव है कि मकान के अन्दर रहने वाले भी गहरी नींद में पड़े हुए खुर्राटा भर रहे हों मगर तिलिस्मी दारोगा की आंखों में नींद नहीं है, वह अपने खास कमरे में एक गावतकिये के सहारे बैठा हुआ तरह तरह की चिन्ता कर रहा है, सामने एक मोमी शमादान

जल रहा है और लिखे तथा सादे कागज बहुत फैल रहे हैं, कभी कभी वह उठा कर किसी कागज को देख लेता है और फिर उसे जमीन पर रख कर तकिये के सहारे लुढ़क जाता है। इसी समय दरबान ने आकर इत्तला दी कि, गदाधर-सिंह आये हैं, आपसे मिला चाहते हैं।

"उन्हें मेरे पास ले आओ।" कह कर दारोगा चैतन्य होके बैठ गया, फैले हुए कागजों में से कई कागज उठा कर उसने गद्दी के नीचे दबा दिये और भूतनाथ के आने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी देर में भूतनाथ भी आ पहुँचा जिसे देखते ही दारोगा साहब उठ खड़े हुए और साहब सलामत के बाद बड़ी खातिर से भूतनाथ को अपने पास बैठा कर और बातचीत करने लगे।

भूत०। आपने मुझे "बसन्त बाग" में बुलाया था मगर बुखार आ जाने के कारण मैं समय पर न आ सका क्षमा कीजियेगा। कहिये क्या काम था?

दारोगा०। (आश्चर्य से) मैंने तो आपको बसन्त बाग में नहीं बुलाया था।

भूत०। तो क्या जयपाल ने अपनी तरफ से यह बात कही थी?

दारोगा०। जो कुछ हो! मगर जैपाल आपके पास क्यों गया था?

भूतनाथ०। (मुस्कुराता हुआ) वही बेहोशी की दवा से भरी हुई अनूठी डिबिया सुंघाने के लिये! भला यह आपको क्या सूझी? वह डिबिया किस मतलब से आपने भेजी थी?

दारोगा०। (आश्चर्य से) आप क्या कह रहे हैं सो कुछ भी मेरी समझ में नहीं आता! मैंने जयपाल को आपके पास नहीं भेजा और न कोई डिबिया ही भेजी! यह कब की बात है?

भूत०। अभी यह परसों का जिक्र मैं कर रहा हूँ जब यहां से जमना सरस्वती और इन्दुमति को ले गया था।

दारोगा०। नहीं कदापि नहीं!

भूत०। (घबराहट के साथ) तब तो मालूम होता है कि किसी ऐयार ने मुझे धोखे में डाला या खुद जैपाल ने मुझसे छेड़खानी आरम्भ की है।

दारोगा०। पहिले आप अपना खुलासा हाल बयान कर जाइये तब मैं सोचूं और राय दूँ।

दारोगा की बात सुन कर भूतनाथ ने वह कुल हाल बयान कर दिया जो कि हम ऊपर के बयान में लिख आये हैं अर्थात् जमना सरस्वती और इन्दु को मारती समय यकायक जयपाल का जा पहुँचना और भूतनाथ को खून करने से रोक दारोगा की तरफ से संदेशा और बेहोशी की डिबिया देना जिसे सूंघ कर भूतनाथ का बेहोश हो जाना और होश में आने के बाद जमना सरस्वती और इन्दुमति को मार कर गड्हे में दबा देना और फिर यकायक कई सवार आते हुए दिखाई देने के कारण खुद भाग जाना और जयपाल को भी भगा देना इत्यादि बयान किया जिसे सुन कर दारोगा घबड़ा गया और कांपती हुई आवाज में भूतनाथ से बोला, "यह बड़ा ही गजब हुआ! किसी गहरे ऐयार ने तुम्हें धोखा दिया और ताज्जुब नहीं कि जमना सरस्वती तथा इन्दुमति का भेद भी उसने मालूम कर लिया हो (ऊंची सांस लेकर) हाय! मैं बड़ी मुसीबत में फंस गया हूँ, भूतनाथ! बेशक तुम्हारी बदौलत मैं मुसीबत का शिकार हुआ चाहता हूँ। यहां जो कुछ दुर्घटना हो गई है वह तुम्हारी घटना से कहीं बढ़ कर भयानक है। मालूम होता है कि हम और तुम दोनों ही किसी मुसीबत में फँसा चाहते हैं! निःसन्देह यह सब तुम्हारी ही बदौलत है!"

दारोगा का यह कहना कि यह सब तुम्हारी ही बदौलत है। भूतनाथ को बहुत ही बुरा मालूम हुआ मगर अभी बिगड़ने का मौका न देख कर तरह दे गया और बोला, "भला कहिये तो सही यहां क्या मामला हुआ?"

दारोगा०। जब तुम जमना सरस्वती और इन्दुमति को लेकर चले गये मैंने भैयाराजा को मार डालने की फिक्र की। परन्तु जब मैंने उन्हें उस मकान में ढूंढ़ा तो एक ठिकाने उन्हें मुर्दा पाया। उन्होंने अपने हाथ से कलेजे में छुरी मार कर जान दे दी थी। खैर मैं उन्हें वहां से उठा कर ले गया और एक ठिकाने जमीन के अन्दर गाड़ कर निश्चिन्त हो गया। उसके बाद रात को मैंने उन्हें भूत प्रेत की सूरत में देखा और हमारे महाराज को भी दिखाई दिये।

भूत०। यह बड़े आश्चर्य की बात आप कह रहे हैं!!

दारोगा०। हां, मैं खुलासा कहता हूँ सुनो।

इतना कह कर दारोगा ने जो कुछ रात के समय देखा था और महाराज ने उन्हें बुला कर जो कुछ कहा था सब बयान किया जिसे बड़े आश्चर्य के साथ

भूतनाथ ने सुना और अन्त में कहा:—

भूत०। मुझे इस बात का विश्वास नहीं होता कि भैयाराजा ने भूत होकर आप लोगों के साथ दिल्लगी की हो।

दारोगा०। तो क्या मैं झूठ कह रहा हूँ?

भूतनाथ०। सो तो मैं नहीं कह सकता कि आप झूठ कह रहे हैं, मगर...

दारोगा०। मगर क्या?

भूत०। अच्छा आप पहिले यह बतलाइये कि भैयाराजा को कहां गाड़ा था।

दारोगा०। सो तो मैं नहीं बता सकता क्योंकि यह बड़ा ही नाजुक मामला है।

भूतनाथ०। इससे तो यही मालूम होता है कि आप मुझसे कपट रखते हैं।

दारोगा०। नहीं नहीं सो बात नहीं है, सिर्फ इतना ही है कि ऐसे नाजुक मामले को हम किसी दूसरे पर प्रगट नहीं किया चाहते।

भूत०। ठीक ही है, खैर जब मुझे गैर की पदवी मिली तो मुझे भी आपसे हर वक्त चौकन्ना ही रहना चाहिये, अच्छा तो अब आप जयपाल को बुलवाइये तो मैं अपने विषय में आपके सामने ही उससे बातचीत करूं।

उसी समय आहट देता हुआ दरबान हाजिर हुआ और बोला, "जयपाल-सिंहजी आये हैं, हाजिर हुआ चाहते हैं।"

दारोगा०। लो जयपाल भी आ ही गया, अच्छा उसे जल्द आने दो।

बात की बात में जयपाल आ पहुँचा और दारोगा तथा भूतनाथ को सलाम कर बैठ गया।

भूत०। (जयपाल से) कहो मिजाज तो अच्छा है?

जय०। ईश्वर की कृपा से अच्छा हूँ।

भूत०। उस दिन तो तुमने मुझे अच्छा धोखा दिया, डिबिया सुंघा कर चौपट ही कर चुके थे।

जय०। (आश्चर्य से) कैसी डिबिया!!

भूत०। वही जो दारोगा साहब की तरफ से तुम मेरे पास ले गये थे, जिसे सूंघ कर हम और तुम दोनों बेहोश हो गये थे!!

जयपाल०। मेरी समझ में नहीं आता कि आप क्या कह रहे हैं! मैं काहे डिबिया ले के आपके पास नहीं गया था। (दारोगा की तरफ देख कर) ये

क्या कह रहे हैं आपने कुछ समझा ?

दारोगा० । मैं सब कुछ समझ सुन चुका हूँ, इनको किसी ऐयार ने उल्लू बनाया है उसकी जलन हम लोगों पर निकाला चाहते हैं !

इतना कह के दारोगा ने वह सब हाल बयान किया जो भूतनाथ ने जयपाल के विषय में बयान किया था। जयपाल को सुन कर बड़ा ही दुःख हुआ और उसने झुंझला कर कहा, "उस कम्बख्त ऐयार को मेरी ही सूरत बन कर गदाधरसिंह को धोखा देना था ! जहां तक मैं समझता हूँ, उस ऐयार ने केवल इतना ही नहीं किया होगा कि गदाधरसिंह को सिर्फ बेहोश करके चला जाय, बल्कि उसने और भी कोई न कोई गहरी कार्रवाई जरूर की होगी।"

भूत० । अब तो मुझे भी ऐसाही खयाल होता है ।

इसके बाद बहुत देर तक उन तीनों में बातचीत होती रही और अन्त में दारोगा साहब ने चोबदार को हुक्म दिया कि अस्तबल में से तीन घोड़े तैयार करा कर बहुत जल्द मंगावे। थोड़ी ही देर में घोड़े भी आ गये और दारोगा साहब जयपाल तथा भूतनाथ उन घोड़ों पर सवार होकर उत्तर की तरफ रवाना हुए। उस समय रात अनुमान घण्टे भर के बाकी रह गई थी।

शहर से बाहर निकल जाने के बाद तीनों ने अपने अपने घोड़ों की चाल तेज की और बड़ी तेजी के साथ जंगल की तरफ जाने लगे, यहां तक की सवेरा होते होते तीनों आदमी वहां जा पहुँचे जहां भूतनाथ ने जमना सरस्वती और इन्दुमति का खून किया था और जहा पर नकली जयपाल भूतनाथ से जाकर मिला था।

तीनों आदमी घोड़ों से नीचे उतर पड़े और तीनों ने अपने अपने घोड़े लम्बी बागडोर के सहारे पेड़ों के साथ बांध कर चरने के लिये छोड़ दिये। इसके बाद भूतनाथ दारोगा और जैपाल को साथ लिये हुए उस जगह पहुँचा जहां उसने जमना सरस्वती और इन्दुमति की लाश गड्ढे के अन्दर डाल कर मिट्टी और कतवार से ढंक दी थी। तीनों ने मेहनत कर मिट्टी हटाई और उसके अन्दर से उन तीनों लाशों को निकाल कर बाहर किया। यद्यपि वे लाशें अभी तक सड़ी न थीं तथापि फूल गई थीं और उनमें बू पैदा हो गई थी। उन तीनों लाशों के सर भी जो उन्हीं के साथ गाड़ दिये गये थे और अब लाशों के साथ

बाहर निकाले गये अपनी असली हालत में न थे अर्थात् चेहरे पर का रंग रोगन जो ऐयारी के ढंग पर चढ़ाया हुआ था जगह जगह से बिगड़ कर नीचे असली रंग झलक मार रहा था जिसे देखते ही भूतनाथ चौंका और उसके मुंह से बेतहाशा ये शब्द निकल पड़े, "हाय ! क्या गजब हो गया !!"

तीनों घोड़ों के तोशेदान में पानी का बोतल भरा हुआ मौजूद था जिसे भूतनाथ ने निकाला और उससे तीनों मुर्दों के चेहरे साफ करने बाद भूतनाथ ने एक लम्बी सांस ली और दारोगा की तरफ देख कर कहा, "ये ही जमना सरस्वती और इन्दुमति तुमने मेरे हवाले की थी ?"

दारोगा० । (घबराहट और आश्चर्य के साथ) मैं खुद ताज्जुब कर रहा हूँ कि यह क्या मामला है ! मैंने जो कुछ किया उस काम में तुम भी तो शरीक थे ।

भूत० । हाय हाय ! मेरे इन होनहार नौजवान शागिर्दों को तुम्हें मेरे ही हाथ से मरवाना था ?

दारोगा० । इसमें मेरा क्या कसूर है ? मुझे तुम क्यों बदनाम करते हो ?

भूतनाथ० । तुम्हारा नहीं तो और जिसका कसूर है ? तुम्हीं ने तो जमना सरस्वती और इन्दुमति को मेरे हवाले किया !!

दारोगा० । अगर इस बारे में मैंने धोखा खाया तो तुमने क्यों नहीं पहिचान लिया कि ये वास्तव में जमना सरस्वती और इन्दुमति नहीं हैं बल्कि तुम्हारे ही शागिर्द हैं । इसके अतिरिक्त इस बात को तो सोचो कि तुम्हारे इन शागिर्दों को जमना सरस्वती और इन्दुमति बनने की क्या जरूरत थी ? और अगर उन्होंने ऐसा किया भी था तो तुम पर यह भेद क्यों नहीं खोल दिया ! या जिस समय तुम उनका सर काटने लगे थे उस समय उन्होंने तुमको क्यों नहीं कह दिया कि हमलोगों को मत मारो हम लोग तुम्हारे ही शागिर्द हैं ?

भूत० । मैं नहीं समझता कि उन लोगों ने ऐसा क्यों नहीं किया ! सम्भव है कि इसमें भी कुछ तुम्हारी ही कारीगरी हो ।

दारोगा० । बड़े अफसोस की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार ऐयार हो कर ऐसी बात जुबान से निकालते हो !!

भूत० । (अपना माथा पीट कर) हाय मैं क्या कहूँ और क्या करूं ? मैं तो बर्बाद हो गया ! इन बेचारे नौजवान शागिर्दों का मुझे बड़ा ही भरोसा था ।

अच्छा खैर तुमने नहीं तो इस मामले में इस (उंगली से इशारा कर के) जयपाल ने जरूर कोई कार्रवाई की है।

जय०। ठीक है, अपनी बेवकूफी की झुंझलाहट निकालने के लिये आपने मुझी को ताक रक्खा था।

भूतनाथ ने जयपाल की बात का कुछ भी जवाब न दिया और उन लाशों के पास बैठ गया तथा सर पर हाथ रख के कुछ सोचने लगा। उस समय उसकी आंखों से आंसू की बूंदें टपाटप गिर रही थीं।

बहुत देर तक सोचने और गौर करने के बाद भूतनाथ ने सर उठाया और रूमाल से आंखें पोंछने के बाद दारोगा की तरफ देखा और कहा, "हां कुछ कुछ बात समझ में आती है।"

दारोगा०। (उत्कण्ठा के साथ) सो क्या ? जरा मैं भी सुनूं !

भूत०। सो अभी मैं कुछ भी न कहूँगा।

दारोगा०। तब कब कहोगे ?

भूत०। जब मैं भैयाराजा की लाश को जांच कर के देख लूंगा कि उसमें भी तो धोखा नहीं है।

भूतनाथ की बात ने दारोगा के होश उड़ा दिये। इस शब्द ने कि उसमें भी तो धोखा नहीं है ! दारोगा के दिल और दिमाग में खलबली पैदा कर दी, उसने सोचा कि ईश्वर न करे अगर उस लाश में भी कहीं इसी तरह का धोखा निकला तो बड़ा ही अन्धेर हो जायगा।

भूतनाथ ने दारोगा के चेहरे का रंग उड़ा हुआ और उसे कुछ सोचते हुए देख कर फिर कहा, "दारोगा साहब ! आश्चर्य नहीं कि भैयाराजा की लाश में भी इसी तरह का धोखा हो ! और अगर वास्तव में ऐसा ही निकला तब मैं आपको बताऊंगा कि इस समय क्या सोचता था और क्या निश्चय किया। अब मैं अपने दिल पर पत्थर रख कर इन लाशों को गाड़ देता हूँ फिर देख लूंगा, जिसने मेरे साथ ऐसी चालाकी की है उसे मै छट्ठी का दूध न याद दिला दूं तो मेरा नाम गदाधर नहीं !!"

इतना कह कर भूतनाथ ने दारोगा और जयपाल की मदद लेकर उन लाशों को पुनः उसी गड्ढे में दबा दिया और ऊपर अच्छी तरह मिट्टी वगैरह डाल

कर उसने दारोगा से कहा, "अब चलिए मैं भी आपके साथ आपके घर चलता हूँ जहां मुझे आप भैयाराजा की लाश दिखाइये।"

दारोगा०। घर चलने में तो कोई हर्ज नहीं, आप उसे भी अपना घर समझ कर खुशी से चल सकते हैं मगर फिर कहता हूँ कि आपको उस जगह नहीं ले जा सकता जहां भैयाराजा को गाड़ा है।

भूत०। जयपाल को आप उस जगह ले जा सकते हैं?

दारोगा०। हां जयपाल को मैं अपने गुप्त कार्य में बराबर साथ रखता हूँ। आप इसके लिए तरद्दुद न कीजिये, बेहतर होगा कि आप आज का दिन किसी दूसरे काम में बिताइये और कल मेरे पास आइये, इस बीच में भैयाराजा की लाश को अच्छी तरह देख और जांच लूंगा।

दारोगा की बात से भूतनाथ बहुत ही चिढ़ गया मगर उसने अपने दिल का भाव प्रगट नहीं किया। उसमें और दारोगा में जो दोस्ती थी आज एक मामूली पेंच पड़ जाने के कारण जाती रही और दोनों ही के दिल में एक तरह की गांठ पड़ गई। भूतनाथ ने मान लिया कि इस धोखेबाजी के मामले में दारोगा जरूर शरीक है या यह बिल्कुल ही दारोगा का काम है और इसी तरह दारोगा समझने लगा कि भूतनाथ हमसे चालबाजी खेल कर अपना कोई काम निकाला चाहता है या ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ मेरे साथ दुश्मनी का बर्ताव करके मेरा भेद खोल दे, अस्तु जो हो इस समय भूतनाथ ने अपने दिली जोश को दबा कर दारोगा की बात मान ली और उसका घोड़ा छोड़ कर पैदल ही उत्तर की तरफ रवाना हो गया। दारोगा और जयपाल घोड़े पर सवार हो कर शहर की तरफ चले और खाली घोड़े की लगाम थामे हुए जयपाल उसे अपने घोड़े के साथ ले चला।

दसवां बयान

संध्या का समय है सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं, हवा में किसी कदर खुनकी है तो सही परन्तु वह भली मालूम होती है, ऐसे समय में हम नहीं कह सकते कि तिलिस्मी दारोगा साहब किस नीयत से अपने मकान के पीछे वाले नजरबाग में टहल रहे हैं, इनकी ऐसी आदत न थी, उन्हें लोगों ने सन्ध्या के समय दिल बह-

लाने के लिये किसी बाग में टहलते हुए बहुत कम देखा होगा, आज गैरमामूली तौर पर उसका टहलना बेसबब नहीं है, उसका घड़ी .घड़ी ठण्डी सांसें खैंचना और घबराहट के साथ इधर उधर देखना कहे देता है कि इस समय वह किसी गहरी चिन्ता में निमग्न हो रहा है, साथ ही इसके बीच बीच में उसके बदन में कम्प तथा रोमाञ्च के हो जाने से विश्वास होता है कि वह किसी कारण से भयभीत हो रहा है। केवल इतना ही नहीं एक दफे उसने बड़ी बेचैनी के साथ दाहिने हाथ से अपना माथा भी ठोंका जिससे जाना जाता है कि उसने जरूर कोई बुराई का काम किया है जिसके लिये अब यह पछताता है और दिल में कहता है कि कहां की शामत आई थी जो मैंने यह काम किया !!

इसी तरह बहुत से परेशानी और घबराहट के चिन्ह पैदा करता हुआ दारोगा बड़ी बेचैनी से कदम उठाता हुआ अपने बाग में टहलता और थोड़ी थोड़ी देर में सर उठा कर फाटक की तरफ देखता है लगभग आधे घण्टे के बाद जयपालसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जो कदम बढ़ाये हुए उसी की तरफ आ रहा था। जब वह नजदीक पहुँचा तो दारोगा ने उससे कहा, "ओफ ! तुमने आने में बहुत ही विलम्ब कर दिया।"

जयपाल०। (गौर से दारोगा के चेहरे की तरफ देख के) क्यों ! इस समय आप बहुत ही उदास और दुखित जान पड़ते हैं !!

दारोगा०। मेरे प्यारे दोस्त ! इस समय मेरी अवस्था बहुत ही बुरी हो रही है, मैं अपने किये पर बहुत पछता रहा हूँ ! सच तो यह है कि आज मैं अपनी जिन्दगी से भी निराश हो बैठा हूँ मेरी जिन्दगी के अन्धकारमय कैदखाने में केवल एक तुमही टिमटिमाते हुए 'चिराग' हो। मैं इस लिये कह रहा हूँ कि मेरी जिन्दगी के साथ तुम्हारी जान का भी बहुत बड़ा सम्बन्ध है।

जयपाल०। बेशक ऐसा ही है।

दारोगा०। मुझे इस समय केवल एक तुम्हारा ही भरोसा है।

जयपाल०। आखिर मामला क्या है सो तो कहिये? क्या भैयाराजा की लाश में कुछ धोखा निकला ?

दारोगा०। कुछ क्या बिल्कुल ही धोखा निकला, जिसे मैंने भैयाराजा की लाश समझ जमीन के अन्दर गाड़ दिया था। वह वास्तव में मेरे ही एक ऐयार

की लाश निकली मैं कह नहीं सकता कि कब और किस ढङ्ग से इसकी बदली हुई। मैं यह भी नहीं कह सकता कि भैयाराजा वास्तव में भैयाराजा न थे जिन्हें मैंने अपने मकान में लाकर फँसाया था।

जयपाल०। भला यह भी कोई बात है कि आप ही का ऐयार भैयाराजा बन कर आवे और आप ही को डांट बतावे !!

दारोगा०। यह कदापि नहीं हो सकता।

जयपाल०। मगर यह वास्तव में बहुत बुरी बात हुई! उधर जमना सरस्वती और इन्दुमति के मामले में भी किसी ने धोखा दिया और इधर भैयाराजा के.....

दारोगा०। मेरी समझ में नहीं आता कि यह बात क्या हुई क्या मेरा कोई दुश्मन मेरे घर में घुस आया और मेरे ही घर में से उन सभों को बदल कर ले गया! मगर यह भी एक असम्भव बात है, मेरे भूलभुलैये मकान की किसी दुश्मन को क्या खबर होगी !!

जयपाल०। यह तो न कहिये, आपके मकान को एक ही रात में विश्वकर्मा ने तो बनाया नहीं है, आखिर राज मजदूरों ही ने तो बनाया है।

दारोगा०। हां ठीक है परन्तु यह बताओ कि अब किस तरह जान बचे, किस तरह दुश्मन का पता लगे और किस तरह इस मामले का सच्चा सच्चा हाल मालूम हो।

जयपाल०। यह कोई मामूली बात नहीं है, इसके लिये बहुत कुछ मेहनत करनी पड़ेगी तब कहीं दुश्मन का पता लगेगा, खैर इस काम को तो पीछे रखिये पहिले अपने को इलजाम से बचाने की फिक्र करिये, मेरा खयाल है कि महाराज ने जो भूत देखा था वह भूत न था बल्कि वास्तव में भैयाराजा ही थे। आपको जहन्नुम में मिलाने के लिये वे एक अनूठा नाटक तैयार कर रहे हैं।

दारोगा०। बेशक ऐसा ही है, मुझे भी जो भूत दिखाई दिया था वे भी असली भैयाराजा ही होंगे।

जयपाल०। जरूर वह भी भैयाराजा ही होंगे, अपना नाटक दिखा कर अनूठे ढंग से प्रगट हुआ चाहते हैं।

दारोगा०। फिर अब क्या किया जाय?

जयपाल० । मैं क्या बताऊं ? आप से ज्यादे इस विषय में और कौन सोच सकता है ? मुझे जो कुछ आज्ञा दीजिये उसे करने के लिये मैं तैयार हूँ ।

दारोगा० । (कुछ सोच कर) चाहे जो कुछ हो मगर भैयाराजा मुझे महाराज के सामने दोषी कदापि न ठहरा सकेंगे, यों उन्हें अख्तियार है चाहे स्वयम् अपने हाथ से मेरा सर काट डालें मगर जबर्दस्ती के सिवाय इन्साफ का काम यह कदापि न कहला सकेगा और हमारे महाराज इन्साफ के लिये अपनी जान देते हैं, बेइन्साफी का काम कदापि न होने देंगे !

जयपाल० । (आश्चर्य से) क्यों साहब ! यह क्या बात है ? भैयाराजा अगर जीते हैं तो आपको दोषी क्यों न ठहरा सकेंगे ?

दारोगा० । भैयाराजा को यह तो मालूम ही नहीं होगा कि मैंने उन्हें मुर्दा समझ कर बदनीयती के साथ जमीन के अन्दर गाड़ दिया है !!

जयपाल० । हां ठीक है, यह बात उन्हें कैसे मालूम हो सकती है ? मगर हां इस बात का सवाल जरूर हो सकता है कि आखिर उस लाश को जो उन्हीं की सूरत की सी थी तुमने क्या किया ? अगर तुम्हारी नीयत ठीक थी तो तुमने हल्ला क्यों न मचाया, प्रगट क्यों नहीं किया और महाराज से यह हाल क्यों नहीं कहा ? उसको छिपाया क्यों ?

दारोगा० । ओफ !! यह दूसरी बात है, इसके लिये समय पर काफी जवाब हो सकता है और इसके लिये मैं इन्कार कर सकता हूँ कि वहां अर्थात् मेरे घर में कोई भी लाश नहीं पाई गई भैयाराजा स्वयं भाग के चले गये । दूसरे की तो बात ही दूर है खुद भैयाराजा ही मुझे किसी तरह कायल नहीं कर सकते और वे इतना भी नहीं बता सकते कि मैंने उनके साथ किसी तरह की बेअदबी की । हां एक बात जरूर है, वे इतना कह सकते हैं कि हमें उस भूलभुलैये मकान में फँसा कर तुम चले गये और फिर लौट कर नहीं आये । सो खैर मैं इसके लिये भी कोई जवाब सोच लूंगा ।

जयपाल० । अगर यही बात है तो फिर आप इतना डरते क्यों हैं !!

दारोगा० । डरते जरूर हैं, मेरी हिम्मत टूटी जाती है और भैयाराजा के नाम से डर कर मेरा कलेजा उछलने लगता है ।

जयपाल० । इसका सबब जरूर यही होगा कि आप किसी न किसी बात में

लाजवाब जरूर हो जायेंगे, और नहीं तो सिर्फ इन्हीं बातों का जवाब देना आपको कठिन हो जायगा कि आपने भैयाराजा के असली मामले की महाराज को खबर क्यों नहीं की? यह क्यों नहीं जाहिर किया कि वे आपके बाग में आये थे और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को आपके कैद से छुड़ाने की उन्होंने फिक्र की थी इत्यादि।

दारोगा०। हां बात जरूर खटके की है! (कुछ सोच कर) अगर तुम्हारी राय हो तो राजा साहब को मैं इस मामले की खबर कर दूँ और कुछ अपनी तरफ से समझा बुझा भी दूँ, तुम जानते ही हो कि वे निरे भोलेनाथ हैं! (रुक कर और चौंक कर) हां एक बात तो मैंने तुमसे कही ही नहीं!

जयपाल०। वह क्या?

दारोगा०। मुझे खबर मिली है कि आज जनानी महल के पीछे वाले नजर-बाग में गुप्त रीति पर सख्त पहरे का इन्तजाम हो रहा है, पहरा देने वाले इस तरह छिप कर पेड़ों की आड़ में बैठेंगे कि बाग के अन्दर आने वाला कोई आदमी उन्हें न देख सकेगा और वे बाग के अन्दर आने वाले को बखूबी देख लेंगे और गिरफ्तार कर लेंगे।

जयपाल०। यह खबर आपको किसने दी है?

दारोगा०। उन्हीं पहरे पर मुकर्रर किये गये हुए आदमियों में से एक आदमी ने मुझे खबर दी है।

जयपाल०। हां बेशक वे सब तो आपके हितैषी ही हैं, मगर यह भी कुछ मालूम हुआ है कि ऐसा इन्तजाम करने का सबब क्या है?

दारोगा०। सो तो ठीक मालूम नहीं हुआ मगर अन्दाज से हम समझते हैं कि जिस तरह भैयाराजा भूत बन कर मुझे और महाराज को दिखाई दिये हैं उसी तरह भूत बन कर शायद महल में भी गये होंगे और यकायक भूत की तरह गायब न हो सके होंगे किसी ने भागते हुए देख लिया होगा और समझा होगा कि यह कोई आदमी है, या इसी तरह की कोई बात भई होगी जिस पर महाराज ने यह समझ कर कि आज पुनः वह आवेगा गिरफ्तार करने के लिये ऐसा इन्तजाम किया होगा।

जयपाल०। हां जरूर कोई ऐसी ही बात हुई होगी, ऐसी अवस्था में आपको

ऐसा इन्तजाम करना चाहिए कि जब वह आदमी गिरफ्तार हो (ईश्वर करे वह भैयाराजा ही हों) तो उसे महाराज के पास पहुँचाने के बदले गिरफ्तार करने वाले सीधे आप ही के पास पहुँचा दें, अगर वह वास्तव में भैयाराजा निकले तो फिर कहना ही क्या है। आपके पौबारह हैं !!

दारोगा० । यह तुमने अच्छी सलाह बताई और इस काम को मैं बखूबी कर सकूंगा। और इस तरह पर भैयाराजा हाथ में आ गये तब तो मेरे समान इस दुनिया में कोई नहीं, अगर ऐसा न हुआ तो फिर अपने लिये बहुत कुछ चिन्ता करनी पड़ेगी। अच्छा अब मैं तुमसे थोड़ी सी बातें और करूंगा मगर यहां नहीं।

इतना कह कर दारोगा ने जयपाल का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने साथ लिए हुए मकान की तरफ चला गया।

ग्यारहवां बयान

जनानी महल के पीछे वाले नजरबाग में आज दिन ही से गुप्त पहरे का इन्तजाम हो रहा है। महारानी ने भैयाराजा की स्त्री के विषय में जो कुछ महाराज को इत्तला दी थी उसके लिये महाराज को बड़ी ही चिन्ता थी, उन्हें इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उनके महल में कोई गैर आदमी आ घुसे और फिर अछूता चला जाय ! उन्होंने अपने दिल में इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि चाहे जिस तरह हो सके उस आदमी को जरूर गिरफ्तार करना चाहिए जो महल के अन्दर भैयाराजा की स्त्री के पास गया था, सम्भव है कि उसके गिरफ्तार हो जाने से भैयाराजा का भी कुछ पता चल जाय, अस्तु इस काम के लिए उन्होंने कई दिलावर और होशियार आदमी पहरे पर मुकर्रर कर दिये और उन्हें ताकीद कर दी कि वे बहुत ही गुप्त ढंग पर तथा पेड़ों और झाड़ियों की आड़ में छिप कर पहरा दें और बाग तथा महल के अन्दर आते समय किसी को न रोकें परन्तु लौट कर जाते समय अवश्य ही गिरफ्तार कर लें।

इसके अतिरिक्त महाराज ने खुद भी उसी बाग में एक खास जगह पर रह कर रात बिताने का इरादा कर लिया था जिसकी खबर किसी को भी नहीं दी गई थी, यहां तक कि उस बाग में पहरा देने वालों से भी यह भेद छिपाया गया।

यह तो महाराज का इन्तजाम था, अब दारोगा साहब ने क्या किया सो सुनिये। दारोगा साहब को इस बात की पूरी पूरी खबर लग गई कि बाग में पहरे के लिए कौन कौन आदमी मुकर्रर किये गये हैं और उन्हें क्या क्या समझाया गया है क्योंकि राजकर्मचारियों में से बहुत से आदमी दारोगा से मिले हुए थे। सबब यह था कि एक तो दारोगा रिश्वत के ढंग पर बहुत सा रुपया उन लोगों में बांटा करता था, दूसरे जमानिया राज्य का बड़ा अफसर होने के कारण लोग उससे डरते भी थे। आज भी दारोगा साहब ने अपना काम निकालने के लिए उन लोगों में बहुत सा रुपया बांटा और काम हो जाने के बाद बहुत कुछ इनाम देने का वादा भी किया। काम उन लोगों के जिम्मे यह सुपुर्द किया कि जब कोई आदमी उस बाग में गिरफ्तार हो तो उसे महाराज के पास न ले जाकर सीधे दारोगा के पास पहुँचा दें और महाराज से कह दें कि चोर भाग गया या गिरफ्तार ही नहीं हुआ जैसा मौका हो वैसा बहाना कर दें।

केवल इतना ही नहीं बल्कि दारोगा ने अपने कई आदमी भी रात के समय उस बाग में काम करने के लिए तैनात कर दिये जिसकी खबर महाराज को कुछ भी न थी।

दिन बीत गया और रात हुई, नजरबाग में पहरा देने वाले बड़ी मुस्तैदी के साथ नजर दौड़ाने टोह लेने और धीरे धीरे इधर उधर घूमने लगे। आधी रात जाते तक तो किसी को किसी तरह का खटका न हुआ, मगर इसके बाद पहरेवालों ने एक नकाबपोश को दीवार फांद कर बाग के अन्दर आते हुए देखा।

सभी पहरे वाले उसे देख कर चैतन्य हो गये और सभों ने मुहाना रोकने की तैयारी कर दी जिसमें वह लौट कर किसी तरह भी भागने न पावे। सभों के देखते देखते वह नकाबपोश जनानी महल की पिछली दीवार के पास जा कर खड़ा हो गया और उस खिड़की की तरफ देखने लगा जो भैयाराजा के खास महल में पड़ती थी, थोड़ी देर तक वह उसी जगह खड़ा खड़ा देखता रहा, इसके बाद उसके ऊपर की तरफ कमन्द फेंकी और जब कमन्द अड़ गई तो उसके सहारे वह ऊपर की तरफ चढ़ गया और आधे घण्टे तक लौट कर नहीं आया। पहरेवालों ने चाहा कि वह कमन्द जिसके सहारे वह ऊपर की तरफ चढ़ गया है खैंच ली जाय जिसमें वह इस रास्ते से उतर न सके और महल ही में गिर-

फ्तार कर लिया जाय परन्तु दारोगा साहब के आदमियों ने उन लोगों को ऐसा करने से रोका और कहा कि अगर यह कैदी इस राह से नहीं लौटेगा और महल में गिरफ्तार हो जायगा तो जरूर वह महाराज के पास भेज दिया जायगा या खुद महाराज महल में पहुँच कर उसे अपने कब्जे में कर लेंगे, ऐसी अवस्था में हम लोगों के हाथ वह न आवेगा और दारोगा साहब का काम न निकलेगा, अस्तु यही अच्छा होगा कि मुजरिम को इसी राह से उतरने दिया जाय।

महाराज के सिपाहियों ने इस बात को कबूल कर लिया और वह कमन्द ज्यों का त्यों छोड़ दिया गया। आधे घण्टे के बाद वह आदमी उसी कमन्द के सहारे नीचे उतरा और उसी समय सब सिपाहियों ने उसे घेर लिया मगर गिरफ्तार न कर सके क्योंकि वह आदमी बड़ा ही मजबूत दिलावर और फुरतीला था। इसके अतिरिक्त महाराज का हुक्म था कि उसके ऊपर कोई हर्बा न चलाया जाय, अगर उस पर हर्बा चलाया जाता तो बेशक इतने आदमियों की भीड़ में से निकल भागना उसके लिये कठिन हो जाता लेकिन बिना हर्बा चलाये उसका गिरफ्तार कर लेना भी कठिन हो गया। महाराज के सिपाहियों को किसी हर्बे से लड़ते हुए न देख कर उस बहादुर ने भी किसी सिपाही पर हर्बे का वार न किया और लड़ता हुआ महल के नीचे से चल कर बाग के किनारे अर्थात् दीवार के पास पहुँच गया। वहां से उसके लिये दीवार फांद कर निकल जाना कोई बात न थी मगर उसने न जाने क्यों बाहर निकल जाने का उद्योग न किया और लोमड़ी की तरह चक्कर काटता हुआ उन सिपाहियों के कब्जे से निकल कर पेड़ों की झुरमुट में जा घुसा ओर सभों की नजरों से गायब हो गया।

अब महाराज के सिपाहियों ने उसे मशाल की रोशनी के सहारे खोजना शुरू किया और आधे घण्टे के बाद एक चमेली की झाड़ी में उसे बेहोश पड़े हुए पाया। उसी समय दारोगा साहब के आदमियों ने उस पर कब्जा कर लिया और उठा कर बाग के बाहर ले गये तथा दारोगा साहब के पास उसे पहुँचा दिया।

बारहवां बयान

पाठकों को याद होगा कि प्रभाकरसिंह तिलिस्म के अन्दर फंसे हुए हैं, वहां उन्होंने एक अनूठे दीवानखाने की दरीची में एक हसीन औरत को देखा जिससे

वे बहुत ही हैरान हुए और आश्चर्य करने लगे।

थोड़ी देर के बाद जब प्रभाकरसिंह का जी ठिकाने हुआ तब उन्होंने पुनः उस औरत से कहा, "क्या तुम्हारा नाम मालती है? या मैं धोखा खाता हूँ!!"

औरत०। नहीं आप धोखा नहीं खाते, बेशक मेरा नाम मालती है, किस्मत ने मुझे बेतरह यहां ला फँसाया है, यद्यपि मुझे यहां किसी तरह की तकलीफ नहीं है बल्कि मैं बहुत सुख के साथ यहां दिन बिताती हूँ परन्तु अपने बन्धु बान्धवों को न देखने से चित्त में एक प्रकार का दुःख अवश्य बना रहता है, इसके अतिरिक्त इस तिलिस्म के अन्दर रहते रहते अब जी ऊब गया है, अब यहां के अलौकिक पदार्थ चित्त को प्रसन्न नहीं करते। पहिले मैंने आपको अच्छी तरह पहिचाना नहीं था इसीलिये मैंने अपना ठीक ठीक परिचय आपको नहीं दिया और बहकाने के लिये कह दिया कि मैं एक राजा की लड़की हूँ इत्यादि, परन्तु जब मैंने आपकी पीठ पर का निशान देख लिया तब साफ साफ बयान कर दिया कि मैं मालती हूँ, इसके अतिरिक्त आपने स्वयं मुझे पहिचान भी लिया।

प्रभा०। यह तो तुमने और भी आश्चर्य की बात सुनाई! यह तो बताओ कि तुम यहां आई क्योंकर और इस तिलिस्म के अन्दर तुम्हारे फंसे रहने का कारण क्या है? मैं मुद्दत से तुम्हारी खोज में हूँ, हजार कोशिश करने पर भी तुम्हारा पता न लगा।

मालती०। अब आप यहां आ ही गये हैं तो कोई बात आप से छिपी न रहेगी धीरे धीरे सब हाल मालूम हो जायगा, ठहरिये मैं स्वयं आपके पास आती हूँ।

इतना कह कर मालती खिड़की में से उठ गई और थोड़ी ही देर में किसी दूसरी राह से दीवानखाने में प्रभाकरसिंह के पास आई और उनका हाथ पकड़ कर बोली, "चलिये महल में चल कर हमसे और आपसे बातें होंगी। मैं इस समय जिस तरह बेहयाई के साथ आपसे मिलती और बातचीत करती हूँ उसके लिये क्षमा कीजियेगा। इस जगह मेरा कोई बड़ा या सम्बन्धी नहीं है जिसका कि मुझे लेहाज हो इसके अतिरिक्त आप चाहे जो कुछ समझते हों परन्तु मैं आपको उसी भाव से देखती हूँ जिस भाव से कोई धर्म्मपत्नी अपने देव तुल्य पति को देखती हो।

प्रभाकरसिंह ने उसकी बातों का कुछ भी जवाब न दिया और चुपचाप उसके पीछे पीछे चल खड़े हुए। मालती उनको लिये हुए दीवानखाने के दाहिनी बगल वाली बारहदरी में चली गई जहां प्रभाकरसिंह ने देखा कि सामने की दीवार के साथ सटा हुआ एक चांदी का सिंहासन रक्खा हुआ है जिस पर कम से कम आठ दस आदमियों के बैठने की जगह है और उस सिंहासन के चारों तरफ हाथ हाथ भर ऊंची खूबसूरत अड़ानी बनी हुई है जो सिंहासन पर बैठे हुए आदमी को नीचे की तरफ लुढ़कने से बचाने के लिये काफी है। ऊपर की तरफ निगाह करके देखा तो इस बारहदरी की छत अन्दाज से बहुत ज्यादे ऊँची दिखाई दी और उस सिंहासन के ठीक ऊपर एक बहुत बड़ा सूराख भी मालूम पड़ा।

H83|K45B

प्रभाकरसिंह को साथ लिए हुए मालती उस सिंहासन पर चढ़ गई और उस पर प्रभाकरसिंह को बैठा कर आप भी उनके पास बैठ गई। बैठने के साथ ही वह सिंहासन ऊपर की तरफ उठने लगा यहां तक कि उसका पेंदा ऊपर वाली छत के बराबर जा लगा और ऐसा मालूम होने लगा कि यह सिंहासन ऊपर वाले कमरे की छत पर रक्खा हुआ है। समझ लेना चाहिए कि ऊपर के कमरे में जाने का यही रास्ता था।

H825

ऊपर वाला कमरा बहुत खूबसूरती के साथ सजा हुआ तो न था परन्तु उसकी बनावट बहुत ही सुन्दर थी और उसमें हर तरह का जरूरी सामान मौजूद था। जमीन पर फर्श लगा हुआ था और उसके ऊपर दो पलंग बिछे हुये थे। एक पलंग पर का बिछावन उम्दा था और दूसरे पर केवल एक गालीचा बिछा हुआ था। इस कमरे की चौड़ाई दस हाथ और लम्बाई बीस हाथ के लगभग होगी। दीवारों में बहुत सी खूटियां लगी हुई थीं और उन पर तरह तरह के जनाने कपड़े लटक रहे थे और जमीन पर संगमर्मर की दो चौकियों के ऊपर कुछ खाने पीने का सामान भी रक्खा हुआ था।

इस कमरे में बाग की तरफ झांकने और देखने के लिये पांच दरवाजे थे और दो दरवाजे भीतर की तरफ ऐसे थे जिनके राह से महल के अन्दर अथवा दूसरे कमरों में जा सकते थे।

मालती ने प्रभाकरसिंह को ले जाकर पलंग के ऊपर बैठाया और आप भी

उनके पास बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगी :—

प्रभाकर० । क्या तुम अकेली ही इस मकान में रहती हो ?

मालती० । जी नहीं, कई लौंडियां और एक ब्राह्मणी भी यहां मेरे साथ रहती हैं । वे सब इस समय अपने अपने काम में लगी हुई हैं । सिवाय इन सब औरतों के कोई मर्द यहां नहीं रहता ।

प्रभा० । तुमको किसने इस तिलिस्म के अन्दर लाकर रक्खा है ?

मालती० । कुँअर गोपालसिंह ने ।

प्रभा० । (आश्चर्य और कुछ क्रोध के साथ) कितने दिन से ?

मालती० । कई वर्षों से ! जब से मैं अपने मकान से गायब हुई तभी से यहां पर हूँ, बीच में साल भर दूसरी जगह थी ।

प्रभा० । किस नीयत से उन्होंने तुम्हें यहाँ लाकर रक्खा है ।

मालती० । अपनी स्त्री बनाने की नीयत से ।

प्रभा० । फिर क्या हुआ ? आखिर तुम उनकी स्त्री बनीं या नहीं ?

मालती० । (लज्जा से सिर नीचे करके) जी हां, आखिर क्या करती ?

प्रभाकर० । कोई औलाद भी उनसे तुम्हें हुई ?

मालती० । जी हाँ साल भर का एक बच्चा है ।

प्रभाकर० । (चारपाई पर से उठ कर) फिर तुम मुझे इस तरह पर क्यों अपने पास बैठाती हो ? तुम्हें ऐसा करना कदापि उचित नहीं है ।

मालती० । (प्रभाकरसिंह का हाथ पकड़ के) ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि मेरी पहिली शादी आप ही के साथ हुई थी ।

प्रभाकर० । मेरे साथ तुम्हारी शादी नहीं हुई थी, हां बारात लेकर तुम्हारे पिता के दरवाजे तक मैं जरूर गया था, जब यह सुना गया कि तुम मकान के अन्दर से गायब हो गईं तब लौट आया क्योंकि उस समय तुम्हारे पिता के मकान में बड़ा ही हाहाकार मच गया था । उसी के दूसरे ही दिन बन्दोबस्त हो जाने के कारण मेरी शादी इन्दुमति के साथ हो गई । (एक लम्बी सांस ले कर) तुम्हारी बातों से मुझे खयाल हुआ था कि तुम अभी तक कुआंरी ही हो मगर अब तुम्हारा ढंग देख कर तुम्हारे इस कथन पर मुझे बड़ा ही खेद होता है कि मैं आपको उसी भाव से देखती हूँ जिस भाव से कोई धर्मपत्नी अपने देव-

तुल्य पति को देखती हो। जब तुम एक आदमी के साथ ब्याही चुकीं और उससे एक औलाद भी तुम्हें हो चुकी तब तुमको मेरे साथ अर्थात् किसी दूसरे पुरुष के साथ ऐसा बर्ताव न करना चाहिये, ऐसे धर्म विरुद्ध कार्य का नतीजा अच्छा नहीं होता।

मालती०। (प्रभाकरसिंह का हाथ छोड़ कर) आपकी आज्ञा मेरे लिये शिरोधार्य है परन्तु मैं फिर भी यही कहती हूँ कि इस जबरदस्ती की शादी को मैं धर्म विवाह नहीं समझती, अब भी मैं यही चाहती हूँ कि आप के घर चल कर रहूँ और बहिन इन्दुमति की सेवा करूँ, मैं उनसे मिल चुकी हूँ और उनकी बातों से मुझे विश्वास हो चुका है कि यह बात उन्हें मञ्जूर है और वह मुझ पर सदैव कृपा रक्खेंगी।

इन्दुमति का नाम सुन कर प्रभाकरसिंह की आंखें डबडबा आईं और उन्होंने एक लम्बी सांस लेकर मालती से कहा, "इस मनमोदक में कोई भी स्वाद नहीं है। हाय! अब तो इन्दु भी इस दुनिया में नहीं रही, व्यर्थ ही उसने अपनी जान दी !!

मालती०। (आश्चर्य से) हैं! यह क्या कह रहे हैं? आज ही रात को मुझसे और उनसे तीन घण्टे तक बातें होती रही हैं।

प्रभा०। क्या खूब! उसे मरे हुए दो दिन हो चुके हैं !!

मालती०। (चारपाई पर से उठ कर मुस्कुराती हुई) जी नहीं, क्षमा कीजियेगा, आप धोखे में पड़ गये हैं। जमना सरस्वती और इन्दुमति तीनों बहिनें कल ही से मेरे यहां मेहमान हैं और मैं आपको उनसे मिला सकती हूँ। आप मेरा तिरस्कार न करें, मैं फिर भी यही कहती हूँ कि मैं आपको अपना पति समझ कर आपकी मदद कर रही हूँ और करूंगी। आपने जो कुछ बर्ताव इन्दु बहिन के साथ किया वह आपको उचित न था।

मालती की बातें सुन कर प्रभाकरसिंह आश्चर्य्य से उसका मुंह देखने लगे और सोचने लगे कि यह क्या कहती है? जब कि मैं स्वयं इन्दु की धधकती हुई चिता देख चुका हूँ तब क्योंकर इसकी बातें मान सकता हूँ? इसके अतिरिक्त जब यह हमारी और इन्दुमति की बातों को जानती थी तो मुझे पहिचानने में इसने धोखा क्यों खाया? पीठ पर का निशान देखने की जरूरत ही क्यों पड़ी?

मालूम होता है कि मेरे यहां तक पहुँचने का कारण भी यही है।

इत्यादि तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह ने पुनः मालती से कहा, "तुम्हारी बातों पर मुझे विश्वास नहीं हो सकता।"

मालती०। मैं आपसे कह चुकी हूँ वे तीनों कल ही से मेरे यहां मेहमान हैं और मैं उन तीनों से आपकी मुलाकात करा सकती हूँ, फिर आप शक क्यों करते हैं?

प्रभा०। हां अगर ऐसा हो तो मैं तुम्हे सच्चा समझ सकता हूँ।

मालती०। बेशक ऐसा ही होगा।

प्रभा०। तो अब बिलम्ब क्या है? तुम मुझे उनके पास ले चलो।

मालती०। मैं आपको उनके पास इसी समय ले चलती मगर ऐसा करने से डरती हूँ कि कहीं इन्दुमति खफा न हो जाँय क्योंकि आपकी बेमुरौवती और बुरे बर्ताव से वे चिढ़ गई हैं, मुझसे आपका नाम ले कर कहती थीं कि अब मैं उनसे कदापि न मिलूंगी। ऐसी अवस्था में उचित है कि पहिले उन्हें मैं समझा कर आपसे मिलने के लिये राजी कर लूं तब आपको उनके पास ले चलूं।

प्रभाकर०। (कुछ सोच कर) खैर मुलाकात न सही दिला देने में तो कोई हर्ज नहीं है!

मालती०। अच्छा मैं उन्हें दूर से आपको दिखा दूंगी।

इतना कह मालती ने प्रभाकरसिंह को पलंग पर बैठने के लिये पुनः जोर दिया और प्रभाकरसिंह भी यह विचार कर मालती के पास पलंग पर बैठ गये कि यह मौका जिद्द करने का नहीं है, इसकी बात मान लेने ही से इस समय अपना काम निकलेगा।"

मालती ने प्रभाकरसिंह की बड़ी खातिरदारी की मगर प्रभाकरसिंह ने अपने दिल का भाव प्रगट न होने दिया और देर तक उससे मीठी मीठी बातें करते रहे, इसके बाद यह कह कर उठ खड़े हुए कि—'अब दिन बहुत ज्यादे चढ़ गया है, स्नान सन्ध्या इत्यादि का बन्दोबस्त होना चाहिये।'

प्रभाकरसिंह की यह बात सुन कर मालती भी उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई एक दरवाजे से कमरे के बाहर हो गई कि जरा सा ठहरिये, मैं अभी इन्तजाम करके आती हूँ तो आपको ले चलती हूँ।

मालती कमरे के बाहर हो गई और प्रभाकरसिंह पलंग पर बैठ कर देर तक उसके आने का इन्तजार करते रहे। आधे घण्टे के बाद लौट कर मालती पुनः प्रभाकरसिंह के पास आई और बोली, "चलिये सब सामान तैयार है।"

अबकी दफे मालती प्रभाकरसिंह को दूसरी ही राह से अर्थात् ऊपर ही ऊपर एक दूसरे मकान में ले गई और वहां से घुमाती हुई एक ऐसे बाग में ले गई जो प्रभाकरसिंह के लिये बिल्कुल ही नया था अर्थात् अभी तक इस बाग को उन्होंने देखा न था। बनिस्बत पहिले बाग के जिसमें प्रभाकरसिंह आये थे इस बाग में फूल पत्तों की अपेक्षा फल और मेवों के दरख्त बहुत ज्यादे थे तथा अमरूद सेव अंगूर और बादाम वगैरह बहुतायत के साथ लगे हुए थे और बाग के बीच में एक सुन्दर बावली भी थी जिसमें मीठा और बिल्लौर की तरह साफ जल भरा हुआ था। उसी बावली के ऊपर एक पत्थर की चौकी पर लोटा गिलास धोती गमछा आसन तथा सन्ध्या पूजा का सब सामान मौजूद था और खिदमत के लिये लौंडी भी हाजिर थी।

इस बाग को अपने मतलब का देख कर प्रभाकरसिंह बहुत खुश हुए और कपड़े उतार कर एक पेड़ के नीचे रख देने के बाद अपने जरूरी कामों में लग गये। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में जल का भरा हुआ लोटा ले कर बाग के पूरब तरफ चले गये और घनी झाड़ी में घुस कर देखते ही देखते नजरों से ओझल हो गये।

प्रभाकरसिंह के चले जाने के बाद मालती और उसकी दोनों लौंडियों में इस तरह बातचीत होने लगी :—

मालती०। (एक लौंडी से) भोजन की चीजें सब तैयार हो गईं या अभी कुछ बाकी हैं?

लौंडी०। करीब करीब सभी चीजें तैयार हो गई हैं, केवल तरकारी और दो तीन तरह की चटनी बाकी है।

मालती०। बेहोशी की दवा किस किस चीज में मिलाई गई है?

लौंडी०। केवल कचौरी और तरकारी में।

मालती०। ठीक है, लेकिन अगर चटनी में भी दवा मिला दी होती तो अच्छा था।

दूसरी लौंडी०। आज्ञा हो तो अब मिला दी जाय।

मालती०। खैर रहने दो, कोई चिन्ता नहीं, जो कुछ हुआ वही बहुत है।

लौंडी०। मुझे आश्चर्य होता है कि अकेले प्रभाकरसिंह के लिए आप इतना बन्दोबस्त क्यों कर रही हैं! क्या हम लोग मिलजुल कर इन्हें बांध नहीं सकतीं?

मालती०। तुम्हें इनकी ताकत का हाल मालूम नहीं है अगर मालूम होता तो ऐसा न कहतीं। इसके अतिरिक्त इन्हें तिलिस्म की बहुत सी बात मालूम भी हैं इसी लिए भुलावा देने की जरूरत है क्योंकि किसी तरह का शक हो जाने से ताज्जुब नहीं कि ये निकल भागें।

लौंडी०। अगर यही बात है तो दारोगा साहब को चाहिये था कि दो चार बहादुर सिपाही भी यहां भेज देते जिसमें इन्हें गिरफ्तार करने के लिये ज्यादे बखेड़ा न करना पड़ता।

मालती०। दारोगा साहब ने हम लोगों को यहां भेज दिया यही बहुत है नहीं तो तिलिस्म के अन्दर किसी को भेजना यह बिल्कुल ही नियम के विरुद्ध है, मुझे दारोगा साहब चाहते हैं और मुझ पर विश्वास रखते हैं इसी लिये मुझे यहां भेजा भी, और मैं तुम लोगों को यहां ले आई हूँ।

लौंडी०। ठीक है, अब मैं असल मतलब समझ गई मगर मैं सोचती हूँ कि अगर प्रभाकरसिंह ने तुम्हारे यहां की कोई चीज नहीं खाई और किसी तरह पर बेहोश न हुए तब तुम क्या करोगी?

मालती०। तुम्हारा यह सोचना बिल्कुल ही लड़कपन है, भला यहां रह कर वे कै दिन भूखे रहेंगे? साथ ही इसके तुम यह भी जानती हो कि इस तिलिस्म से निकल भागना उनके लिये बिल्कुल ही असम्भव है, हां इतना मैं जरूर कहूँगी कि वे सहज ही में हम लोगों का विश्वास कदापि न करेंगे, परन्तु मैंने तो यहां तक निश्चय कर रक्खा है कि यदि इस कारीगरी से काम न निकला तो जिस समय वे घोर निद्रा में बेखबर पड़े होंगे उस समय अपनी भुजाली और भुजा को काम में लाकर किस्मत को आजमाऊंगी।

दूसरी लौंडी०। बेशक ऐसा हो सकता है और मैं भी यही कहने वाली थी क्योंकि इस बाग में फलों और मेवों की बहुतायत होने से.....

मालती०। (कुछ सोच कर) हाँ बेशक यह मुझसे भूल हुई कि मैं उन्हें

इस बाग में ले आई और यहां आने का रास्ता भी दिखा दिया। यहां के फलों और मेवों से वे कई दिनों तक गुजारा कर सकते हैं, अगर किसी दूसरे बाग में ले गई होती जहां फलों के दरख्त न होते तो जरूर भूख से व्याकुल हो कर वे मेरी बात मानते और सहज ही में मेरे यहां का भोजन करते। खैर कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा, मैंने कई तरह के जाल फैलाये हुए हैं किसी न किसी जाल में यह शिकार जरूर ही फंसेगा।

मालती और दोनों लौंडियों में देर तक इसी तरह की बातें होती रहीं और वे सब प्रभाकरसिंह के आने का इन्तजार करती रहीं।

एक घण्टे से कुछ ज्यादे बीत गया और प्रभाकरसिंह लौट कर न आये। इस बात से मालती और उसकी लौंडियों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ, मगर मालती को विश्वास था कि जिस तरफ प्रभाकरसिंह गये हैं उस तरफ कोई ऐसा रास्ता नहीं है कि जिसके जरिये से वे इस बाग के बाहर हो जाँय, एक दीवार है सो वह भी ऐसे ढंग की बनी हुई है कि उसके ऊपर कोई चढ़ नहीं सकता। यही सबब था कि मालती को धीरज बँधा हुआ था और उसने फिर भी कुछ देर तक और इन्तजार करना मुनासिब समझा।

और भी आधा घण्टा बीत जाने के बाद प्रभाकरसिंह घोड़े पर सवार सामने से आते हुये दिखाई पड़े। हम ऊपर लिख आये हैं कि प्रभाकरसिंह कपड़े उतार कर मैदान के लिये गये थे परन्तु इस समय केवल घोड़े पर सवार ही नहीं बल्कि सुन्दर फौजी पोशाक पहिरे हुए तथा कई तरह के हर्बे भी लगाये हुए वे दिखाई पड़े। मालती और उसकी लौंड़ियों के लिये यह कम आश्चर्य की बात न थी। वे सोचने लगीं कि क्या वास्तव में ये प्रभाकरसिंह ही हैं?

निःसन्देह वे प्रभाकरसिंह ही थे मगर मालती को तब तक इस बात का विश्वास न हुआ जब तक कि वे मालती के पास न आये और उन्होंने छेड़खानी के तौर पर खुद ही बातचीत करना आरम्भ न किया।

प्रभाकर० (मालती के पास आकर मुस्कुराते हुए) कहो बीबी मालती! अब तो मुझे यहां से चले जाने की इजाजत देती हो न?

मालती० । (घबड़ाती सी होकर) सो क्यों? अभी तो आप इन्दुमति से न मिलने वाले हैं!!

प्रभाकर०। नहीं अब मुझे उससे मुलाकात करने की कोई जरूरत नहीं रही।

मालती०। आखिर ऐसी घबड़ाहट आपको क्यों हो गई? और यह घोड़ा आपने कहां से पाया सो तो बताइये?

प्रभाकर०। (हंस कर) जमानिया के दारोगा साहब यह घोड़ा तुम्हारे वास्ते लिए आ रहे थे सो मैंने छीन लिया और यह पोशाक भी उन्हीं के बदन से मैंने उतार ली है!! अच्छा बीबी मनोरमा! अब मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ और जाता हूँ।

इतना कहते हुए प्रभाकरसिंह तेजी के साथ उसी तरफ लौट गये जिधर से आये थे। मालती को इसका विश्वास न हुआ कि ये वास्तव में प्रभाकरसिंह थे। यह घोड़ा इस बाग में क्योंकर आया? यह पोशाक इन्होंने कहां से पाई? और घोड़े पर सवार ये क्योंकर यहां से बाहर निकल जायेंगे? इत्यादि बातों को सोचती हुई मालती भी अपनी लौंडियों को साथ लिये हुये उन्हीं के पीछे पीछे रवाना हुई।

तेरहवाँ बयान

महाराज के बाग में चोर गिरफ्तार तो हुआ मगर महाराज के पास न पहुँचाया जाकर सीधे दारोगा साहब के पास पहुँचा दिया गया। महाराज के सिपाहियों ने दारोगा साहब की यहां तक खातिर की कि उस चोर को पहिचानना तो दूर रहा आंख से अच्छी तरह देखा भी नहीं और बड़े अफसोस के साथ महाराज से कह दिया कि चोर निकल भागा, बहुत उद्योग करने पर भी गिरफ्तार न हुआ। महाराज को इस बात का बहुत ही दुःख हुआ फिर भी उन्होंने पहरे का इन्तजाम ज्यों का त्यों कायम रक्खा, इस खयाल से कि कदाचित् एक दो दीन बाद धोखा देकर पुनः वह चोर आवे।

उधर दारोगा अपने सोने वाले कमरे में चारपाई पर बैठा हुआ बड़ी बेचैनी के साथ इस बात का इन्तजार कर रहा था कि महाराज के बाग में चोर गिरफ्तार हो और सीधे मेरे पास चला आवे। उसे पूरा पूरा विश्वास था कि वह चोर भैयाराजा अर्थात् शंकरसिंह हैं। वह दरवाजे की तरफ आँख लगाये बैठा अपने दिल से भैयाराजा के बारे में बातें कर रहा था और कह रहा था कि, "आज निः-

सन्देह भैयाराजा गिरफ्तार होकर मेरे पास लाया जायगा, अगर ऐसा हुआ तो मैं उसे बिना मारे कभी न रहूँगा, किसी तरह की मुरौवत न करूंगा, आंखें चार होने पर भी लज्जा तथा भय को पास फटकने न दूंगा। आज मैं पूरा बेमुरौवत, पूरा निर्लज्ज, पूरा बेदर्द, और पूरा हत्यारा बन जाऊंगा मगर उसे कदापि जीता न छोड़ूंगा चाहे जो हो।" इत्यादि इसी ढंग की बातें विचारता और खयाली पुलाव पकाता हुआ वह दरवाजे की तरफ देख रहा था कि यकायक दरवाजा खुला और तीन आदमी बेहोश भैयाराजा को उठाये कमरे के अन्दर दाखिल हुए। बड़ी फुर्ती के साथ दारोगा ने उठ कर चोर के चेहरे पर निगाह डाली और यह जान कर बहुत ही प्रसन्न हुआ कि वह चोर वास्तव में भैयाराजा ही हैं।

बेहोश भैयाराजा दारोगा साहब के सामने डाल दिये गये। पहिले तो दारोगा के दिल में आया कि भैयाराजा को होश में लाने के पहिले ही कत्ल कर डालें जिसमें चार आंखें न होने पावें मगर फिर वह कुछ सोच कर रुक गया क्योंकि आज उसने पूरी बेहयाई पर कमर बाँध ली थी और इसके अलावे कई भेद की बातें भी उनसे दरियाफ्त करनी थीं।

बेईमान दारोगा ने पहिले ता उन तीनों आदमियों की बड़ी तारीफ की और शाबाशी दी और इसके बाद आज्ञा दी कि भैयाराजा को उठा कर दूसरे कमरे में पहुँचा दें जहां इसी तरह के निर्दयता के काम किये जाते थे और जो एक तरह पर कैदखाने का काम भी दिया करता था। वहां पहुँचाने के बाद भैयाराजा की मुश्कें बांधी गईं और तीनों आदमियों को बिदा करने के बाद दारोगा ने उन्हें लखलखा सुंघाया। होश आने पर उस कैदी ने घबड़ा कर चारो तरफ देखा और जब हाथ में नंगी तलवार लिए दारोगा पर उसकी निगाह पड़ी तब तो उसे और भी आश्चर्य हुआ और उसने बड़ी बेचैनी के साथ दारोगा से पूछा, "मैं कहां पर हूँ और यह मकान किसका है?"

दारोगा०। तुम मौत के पंजे में हो और यह मकान यमराज का है!!

कैदी०। (पुनः अच्छी तरह चारो तरफ देख कर) नहीं नहीं, मैं अच्छी तरह समझ गया कि यह घर आप ही का है, मगर आश्चर्य है कि आप मुझी से दिल्लगी करते हैं!

दारोगा० । इसमें दिल्लगी की क्या बात है ? मान लो कि यह मेरा ही घर है मगर क्या तुम यह नहीं देखते कि मैं नंगी तलवार लिए तुम्हारा सर काटने को तैयार हूँ ?

कैदी० । हां देखता हूँ, मगर यह मुझे कब विश्वास होने लगा कि आप मेरे ही साथ ऐसा बर्ताव करेंगे !!

दारोगा० । मैं जरूर ऐसा करूंगा क्योंकि तुम्हारी बदौलत मैं बेतरह संकट में पड़ गया था ।

कैदी० । ठीक है, तब इससे यह भी जाहिर हो गया कि तुम्हारी ही बदौलत इस समय मैं अपने को रस्सियों से जकड़ा हुआ देख रहा हूँ ।

दारोगा० । बेशक ऐसा ही है ! मैं ही ने तुम्हें गिरफ्तार कराया है, मैं ही ने तुम्हारी मुश्कें कसवाई हैं, और मैं ही अपने हाथ से तुम्हारा सर काट कर हमेशे के लिए बेफिक्र हो जाना चाहता हूँ ।

कैदी० । (क्रोध में आकर) तो क्या तू मुझे मारेगा ?

दारो० । हाँ हाँ जरूर मारूँगा, कई दफे तो कह चुका अब कैसे कहूँ ?

कैदी० । अफसोस ! मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस खुदगरज बेमुरौवत और दुष्ट भाई का साथ देने से मुझे यह दिन देखना नसीब होगा ! अगर ऐसी खबर होती तो मैं तुझ बेईमान को कई दफे गहरी आफतों से कदापि न बचाता और अपनी धन दौलत तेरे हवाले करके तेरे घर का भिखमंगा न बन जाता ! अफसोस अफसोस ! मैं यह नहीं जानता था कि भाई की सूरत में एक दुष्ट चाण्डाल की आत्मा घुसी हुई है !! मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं ऐसा कमजोर भी नहीं हूँ कि इन पतली डोरियों से बेबस रह कर तेरे नापाक हाथों से मारा जाऊ !!

इतना कहते कहते उस कैदी को जोश चढ़ आया । उस बहादुर ने झटका देकर हाथ पैर की रस्सियां तोड़ डालीं और ताल ठोक कर दारोगा साहब के सामने खड़ा हो कर बोला, "हां देखें तो सही तू किस तरह मुझे मारता है ! तेरे हाथ में तलवार है और मैं खाली हाथ तेरे सामने खड़ा हूँ ! देखना तो यह है कि तू मुझे मारता है या मैं ही तेरा खून चूस कर इस बेइज्जती का बदला चुका लेता हूँ !!"

चौदहवाँ बयान

दिन दो पहर से कुछ ज्यादे ढल चुका है। धूप में बहुत तेजी और गर्मी है। मुसाफिरों को इस समय राह चलना बहुत ही बुरा मालूम होगा मगर जंगल में रास्ता चलने वालों को इस धूप की गरमी किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकती। घने जंगलों का तो कहना ही क्या है जहां बड़े बड़े साखू शीशम और सलई के दरख्तों की छाया में बैठने से बड़ा ही आनन्द मिलता है, खास करके किसी नाले के किनारे पर, जहां अगर घने दरख्त हो तो वहां के आनन्द का कहना ही क्या है। गर्मी के दिनों में ऐसा स्थान बहुत ही प्यारा मालूम होता है परन्तु शेर भी ऐसे ही स्थान को पसन्द करता है और प्रायः शिकार के लिये भी ऐसा ही स्थान चुना जाता है।

इस समय हम ऐसे ही घने जंगल में एक नाले के किनारे पत्थर की चट्टान पर दो आदमियों को बैठे आनन्द से बातचीत करते हुए देख रहे हैं। इनमें एक तो इन्द्रदेव हैं और दूसरे उनके प्यारे दोस्त बलभद्रसिंह हैं। इस समय ये दोनों आदमी शिकारी पोशाक तथा हर्बों से अपने को सजाये हुए हैं और इन दोनों के शेरदिल घोड़े भी पेड़ों के साथ लम्बी बागडोर से बँधे हुए पास ही नर्म घास चर रहे हैं। सुनना चाहिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं।

इन्द्रदेव०। आपका कहना बहुत ही ठीक है। गदाधरसिंह की चाल चलन आज कल बहुत ही खराब हो रही है। ऐसे ही लोग ऐयारी के नाम को कलंकित करके अपने साथ ही साथ भले लोगों को भी बदनाम करते हैं। मैं उस खोटे समय को रोता हूँ जिस समय उसे अपनी जुबान से मैंने दोस्त कहा था, फिर भी चाहे उसके शरीर से मुझे कितना ही कष्ट पहुँचे परन्तु मैं अपनी तरफ से उसे कुछ भी कष्ट न पहुँचाऊँगा। केवल इतना ही नहीं बल्कि जिन्दगी भर इस बात का उद्योग करता रहूँगा कि उसकी चाल चलन सुधरे! और वह नेकनामी के साथ दुनिया में जिन्दगी बिताने का प्रयत्न करे। बदनाम आदमी का दुनिया में करोड़पति हो कर भी जीते रहना वृथा है, जिन्दगी उस गरीब की ही सराहने योग्य है जिससे लोगों का उपकार हो और जिसे लोग भली जुबान से नेकनामी के साथ याद करते हों। मेरे प्यारे दोस्त! मैं सच कहता हूँ और तुमसे भी कुछ

छिपा हुआ नहीं है कि बड़े बड़े राजा महाराजा और सौदागरों से भी मेरे पास बढ़ कर दौलत है जिसे मैं इस जिन्दगी में किसी तरह भी खर्च नहीं कर सकता मगर मैं उस दौलत पर कुछ भी भरोसा नहीं करता और नेकनामी के सामने उसे कङ्कड़ पत्थर से भी तुच्छ समझता हूँ। इसका एक सबब यह भी है कि वह दूसरे की थाती है जो ईमानदारी के साथ मेरे सुपुर्द की गई है और मैं उसे देवता के समान केवल पूजा ही करने के लायक समझता हूँ तथापि जो कुछ उसमें से मेरे लिए हिस्सा लगाया गया है वही उतना ज्यादा और काफी है जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ। यह बात गदाधरसिंह को भी कुछ कुछ मालूम है और मैं उसे कई दफे कह भी चुका हूँ कि—दो चार लाख रुपये जब चाहो मुझसे ले लो और अपनी तृष्णा को तिलाञ्जलि दे दो, परन्तु उसके दिल में यह बात बिल्कुल ही नहीं बैठती। न मालूम लालच ने उसे किस तरह अपने काबू में कर रक्खा है कि जिसके सबब से वह बड़े बड़े उग्र पाप करने के लिए भी तैयार हो जाता है !!

बलभद्र०। मेरे प्यारे दोस्त! मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारे नेक मिजाज की तारीफ कर सकूं! तुम ही ऐसे हो कि गदाधरसिंह के कसूरों को बराबर माफ किए चले जा रहे हो! दूसरा मामूली दर्जे का आदमी तो उसका मुंह भी न देखता। इसमें कोई शक नहीं कि वह ऐयारी के फन में बहुत ही तेज है और उसे बहुत दूर की सूझा भी करती है परन्तु वह अपने कलंक को धोने की कोशिश करता हुआ और भी कलंकित होता जाता है। ताज्जुब नहीं कि वह कुछ दिन में सिर से पैर तक कलंक के मारे इन्द्र का रूप हो जाय!

इन्द्र०। बेशक ऐसा हो सकता है। मैं खूब जानता हूँ कि दयाराम के विषय में वह बिलकुल निर्दोष है और इसी लिए मैं उसे कई दफे समझा भी चुका हूँ कि तुम उस भेद को छिपाने के लिए कुछ उद्योग मत करो, मैं तुम्हारी वह भूल दुनिया में किसी पर भी प्रगट न होने दूँगा, परन्तु यह बात उसके दिल में बैठती ही नहीं, सच तो यों है कि उसे मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता।

बलभद्र०। यही बात है, वह सोचता है कि बिना जमना और सरस्वती को मारे वह बात छिप नहीं सकती अस्तु जमना और सरस्वती को मार कर ही मैं निश्चिन्त हो जाऊंगा उसके बाद किसी को मुझ पर कलंक लगाने के लिए कोई

सबूत न मिल सकेगा।

इन्द्रदेव०। केवल जमना और सरस्वती ही को नहीं बल्कि वह प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को भी मारने की फिक्र में है क्योंकि उसे विश्वास हो रहा है कि ये दोनों भी उस भेद को जान गये हैं और जमना तथा सरस्वती की मदद कर रहे हैं और वास्तव में बात भी ऐसी ही है।

बलभद्र०। मगर मैं समझता हूँ कि अब भूतनाथ इस काम में कृतकार्य नहीं हो सकता।

इन्द्रदेव०। (मुस्कुरा कर) मैं कैसे कहूँ! वह बड़ा ही धूर्त है, कौवे गिद्ध और कुत्ते से अगर उसकी उपमा दी जाय तो हो सकता है। मैं अपने घर के रास्ते तक को उससे छिपाये रहता हूँ और जब कभी वह मुझसे मिलने के लिये आता है तो मैं बाहरी दरजे में ही उससे मुलाकात करता हूँ। (हंस कर) यह मामला भी बड़ा ही विचित्र है, मैं यद्यपि उसके काम में बाधा डाल रहा हूँ मगर उससे दुश्मनी नहीं करता और वह यद्यपि बार बार मेरे हाथों से छकाया जाता है परन्तु मुझ पर किसी तरह का शक नहीं करता। मगर मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मेरे गुरुभाई साहब (जमानिया तिलिस्म के दारोगा) ने भी आज कल उसी का रंग पकड़ा है और दोनों खुदगरजों की दोस्ती बेतरह बढ़ रही है.....

बलभद्र०। (बात काट कर) भला खुदगरजों की दोस्ती भी कहीं कायम रही है?

इन्द्र०। कभी नहीं, खुदगरजों की दोस्ती और पानी पर तैरते हुए बताशे की जिन्दगी का कोई तायदाद नहीं, तथापि मुझे दारोगा साहब की तरफ से बड़ा ही रंज है, यहां तक कि मैंने उनसे एक तौर पर मिलना जुलना भी छोड़ दिया मगर अपने दिल का भाव नहीं प्रगट किया, साथ ही इसके इस बात का भी उद्योग कर रहा हूँ कि उसमें और गदाधरसिंह में दुश्मनी पैदा हो जाय।

बल०। दुश्मनी पैदा होने में अब क्या कसर रह गई है? गदाधरसिंह को इस बात का विश्वास हो गया है कि जमना सरस्वती और इन्दुमति के बारे में दारोगा ही ने उससे चालाकी खेली है।

इन्द्रदेव०। बेशक यही बात है और अब ईश्वर चाहे तो दारोगा की और

उसकी दुश्मनी दिनों दिन बढ़ती ही जायगी।

बलभद्र०। आपकी कार्रवाई ही ऐसी हो रही है मगर भैयाराजा के विषय में जो कुछ चाल चली जा रही है वह मुझे पसन्द नहीं है।

इन्द्रदेव०। मुझे भी पसन्द नहीं है, मैंने उन्हें कहा भी था कि तुम इस ढङ्ग को छोड़ दो और एक दम से प्रगट हो कर जो कुछ करना हो करो मगर उन्हें तो मसखरापन सूझ रहा है, देखो मैं आज तुम्हारे सामने ही उन्हें फिर समझाऊँगा।

बलभद्र०। अगर न मानेंगे तो ताज्जुब नहीं कि एक न एक दिन गदाधरसिंह या दारोगा साहब के हाथ में फँस जाँय।

इन्द्रदेव०। गदाधरसिंह को तो मैं साफ साफ कह दूँगा कि भैयाराजा के साथ दुश्मनी का बर्ताव न करे और मेरी यह बात गदाधरसिंह मान भी जायगा।

बलभद्र०। मगर गदाधरसिंह को यह मालूम होगा कि भैयाराजा को दारोगा के फन्दे से तुम्हीं ने निकाला है तो उसे इस बात का भी शक हो जायगा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति को भी दारोगा के जाल से तुम ही ने निकाल लिया है।

इन्द्रदेव०। कोई पर्वाह नहीं, अगर उसे इस बात का शक हो भी जायगा तो कोई चिन्ता नहीं, मेरे साथ गदाधरसिंह कदापि दुश्मनी का बर्ताव नहीं करेगा।

बलभद्र०। इस बात को तो मैं भी मानता हूँ, दारोगा और गदाधरसिंह दोनों ही तुमसे डरते हैं और जानते हैं कि इन्द्रदेव का बिगड़ना किसी के लिये भी अच्छा न होगा, हाँ एक बात तो मैं आपसे कहना भूल ही गया!!

इन्द्रदेव०। वह क्या?

बल०। वे दोनों कारीगर जिन्होंने दारोगा का अद्भुत मकान बनाया था और जिन्हें आजकल आपने अपने पास रख छोड़ा है, खुले मैदान बाजार में घूमा करते हैं, कहीं ऐसा न हो कि उन पर निगाह पड़ते ही दारोगा का खयाल ठिकाने पहुँच जाय और वह समझ जाय कि इन्हीं दोनों की बदौलत हमारे मकान का भेद खुल गया है।

इन्द्र०। (लम्बी सांस लेकर) अफसोस! वे दोनों कल रात को दारोगा के

फन्दे में फंस गये, जैसा कि तुम सोचते हो वही बात हुई, अर्थात् दारोगा ने उन्हें देख लिया और ऐसे ढंग से उन्हें गिरफ्तार करा लिया कि किसी को पत न लगा। मुझे उनके बारे में बड़ा ही दुःख है यद्यपि मैंने अपने दो शागिर्द उनको छुड़ाने के लिए छोड़े हुए हैं मगर फिर भी उनकी खैरियत नजर नहीं आती।

बलभद्र०। यह तो बहुत ही बुरा हुआ! और एक बात की खबर आपको मालूम हुई है या नहीं?

इन्द्रदेव०। वह क्या?

बल०। मेरी लड़की लक्ष्मीदेवी की शादी जो कुंअर गोपालसिंह के साथ ठहरी हुई है वह दारोगा साहब के बिल्कुल ही नापसन्द है, अगर प्रगट नहीं होते तो छिप कर निशाना लगा रहे हैं।

इन्द्र०। हां मुझे इस बात का पता लग चुका है, अफसोस इस बात का है कि राजा गिरधरसिंह निरे मिट्टी के पुतले ही हैं और दारोगा साहब का रंग उन पर बेतरह चढ़ा हुआ है मगर खैर कोई चिन्ता नहीं। गोपालसिंह को मैं इस विषय में खूब समझा चुका हूँ और वह कसम खा कर प्रतिज्ञा कर चुका है कि तुम्हारी आज्ञा के विरुद्ध इस विषय में कोई काम न करूंगा। होनहार गोपालसिंह बात का धनी है और मुझे उस पर बड़ा भरोसा रहता है।

बलभद्र०। खैर आप जानिये मुझे केवल खबर देने से मतलब था और यह तो आप ठीक कहते हैं कि राजा साहब पर दारोगा का रंग चढ़ा हुआ है। अभी उसी दिन की रात है जिस दिन भैयाराजा ने भूत होकर राजा साहब का दर्शन दिया था। आप ही कहते थे कि 'सुबह को राजा साहब ने दारोगा को बुला कर रात का हाल कहा, सुनते ही दारोगा के बदन में थर्थरी पैदा हो गई मगर राजा साहब को इसका कुछ खयाल न हुआ'—इत्यादि।

इन्द्रदेव०। हां मैंने सब हाल तुमसे कहा ही था, इसी से तो मैं कहता हूँ कि राजा साहब बिल्कुल बेकार हैं, मगर सीधे और धर्मात्मा हैं इसी से बचे चले जाते हैं, (चौंक कर) देखो वह सामने से घोड़े पर सवार कौन आ रहा है! पहिचानते हो?

बलभद्र०। (गौर से देख कर) नहीं, शायद नजदीक आने से पहिचान

सकूं.....नहीं नहीं, मैंने इन्हें आज के पहिले शायद कभी भी नहीं देखा।

देखते ही देखते वह सवार इन दोनों के पास आ पहुँचा और दोनों ही से साहब सलाम करने बाद घोड़े पर से नीचे उतर पड़ा और एक पेड़ के साथ लम्बी बागडोर के सहारे घोड़े को बाँध कर चरने के लिये ढीला छोड़ दिया।

इन्द्रदेव का इशारा पाकर वह सवार भी उनके पास बैठ गया और तब उन तीनों में इस तरह बातचीत होने लगी :—

इन्द्र०। (सवार की तरफ देख कर) कोई भी ऐयार इस समय आपको नहीं पहिचान सकता, खूब ही सूरत बदली है! (बलभद्र से) क्यों भाई कैसी सूरत हो रही है? यह तुम्हारे रोज के मुलाकाती हैं और इशारा कर देने पर भी तुम इन्हें नहीं पहिचान सकते!

बलभद्र०। (आश्चर्य से आगन्तुक की तरफ देख कर) बेशक! बिना चेहरा धोए इन्हें कोई भी नहीं पहिचान सकता।

इन्द्रदेव। (मुस्कुरा कर) यही तो बात है कि चेहरा धोने पर भी इनकी सूरत में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इस चेहरे पर किसी तरह का रंग रोगन नहीं चढ़ाया हुआ है बल्कि एक प्रकार की बनावटी झिल्ली है जो चेहरे पर चढ़ाई हुई है, इस पर पानी का कुछ भी असर नहीं होता और इस तरह चमड़े के साथ चपक कर बैठती है कि जरा भी पता नहीं लगता।

आगन्तुक०। (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके बलभद्र से) यह आपकी कारीगरी का नमूना है, वास्तव में बहुत ही अच्छी चीज है, सूरत बदलने में जरा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता।

इन्द्रदेव०। इसी तरह की दो झिल्ली मैंने जमना और सरस्वती को दी हुई थी, अफसोस! वह इस समय गदाधरसिंह के पास होंगी जिससे वह बड़ा ही उत्पात मचा सकता है। मुझे तो इस बात का डर ही लगा रहता है कि कहीं गदाधरसिंह उस झिल्ली की बदौलत मुझी को धोखा न दे।

आगन्तुक०। नहीं नहीं, गदाधरसिंह आपको कदापि धोखा न देगा, उसकी प्रतिज्ञा है कि इन्द्रदेव मेरे टुकड़े टुकड़े भी कर डाले तो मुझे मंजूर है उनका मुकाबला कदापि न करूंगा।

इन्द्रदेव०। ठीक है, मैंने भी ऐसा ही सुना है, आप यह भी जानते ही हैं

कि मैं गदाधरसिंह के साथ कैसा बर्ताव करता हूँ! हजार कसूर करने पर भी उसे सजा देने की नीयत नहीं करता और यही चाहता रहता हूँ कि वह अच्छी राह पर चले और परमात्मा उसका भला करे।

बलभद्र०। बेशक आप अपनी दोस्ती का पूरा पूरा हक निबाह रहे हैं। (आगन्तुक की तरफ इशारा करके) अच्छा यह बात तो बताइये कि यह कौन साहब हैं और आपको किस तरह खोजते हुए यहां आ गये?

इन्द्रदेव०। ये भैयाराजा हैं। ये छिप कर रहना पसन्द नहीं करते और बराबर इधर उधर घूमने की इच्छा रखते हैं इसी लिये यह सूरत बदलने वाली भिल्ली मैंने इन्हें दे रक्खी है। मैं यहां आते समय अपने शागिर्द को समझा आया था कि इस सूरत में भैयाराजा अगर यहां आवें तो उन्हें फलानी जगह भेज देना। यही सबब है कि ये यहां तक आ पहुँचे हैं।

आगन्तुक०। (अथवा भैयाराजा) बेशक यही बात है, आपके शागिर्द लक्ष्मण ने मुझे यहां का पता दिया था। अच्छा यह तो बताइये कि अब मुझे क्या करना चाहिये?

इन्द्रदेव०। मैं तो यही कहूँगा कि तुम खुल्लमखुल्ला जाकर अपने भाई राजा साहब से मिलो और इन खेल तमाशों को जाने दो नहीं तो एक न एक दिन दारोगा के फन्दे में फंस ही जाओगे।

आगन्तुक०। तो क्या तुम नहीं जानते कि हमारे भाई साहब दारोगा के गुलाम हो रहे हैं! उस कम्बख्त के सामने भला मेरी बातों का उनके दिल पर क्या असर होगा? मेरे इस कथन को क्या वे मान जायंगे कि दारोगा ने मुझी को मार डालने का इरादा किया था। मैं तो समझता हूँ कि वे मुझी को झूठा बनावेंगे और दारोगा कोई न कोई बहाना करके निकल जायगा।

इन्द्रदेव०। अगर ऐसा हो तो ताज्जुब ही क्या है।

आगन्तुक०। वह आपका गुरुभाई है, आप उसे समझाते क्यों नहीं, ऐसे आदमी को तो दुनिया से उठा ही देना चाहिये।

इन्द्रदेव०। वह मेरा गुरुभाई है तो क्या हुआ? जैसा करेगा वैसा भोगेगा, मैं न तो उसका दोस्त बनता हूँ और न दुश्मन, अगर आप लोगों की मदद करने की जरूरत न आ पड़े तो मैं उसका मुंह देखना भी पसन्द नहीं करता.

उसके घर में जाना तो दूसरी बात है।

बलभद्र०। अगर आप भैयाराजा को उसके पंजे से न छुड़ाते तो इनकी जान जा ही चुकी थी।

इन्द्रदेव०। अब भी अगर ये खुल्लमखुल्ला अपने को प्रगट न कर देंगे तो इनके लिये मुझे चिन्ता बनी रहेगी, इतना अच्छा हुआ कि दारोगा और गदाधरसिंह में जो दोस्ती थी वह जाती रही, नहीं तो दोनों मिल कर बड़ा ही उपद्रव मचाते।

बलभद्र०। गदाधरसिंह को विश्वास हो गया है कि जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में दारोगा ने उसके साथ दगाबाजी की।

आगन्तुक०। मगर वास्तव में बात दूसरी ही थी, अच्छा यह तो बताइये कि प्रभाकरसिंह का क्या हाल है और अब वे कहां हैं?

इन्द्रदेव०। ईश्वर की कृपा से प्रभाकरसिंह भी दारोगा के पंजे से निकल गये, उन्हें दारोगा ने तिलिस्म के अन्दर ही फंसा लिया था, कल मैं उन्हें छुड़ा कर अपने घर ले आया, उनके छुड़ाने में बड़ी विचित्र दिल्लगी हुई।

आगन्तुक०। सो क्या?

इन्द्र०। यह किस्सा उन्हीं की जुबान से आप सुनेंगे तो मजा आवेगा मैं स्वयं कुछ भी न कहूँगा।

आगन्तुक०। उनसे मुलाकात कब होगी?

इन्द्रदेव०। जब आप चाहेंगे।

आगन्तुक०। अच्छा तो मैं आपके साथ ही आपके घर चलूंगा और प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ जमना सरस्वती और इन्दुमति से भी मुलाकात करूंगा।

इन्द्रदेव०। बहुत अच्छी बात है।

आगन्तुक०। अच्छा यह तो बताइये कि जमानिया तिलिस्म का भेद आपको क्योंकर मालूम हुआ? वह तो बहुत ही गुप्त है और सिवाय हम लोगों के कोई दूसरा वहां का भेद नहीं जान सकता क्योंकि नियमानुसार तिलिस्मी किताब हम ही लोगों के पास रहा करती है और आज भी हमारे भाई साहब ही के कब्जे में है।

इन्द्रदेव०। (मुस्कुरा कर) इसके विषय में मैं कुछ भी न कहूँगा।

आगन्तुक० । मैं समझता हूँ कि दारोगा के गुरुजी ने आप से वहां का कुछ हाल कहा होगा क्योंकि वह आपके भी गुरु थे और वहां का बहुत ज्यादे हाल जानते थे ।

इन्द्रदेव० । जो कुछ हो ।

आगन्तुक० । खैर इस मामले को जाने दीजिये अब यह राय दीजिये कि मैं क्या करूं ?

इन्द्रदेव० । मुझे जो कुछ कहना था मैं कह चुका ।

आगन्तुक० । अच्छा एक दिल्लगी मुझे और कर लेने दीजिये फिर जो कुछ आप कहेंगे मैं वही करूंगा ।

इन्द्रदेव० । वह क्या ?

आगन्तुक० । इस समय कहने से आपको मजा न मिलेगा कल परसों में आप से आप मालूम हो जायगा । अच्छा यह बताइये कि इस समय आपके साथ चलने से प्रभाकरसिंह तथा इन्दु इत्यादि से मुलाकात हो सकेगी ?

इन्द्रदेव० । (कुछ सोच कर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि आप जब चाहे मुलाकात कर सकते हैं ।

आग० । अच्छा तो अब आपको यहां से चलने में क्या विलम्ब है ?

इन्द्रदेव० । कुछ नहीं, मैं चलने को तैयार हूँ ।

आगन्तुक० । बस तो जय गणेश कीजिये ।

इन्द्रदेव० । चलिये, (बलभद्र की तरफ देख कर) यदि कुछ हर्ज न हो तो आप भी मेरे साथ चलिये ।

बलभद्र० । जो आज्ञा ।

ये तीनों आदमी वहां से उठ खड़े हुए और अपने अपने घोड़े पर सवार हो तेजी के साथ एक तरफ रवाना हुए ।

बलभद्रसिंह और आगन्तुक को साथ लिये हुए इन्द्रदेव अपने मकान की तरफ रवाना तो हुए मगर अफसोस ! उन्हें इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि जिस आगन्तुक को वह भैयाराजा समझे हुए हैं वह वास्तव में भैयाराजा नहीं है बल्कि वह भूतनाथ है जो प्रभाकरसिंह जमना सरस्वती और इन्दुमति का पता लगाने के लिये जमना और सरस्वती से पाई हुई झिल्ली अपने चेहरे पर

लगा कर भेष बदले हुए इन्द्रदेव के घर गया था। वहां इन्द्रदेव के शागिर्द ने उसे भैयाराजा समझा और इन्द्रदेव का संदेशा दिया कि वे फलाने जंगल में गये हैं और आपको भी उन्होंने उसी जगह बुलाया है। इसी संदेशे को पाकर भूतनाथ वहां पहुँचा था जहां इन्द्रदेव और बलभद्रसिंह से मुलाकात हुई थी।

अस्तु, धोखे में पड़े हुए इन्द्रदेव नकली भैयाराजा और बलभद्रसिंह को साथ लिये हुए अपने घर की तरफ रवाना हुए। इस जगह यह समझ रखना चाहिये और पहिले भी किसी जगह पर हम लिख आये हैं कि इन्द्रदेव का असली मकान तिलिस्मी इलाके के अन्दर है जहां किसी अनजान आदमी का जाना बिल्कुल ही असम्भव है परन्तु कई कारणों से उसने एक दूसरा मकान भी बना रक्खा था जिसका नाम "कैलाश" था और जिसका कुछ हाल हम पहिले लिख भी आये हैं। इस समय अपने दोनों साथियों को लिये हुए इन्द्रदेव उसी मकान (कैलाश) की तरफ रवाना हुआ जहां उनके शागिर्द से और भूतनाथ से मुलाकात हुई थी। जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को भी इन्द्रदेव ने इसी मकान में छिपा कर रक्खा हुआ था।

दो घण्टे तक तेजी के साथ सफर करके तीनों आदमी कैलाश भवन में पहुँचे, इन्द्रदेव की बातचीत से भूतनाथ को यह तो मालूम ही हो गया कि भैयाराजा इन्द्रदेव के मकान में आने वाले हैं और इन्द्रदेव ने अपने शागिर्द से कह दिया था कि वे आवें तो उन्हें फलाने जंगल में हमारे पास भेज देना और इसी कारण से इन्द्रदेव के शागिर्द ने भूतनाथ को भैयाराजा समझ कर उसे जंगल में इन्द्रदेव के पास भेज दिया था, धोखा होने का सबब यही था कि भैयाराजा को भी इन्द्रदेव ने वैसी ही झिल्ली चेहरे पर चढ़ाने के लिये दी थी जैसी जमना और सरस्वती को दी थी अथवा जो इस समय भूतनाथ अपने चेहरे पर चढ़ाये हुए था, इत्यादि। अब भूतनाथ को यह फिक्र हुई कि कहीं वादे के मुताबिक भैयाराजा भी इस समय यहां न आ जाँय। यदि ऐसा हुआ तो हमारा भण्डा फूट जायगा और बना बनाया काम चौपट हो जायगा। इन सब बातों को सोच कर भूतनाथ ने इरादा किया कि जहां तक जल्द हो सके प्रभाकरसिंह तथा जमना और सरस्वती को देख कर इन्द्रदेव के मकान से बाहर हो जाना चाहिये और जिस तरह सम्भव हो भैयाराजा को गिरफ्तार कर लेना चाहिये

जिसमें उनकी सूरत बन कर अपना काम निकाल सकें।

भूतनाथ और बलभद्रसिंह को साथ लिये हुए इन्द्रदेव मकान के अन्दर गये और कमरों में घूमते फिरते वहां पहुँचे जहां प्रभाकरसिंह बैठे हुए जमना सरस्वती और इन्दुमति से मीठी मीठी बातें कर रहे थे। आज बहुत दिनों के बाद हम बिछुड़े हुओं को मिल कर बैठे और बातें करते देख रहे हैं, निःसन्देह इन सभों में शिकवे और शिकायत भरी बातें हो रही होंगी, बदकिस्मती से जो जो तकलीफें इन लोगों ने उठाई हैं उनके लिये एक दूसरे को दोषी ठहराता होगा, एक दूसरे की भूल साबित करके स्वयं बुद्धिमान बनने की कोशिश करता होगा और एक दूसरे की बदौलत दुःख भोगने की शिकायत करता होगा तथा बीच बीच में कोई इन्द्रदेव की तारीफ करता होगा, कोई बेईमान दारोगा को गालियां देता होगा और भूतनाथ की शिकायत करता हुआ यह भी कहता होगा कि अभी तक भूतनाथ का डर हमलोगों के दिल में बना ही हुआ है, ईश्वर उस कम्बख्त से किसी तरह पीछा छुड़ाये या हमारी ऐसी मदद करे कि जिसमें हम लोग भूतनाथ को नीचा दिखावें। खैर हमें इस जगह पर इतनी फुरसत नहीं है कि इन लोगों की बातचीत वा हंसी दिल्लगी का हाल खुलासे तौर पर लिख सकें क्योंकि भूतनाथ इन लोगों के सामने पहुँच कर भाग जाने के लिये जल्दी कर रहा है और दिल में तरह तरह की ऐयारियों का बाँधनू घांधता हुआ डर रहा है कि कहीं असली भैयाराजा यहां न आ पहुँचे, इसलिये हम भी इस दृश्य को संक्षेप ही में लिखना पसन्द करते हैं।

जमना सरस्वती इंदुमति और प्रभाकरसिंह ने इंद्रदेव के साथ आते हुए बलभद्रसिंह को तो पहिचाना परन्तु नकली भैयाराजा को न पहिचान सके कि यह कौन है, लेकिन इन्द्रदेव ने यहां पहुँचते ही उन सभों की तरफ देखकर कहा, "आप लोग इनको (नकली भैयाराजा की तरफ इशारा करके) न पहिचानते होंगे क्योंकि तिलिस्मी ढङ्ग पर इनकी सूरत बदली हुई है इसलिये मैं इनका परिचय देता हुआ आप लोगों से कहता हूँ कि ये ही भैयाराजा हैं जो मेरे साथ मेरी मदद करते हुए आप लोगों को छुड़ाने के लिये दिलोजान से उद्योग कर रहे थे।"

जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह उठ कर खड़े हो गये और उन

तीनों से साहब सलामत करने के बाद सच्चे दिल से सभों का शुक्रिया अदा करने लगे तथा फर्श पर बैठने के लिये सभों से कहा।

हँसते हुए सब कोई उन सभों के पास फर्श पर बैठ गये और धीरे धीरे बातचीत करने लगे। भूतनाथ के दिल की इस समय विचित्र हालत हो रही थी, वह मजबूरी के साथ बातें तो कर रहा था मगर दिल में बार बार यही सोच रहा था कि भैयाराजा के आने में देर क्यों हुई! ईश्वर करे उस पर कोई ऐसी आफत आ जाय कि अभी तक घण्टों यहां न पहुँचने पावे।

भूतनाथ ने जाहिरदारी के साथ उन सभों से बात करना शुरू किया।

भूतनाथ०। (प्रभाकर से) ईश्वर ही ने आपकी रक्षा की, नहीं तो आप बड़े ही झंझट में फँस गये थे।

प्रभाकर०। निःसन्देह ऐसा ही है, ईश्वर ही ने (इन्द्रदेव की तरफ इशारा कर के) इन्हें मेरी सहायता के लिए खड़ा किया। मैं इनकी कृपा का कदापि बदला नहीं चुका सकता और न बदला चुकाने की इच्छा ही रखता हूँ क्योंकि मेरे और इनके बीच में बराबर के लेन देन का अथवा रोजगार का व्यवहार तो है नहीं, बदला चुकाने का खयाल तो एक प्रकार का रोजगार ठहरा और मैं इनको पिता के समान मानता हूँ अस्तु बड़ों का अहसान बच्चों पर हुआ ही करता है इसका बदला चुकाने का विचार करना ही मूर्खता है। इसी तरह मैं अपने एक मित्र के अहसान से भी दबा जाता हूँ, परंतु मित्रता की सीमा को उल्लंघन करके व्यवहार या रोजगार न समझा जाय इसलिए मैं उनके लिए भी बदला चुकाने का विचार नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त एक बात और है, वह यह कि आपको मेरे लिए बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी जिसके लिए मैं.....

भूत०। (बात काट कर) आप तो व्याख्यान ही देने लग गये, मैं व्याख्यान सुनने के लिये नहीं आया हूँ और न यह जानने के लिए कि आप किस किस का शुक्रिया अदा कर रहे हैं। मैं केवल आप लोगों को देख कर खुश होने के लिए आया हूँ और यह पूछा चाहता हूँ कि यदि मेरे किए आप लोगों का कुछ उपकार हो सके तो आज्ञा करें, मैं आप लोगों के लिए दिलोजान से उद्योग करने के लिए तैयार हूँ।

प्रभाकर०। आप लोगों की कृपा से अब मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं

रह गई और न किसी बात की लालसा ही है।

भूत०। बड़ी खुशी की बात है कि आपको किसी तरह की अब लालसा नहीं है। (जमना इत्यादि की तरफ देख कर) मैं समझता हूँ कि ईश्वर की कृपा से अब आप लोगों के चित्त में भी शांति.....

जमना०। (बात काट कर) नहीं नहीं, कदापि नहीं, मेरे चित्त में तब तक शांति नहीं हो सकती जब तक कम्बख्त भूतनाथ इस दुनिया में जीता जागता सुनाई देता है।

भूत०। (अपने दिली जोश और गुस्से को दबाता हुआ) ठीक है मेरा भी यही खयाल है मगर जब कि इन्द्रदेव ऐसे लासानी ऐयार और सामर्थी लोग तुम्हारे मददगार हो रहे हैं तब भूतनाथ की जिन्दगी कब कायम रह सकती है और भूतनाथ तुम्हारा क्या कर सकता है।

जमना इस बात का कुछ जवाब दिया चाहती थी कि इन्द्रदेव ने इशारे ही इशारे में उसे कुछ कहा जिससे जमना ने अपने जोश को रोक लिया और कुछ सोच कर धीरे से जवाब दिया, "सो तो मैं कुछ भी नहीं कह सकती क्योंकि भूतनाथ चाचाजी (इन्द्रदेव *) का दोस्त है।"

जमना की आखिरी बात सुन कर भैयाराजा अर्थात् भूतनाथ ने इन्द्रदेव की तरफ देखा और कहा, "मैं नहीं समझ सकता कि इतना कसूर करने पर भी आप भूतनाथ को क्योंकर माफ कर सकेंगे।"

इन्द्रदेव०। (बड़ी गंभीरता के साथ) अगर अब भी भूतनाथ अपनी शैतानी से बाज आवेगा और अपने किये पर पछतावेगा तो मेरे ऐसे आदमी की क्या हकीकत है ईश्वर उसे माफ करेगा।

भूतनाथ ने इसका कुछ भी जवाब न दिया और बात का रुख दूसरी तरफ फेरने की कोशिश करता हुआ बोला :—

भूतनाथ०। सो तो ठीक ही है जो जैसा करेगा वैसा पावेगा, खैर जाने दीजिए भविष्य में जो होगा देखा जायगा इस समय तो हम लोग प्रसन्न हैं और ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने बड़े सङ्कट से तुम लोगों की रक्षा की, अब

* जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह इन्द्रदेव को चाचा कह कर सम्बोधन करने लगे थे।

तुम लोग भूतनाथ को छुकाने की कोशिश करो और मैं कम्बख्त दारोगा से बदला लेने की फिक्र करता हूँ। (इन्द्रदेव से) मैं आपके पास से जाने के लिए जल्दी न करता यदि बेफिक्र होता और दारोगा से बदला ले लेने का जोश मेरे दिल में भरा हुआ न होता, तथापि मैं आपसे मदद की आशा रखता हुआ बिदा होना चाहता हूँ, कल आपसे मैं अवश्य मिलूंगा और तब बहुत सी बातें कहूँगा।

इन्द्रदेव०। आपकी जल्दी पर मुझे आश्चर्य होता है (मुस्कुरा कर) कहिए तो मैं आपको आपके डेरे तक पहुँचा दूँ क्योंकि अभी तक आपसे अच्छी तरह बातचीत नहीं हुई है !!

भूत०। (घबड़ाना सा हो कर मगर अपने भाव को छिपा कर) नहीं नहीं, आपके तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं, इस समय मेरा कोई ठिकाना नहीं कहां जाऊं और क्या करूँ क्योंकि अपने दिल में एक विचित्र खयाल को लिए जा रहा हूँ, कल जब आपसे मिलूंगा तब और बातों के साथ ही साथ अपनी जल्दीबाजी का सबब भी बयान करूँगा।

इन्द्र०। जैसी मर्जी।

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और जल्दी के साथ कदम बढ़ाता हुआ कैलाश-भवन के बाहर निकला, इन्द्रदेव दरवाजे तक उसके साथ आया और जब वह घोड़े पर सवार होकर चला गया तब धीरे से यह कहता हुआ घर के अन्दर लौटा, "ईश्वर ही कुशल करे !"

पन्द्रहवाँ बयान

भूतनाथ को इस बात की फिक्र लगी हुई थी कि भैयाराजा जरूर इन्द्रदेव के घर आते होंगे अस्तु जिस तरह हो सके उन्हें अवश्य फँसाना चाहिये मगर बेचारे भैयाराजा को इस बात की कुछ भी खबर न थी।

भूतनाथ के चले जाने पर थोड़ी ही देर बाद भैयाराजा घोड़े पर सवार कैलाशभवन के दरवाजे पर आ पहुँचे। खबर पाते ही इन्द्रदेव घर के बाहर आये जिन्हें देखते ही भैयाराजा घोड़े पर से नीचे उतर पड़े और बड़े तपाक से इन्द्र-देव के साथ गले मिले और बोले, "कहिये खैरियत तो है ! मेरे यहां आने में

बहुत देर हो गई, क्षमा कीजियेगा।"

इन्द्रदेव ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "ईश्वर की कृपा से सब कुशल है, चलिए घर के अन्दर बैठे हुये बहुत से आदमी आपका आश्चर्य के साथ इन्तजार कर रहे हैं।"

भैया०। (इन्द्रदेव का हाथ पकड़े घर के अन्दर जाते हुए) आश्चर्य के साथ क्यों इन्तजार कर रहे हैं?

इन्द्र०। सो भी बहुत जल्द आपको मालूम हो जायगा।

बात की बात में ये दोनों वहां जा पहुचे जहां जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह बैठे हुए आपुस में तरह तरह की बातें कर रहे थे। इन्द्रदेव के साथ भैयाराजा को (जो कि इस समय अपनी असली सूरत में थे, क्योंकि घर के अन्दर घुसते ही उन्होंने अपने चेहरे पर से तिलिस्मी झिल्ली उतार कर हाथ में ले ली थी) आते हुए देख कर सब के सब उठ खड़े हुए। जमना सरस्वती और इन्दुमति ने सिर झुकाया, बलभद्रसिंह ने हाथ जोड़ा और प्रभाकरसिंह ने सलाम करके कहा, "आपके पुनः लौट आने से आश्चर्य होता है!!"

भैया०। पुनः लौट आना कैसा?

प्रभा०। अभी आपको यहां से गये आधे घण्टे से कुछ ही ज्यादे हुआ होगा।

भैया०। (आश्चर्य से इन्द्रदेव की तरफ देख कर) मालूम होता है कि कोई ऐयार मेरी सूरत में यहां आकर आप लोगों को धोखा दे गया है।

इन्द्र०। बेशक ऐसी ही बात है। आप बैठ जाँय तो मैं खुलासा हाल बयान करूं।

भैया०। (स्वयम् बैठ जाने और सभों को बैठाने के बाद) हां कहिये तो सही मामला क्या है? आपको धोखा देने की हिम्मत करना किसी मामूली ऐयार का काम नहीं है।

इन्द्र०। बात यह है कि मैं आज किसी कार्य्यवश 'देवबन्द' के जंगल में गया था। यद्यपि आप कह गये थे कि मैं तीसरे पहर आपसे मिलने के लिये यहाँ आऊँगा। और इसलिये मुझे यहां मौजूद रहना वाजिब था तथापि मैं अपने शागिर्द को इस बात की ताकीद करके कि आप आवें तो आपको मेरे पास 'देव-

बन्द' के जंगल में फलाने ठिकाने भेज दें, मैं वहां चला गया। कुछ देर के बाद बलभद्रसिंहजी मुझसे मिलने के लिये वहां आये, मेरे शागिर्द ने उन्हें उसी जंगल में भेज दिया, उसके कुछ देर बाद आप ही की तरह का एक आदमी घोड़े पर सवार और ठीक वैसी ही झिल्ली चेहरे पर लगाये हुए वहां आया जैसी झिल्ली मैंने आपको अपने चेहरे पर लगाने के लिये दी थी। मेरे शागिर्द ने समझा कि ये भैयाराजा ही हैं इसलिये उसे 'देवबन्द' के जंगल में मेरा पता बता कर मेरे पास भेज दिया, हम दोनों ने भी धोखे में पड़ कर उसे भैयाराजा समझ लिया और खुले दिल से बातचीत करने लगे क्योंकि चेहरे पर की झिल्ली ने मुझे उस पर शक करने का मौका न दिया, मैं समझे हुए था सिवाय आपके और किसी के पास यह झिल्ली नहीं है क्योंकि मैंने सिर्फ आप ही को यह तिलिस्मी झिल्ली दी थी एक बात और भी है, इस झिल्ली को लगा कर चाहे आप जमाने भर को धोखा दे दें और कोई भी यह न समझे कि आपके चेहरे पर किसी प्रकार की झिल्ली लगी हुई है परन्तु मैं देखने के साथ ही समझ जाऊँगा कि चेहरे पर तिलिस्मी झिल्ली लगी हुई है, अस्तु दूर ही से मैंने उस झिल्ली को समझ कर मान लिया कि भैयाराजा आ गए और बलभद्रसिंह को भी यही कह कर उसका परिचय दिया और बातचीत करने लगा। कुछ देर बाद उस ऐयार ने जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह से मिलने की इच्छा प्रगट की और मैं उसे अपने साथ यहाँ घर पर ले आया परन्तु जब वह प्रभाकरसिंह तथा जमना सरस्वती इत्यादि से बातचीत करने लगा तब उसकी बातों में कई शब्द बेमौके के आ पड़ने के कारण मुझे शक पड़ गया और मैं सोचने लगा कि अगर यह कोई ऐयार है तो इसके पास यह झिल्ली कहां से आई! कुछ ही देर बाद मुझे याद आ गया कि इसी ढङ्ग की दो झिल्लियां मैंने जमना और सरस्वती को दी हुई थीं जो कि आजकल भूतनाथ के कब्जे में होंगी। यह याद आने के साथ ही मैं चौंक पड़ा और उसे भूतनाथ की निगाह से देखने लगा। यद्यपि इसके पहिले बहुत सी बातें और भूतनाथ के सामने मुँह से निकालने योग्य न थीं निकाली जा चुकी थीं परन्तु भूतनाथ का खयाल आ जाने के साथ ही मैंने इशारे से सभों को उस ढंग की बातें करने से रोक दिया। उस नकली भैयाराजा को हम लोगों की बातों से यह निश्चय हो ही चुका था कि इस समय भैयाराजा यहां आने वाले थे और

इसी सबब से सभों ने उसे भैयाराजा मान लिया था अस्तु वह यहां से शीघ्र निकल जाने के लिये जल्दी करने लगा कि शायद भैयाराजा यहां कहीं आ जांय और मेरा भण्डा फूट जाय। वह अपनी खुशकिस्मती समझता होगा कि आपके यहां आने में देर हो गई। खैर मुख्तसर यह कि वह बहुत जल्दी मचाता हुआ यहां से चला गया और उसके थोड़ी ही देर बाद आप आ पहुँचे।

भैया०। (कुछ देर तक सोच कर) यह भूतनाथ को कैसे मालूम हुआ होगा कि मैं तिलिस्मी झिल्ली लगा कर यहां आऊँगा?

इन्द्रदेव०। सम्भव है कि उसे इस बात की खबर न हो तथा वह भैयाराजा बनने के लिये यहां आया भी न हो सिर्फ मामूली ढंग पर मुझसे मिलने के लिये यहां आया हो।

भैया०। हां हो सकता है, मगर जब लोगों ने विना परिश्रम ही उसे भैयाराजा मान लिया तो वह भी क्यों न भैयाराजा बन कर अपना काम निकालता!

इन्द्र०। बस यही तो बात है।

भैया०। मगर यह बात बहुत ही बुरी हुई! अगर वह वास्तव में भूतनाथ था तो समझ रखिये कि बहुत बुरी तरह से हम लोगों का भण्डा फूट गया और अब दारोगा को सहज ही में असली भेद मालूम हो जायगा तथा भूतनाथ भी अब बेतरह नुक्सान पहुँचावेगा।

इन्द्र०। जरूर ऐसा होगा, अब मुझे जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह की विशेष हिफाजत करनी पड़ी।

भैया०। बेशक! अगर आप ऐसा न करेंगे तो बेढब धोखा खायँगे और बहुत पछतायँगे। भूतनाथ * मामूली आदमी नहीं है। हां, यह तो बताइये कि जब आपने उसे भूतनाथ समझ ही लिया तो गिरफ्तार क्यों नहीं किया?

इन्द्र०। (मुस्कुरा कर) इसका जवाब मैं क्या दूँ? आप मेरी प्रतिज्ञा को जानते ही हैं कि मैं अपने हाथ से उसे किसी तरह की तकलीफ न पहुँचाऊँगा

* पाठकों के सुभीते के लिये हम गदाधरसिंह को सब जगह भूतनाथ के नाम से लिख रहे हैं मगर समझ रखना चाहिये कि अभी तक लोग इसे गदाधरसिंह ही के नाम से सम्बोधन कर रहे हैं और उसने भी अभी तक अपना नाम भूतनाथ नहीं रक्खा है।

क्योंकि अपनी जुबान से उसे 'मित्र' कह चुका हूँ।

भैया०। मैं आपकी प्रतिज्ञा को जानता हूँ मगर आपने प्रभाकरसिंह इत्यादि किसी दूसरे के हाथ से उसका भण्डा फोड़ा होता!

इन्द्र०। ठीक है मगर मैं अपने मकान के अन्दर ऐसा नहीं कर सकता। यों तो प्रभाकरसिंह तथा जमना और सरस्वती वगैरह सभी कोई उससे बदला लेने की कोशिश कर रहे हैं और मैं उन सभों की मदद भी कर रहा हूँ मगर...

भैया०। आप समर्थ हैं जो चाहें कर सकते हैं, मगर अब तो मेरी यह तिलिस्मी झिल्ली भी बेकार हो गई जिसके सबब से आप पुनः पुनः धोखा खा सकते हैं और भूतनाथ भी मुझे पहिचान लिया करेगा।

इन्द्र०। नहीं ऐसा न होगा, मैं इसके लिये दूसरा प्रबन्ध करूँगा और आपको दूसरे प्रकार की झिल्ली दूँगा। खैर आप यह तो बताइये कि जमानिया महल के अन्दर आप अपनी स्त्री से मिलने के लिए गये थे? और अगर गये थे तो वहां क्या कैफियत हुई? तथा मेरा शागिर्द आपकी कुछ मदद कर सका या नहीं?

भैया०। आपके शागिर्द परमानन्द ने मेरी बड़ी मदद की और अभी तक वह मेरे ही काम में लगा हुआ है। पहिले दिन जब मैं अपनी स्त्री के पास गया तब जान बूझ कर ऐसी कार्रवाई की कि महल की औरतों को इस बात का शक पड़ गया कि यहां कोई गैर आदमी आया अथवा आता है। धीरे धीरे यह बात भाई साहब के कान तक भी पहुँची और चोर की अर्थात् मेरी गिरफ्तारी का प्रबन्ध किया गया तथा चारो तरफ पहरा बैठाया गया। दारोगा को विश्वास हो गया कि महल के अन्दर भैयाराजा ही छिप कर गया था और फिर भी जायगा अस्तु उसने भी ऐसा प्रबन्ध किया कि मैं अगर गिरफ्तार होऊँ तो सीधे दारोगा के पास पहुँचा दिया जाऊँ।

इन्द्र०। (मुस्कुराते हुए) यह कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि वहां के सभी आदमी अदना से लेकर आला तक दारोगा का ताबेदार बना हुआ है।

भैया०। ठीक है, अस्तु मैंने और परमानन्द ने सलाह कर के एक विचित्र कार्रवाई की और अपनी स्त्री को भी इस कार्रवाई से होशियार कर दिया जिसमें समय पर वह किसी बात की चिन्ता न करे।

इन्द्र० । वह क्या कार्रवाई हुई ?

भैया० । दारोगा के एक शागिर्द को जिसका नाम हरी था परमानन्द ने धोखा देकर गिरफ्तार करवाया और बेहोशी की हालत में उसे मेरी सूरत का बनाया तथा स्वय परमानन्द भी मेरी सूरत बन कर मेरे साथ हरी की गठड़ी पीठ पर लादे हुए रात के समय महल वाले नजरबाग के अन्दर जा पहुँचा । यह काम बड़ी आसानी से हो गया क्योंकि वहां के पहरे पर जो लोग मुकर्रर किये गये थे उनमें मेरे पक्षपाती भी कई आदमी थे और उनसे परमानन्द ने पहिले ही बात-चीत करके सब बातें तै कर रक्खी थी और मेरी तरफ से उन लोगों को बहुत कुछ इनाम भी दिया गया था । खैर बेहोश हरी तो पेड़ों की एक घनी झाड़ी में डाल दिया गया और मैं कमन्द लगा कर महल के ऊपर चढ़ गया । दारोगा के पक्षपातियों को यह कब मंजूर हो सकता था कि मैं ऊपर महल ही में गिरफ्तार होकर राजा साहब के पास पहुँचाया जाऊँ ! वे लोग तो यही चाहते थे कि मैं बाग में गिरफ्तार होऊँ और सीधे दारोगा के पास पहुँचा दिया जाऊँ । अस्तु वे सब चुप रहे और मेरे ऊपर से लौट आने का इन्तजार करने लगे । थोड़ी देर के बाद जब मैं पलट कर नीचे आया तब उन लोगों ने हल्ला मचाया और मुझे गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगे । ऐसे समय में क्या करना होगा सो पहिले ही से परमानन्द ने मुझे समझा बुझा रक्खा था और मैंने उसी के कहे मुताबिक काम भी किया । मुख्तसर यह कि मैं उन सभों से लड़ता हुआ एक पेड़ की आड़ में चला गया जहां परमानन्द छिपा हुआ था और वहां से परमानन्द बड़ी चालाकी से निकल कर मेरे बदले में उन लोगों से लड़ने लगा । दुश्मनों को इस बात का कुछ भी पता न लगा, मैं बड़ी आसानी के साथ बाग के बाहर निकल कर आड़ में खड़ा हो गया और परमानन्द के आने का इन्तजार करने लगा, उधर परमानन्द ने यह किया कि लड़ते लड़ते भाग कर उस झाड़ी के अन्दर जा घुसा और कहीं छिप रहा जिसमें बेहोश हरी को छोड़ आया था । दुश्मन लोग जब वहां पहुँचे तो हरी को देख कर खुश हो गये और उसी को भैयाराजा मान कर उठा ले गये, इसके बाद परमानन्द भी बाग के बाहर निकला और मेरे पास आ पहुँचा । इसके आगे क्या हुआ सो मैं नहीं जानता, नहीं कह सकता कि दारोगा ने मेरे धोखे में हरीको मार डाला या और कुछ किया ।

भैयाराजा की कथा सुन कर सब कोई हँसने लगे और देर तक दारोगा के विषय में उसके बेवकूफ बनने की बातें होती रहीं, पश्चात् पुनः भूतनाथ के विषय में बातें आरम्भ हुईं।

भैया०। अब तो भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह तथा जमना इत्यादि को आपके यहां देख ही लिया है तथा यह भी समझ ही गया होगा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति को उसके कब्जे से छुड़ा कर उसी के शागिर्दों को फँसाने वाले इन्द्रदेव ही हैं.....

इन्द्र०। (बात काट कर) नहीं नहीं, इस बात का उसे निश्चय नहीं होगा हां भ्रम बना रहे सो मैं नहीं कह सकता, और अगर वह ऐसा मान भी ले तो मैं कुछ परवाह नहीं करता, फिर भी उसके और दारोगा के बीच में अब सुलहनामा नहीं हो सकता!

भैया०। सो तो ठीक है मगर.....

इन्द्र०। इसके अतिरिक्त जमना सरस्वती और इन्दुमति के लिये अब मैं दूसरा ही प्रबन्ध करूँगा। हाँ प्रभाकरसिंह अब स्वतन्त्र होना चाहते हैं और उनका इरादा है कि वे स्वयं भी भूतनाथ का मुकाबला करें।

प्रभा०। बेशक मेरा यही इरादा है।

भैया०। (इन्द्रदेव से) कोई चिन्ता नहीं, इन्हें किसी की मदद देकर आप छोड़ दीजिये। आपने इन्हें कुछ ऐयारी सिखाई भी तो है! देखिये उस मेहनत का क्या फल लगाते हैं।

इन्द्र०। मेरी भी यही राय है परन्तु यह तो बताइये कि आप अब क्या कीजियेगा? भूतनाथ पर आपका भेद खुल गया है, अब वह निःसन्देह आपका पीछा करेगा और चाहेगा कि आपकी सूरत बन कर कोई काम निकाले। मैं तो यही राय दूंगा कि अब आप प्रगट हो जाइये, कहीं ऐसा न हो कि धोखे ही धोखे में आपको नुक्सान पहुँचे।

भैया०। नहीं मैं अभी प्रगट न होऊँगा और मुझे भूतनाथ का कुछ ऐसा खौफ भी नहीं है, मैं आपसे कहूँगा कि मैंने अपने लिये क्या सोच रक्खा है और इस बारे में आपसे राय भी लूंगा।

इसके बाद बहुत देर तक उन सभों में बातें होती रहीं जिसे इस जगह

बयान करने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती। सन्ध्या होने में कुछ ही देर बाकी थी जब भैयाराजा घोड़े पर सवार हो इन्द्रदेव के कैलाशभवन से बाहर निकले और उत्तर की तरफ रवाना हुए। इस समय उनका चेहरा किसी और ही ढंग का बना हुआ था। देखा चाहिये कि अब इनसे और भूतनाथ से कैसी छनती है जो बड़ी देर से घात में बैठा हुआ इनके लौटने का इन्तजार कर रहा है।

भैयाराजा जब इन्द्रदेव के कैलाशभवन से निकल कर रवाना हुए तो उन्हें इस बात का गुमान भी न था कि भूतनाथ मेरी ताक में लगा हुआ है और वह आज ही मुझ पर हमला करेगा। अस्तु वह बेफिक्री के साथ अपने नियत स्थान की तरफ धीरे धीरे जाने लगे। कैलाशभवन से बाहर निकलने में भूतनाथ का और इनका कई घण्टे का फासला पड़ चुका था इस लिये इस बीच में भूतनाथ को कई तरह की कार्रवाईयां करने का मौका मिल गया और उसने विचित्र ढंग का जाल इनको फंसाने के लिये फैला डाला।

सूर्य्य भगवान अस्त हो रहे थे और उनकी चलाचली के कारण आसमान के पश्चिम तरफ गहरी लालिमा छा रही थी तथा बादल के छोटे बड़े टुकड़े पूरब की तरफ से उमड़ कर हवा की मदद पा आकाश में दौड़ लगाते हुए पश्चिम की तरफ इस तरह धावा कर रहे थे मानो उस गहरी लालिमा को बात की बात में अपनी स्याह चादर के अन्दर छिपा लेंगे और फिर इस बात का पता भी न लगने देंगे कि भगवान अस्ताचल को प्राप्त कर चुके या नहीं अथवा उनको इस अनित्य संसार से मुंह फेरे कितनी देर हो गई जिसे लोग नित्य कह कर भी मानते हैं और जिसमें स्वयं भगवान ही के अस्तित्व में बाधा डालने वाले तरह तरह का रूप धारण किये हुए बहुत से दल अपने कच्चे सूत का बनाया हुआ जाल पक्का समझ कर फैलाने की कोशिश कर रहे हैं तथा भविष्य में भी जाल बनाने के लिये धूल की रस्सियां बट रहे हैं और यह नहीं समझते कि उनकी यह निर्वीर्य रस्सियां उस सगुण के अटूट गुण (डोरी) के आगे कुछ भी हकीकत नहीं रखतीं जिसमें गुथे हुए सैकड़ों हजारों बल्कि लाखों ब्रह्माण्ड इस तरह ठीक रास्ते पर घूम रहे हैं कि सूत बराबर भी इधर उधर हटने की हिम्मत नहीं कर सकते।

थोड़ी ही देर बाद हवा तेजी के साथ चलने लगी और उसका जोर धीरे धीरे बढ़ता ही चला गया। क्या पत्थरों के बड़े बड़े कुदरती ढेर अथवा पहाड़

अपनी छाती पर टक्कर लेकर उसका जोर तोड़ नहीं सकते ? नहीं, बल्कि उनके इस काम से हवा को और भी मदद मिलती है और वह पहाड़ों से टक्कर खा कर और भी नाचने लगती है जिससे पथिकों के पथ में बेतरह बाधा पड़ जाती है और धूल से आंखें बन्द हो जाने के कारण उन्हें एक कदम भी आगे चलना कठिन हो जाता है।

इस तरह पर यकायकी समय के पलट जाने से भैयाराजा को बड़ा ही कष्ट हुआ और वे सोचने लगे,—"अगर इस तरह शीघ्र ही मौसिम के बिगड़ जाने की मुझे खबर होती तो कदापि कैलाशभवन के बाहर पैर न निकालता।" मगर अब पलट कर पुनः इन्द्रदेव के घर जाना भी उन्हें उचित नहीं जान पड़ता था क्योंकि अपने खयाल से वे आधा रास्ता तै कर चुके थे।

अब गहरे बादलों के छा जाने से बिल्कुल ही अन्धकार हो गया यहां तक कि उस चन्द्रमा की रोशनी का लेशमात्र भी पता नहीं लगता था जिसके भरोसे पर बिना रोशनी का इन्तजाम किये ही भैयाराजा चल खड़े हुए थे और समझ चुके थे कि रास्ते में किसी तरह की बाधा न पड़ेगी, मगर अब कर ही क्या सकते थे। लाचार तरह तरह की बातें सोचते हुए धीरे धीरे जाने लगे परन्तु इस विचार में भी थे कि कहीं ठिकाना मिले तो थोड़ी देर के लिये ठहर जांय।

किसी कवि ने सच कहा है कि 'अन्धेरी रात चोरों ऐयाशों बदमाशों और लुच्चों की सहायक होती है।' अस्तु भूतनाथ को भी यह मुफ्त की सहायता मिल गई जिससे उसने सहज ही में अपने दिल का अरमान निकाल लिया।

धीरे धीरे पानी बरसने लग गया और हवा की सहायता पाकर क्रमशः उसका जोर बढ़ने लगा जिससे भैयाराजा को चलने में और भी कठिनता हो गई। अन्धकारमय रात, हवा का सन्नाटा, पानी का बरसना और पहाड़ी रास्ता जहां दिन को भी आदमी धोखा खाकर रास्ता भूल सकता है ऐसे दुःखदायी समय का तो कहना ही क्या है! भैयाराजा दुःखित होकर एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। अगर कहीं फूस की कुटिया भी इस समय मिल जाती तो उसे हम आनन्दभवन समझ लेते और इस समय प्राण बचा किसी तरह ग्रहदशा के कई घण्टे बिता कर अपने घर का रास्ता लेते। परन्तु बीहड़ स्थान में आराम लेने के लिए कुटिया या झोंपड़ी कहाँ? और अगर

कहीं हो भी तो दिखाई देना उसका कठिन था। अस्तु लाचार उसी पेड़ के नीचे पानी की बौछार और हवा के थपेड़े खाते हुए भैयाराजा कुछ देर तक खड़े रह कर तरह तरह की बातें सोचते रहे। इसी बीच में उन्हें किसी सवार के आने की आहट मालूम हुई। कुछ दिखाई न देने पर भी उन्होंने उस तरफ देखा और कान लगा कर उस आहट का अन्दाजा लेने लगे। मालूम होता था कि हवा और पानी से दुःखी होकर वह सवार भी अपनी इच्छानुसार घोड़े को नहीं चला सकता मगर फिर भी बनिस्बत भैयाराजा के तेजी के साथ ही चला आ रहा था हां थोड़ी थोड़ी दूर पर ठहर जाता और जब बिजली चमकती तो उस रोशनी में चारो तरफ देख कर फिर आगे बढ़ता है।

कुछ ही देर में वह सवार उस पेड़ के पास आकर खड़ा हो गया जिसके नीचे भैयाराजा ठहरे हुए थे। जब बिजली चमकी तो उसकी रोशनी में उसने भैयाराजा को देखा और शीघ्रता से उनके पास आ कर बोला, "मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि आपको आज के सफर में बेहिसाब तकलीफ उठानी पड़ी! अगर मुझे इसका कुछ भी अन्दाजा मिला होता तो आज मैं आपको अपने घर से कदापि बिदा न करता!"

भैया०। कौन है? इन्द्रदेव!

सवार०। जी हां, मैं इसी लिये दौड़ा चला आता हूँ कि आपको वापस ले जाऊँ या इसी रास्ते में कोई ऐसी जगह बता दूं जहां आप आराम से कई घण्टे तक रह कर इस बुरे मौसिम को टाल सकें, क्योंकि यह रास्ता मेरा अच्छी तरह देखा हुआ है और पास की पहाड़ियों की कई गुफा और कन्दराओं को भी मैं अच्छी तरह जानता हूँ तथा एक ऐसे मकान को भी जानता हूँ जो यहां से थोड़ी ही दूर पर उजाड़ पड़ा हुआ है और कई जगह से टूट फूट जाने पर भी इस समय हमलोगों की बखूबी रक्षा कर सकता है।

भैया०। (प्रसन्न हो कर) अगर ऐसी बात है तो शीघ्र उसी मकान की तरफ चलो, इस आंधी और पानी से मैं बेतरह दुःखी हो रहा हूँ और सर्दी से कांप रहा हूँ।

सवार०। (अपने चारजामे के पास से एक दुशाला उठा कर और भैयाराजा को देकर) लीजिये इसे ओढ़ लीजिये, यह आपकी पूरी तरह से रक्षा

करेगा, आप ही के लिये मै इसे घर से लिये आ रहा हूँ।

खुशी खुशी भैयाराजा ने वह दुशाला ले लिया और ओढ़ कर उस सवार के साथ चलने के लिये तैयार हो गये। सवार उनको लिये हुए तेजी के साथ उत्तर की तरफ रवाना हुआ और बहुत जल्द एक चारदीवारी के फाटक पर जा पहुँचा। इस अन्धकारमय रात्रि के समय इस स्थान का नक्शा खैंचना बहुत ही कठिन होगा क्योंकि अन्धकार के कारण कुछ भी मालूम नहीं होता कि यह चारदीवारी कैसी है, हर तरफ से दुरुस्त है या टूटी फूटी है, अथवा इसके अन्दर बिल्कुल ही उजाड़ खण्डहर है या कुछ कोठड़ियां या दालान इत्यादि भी मौजूद हैं।

फाटक पर घोड़ा रोक कर सवार ने भैयाराजा से कहा, "अब आप यहां पर उतर पड़िये, इस फाटक के अन्दर चलने पर आपको बहुत आराम मिलेगा।"

भैया०। (धीमे स्वर में) अच्छा मैं उतरने की कोशिश करता हूँ, तुम्हारे इस दुशाले ने यद्यपि मुझे सर्दी से बचाया मगर मेरे दिमाग को खराब कर दिया। इसमें से एक विचित्र प्रकार की सुगन्ध आ रही है जिससे बेहोशी की दवा का सा असर हो रहा है। मालूम होता है कि मैं बहुत जल्द बेहोश हुआ चाहता हूँ, घोड़े से उतरने की भी ताकत मुझमें नहीं है, लेकिन क्या तुम वास्तव में इन्द्रदेव हो ? (और धीरे से) नहीं नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम इन्द्रदेव हो, अफसोस.....

सवार०। आपका खयाल बहुत दुरुस्त है, मैं वास्तव में इन्द्रदेव नहीं हूँ। ऐसी अवस्था में मैं आपसे अपना नाम छिपाना पसन्द नहीं करता अस्तु ठीक ठीक बता देता हूँ कि मैं गदाधरसिंह हूँ और आप अब मेरे कब्जे में आ चुके हैं।

भैया०। अफसोस ! अफसोस !! दिल की दिल ही...में...रह.....

इतना कहते कहते भैयाराजा घोड़े पर से नीचे गिर पड़े। भूतनाथ ने जो पहिले ही घोड़े पर से उतर चुका था हाथ के सहारे से उन्हें सम्हाला और अपने कब्जे में कर लिया। उसने बहुत जोर से जफील बजाई जिसकी आवाज सुन कर कुछ आदमी वहां आ पहुँचे और सब कोई मिल जुल कर भैयाराजा को खण्डहर के अन्दर ले गये।

सोलहवाँ बयान

भैयाराजा को जिस स्थान में भूतनाथ ले गया वह यद्यपि खण्डहर कहा जाता था परन्तु उसमें दो दालान और तीन चार कोठड़ियां ऐसी थीं कि जिनकी मजबूती में अभी तक किसी तरह का खलल नहीं आया था तथा इस इमारत की चारदीवारी भी अभी तक अपनी आधी हैसियत के साथ मौजूद थी और बिना दर्वाजे का फाटक भी दिखाई दे रहा था।

भूतनाथ ने भैयाराजा को एक कोठड़ी के अन्दर ले जाकर लिटा दिया और शागिर्दों के सहित स्वयम् बाहर दालान में बैठ कर अपने अनूठे मामलों पर विचार करने लगा। कदाचित् उसने निश्चय कर लिया था कि जब आप से आप भैयाराजा की बेहोशी दूर होगी तभी उनसे बातचीत करेगा क्योंकि इस समय उनकी बेहोशी दूर करने के लिए उसने कोई कार्रवाई नहीं की।

हम ऊपर लिख आये हैं कि भैयाराजा की सूरत ऐयारी ढंग पर बदली हुई थी। परन्तु भूतनाथ ने उन्हें अच्छी तरह पहिचान लिया। यद्यपि बेहोश करके भूतनाथ ने उन पर कब्जा कर लिया है परन्तु उनके हाथ पैर खुले ही छोड़ दिये हैं।

तमाम रात बीत जाने के बाद जब भैयाराजा की बेहोशी दूर हुई तो उन्होंने अपने को एक मामूली कोठड़ी में पड़े हुए पाया। बेहोश होने के पहिले ही उन्हें मालूम हो चुका था कि भूतनाथ ने धोखा दे कर उन्हें अपने कब्जे में कर लिया है। इस समय बेहोशी दूर होने के साथ ही उन्हें वह बात याद आ गई और वे आश्चर्य के साथ इधर उधर आंखें दौड़ा कर भूतनाथ को खोजने लगे। भूतनाथ फौरन उनके सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "शायद आप मुझे खोज रहे हैं।" इस समय भूतनाथ ने उनके चेहरे पर से वह नवीन झिल्ली उतार ली थी।

भैया०। हां, बेशक ऐसा ही है। मैं सब से पहिले तुमसे यही पूछा चाहता हूँ कि तुमने मुझे कैद कर के भी खुला क्यों छोड़ा है और मेरे साथ दुश्मनी करने पर तुमने क्यों कमर बांधी है?

भूत०। खुला इसी लिये छोड़ा है कि मुझे आपसे किसी तरह की दुश्मनी

नहीं है सिर्फ एक छोटा सा काम निकालने के लिये मैं आपको यहां ले आया हूँ।

भैया० । वह कौन सा काम है जो मुझे सता कर तुम निकाल सकते हो ?

भूत० । नहीं नहीं, मैं आपको सताना नहीं चाहता, सिर्फ इतना ही चाहता हूँ कि आप किसी एक ठिकाने बैठे रहें और मैं आपकी सूरत बन कर अपना काम निकाल लूं ।

भैया० । (कुछ सोच कर) खैर कम से कम यह तो मालूम होना चाहिये कि वह काम कौन सा है ?

भूत० । जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को इस दुनिया से उठा देना यही एक काम है जिसके लिये मैं तरह तरह की तकलीफें उठा रहा हूँ और मुझे दारोगा ऐसे कमीने आदमी की खुशामद करनी पड़ती है ।

भैया० । दारोगा तुम्हारा दोस्त है, वह अपनी जान पर खेल कर तुम्हारी मदद करता है, उसी ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को तिलिस्म से निकाल कर तुम्हारे हवाले किया था, उसी ने तुम्हारी इच्छानुसार सब कार्रवाइयां की, यहां तक कि तुम्हारे ही सबब से मुझे मारने के लिए तैयार हो गया, फिर भी तुम उसे कमीना क्यों कहते हो ?

भूत० । आपका कहना ठीक है मगर मेरे काम के लिए उसने आपको मारना नहीं चाहा था बल्कि अपनी भलाई के लिए उसने ऐसा काम किया था। जो आदमी अपने मालिक तक को मारने में सङ्कोच न करे उसे कमीना नहीं तो और क्या कहा जाय ?

भैया० । (मुस्कुरा कर) इस इल्जाम से तो तुम भी नहीं बच सकते ! दयाराम के साथ जो कुछ सलूक तुमने किया सो तो जाहिर ही है और अब उनकी औरतों के साथ जो कुछ किया चाहते हो वह भी मालूम हो गया ! बात यह है कि तुम और दारोगा दोनों एक ही मिट्टी के बने हुए हो, तुमसे बढ़ कर वह और उससे बढ़ कर तुम हो !!

भैयाराजा की बातें सुन कर भूतनाथ लाजवाब तो हो गया मगर क्रोध से उसकी आखें सुर्ख हो गईं, कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला :—

भूत० । आप इस वक्त हर तरह से मेरे कब्जे में होकर ऐसी कड़वी बातें कहते हैं कि मुझे ताज्जुब होता है ।

भैया० । बात जो कुछ थी वह मैंने सच सच कह दी अब चाहे तुम्हें कड़वी मालूम पड़े या मीठी। खैर मुझे इन बातों से कोई मतलब नहीं, तुम और दारोगा जैसे हो उसे मैं खूब पहिचानता हूँ, अब जो कुछ तुम्हारे जी में आवे करो और मेरी सूरत बन कर जो कुछ काम निकाला चाहते हो निकालो, देखूँ तुम अपने काम में क्योंकर कृतकार्य होते हो।

भूत० । खैर जैसा होगा देखा जायगा, अगर आप सीधी तरह से तीन चार दिन तक मेरे कब्जे में रहना पसन्द करेंगे तो मैं आपको बड़ी स्वतन्त्रता के साथ रक्खूंगा, नहीं तो आपको हथकड़ी और बेड़ी की तकलीफ उठानी पड़ेगी।

भैया० । जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूँगा, मगर यह तो बता दो कि तुम मुझे कहां कैद करोगे, इसी मकान में या किसी और जगह !

भूत० । आज दिन भर तो इसी मकान में रहना पड़ेगा मगर रात होने पर मैं आपको दूसरे मकान में ले चलूंगा।

भैया० । बहुत अच्छा। अब मेरे नहाने धाने का बन्दोबस्त होना चाहिये, मैं समझता हूँ कि मैदान जाने के लिये आप मुझे इस चारदीवारी के बाहर तो जाने ही न देंगे !

भूत० । नहीं।

भैया० । अच्छा तो इस खंडहर की कोठड़ियों में घूमने की तो इजाजत मिलेगी ?

भूत० । इस खंडहर के अन्दर आप जो चाहें कर सकते हैं, कूंआ और पानी खींचने का सामान भी यहां मौजूद है।

इतना कह कर भूतनाथ चुप हो गया। भैयाराजा अपनी जगह से उठ खड़े हुए और उस खडहर में जो कुछ कोठडियां थीं उन्हें अच्छी तरह से घूम घूम कर देखने लगे। भूतनाथ और उसके दो तीन साथी भी भैयाराजा के पीछे पीछे फिरते रहे। इसी तरह घूमते हुए भैयाराजा एक ऐसी कोठड़ी में पहुँचे जिसमें अभी तक लोहे का दरवाजा मौजूद था। वहां पर उन्होंने भूतनाथ से कहा कि अगर आप आधे घण्टे के लिए मुझे इस कोठड़ी में अकेले छोड़ दें तो बड़ी मेहरबानी होगी। भूतनाथ ने भैयाराजा की यह बात मंजूर कर ली और कहा, "आप जितनी देर तक चाहें इसमें बैठ सकते हैं, मगर मैं खूब जानता हूँ कि

अन्दर से किवाड़ बन्द कर के आप बहुत देर तक इसमें आराम न कर सकेंगे।"

इतना कह कर भूतनाथ अपने दो साथियों को दर्वाजे के बाहर बैठने का इशारा करके वहां से चला गया और भैयाराजा ने उस कोठड़ी के अन्दर जाकर मामूली तौर पर उसका दर्वाजा भिड़का दिया।

दो घण्टे के बाद भूतनाथ अपने जरूरी कामों से छुट्टी पा कर उस कोठड़ी के दर्वाजे पर आया और भैयाराजा को होशियार करने की नीयत से नाखून से दरवाजे को खटखटाया। जब कुछ जवाब न मिला तो दर्वाजे को धक्का दिया। भूतनाथ का खयाल था कि दर्वाजा अन्दर से बन्द होगा मगर ऐसा न था, धक्का देने के साथ ही दरवाजा खुल गया मगर भैयाराजा पर निगाह न पड़ी जिसके कारण भूतनाथ कोठड़ी के अन्दर चला गया और बड़े गौर से चारो तरफ देखने लगा।

यह कोठड़ी बहुत बड़ी न थी। इसकी दीवार और जमीन एक किस्म के सुर्ख पत्थर से बनी हुई थी, दीवारों में आला या आलमारी का कोई निशान तक न था। भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि ऐसी कोठड़ी में से भैयाराजा यकायक क्योंकर गायब हो गये। बहुत कुछ सोचने और विचारने के बाद भूतनाथ ने कमर से खञ्जर निकाला और उसके कब्जे से हर तरफ की दीवार ठोंक ठोंक कर टोह लेने लगा कि कहीं से दीवार पोली तो नहीं है।

भूतनाथ का यह काम पूरा नहीं होने पाया था कि यकायक कोठड़ी का दरवाजा बन्द हो गया और अन्दर बिल्कुल अन्धकार हो जाने के कारण भूतनाथ घबड़ा उठा। टटोलता हुआ दर्वाजे के पास आया और उसे खोलने की कोशिश करने लगा। अन्दर से भूतनाथ दर्वाजे की जंजीर पकड़ कर खींचता था और बाहर से उसके शागिर्द लोग धक्का देकर दर्वाजा खोला चाहते थे मगर किसी की भी मेहनत ठिकाने न लगी, अन्त में भूतनाथ दुःखी होकर जमीन पर बैठ गया और तरह तरह की बातें सोचने लगा। क्या यह कोठड़ी किसी तिलिस्म से सम्बन्ध रखती है? या यह टूटा फूटा मकान ही कोई तिलिस्म है? अगर ऐसा है तो जरूर भैयाराजा को इसके भेद मालूम हैं। अफसोस! मुझसे बड़ी भूल हुई जो भैयाराजा को मैं इस खंडहर में ले आया!! तो क्या अब मैं इस कोठड़ी में अकाल मृत्यु का शिकार बनूंगा? नहीं नहीं, मेरे पास खंजर है जिससे मैं इस कोठड़ी

की दीवार में सूराख कर सकता हूँ, क्योंकि इस लोहे के दर्वाजे को खोलना तो बिल्कुल ही असम्भव है।

इतना सोच कर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और खंजर से दीवार में सेंध लगाने की कोशिश करने लगा। लगातार दो घण्टे मेहनत करने बाद उसे निश्चय हो गया कि यह काम किसी तरह भी पूरा न हो सकेगा क्योंकि कुछ पत्थर और ईंट के टुकड़े निकलने के बाद मालूम हुआ कि दीवार में फौलादी लोहे की चादर लगी हुई है जिस पर खंजर का कुछ भी असर नहीं हो सकता। पुनः भूतनाथ हताश होकर जमीन पर बैठ गया और अपनी बेवकूफी पर अफसोस करने लगा।

बाहर भी उसके शागिर्दों ने अपने उस्ताद को इस कैद से छुड़ाने के लिये कोशिश करने में कोई बात उठा न रक्खी, दीवार तोड़ने के लिए कोशिश की, छत तोड़ने के लिए बेहिसाब पसीना बहाया मगर सफल मनोरथ न हुए, अन्त में लाचार होकर दरवाजे के साथ मुंह लगा कर भूतनाथ से बातचीत करने लगे।

दुनिया में लालची लोभी पापी और ऐयाश आदमियों को अपनी जान बहुत प्यारी होती है। जिन्हें लालच नहीं है और जो दुनियादारी में अपने को नहीं फंसाये रहते उनको अपनी जान की कुछ भी परवाह नहीं रहती। मौत से डर उन्हीं को लगता है जिनके काम खोटे रहते हैं और जिनको मालूम होता है कि हमने अपनी जिन्दगी में कोई काम अच्छा नहीं किया, न तो हमने किसी के साथ उपकार किया और न किसी के आड़े वक्त में काम आये। इसी तरह भूतनाथ के जिन्दगी की बही में पापों की रोकड़ जैसे जैसे बढ़ती जाती है तैसे तैसे उसे अपनी जान प्यारी होती जाती है और इसके विपरीत दूसरों की जान को वह मच्छड़ और खटमल की जान के समान समझता है। एक पाप को छिपाने के लिए उसे दूसरे पाप की जरूरत पड़ती है और दूसरे के लिये तीसरे की। अस्तु, समझ लेना चाहिये कि उस कोठड़ी में बन्द हर तरह से लाचार भूतनाथ कैसी कैसी बातें सोच रहा होगा।

दिन बीत गया और आधी रात भी गुजरने पर आई। उस समय भूतनाथ अपनी जिन्दगी से हताश होकर उच्च स्वर में ईश्वर से प्रार्थना करने लगा और कहने लगा, "हे जगन्नियन्ता जगदाधार, जगदीश्वर, मेरे अपराधों को क्षमा कर क्योंकि

तू दीनानाथ दीनबन्धु और दयालु है। मैं निश्चय रूप से प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में किसी की आत्मा दुःखी न करूंगा और न कोई ऐसा काम करूंगा कि जिससे लोग मुझे प्रायश्चित्ती कहें या मैं समाज में मुंह दिखलाने के लायक न रहूँ। जो कुछ अपराध मैं कर चुका हूँ अब न तो उसके छिपाने की कोशिश करूंगा और न निरपराधिनी अबला जमना सरस्वती और इन्दुमति के खून का ग्राहक बनूंगा, और .....

भूतनाथ और कुछ कहा ही चाहता था कि उस कोठड़ी के एक कोने में से आवाज आई, "ओ दुष्ट ! चुप रह !! क्या तू ईश्वर को भी धोखे में डाला चाहता है !!"

इस आवाज ने भूतनाथ को चौंका दिया और वह आंखें फाड़ फाड़ कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी, मगर अन्धकार इतना ज्यादा था कि उसकी तेज आंखें भी कुछ काम न कर सकीं। अफसोस इस वक्त ऐयारी का बटुआ उसके पास न था नहीं तो वह जरूर सामान निकाल कर रोशनी करता और देखता कि उसकी बातों का जवाब देने वाला कौन है। भूतनाथ ने उठ कर टटोलना और उस तरफ जाना भी मुनासिब न समझा जिधर से आवाज आई थी। अस्तु उसने गुप्त मनुष्य की बात का इस तरह उत्तर दिया :—

भूत०। नहीं, मैंने जो कुछ कहा है उसकी सचाई में किसी तरह भी फर्क नहीं पड़ सकता। मैं यहां तक तैयार हो चुका हूँ कि अपने ऐयारी के पन को भी तिलांजुली दे दूँगा और दुनिया से एक दम किनारे हो जाऊँगा।

गुप्त०। नेकी और नेकनीयती के साथ रहने वाले को दुनिया छोड़ने की कोई भी जरूरत नहीं। अच्छा तेरी इस समय की प्रार्थना स्वीकार की जायगी अगर तू आजमाने में सच्चा ठहरेगा। देख मेरी तरफ !!

उसी समय कोठड़ी में चांदना हो गया और साक्षात् शिव की तरह त्रिशूल और डमरू लिये एक अपूर्व मूर्ति का भूतनाथ को दर्शन हुआ। भूतनाथ ने मुश्किल से देखा कि त्रिशूल में से बेहिसाब रोशनी निकल रही है और वह रोशनी इतनी कड़ी और तेज है कि उसकी तरफ आंख ठहर नहीं सकती। शिवरूपी महात्मा ने आगे बढ़ कर भूतनाथ के बदन से त्रिशूल लगा दिया जिससे भूतनाथ कांप उठा और एक दम बेहोश हो कर जमीन पर लेट गया।

सत्रहवां बयान

भूतनाथ की बेहोशी जब दूर हुई तो उसने अपने को एक हरे भरे सुन्दर बाग में नर्म नर्म घास के ऊपर पड़े पाया। फूलों की मीठी मीठी खुशबू उसके दिमाग को मुअत्तर कर रही थी और पश्चिम तरफ आसमान पर अस्त होते हुए सूर्य भगवान की लालिमा कह रही थी कि भूतनाथ अब उठ बैठो, यह गफलत की नींद सोने का समय नहीं है। भूतनाथ घबड़ा कर उठ बैठा और आश्चर्य की निगाह से चारो तरफ देखने लगा।

इस छोटे से बाग के तीन तरफ ऊँची ऊँची दीवारें थीं और चौथी तरफ दो मञ्जिला बहुत खूबसूरत मकान बना हुआ था। बाग के बीचोबीच में एक छोटा सा संगमर्मर का चबूतरा था जिस पर चार पांच औरतें बैठी हुई दिखाई दे रही थीं।

भूतनाथ की निगाह सब तरफ से घूमती हुई उस चबूतरे पर जा पड़ी जिस पर कई औरतें बैठी हुई थीं। भूतनाथ ने बारीक निगाह से उनकी तरफ देखा और धीरे से बोल उठा, "इनको तो मैं पहिचानता हूँ!" यह कहते ही वह उस चबूतरे के पास जा पहुँचा और देखा कि जमना सरस्वती इन्दुमति तथा हाथ में नंगी तलवार लिये और भी दो औरतें बैठी हुई आपुस में बातें कर रही हैं। यद्यपि ईश्वर की प्रार्थना करता हुआ भूतनाथ कसम खा चुका था कि किसी को दुःख न दूँगा, मगर इस समय एकान्त में जमना सरस्वती और इन्दुमति को देखकर उसके मुंह में पानी भर आया और वह अपनी प्रतिज्ञा को एकदम भूल गया।

जमना सरस्वती और इन्दुमति ने भी भूतनाथ को देखा। चमक कर उठ खड़ी हुईं और आश्चर्य करती हुई भूतनाथ से पूछने लगीं:—

जमना०। क्यों जी गदाधरसिंह, तुम यकायक यहां कैसे आ पहुँचे?

भूत०। इस बात को तो मैं खुद ही नहीं जानता!

जमना०। मैंने तो सुना था कि तुम्हें भैयाराजा ने कैद कर लिया है और तुमने ईश्वर को साक्षी देकर कसम खाई है कि अब किसी के साथ भी बुराई न करोगे।

भूत० । (दबी जुबान से) हां सो तो ठीक है, मगर तुमने सुना नहीं, बुद्धिमानों का कथन है कि हजार कसम खा कर भी अगर दुश्मन को मार सके तो जरूर मारे ।

सरस्वती० । हां ठीक है, कमहिम्मत, बुजदिल और नामर्द बुद्धिमानों का यही कौल है ।

भूत० । खैर, मैं तुम्हारी बातों का जवाब देना मुनासिब नहीं समझता क्योंकि तुम मेरे मित्र और मालिक की स्त्री हो और मैं तुमको भी मालिक ही के समान मानता हूँ ।

जमना० । (मुस्कुरा कर) ठीक है, तब ही तो तुमने मुझ पर सफाई का हाथ फेरा था और एकदम जहन्नुम में मिला देने के लिए तैयार हो गये थे ।

भूत० । इस विषय में तुम कोई भी सबूत नहीं दे सकती हो बल्कि मैं इस बात का सबूत दे सकता हूँ कि तुमने मुझे सताने के लिए कैसे कैसे ढंग रचे थे जिनसे कि ईश्वर ही ने मुझे बचाया ।

जमना० । हां, इस बात से तो मैं किसी तरह भी इन्कार नहीं कर सकती क्योंकि तू मेरे पति का घातक है ।

भूत० । (क्रोध के साथ) बस यही बात तो मेरे कलेजे में खटकती है ! अगर तुम अपनी जुबान से ऐसा न कहा करतीं और तुम्हें इस बात का शक न होता तो मुझे तुम्हारे साथ दुश्मनी करने की कोई जरूरत ही न थी । तुम ही मुझे दुनिया में मुफ्त बदनाम और बर्बाद किया चाहती हो और सिवाय तुम्हारे कोई भी मेरे माथे में कलंक का टीका नहीं लगा सकता क्योंकि वास्तव में मैं तुम्हारे पति का घातक नहीं हूँ । तुम मुझे मुफ्त बदनाम करती हो और इसी बदनामी को दूर करने के लिये मुझे मजबूर होकर तुम्हारे साथ दुश्मनी करनी पड़ती है ।

जमना० । अगर तुम इस बात का सबूत दे दो कि तुम वास्तव में मेरे पति के घातक नहीं हो तो मैं आज ही से तुम्हारे साथ दुश्मनी करने का खयाल एक-दम छोड़ दूँ मगर साथ ही इसके तुम भी मेरे साथ अपना बर्ताव बदल दो अर्थात् दुश्मनी का ध्यान छोड़ दो ।

भूत० । बेशक, मैं दोनों काम करने के लिये तैयार हूँ ।

सरस्वती०। बस तो फिर सबूत देने में देर क्या है ?

भूत०। इतना ही कि मेरा ऐयारी का बटुआ मुझे मिल जाय।

जमना०। तुम्हारे ऐयारी के बटुए में कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम अपनी सफाई के सबूत में पेश कर सको।

भूत०। (अश्चर्य से) यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

जमना०। तुम्हारा बटुआ मेरे कब्जे में है, मैं उसे अच्छी तरह देख चुकी हूँ।

भूत०। यह तो तुमने अच्छा नहीं किया !

जमना०। (मुस्कुरा कर) तुम दूसरे का सर्वस्व नाश कर दो तो कोई हर्ज नहीं और अगर कोई दूसरा तुम्हारा ऐयारी का बटुआ किसी तरह ले ले तो कहो "बहुत बुरा किया !" जिस भैयाराजा को तुमने धोखा देकर फंसाया था उसी भैयाराजा ने तुम्हारे बटुए पर कब्जा कर लिया था अब वह बटुआ मेरे पास मौजूद है।

जमना की बातें सुनते सुनते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने बिना इस बात का विचार किये ही कि मैं कहां हूँ किसके कब्जे में हूँ, और क्या कर रहा हूँ, उन तीनों पर हमला किया अर्थात् खञ्जर निकाल कर वार करने के लिये उन पर झपटा।

अट्ठारहवाँ बयान

सुबह होने में अभी दो घण्टे की देर है। कृष्णपक्ष की दशमी है इसलिये अन्धेरी रात का दौरा बीत गया है और इस समय मन्द रोशनी फैलाते हुए चन्द्रमा आस्मान पर दिखाई दे रहे हैं। काशी से तीन कोस की दूरी पर सारनाथ नाम का एक स्थान है और वहां दो ढाई सौ घरों की एक खासी बस्ती है। बस्ती के दाहिने किनारे एक साफ सुथरी सड़क है जो कि पटने से होती हुई बराबर काशी तक चली गई है। इसी सड़क पर से एक रथ जिसमें सुन्दर बैलों की जोड़ी लगी हुई है धीरे धीरे काशी की तरफ चला जा रहा है। मालूम होता है कि यह रथ बहुत दूर से आ रहा है क्योंकि इसका हांकने वाला और इसके सवार सभी मीठी मीठी नींद में मस्त हो रहे हैं, यद्यपि आदत और नियम के अनुसार बैल बेचारे सीधी राह चले जा रहे हैं मगर हांकने वाले को इस बात की

कुछ भी खबर नहीं है कि सवारी अब कहां आ पहुँची है और जिस मुकाम पर हम जाने वाले हैं वह कितनी दूर रह गया है।

रथ हांकने वाले की उम्र कम से कम चालीस वर्ष की होगी। वह कद्दावर और हृष्टपुष्ट आदमी था। घनी दाढ़ी ऊपर की तरफ चढ़ी हुई थी और स्याह मूछों ने उसका चेहरा रोआबदार बना रक्खा था। मोटा गज्जी का दोहरा अँग रखा और चुस्त पायजामा पहिने हुए था जिसके ऊपर सुर्ख कपड़े का कमरबन्द-कसा हुआ था और उसमें एक वजनी तथा चौड़े बाढ़ का तेगा लटक रहा था

यह रथ धीरे धीरे सारनाथ की बस्ती के पास पहुँचा तो एक चौकीदार ने। हाँकने वाले को आवाज देकर रोका और कहा, "ठहरो ठहरो! बताओ यह रथ कहां से आता है और कहां जायगा?"

हांकने वाले की पिनिक टूटी और उसने बैल की रास खैंच कर कहा, "भाई यह रथ काशी जायगा। तुम कौन हो (चारो तरफ देख कर) और इस बस्ती का क्या नाम है?"

चौकीदार०। बस्ती का नाम सारनाथ है और हम यहां के चौकीदार हैं।

हांकने वाला०। (चौंक कर) वाह वाह!! तो हम सारनाथ पहुँच गये अब काशी यहां से थोड़ी ही दूर होगी?

चौकीदार०। बस तीन ही कोस तो।

हांकनेवाला०। (चन्द्रमा की तरफ देख कर) रात भी थोड़ी ही रह गई है, अच्छा अब हम तेज हांकते हैं जिसमें सवेरा होने के पहिले ही ठिकाने पहुँच जाँय।

इतना कह कर उसने रथ हांकने की चेष्टा की मगर चौकीदार ने रोका और कहा :—

चौकीदार०। ठहरो, पहिले यह बता दो कि इसमें सवार कौन कहां के रहने वाले और किस घराने के आदमी हैं?

हांकनेवाला०। इससे तुम्हें क्या मतलब?

चौकीदार०। मतलब नहीं तो पूछते क्यों हैं!

हांकनेवाला०। हम यह नहीं बता सकते कि इसमें कौन है।

चौकीदार०। (जोर से जफील बुला कर और कुछ ठहर कर) बिना

बताये तुम यहां से कदापि आगे जाने न पाओगे।

हांकनेवाला०। आखिर रोकने का कुछ सबब भी बताओगे या यों ही जबर्दस्ती करोगे?

चौकीदार०। सबब तो हम नहीं कह सकते मगर इतना जरूर बता देंगे कि इस गांव के मालिक की यही आज्ञा है कि रात के समय बिना जाँच किये कोई सवारी यहां से आगे न जाने पावे।

हांकनेवाला०। इसमें जनानी सवारी है इसलिये हम इसकी जांच नहीं करने देंगे।

इतना कह कर हांकने वाले ने बैलों को चाबुक मारा और वहां से निकाल ले जाने की इच्छा की। चौकीदार की बजाई जफील की आवाज सुन कई आदमियों ने आकर उस रथ को घेर लिया था। इसमें से आगे के लोग तो यद्यपि बैलों के खौफ से हट गये परन्तु सभों ने मिल कर बैल और हांकने वाले पर हमला किया और जोर से चिल्ला चिल्ला कर लट्ठ चलाने लगे। हांकने वाले ने मजबूर होकर रथ रोक लिया और हाथ में तेगा लेकर रथ के नीचे कूद दुश्मनों का मुकाबला बड़ी दिलावरी और बहादुरी के साथ करने लगा। थोड़ी ही देर में लोगों को मालूम हो गया कि यह रथ हांकने वाला मामूली आदमी नहीं है क्योंकि बात की बात में उसने कइयों के हाथ की लट्ठ बेकार कर दी, कइयों की कलाई काट डाली, और कइयों को ऐसा जख्मी किया कि उनमें उठने की शक्ति न रही। परन्तु वह बहलवान भी बेतरह चुटीला हो गया। उसकी बाईं कलाई लट्ठ की चोट से बेकार हो गई, उसके मोढ़े जख्मी हो गये और उसके सिर पर एक लट्ठ ऐसा बैठा कि सिर फट जाने के कारण खून का तरारा बह चला। इतने पर भी वह हिम्मत न हारता मगर दुश्मनों के चिल्लाने से वहां और भी कई आदमी लाठी लेकर आ पहुँचे और चौकीदार तथा उसके पक्षपातियों की मदद करने लगे जिसे देख बहलवान हताश हो गया। वह लड़ाई बन्द करने की नीयत से पैतरा बदलता हुआ एक किनारे हो गया और लोगों को ऊंची आवाज में पुकार कर लड़ाई बन्द करने के लिये कहा परन्तु वहां पर ऐसा हुल्लड़ मच गया था कि उसकी आवाज बड़ी मुश्किल से लोगों ने सुनी और लड़ाई बन्द की, तब तक वह इधर उधर चक्कर काटता हुआ अपने को बचाता रहा।

लड़ाई बन्द हो जाने पर एक आदमी ने कुछ आगे बढ़ कर रथ हांकने वाले से कहा, "तुमने हमारे कई आदमियों को व्यर्थ जख्मी कर दिया है तिस पर भी हम तुम्हारा कसूर माफ करेंगे यदि अब भी तुम अपना और अपनी सवारी का ठीक परिचय दे दो तो।"

हांकनेवाला०। इस रथ पर औरतें सवार हैं इसलिये हम इनका नाम बताने से हिचकते हैं।

आदमी०। आखिर इन औरतों का कोई मर्द तो होगा! तुम उन्हीं का नाम बताओ और स्थान का पता दो तथा यह कहो कि रात के समय सफर करने का क्या कारण है?

हांकनेवाला०। पटने के एक रईस सेठ ताराचन्द्र की स्त्री और लड़की इस रथ पर सवार हैं, कई कारणों से उन्होंने इन औरतों को अपने भाई के पास काशी भेजा है।

आदमी०। इतने बड़े रईस की औरतों को इस तरह अकेले सफर करते देख कर हम लोगों को आश्चर्य मालूम होता है तथापि थोड़ी देर के लिये हम तुम्हारी बात सच मान लेते हैं परन्तु जब तक सूर्य उदय न हो ले तब तक के लिये तुम्हें यहां रुके रहना पड़ेगा।

हांकनेवाला०। ऐसा क्यों?

आदमी०। यहां का यही नियम है।

हांकनेवाला०। यहां रुकने से तो हमारा बड़ा हर्ज होगा, हमारे दुश्मन सर पर आ जायंगे जो हमारा पीछा कर रहे हैं और जिनके खौफ से हम रातो ही रात भागे जा रहे हैं।

चौकीदार०। (आगे बढ़ कर) इनकी यह बात मानने के लायक नहीं है, क्योंकि अगर इनको पीछा करने वाले दुश्मनों का खौफ होता तो ये बड़ी होशियारी और तेजी के साथ रथ को भगा कर लिये जाते मगर मैंने अच्छी तरह देखा है कि रथ बहुत धीरे धीरे जा रहा था और ये (हांकनेवाले) मीठी नींद सो रहे थे या यों कह सकते हैं कि पिनिक ले रहे थे।

आदमी०। (चौकीदार को बोलने से रोक कर) खैर जाने दो। हम इस समय इन्हीं की बात मान लेते हैं और जवाब में यह कहते हैं कि अगर तुम्हारे

दुश्मन पीछा करते हुए यहां आ जायंगे तो हम लोग तुम्हारी मदद करेंगे और उनसे लड़ेंगे परन्तु सवेरा होने के पहिले तुम्हें यहां से आगे न जाने देंगे।

हांकनेवाला०। खैर जब तुम ऐसा कहते हो तो हम रुक जाते हैं। मगर यह तो बताओ कि हमें रोक लेने से तुम्हें फायदा क्या होगा।

आदमी०। सो तुम्हें पीछे मालूम हो जायगा, इस समय हम इस बात का जवाब नहीं दे सकते।

हांकनेवाला०। यह तो खासी जबर्दस्ती है।

आदमी०। जो समझो।

मजबूर होकर रथ रोक लेना पड़ा मगर बहुत कहने पर भी हांकने वाले ने रथ को नीचे नहीं उतारा सड़क ही पर एक किनारे खड़ा कर दिया, और बैलों को भी रथ से अलग नहीं किया। उधर गांव वालों ने (जो लड़े थे) धीरे धीरे अपने आदमियों को सम्हालना शुरू किया अर्थात् चुटीले और जख्मी आदमियों को जिस तरह बन पड़ा उठा उठा कर ले जाने लगे। इसी बीच में रथ हांकने वाले ने भी रथ के पर्दे के अन्दर सिर ले जाकर उसमें बैठी हुई सवारी से कुछ बातें की। वास्तव में रथ के अन्दर दो औरतें बैठी हुई थीं औरउन दोनों ही के हाथों में इस समय एक एक दोनाली तमञ्चा भरा हुआ मौजूद था तथा वे इसलिये तैयार बैठी थीं कि अगर कोई जबर्दस्ती रथ का पर्दा हटावेगा तो उसे गोली मार देंगी।

बातचीत करने के बाद हांकनेवाला पुनः रथ के ऊपर अपने स्थान पर जा बैठा। यह बात उसके विपक्षियों को बहुत बुरी मालूम हुई अतएव उन्होंने उसे रोका और कहा, "जब कि तुमने इस बात का निश्चय कर लिया कि सवेरा होने तक रथ इसी जगह रुका रहेगा तब हांकने वाली गद्दी पर जाकर बैठने की तुम्हें क्या जरूरत थी। मुनासिब तो यही था कि बैल खोल दिये जाते और तुम जमीन पर ही कम्बल बिछा कर बैठते, पर तुमने ऐसा नहीं किया। खैर हमने भी जोर नहीं दिया, मगर तुम्हारा अपनी गद्दी पर जाकर बैठना हमें शक दिलाता है कि तुम वादे के खिलाफ बेईमानी पर कमर बांधे हो और भागने के लिये तैयार हो कर मौके का इन्तजार कर रहे हो।"

हांकनेवाला०। नहीं नहीं, मेरा ऐसा इरादा नहीं है यहां पर बैठने से आरमा

मिलेगा और अफीम घोल कर पीने में मुझे सुभीता होगा यही सोच कर मैं यहां आ बैठा हूँ।

इस समय विपक्षियों के कई आदमी अपने जख्मी साथियों को सम्हालने के फेर में पड़ गये थे और रथ का सामना खाली हो गया था, सिर्फ रुकावट के लिये दो चार आदमी रथ के पास खड़े थे। यकायक रथ का पर्दा उठा और तमञ्चा छूटने की आवाज आई, एक आदमी जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़ा और बाकी में खलबली पड़ गई तथा डर के मारे सभी इधर उधर हट गये। उसी समय मौका देख कर बहलवान ने बैलों को चाबुक मारा और रथ को तेजी के साथ भगा ले चला। इसी समय तमंचा की पुनः आवाज आई और विपक्षियों का दूसरा आदमी जमीन पर लुढ़क गया। ऐसी अवस्था में उन लोगों के लिये रथ का पीछा करना मुश्किल हो गया और रथ तेजी के साथ कुछ दूर निकल गया। मगर इस बात की खबर रथ के हांकने वाले को तथा उसकी सवारी को कुछ भी नहीं है कि एक चालाक आदमी रथ के पीछे रस्सा थाम कर लटक गया है और बड़ी आसानी के साथ रथ के साथ साथ चला जा रहा है। हांकने वाले ने कई दफे पीछे फिर कर देखा मगर किसी का पीछा करते न पा निश्चिन्त हो रहा।

सवेरा होने के पहिले ही रथ काशी में जा पहुँचा और तब हांकने वाले ने रथ की तेजी कम कर दी। धीरे धीरे चल कर रथ त्रिलोचन महादेव के पास पहुँच कर एक बड़े फाटक के अन्दर चला गया जो इस समय खुला हुआ था। पीछे की तरफ जो आदमी लटका हुआ था वह भी रथ के साथ ही फाटक के अन्दर चला गया।

फाटक के अन्दर छोटा सा अस्तबल और कई रथों के अतिरिक्त घोड़े और बैल भी बंधे हुए थे। जिस समय रथ फाटक के अन्दर पहुँचा उस समय अस्तबल में कई आदमी इधर उधर टहल रहे थे।

जिस समय रथ फाटक के अन्दर गया उस समय सुबह की सुफेदी आसमान पर फैल चुकी थी और आदमियों की सूरत साफ साफ पहिचानी जाती थी।

अस्तबल के अन्दर वाले आदमियों ने रथ के पीछे लटकते हुए आदमी को देख कर हल्ला मचाया और उसके विषय में बहलवान से पूछना और उसे कप-

हना चाहा। वह आदमी भी चैतन्य हो गया और रथ का पीछा छोड़ अस्तबल के बाहर भागा। उसकी ऐसी अवस्था देख कर दो आदमियों ने उसका पीछा किया मगर उसे पकड़ न सके, वह दोनों को धोखा देता हुआ बड़ी तेजी के साथ निकल गया और नजरों से गायब हो गया।

उस आदमी के भाग जाने से जो कुछ खलबली पड़ गई थी उस पर खयाल न करके रथ हाँकने वाले ने पर्दा हटाया और सवारी को उतरने के लिये कहा। एक एक करके तीन औरतें रथ के नीचे उतरीं जिनमें से दो सर्दार और एक मजदूरनी थी। रथ के नीचे उतरने के बाद मजदूरनी ने एक छोटी सी गठड़ी और एक पीतल का डब्बा जिनमें ताला लगा हुआ था रथ पर से नीचे उतारा और तब तीनों औरतें अस्तबल के पूरब और उत्तर कोने की तरफ रवाना हुईं। उस कोने में एक छोटा सा मगर मजबूत दरवाजा था जिसके अन्दर वे तीनों औरतें घुस गईं और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।

उस दरवाजे के अन्दर जाकर वे तीनों औरतें एक छोटी सी गली में पहुँचीं जिसकी चौड़ाई दो हाथ और लंबाई दस बारह हाथ से ज्यादा न होगी। सामने ही एक सङ्गीन मकान का दरवाजा था जो इस समय भीतर से बन्द था। बाहर एक लोहे की कड़ी लगी हुई थी जिसके खटखटाने से दरवाजा खुल गया और वे तीनों औरतें उस मकान के अन्दर चली गईं, दरवाजा पुनः बन्द हो गया।

यह मकान यद्यपि छोटा था मगर मजबूत और अन्दर से बहुत खूबसूरत बना हुआ था। इसके अन्दर कई दालान कोठड़ियां और सजे हुए कमरे थे तथा कौंच कुर्सी पलंग इत्यादि के अतिरिक्त हर तरह के आराम की चीजें वहां मोजूद थीं।

जब वे तीनों औरतें मकान के अन्दर चली गईं और दर्वाजा बन्द हो गया तब सामने पन्द्रह या सोलह वर्ष का एक लड़का दिखाई दिया जिसने झुक कर एक औरत को सलाम किया और पूछा, "मासांजी! तुम्हारे आने में इतना अरसा क्यों लगा?" इसके जवाब में उस औरत ने कहा, "आराम से बैठूंगी तो सब हाल कहूँगी, बड़ी मुसीबत में फंस गई थी।"

इतना कह कर वह औरत दोनों को साथ लिये हुए सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर की मंजिल में चढ़ गई और एक दालान में पहुँच कर (जिसमें साफ फर्श बिछा

हुआ था और कई आरामकुर्सियां रक्खी हुई थीं) एक कुर्सी पर बैठ गई। पास ही में दूसरी कुर्सी पर दूसरी औरत बैठ गई और मजदूरनी ने असबाब उन दोनों के सामने रख कर दूसरी तरफ का रास्ता लिया। वह लड़का भी इशारा पाकर एक कुर्सी पर बैठ गया और बातें होने लगीं।

उन दोनों सरदार औरतों में से एक की उम्र बीस वर्ष की होगी जिसे उस लड़के ने मासी कह कर सम्बोधन किया था और दूसरी की उम्र तीस वर्ष से ज्यादा की होगी। देखने में दोनों ही औरतें खूबसूरत और भले घर की मालूम होती थीं। यद्यपि इस समय उन दोनों का बदन जेवरों से खाली था मगर देखने वाला कदापि यह न कहेगा कि इनके पास जेवर नहीं है या इन्हें जेवर पहिरने की आदत नहीं है क्योंकि बदन पर मौके मौके से जेवरों के निशान मालूम पड़ते थे। कम उम्र औरत ने आरामकुर्सी पर बैठ कर एक लम्बी सांस ली और तब लड़के की तरफ देख कर कहा, "कैसी कैसी मुसीबतों को सह कर मैंने अपना काम निकाला, मगर सारनाथ पर आकर हमलोग बेतरह फंस गये।"

लड़का०। सो क्या?

औरत०। रथ धीरे धीरे आ रहा था, हमलोग नींद में मस्त हो रहे थे, हांकने वाला तेगासिंह भी बैठे बैठे सो रहा था और बैल धीरे धीरे सीधी सड़क पर चल रहे थे कि यकायक सारनाथ पर आ पहुँचे। अगर हमलोग नींद में गाफिल न होते और इस बात का ज्ञान होता कि अब सारनाथ पहुँचा चाहते हैं तो तेजी के साथ रथ हांक कर हमलोग वहां से निकल जाते और किसी के हाथ न लगते मगर नींद के झपेटों ने ऐसा न करने दिया। अस्तु, जब वहां पहुँचे तो चौकीदार ने रोका और सीटी बजा कर बहुत से आदमियों को इकट्ठा कर लिया। मैंने आवाज से पहिचान लिया कि तुम्हारा 'मोहना' भी उन्हीं लोगों में शरीक है जिसका सब से ज्यादा अन्देशा मुझे था।

लड़का०। (घबड़ाना सा हो कर) फिर क्या हुआ?

औरत०। (जो कुछ सारनाथ पर हुआ था उसे बयान करके) जब हम लोग वहां से निकल भागे और इस अस्तबल में पहुँचे तब मालूम हुआ कि दुश्मनों का एक आदमी रथ के पीछे लकड़ी या रस्सा थाम कर लटक गया जो कि यहां अस्तबल के अन्दर तक चला आया और जब लोगों ने देखा तो भाग

गया। कोई उसे पकड़ न सका।

लड़का०। यह तो बहुत बुरा हुआ! अब वह दुष्ट सारनाथ में आकर यह बयान करेगा कि रथ फलानी जगह गया तब वे लोग पता लगाने के लिये जरूर निकलेंगे और उन्हें इस बात का गुमान भी हो जायगा कि इस रथ में तुम ही सवार थीं।

औरत०। बेशक ऐसा होगा, और मुझे भी इसी बात का खुटका लगा हुआ है इसी से तो सफर की सब मुसीबतों से बढ़ कर मैंने इसे समझा और सब से पहिले यही हाल तुमसे बयान किया। तुम बुद्धिमान होशियार और होनहार हो अतएव सोच कर बताओ कि अब हम लोगों को क्या करना चाहिये।

लड़का०। आपकी बुद्धि के मुकाबिले में मैं अपने को कुछ भी नहीं समझता तथापि सोच समझ कर कुछ देर के बाद मैं कहूँगा कि अब क्या करना होगा अच्छा मुझे दिखाइये तो सही कि आप वहां से क्या क्या चीजें लाई हैं?

औरत०। हां हां, मैं तुम्हें अभी दिखाती हूँ, देखो।

यह कह कर उस औरत ने झुक के पीतल वाला डब्बा उठाया और कमर में से ताली निकाल कर उसे खोला। लड़के ने झांक कर अन्दर देखा और झिझक कर पीछे की तरफ हट गया।

औरत०। (मुस्कुरा कर) वाह वाह! तुम इतना डर गये! अगर तुमको अपने हाथ से यह काम करना पड़ता तो मालूम होता है कि मौका मिलने पर भी तुम न कर सकते।

लड़का०। यह बात नहीं है, मुझे अगर यह काम करना पड़ता तो मैं कदापि संकोच न करता और न किसी तरह डरता ही। हां, इस तरह बिगड़ी हुई खोपड़ी को डब्बे के अन्दर बन्द करके ले आना मेरे लिये बहुत कठिन था। इस काम से मुझे घृणा होती है और इसकी बिगड़ी हुई सूरत देख कर मुझे डर लगता है, बस इसे निकालो और फेंको।

औरत०। (हंस कर) सिर्फ तुम्हें विश्वास दिलाने के लिये यह खोपड़ी मैं ले आई हूँ! तुममें अभी लड़कपन का अंश मौजूद है इसी लिये तुम डरते हो, मगर ध्यान रक्खो कि इसी किस्म का एक काम बहुत जल्द तुम्हें भी करना पड़ेगा।

लड़का० । (जोश दिखलाता हुआ) एक नहीं दस दफे मैं ऐसा काम करने के लिये तैयार हूँ !!

औरत० । (पीठ ठोंक कर) शाबाश ! इसकी आजमाइश दो ही चार दिन के अन्दर कर ली जायगी । खैर देखो, इस डब्बे में और क्या क्या चीजें हैं !!

इतना कह कर उस औरत ने डब्बे के अन्दर से एक कटा हुआ सर निकाल कर बाहर रक्खा जो यद्यपि कई तह किये हुए कपड़े के ऊपर रक्खा हुआ था तथापि वह कपड़ा खून से तरबतर हो रहा था । इसके बाद एक कपड़े पर लिखी हुई और तह की हुई एक तस्वीर निकाली और खोल कर लड़के को दिखाने तथा उसके भेदों को समझाने लगी ।

औरत० । देखो, इस तस्वीर को देख कर किसी के भी दिल में शक न रह जायगा कि दयाराम के मारने में दलीपशाह और भूतनाथ ने धोखा खाया । वास्तव में वह आदमी दयाराम था ही नहीं जो भूतनाथ के हाथ से मारा गया, हां जिसने दयाराम को गिरफ्तार किया था उसे जरूर भूतनाथ ने मार डाला मगर उसका लड़का उसके बदले में वह काम कर गुजरा जो उसका बाप किया चाहता था । भूतनाथ ने जो खून किया उसमें उसको भी पूरा धोखा हुआ एक नहीं बल्कि दो दफे धोखा हुआ, और उसके साथ ही साथ इन्द्रदेव के आदमियों को भी धोखा हुआ कि वह दूसरे को दयाराम समझ कर उठा ले गये थे । पहिले तो भूतनाथ ने यह नहीं समझा कि यह दयाराम है मगर उसके बाद जब वार कर चुका तब दलीपशाह के मुंह से कई बातें सुन कर उसको विश्वास हो गया कि उसने वास्तव में दयाराम को मारा मगर अफसोस ! दयाराम बेचारे अभी तक कैद में हैं और भूतनाथ तथा इन्द्रदेव और उनकी दोनों औरतों का इस बात की कुछ भी खबर नहीं है !! (तस्वीर पर उंगली रख कर) यह देखो इस कोठड़ी में दयाराम कैद है और दलीपशाह का धावा इस कोठड़ी में हुआ जिनमें राजसिंह का भतीजा मुद्दत से बीमार पड़ा हुआ था, और देखो यह दरवाजे पर राजसिंह सा रहा है, इसी जगह से दोनों को इन्द्रदेव के ऐयारों ने कैद कर लिया था, और यह देखो राजसिंह का लड़का अपने कमरे में बैठा न मालूम क्या लिख रहा है,.....

लड़का० । (बात काट कर) मासी ! यह तो बताओ कि यह तस्वीर किसकी

लिखी है और तुमने कहां से पाई ?

औरत०। (तस्वीर के नीचे की तरफ उँगली का इशारा करके) यह देखो इस तस्वीर के नीचे राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह का हस्ताक्षर है और यह तस्वीर उसी की बनाई हुई है। यह मुझे उसी के घर से मिली भी है।

लड़का०। ध्यानसिंह को इस तस्वीर के बनाने की क्या जरूरत पड़ी ?

औरत०। सो अभी ठीक ठीक समझ में नहीं आया मगर देखो तो तस्वीर के नीचे की तरफ (उँगली से बता कर) इन तीन चार सतरों के पढ़ने से क्या मालूम होता है ?

लड़का०। (पढ़ कर) इसमें लिखा है कि—"बेशक मेरे बाप ने दयाराम को पकड़ा था मगर वह अपनी सजा को पहुँच गया। भूतनाथ और दलीपशाह ने धोखा खाया। असल में दयाराम का जमानिया के दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया। दयाराम अभी तक जीते हैं और जीते रहेंगे। दयाराम को अपने कब्जे में रख कर दारोगा अपना मतलब भूतनाथ से निकालने की इच्छा रखता है। भूतनाथ सम्हलो और इस भेद को जानो। इस खबर के बदले में मैं तुमसे मित्रता की भिक्षा माँगता हूँ।"

औरत०। समझ गये ? इससे राजसिंह का मतलब भी कुछ गूढ़ मालूम होता है। यह तस्वीर इसी आदमी के हाथ वह भूतनाथ के पास भेज चुका था जिसका मैं सर काट लाई हूँ। अगर यह तस्वीर भूतनाथ के पास पहुँच जाती तो मेरा काम कुछ भी न निकलता। अब देखो मैं कैसा रंग मचाती हूँ।

लड़का०। तो यह तस्वीर तुम जमना और सरस्वती को दोगी या इन्द्रदेव को ?

औरत०। दोनों में से किसी को भी नहीं जो कुछ करना होगा मैं स्वयं करूँगी और अपने हाथ से दयाराम का उद्धार करूंगी। जमना और सरस्वती को इस दुनिया से उठा दूँगी, भूतनाथ को कब्जे में करूँगी, और स्वयं जमना बनूंगी।

लड़का०। समस्या कठिन है, कार्रवाई मुश्किल है, मगर आपकी हिम्मत बहुत बड़ी है।

औरत०। सारनाथ वाले मेरे काम में बाधक और दुश्मन हो रहे हैं, उनके हाथ से अगर बच गई तो मैं सब कुछ कर सकूंगी।

लड़का०। उनका बन्दोबस्त मेरे जिम्मे मैं उन लोगों को ठीक करूंगा मगर आपका अब इस मकान में रहना ठीक नहीं है।

औरत०। मेरा भी यही खयाल है, आज ही मैं इस मकान को छोड़ दूँगी, और तुम क्या करोगे ?

लड़का०। मैं इसी मकान में रहूँगा। सारनाथ वाले आपको खोजते हुए यहां पहुँचेंगे और मैं उन्हें गिरफ्तार करूँगा। अच्छा यह बताइये कि इस डिब्बे में और क्या क्या चीजें हैं ?

औरत०। (डिब्बे में से कागज का एक मुट्ठा निकाल कर और लड़के के हाथ में देकर) भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई कई चीठियां हैं जो कि नागर से मंगनी मांग लाई हूँ, उसे बहुत जल्द वापस करना होगा। यह सब कुछ होगा मगर दारोगा से भले बने रहना पड़ेगा।

लड़का०। यह कठिन है।

औरत०। कुछ भी कठिन नहीं है।

इसके बाद लड़का भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई चिट्ठियां देखने और पढ़ने लगा। जब सब चिट्ठियों को पढ़ चुका तब बोला, "बेशक भूतनाथ पर आप कब्जा कर लेंगी और इसके अतिरिक्त जो कुछ आपने सोचा है वह काम भी आपका हो जायगा। अच्छा यह बताइये कि कटे हुए सर के लिये अब क्या करना चाहिये ?"

औरत०। थोड़े दिन के लिये इस सर को मैं इसी तरह कायम रखना चाहती हूँ, मौका पड़ने पर यह सर दारोगा साहब को दिखाना होगा। इसे मसाले में रख कर तुम तहखाने में हिफाजत से रख दो।

लड़का०। बहुत अच्छा।

औरत०। खैर अब तुम जाकर इस काम से छुट्टी पाओ फिर निश्चिन्त हो कर बातचीत करूँगी। (दूसरी औरत की तरफ देख कर) बहिन ! अब तुम नहा धोकर कुछ खाने पीने का बन्दोबस्त करो, मैं भी जरूरी कामों से निपटने के लिये जाती हूँ।

इतना कह कर औरत उठ खड़ी हुई। लड़के ने भी वह कटा हुआ सर उठाया और एक तरफ का रास्ता लिया तथा वह दूसरी औरत खाने पीने का

बन्दोबस्त करने कहीं चली गई।

पाठक! हम अभी नहीं कह सकते कि यह औरत कौन है और इसका नाम क्या है, तथा उस दूसरी औरत और उस लड़के से इसका क्या सम्बन्ध है, हां इस समय काम चलाने के लिये इसका कुछ नाम जरूर रखना चाहिये। अस्तु जब तक इसके असली नाम का पता न लगे तब तक के लिये हम इसका नाम 'निरञ्जनी' २रखे देते हैं।

दूसरी औरत और लड़के के चले जाने बाद निरञ्जनी अपने हाथ में डब्बा लिये हुए पास वाले कमरे में चली गई और भीतर से उसका दरवाजा बन्द कर लिया। इस कमरे के अन्दर दाहिनी तरफ एक दरवाजा था जिसमें एक बहुत बड़ा और मजबूत ताला लगा हुआ था। देखने वाला यही समझेगा कि यह एक कोठड़ी है मगर नहीं, वास्तव से यह एक कैदखाने का रास्ता है।

निरञ्जनी ने कमर में से ताली निकाल कर वह दरवाजा खोला और उसके अन्दर जाकर एक दूसरे कमरे में पहुँची जो पहिले कमरे से बड़ा था और रोशनदानों की बदौलत उसमें रोशनी भी ज्यादे थी। इस कमरे के बीचोबीच में लोहे के मजबूत और छोटे छड़ों से एक कोठड़ी बनी हुई थी जिसमें तीन तीन अंगुल के फासले पर छड़ लगे हुए थे और बीच में दो बन्द चौड़े लोहे के दिये हुए थे जिससे कि वे छड़ किसी तरह झुकाने से झुक नहीं सकते थे। छड़ों का एक सिरा ऊपर छत में घुसा हुआ था और दूसरा नीचे जमीन के अन्दर। यह कोठड़ी इतनी बड़ी थी कि इसके अन्दर दस बारह आदमियों का बिस्तरा (बिछावन) लग सकता था मगर इस समय हम इसके अन्दर सिर्फ एक कमसिन औरत को देख रहे हैं जिसकी उम्र ज्यादे से ज्यादे पन्द्रह वर्ष की होगी। यह औरत यद्यपि खूबसूरत कहने योग्य नहीं है परन्तु बदसूरत भी नहीं कही जा सकती। इसका रंग पक्का, चेहरा बादामी और भोला है, आंखें बड़ी बड़ी मगर नाक कुछ मोटी है, बाकी के अंग हाथ पैर वगैरह सुडौल तो हैं मगर रूखे हो रहे हैं, इसी तरह चेहरा भी इसका उदास और मैला दिखाई देता है मालूम होता है कि इसको महीनों से नहाने धोने का मौका नहीं मिला है, इसकी धोती बहुत गन्दी हो रही है और सर के बाल मैले तथा खुले हुए हैं।

इसी लोहे की सलाखों वाली कोठड़ी में जिसमें वह औरत कैद है एक तरफ

पीतल के घड़े में पानी रक्खा हुआ है, पास में एक लोटा और गिलास है, तथा बांस की टोकरी में कुछ फल और खाने की दूसरी चीजें भी रक्खी हुई हैं। इन सब चीजों के अतिरिक्त दो कम्बल भी जमीन पर पड़े हुए दिखाई देते हैं। कोठड़ी में एक छोटा सा दरवाजा भी बना हुआ है जिसमें बहुत बड़ा ताला लगा है और उस दरवाजे के आगे एक खूबसूरत कुर्सी रक्खी हुई है। निरञ्जनी उसी कुर्सी के ऊपर जाकर बैठ गई और उस कैदी औरत की तरफ देख कर बोली, "मेरी प्यारी बहिन! कहो अच्छी तो हो?"

कैदी औरत०। जी मैं बहुत अच्छी तरह हूँ और आपकी मेहरबानियों का शुक्रिया अदा करती हूँ।

निरञ्जनी०। मुझे तुम्हारे कैद होने का बड़ा ही अफसोस है।

कैदी औरत०। (मुस्कुराती हुई) मेरा भी यही खयाल है।

निरंजनी०। (कुछ शर्मा कर) क्या तुम इस कैद से बाहर निकलना नहीं चाहती?

कैदी औरत०। जी नहीं, मुझे इसमें बड़ा आराम है और मैं तुम्हें दरवाजा खोलने की तकलीफ नहीं दिया चाहती।

निरंजनी०। मैं तो इस समय भी दरवाजा खोलने के लिये तैयार हूँ! (एक ताली दिखा कर) देखो यह ताली भी मौजूद है! मगर क्या करूँ वह तुम्हें स्वतन्त्र करने की आज्ञा नहीं देती और तुम जानती हो कि मैं उनके वश में हूँ।

कैदी औरत०। बेशक ऐसा ही है मगर तुम उनकी खुशामद क्यों करती हो! ताला खोल देने पर भी मैं इस कोठड़ी के बाहर नहीं निकलूंगी।

निरंजनी०। सो क्यों?

कैदी औरत०। इसलिए कि मैं आज कल पागल हो रही हूँ और विश्वास करती हूँ कि तुम लोगों की मदद के बिना ही मैं स्वतन्त्र हो जाऊँगी, और तब ऐ मेरी प्यारी बहिन! सब के पहिले तुम्हीं से मैं बदला लूँगी और जमना बनने का शौक पूरा कर दूँगी।

निरंजनी०। (चौंक कर) तुम्हें किसने कह दिया है कि मुझे जमना बनने का शौक है?

कैदी औरत०। मेरे एक दोस्त ने यह भेद की बात मुझसे कही है जो अ क

सर इस कैदखाने में मेरे पास पहुँचा करता है।

निरंजनी०। तुम तो पागलपने की बातें करती हो।

कैदी औरत०। मैं तो खुद ही कह चुकी हूँ कि मैं आज कल पागल हो गई हूँ, तुमने यह कौन सी नई बात कही?

निरञ्जनी०। (कुछ गुस्से के ढंग पर) तुम हद्द दर्जे की ढीठ हो गई हो!

कैदी औरत०। इस खयाल से कि तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकतीं, मेरा दास्त मेरी मदद करेगा और बहुत जल्द मुझे इस कैद से छुड़ावेगा।

निरञ्जनी०। अरे बेवकूफ, यहां पर तो एक चींटी भी नहीं आ सकती!!

कैदी औरत०। यह तुम्हारी भूल है, देखो मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ।

इतना कह कर उस कैदी औरत ने वह कम्बल उठाया जो जमीन पर पड़ा हुआ था। उसी समय एक आदमी का चेहरा दिखाई दिया और वह धीरे धीरे जमीन के अन्दर से ऊपर निकलने लगा। मोढ़ा निकला, छाती निकली, पेट बाहर हुआ कमर दिखाई देने लगी, रान घुटना और अन्त में पैर भी बाहर निकल आये और अब वह पूरा नौजवान आदमी कैदी औरत के पास खड़ा दिखाई देने लगा। निरञ्जनी के तो होश उड़ गये और वह घबड़ा कर उन दोनों की तरफ देखने लगी।

* चौथा हिस्सा समाप्त *

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा

भूतनाथ की जीवनी

पाँचवाँ हिस्सा

पहिला बयान

भूतनाथ ने क्रोध में आकर जमना सरस्वती और इन्दुमति पर हमला तो किया मगर कुछ कर न सका क्योंकि वह बाग मकान और चबूतरा तिलिस्म से सम्बन्ध रखता और इन्द्रदेव के कब्जे में था अतएव कोई अनजान आदमी लापरवाही के साथ उस बाग और इमारत की सैर पूरी तरह से नहीं कर सकता था और न उस चबूतरे पर ही जा सकता था जिस पर जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई थीं, अस्तु नतीजा यह निकला कि भूतनाथ उस चबूतरे पर चढ़ने के साथ ही पछाड़ खा कर पीछे की तरफ जमीन पर गिर पड़ा और कुछ देर के लिये बेहोश हो गया। जब होश में आया उसने आश्चर्य के साथ उस चबूतरे की तरफ देखा परन्तु वे औरतें दिखाई न पड़ी क्योंकि भूतनाथ की बेहोशी दूर होने के पहिले ही वे सब वहाँ से चली गई थीं।

भूतनाथ पुनः उस चबूतरे पर जाने की हिम्मत न कर सका और कुछ सोचता बाग के उस हिस्से की तरफ रवाना हुआ जिधर इमारत थी और दो चार आदमी भी टहलते दिखाई दे रहे थे। भूतनाथ घड़ी घड़ी आश्चर्य के साथ यह सोचता था कि जमना ने यह क्योंकर कहा कि भैयाराजा ने तुम्हारे ऐयारी के

बटुये पर कब्जा कर लिया था और अब वह मेरे पास मौजूद है।' यह क्योंकर सम्भव हो सकता है कि वह बटुआ मेरे शागिर्द के हाथ से भैयाराजा के कब्जे में चला गया हो !! बेशक जमना ने मुझे धोखा देने के लिये ऐसा कहा होगा।

धीरे धीरे भूतनाथ उस इमारत के पास जा पहुँचा और वहाँ उसने देखा कि इमारत के आगे एक बहुत बड़ा सहन है जिस पर भैयाराजा धीरे धीरे टहल रहे हैं और हाथ में नङ्गी तलवारें लिये सात आठ आदमी उनके पीछे पीछे हैं। भूतनाथ पर निगाह पड़ते ही भैयाराज ने मुस्करा कर कहा, "कहो भूतनाथ ! अब तुम्हारा क्या इरादा है ? मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है कि तुम्हारी कसम सच्ची नहीं निकली !!"

भूत०। सो क्या ? आपको कैसे मालूम हुआ कि मेरी कसम सच्ची नहीं निकली ?

भैया०। यही आजमाने के लिये तो जमना सरस्ती और इन्दुमति तुम्हारे सामने बैठाई गई थीं। आखिर तुमने उन पर हमला किया ही तो !! यह न सोचा कि मैं कहाँ और किसके कब्जे में हूँ ? जब मेरे बाग में रह कर तुमने ऐसा किया तो यदि किसी दूसरी जगह वे दोनों तुम्हें मिल जातीं तो तुम उन्हें कब जीता छोड़ते ?

भूतनाथ ने भैयाराजा की इस बात का कुछ भी जवाब न दिया और शर्म से सर नीचा कर के कुछ सोचने लगा। भैयाराज ने पुनः कहा, "गजाधरसिंह ! शायद तुमको यह मालूम नहीं है कि इस बाग में पहुँचने के पहले जिस आदमी ने तुम्हारे मुंह से निकलते हुए शपथ के शब्द सुने थे वह मैं ही हूँ, जिसने तुम्हारे कसम खाने पर तुम्हें ताड़ना की थी वह मैं ही हूँ और जिसने अपनी ताड़ना पर तुम्हारे मुंह से ये शब्द निकलते हुए सुने थे कि—नहीं नहीं, मैंने जो कुछ कहा है उसकी सचाई में किसी तरह भी फर्क नहीं पड़ सकता, मैं यहाँ तक तैयार हो चुका हूँ कि अपने ऐयारी के फन को भी तिलांजुली दे दूँगा और दुनियाँ से एक दम किनारे हो जाऊंगा—वह भी मैं ही हूँ।"

भूत०। (आश्चर्य से भैयाराजा का मुँह देख कर) और वह त्रिशूल तथा डमरूधारी शिवरूपी महात्मा भी आप ही थे जिन्होंने मेरे बदन से त्रिशूल छुला कर मुझे बेहोश कर दिया था।

भैया० । नहीं ।

भूत० । वह कौन था ?

भैया० । मैं नहीं कह सकता ।

भूत० । और यह बाग किसका है ?

भैया० । इसका भी जवाब तुम नहीं पा सकते ।

भूत० । (सिर झुका कर सोचने बाद दोनों घुटने जमीन पर टेक कर और हाथ जोड़ कर) निःसन्देह मैं अपराधी हूँ ! मेरे पापों का कोई प्रायश्चित नहीं । अपनी चादर का एक धब्बा मिटाने की कोशिश करते हुए मैंने अपनी तमाम चादर को गंदला कर डाला जिसका साफ होना अब बहुत ही कठिन है । मैं जानता हूँ कि मेरे प्यारे दोस्त और मुझ पर अत्यन्त अनुग्रह करने वाले इन्द्रदेव से और आप से दोस्ती है, नहीं नहीं आप दोनों अन्तरङ्ग मित्र हैं और मुझे विश्वास है कि इन्द्रदेव ने जिस तरह मेरे अपराधों को क्षमा किया है और अपनी आँखों से मेरे कठोर प्रायश्चित को देखते हुए भी मुँह फेर लिया है तथा मेरे सब अपराधों पर मिट्टी डाल कर अब भी मुझे ठीक रास्ते पर चलाने की नीयत रखते हैं उसका नमूना दिखलाने वाला दुनिया में कोई भी न होगा । हाँ ! मुझ अभागे को इन्द्रदेव ने कई दफे समझाया कि 'दयाराम का कलंक तेरे सिर से मैं दूर कर दूँगा ।' मगर मैंने उसका कुछ भी खयाल न किया । हा खेद ! अब मैं इस दुनिया में मुँह दिखाने योग्य न रहा । जो कुछ मैं कह रहा हूँ यह मेरी बेहयाई है (अपनी डबडबाई हुई आँखों को पोछ कर) मैं इस योग्य नहीं हूँ कि आपसे क्षमा मांगूं परन्तु आप इस योग्य हैं कि मुझे क्षमा करें और क्षमा करने के लिये इन्द्रदेव से भी मेरी सिफारिश करें ।

इतना कह भूतनाथ भैयाराजा के पैरों पर गिर पड़ा और उसकी आंखों से आंसू की धारा बह चली । भैयाराजा ने उसे जल्दी से उठा कर छाती से लगा लिया परन्तु भूतनाथ ने जोर कर के अपने को बगल से छुड़ा लिया और हाथ जोड़ कर कहा, "हा खेद ! मैं इस योग्य नहीं हूँ कि आप मुझे भाई की तरह छाती से लगावें और दया करें, बल्कि मैं इस योग्य हूँ कि आप मुझे अपने जूते के तले रौदें और हजार लानत करें ।"

भैया० । नहीं नहीं गदाधरसिंह ! तुम ऐसा खयाल मत करो । इन्द्रदेव की

तरह मैं भी तुम्हें माफ करता हूँ। तुम्हारी इस समय की अवस्था देख कर मुझे विश्वास होता है कि अब तुम से कोई अपराध न होगा। ईश्वर तुम्हारा दिल सदैव के लिये नेक करे। अच्छा मैं तुम्हें इस समय एक दवा पिलाना चाहता हूँ, पीओगे ?

भूतनाथ०। आप मुझे अब जहर हलाहल भी देंगे तो खुशी से पी लूंगा क्योंकि मैं इसी के योग्य हूँ और दुनियाँ में मुँह दिखलाने की इच्छा नहीं रखता।

भैया०। ईश्वर तुम्हें नेकी दे, मैं तुम्हारे साथ कदापि बुराई नहीं कर सकता परन्तु हाँ इस समय जो दवा मैं तुम्हें पिलाऊँगा उससे तुम बेहोश जरूर हो जाओगे।

इतना कह कर भैयाराजा ने अपने एक आदमी की तरफ कुछ इशारा किया।

भूत०। मुझे इसकी कोई भी परवाह नहीं है कि मैं आपकी दी हुई दवा पी कर बेहोश हो जाऊंगा या मर जाऊंगा और न मैं इसके विषय में आपसे कुछ पूछने की ही इच्छा रखता हूँ।

भैयाराजा का इशारा पाकर वह आदमी किसी प्रकार की दवा से भरी हुई एक बोतल और चाँदी का छोटा सा कटोरा ले आया और भैयाराजा के हाथ में दिया। भैयाराजा ने उस बोतल की दवा से कटोरा भरा और भूतनाथ के हाथ में दिया, भूतनाथ ने खुशी खुशी कटोरा मुंह से लगाया और दवा पी कर पुनः वह कटोरा इस विचार से भैयाराजा की तरफ बढ़ाया कि दवा और दीजिये मैं पीने के लिये तैयार हूं। भैयाराजा ने यह कह कर कि 'बस अब और पीने की कोई जरूरत नहीं' कटोरा वापस लेने के लिये भूतनाथ की तरफ हाथ बढ़ाया। भूतनाथ ने उनके हाथ में जूठा कटोरा देना उचित न जान कर उनके आदमी के हाथ में दिया और पुनः हाथ जोड़ कर कहा, "मुझे क्षमा कीजिये और गुप्त हो जाने की आज्ञा दीजिये।"

भैयाराजा०। मैं यह नहीं चाहता कि तुम गायब हो जाओ। यह तुम्हारे लिये उचित नहीं है। मैं सच्चे दिल से तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम लोगों में मिले जुले रह कर सभों का उपकार करो जिसमें ईश्वर तुम्हारे अपराधों को क्षमा करे।

भूत०। जो आज्ञा।

इतना कहते कहते भूतनाथ की आँखें बन्द हो गईं और वह बेहोश होकर

जमीन पर लेट गया। जब उसकी आँखें खुलीं तो उसने अपने को उसी कोठड़ी में पाया जिसमें त्रिशूल के छू जाने से बेहोश हो कर इस बाग में आया था। कोठड़ी से बाहर निकलने पर उसने अपने ऐयारी के बटुये के सहित कई शागिर्दों को पाया जो उसके लिये चिन्तित और उदास उससे मिलने का इन्तजार कर रहे थे।

दूसरा बयान

दिन दो पहर से ज्यादे ढल चुका है। धूप की गर्मी को हवा की तेजी यद्यपि कम कर रही है तथापि नाजुक मिजाजों के बर्दाश्त के बाहर है। भूतनाथ अपनी असली सूरत में मामूली ढङ्ग पर शाहराह और सड़क छोड़ कर जंगल ही जंगल जमानिया की तरफ जा रहा है मगर उसके चेहरे पर उदासी नाउम्मीदी और बेचैनी छाई हुई है। उसको अपने इधर उधर या आगे पीछे की कुछ भी पर्वाह नहीं है, सर झुकाये हुए बराबर चला जा रहा है, हाँ कभी कभी सर उठा कर इस खयाल से देख लेता है कि रास्ता भटकने न पावे।

दो घण्टे तक बराबर चले जाने बाद उसे कुछ आदमियों के बातचीत की आहट मालूम हुई अस्तु वह खड़ा हो गया और ध्यान देकर सुनने लगा कि किधर से आवाज आ रही है। कुछ ही सायत में उसे मालूम हो गया कि बात करने वाले उससे ज्यादे दूर पर नहीं हैं। भूतनाथ को उस आवाज पर कुछ शक मालूम हुआ और वह उन आदमियों के देखने तथा उनकी बातें सुनने के लिए अपनी प्रबल इच्छा को रोक न सका अतएव वह जमीन पर बैठ गया और बहुत धीरे धीरे पत्तियों की खड़खड़ाहट को बचाता हुआ उस तरफ बढ़ा जिधर से आवाज आ रही थी यहाँ तक कि वह उन लोगों के बहुत पास पहुँच गया जहाँ से उनकी बातचीत बखूबी सुन समझ सकता था। उन आदमियों को इसकी कुछ भी आहट नहीं मालूम हुई कि कोई आदमी उनकी बातें सुनने के लिये पास ही में आकर छिपा हुआ है अतएव भूतनाथ बड़ी बेफिक्री के साथ उनकी बातें सुनने लगा, साथ ही इसके उसने झाड़ियों में रास्ता करके यह भी देख लिया कि बातें करने वालों में दो मर्द और एक औरत है जिसकी उम्र बीस या पचीस वर्ष से ज्यादा की न होगी। यद्यपि वह मर्दों की तरह चपकन पायजामा पहिरे हुए है और सर

पर मुंड़ासा भी उसने बाँध रक्खा है परन्तु उसकी आवाज और भूतनाथ की चालाक निगाह से उसका मर्दानापन कायम न रहा। उसी जगह पर पेड़ों के सहारे तीन घोड़े भी बागडोर के सहारे बँधे हुए थे। अब सुनिये कि उन लोगों में कैसी भेद भरी बातें हो रही हैं।

एक०। जमना और सरस्वती को यदि यह भेद मालूम हो जाय तो वे दोनों उद्योग करके उन्हें बहुत जल्द छुड़ा लें। हम लोगों की मेहनत उनका मुकाबला नहीं कर सकती क्योंकि इन्द्रदेव और प्रभाकरसिंह उन दोनों के पक्षपाती हैं।

दूसरा०। अजी नहीं, इन्द्रदेव को जमना और सरस्वती से क्या मतलब? वह दारोगा साहब के गुरुभाई हैं, दारोगा भूतनाथ की मदद करते हैं, और भूतनाथ इन दोनों औरतों का जानी दुश्मन है, इसी से समझ रखना चाहिये कि इन्द्रदेव क्योंकर दारोगा साहब के खिलाफ कार्रवाई कर सकते हैं।

पहिला०। तुम्हें कुछ बसन्त की खबर भी है या यों ही बकवाद कर रहे हो? बेईमान दारोगा के सबब से क्या धर्मात्मा इन्द्रदेव रणधीरसिंह का मुलाहजा तोड़ देंगे? या दयाराम को जान बूझ कर भी अपने हाथ से भाड़ में झोंक देंगे?

औरत०। (दूसरे की तरफ देख कर) नहीं नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता। तुमको इस बात की खबर ही नहीं है कि इन्द्रदेव ही की बदौलत आज तक जमना और सरस्वती की जान बची हुई है नहीं तो दारोगा साहब और भूतनाथ अब तक उन दोनों का खातमा कर चुके होते। इन्द्रदेव हर तरह से उन दोनों की मदद कर रहे हैं और करेंगे।

दूसरा०। (आश्चर्य से) क्या ऐसी बात है?

पहिला०। बेशक ऐसा ही बात है। इन्द्रदेव साधू और महात्मा आदमी है जो अभी तक दारोगा से गुरुभाई का रिश्ता और भूतनाथ से दोस्ती का नाता भी निभाये जाता है नहीं तो भूतनाथ को जहन्नुम में पहुँचा देना उसके लिये एक अदनी बात थी।

दूसरा०। अगर यह बात है तो बेशक पता लगने पर इन्द्रदेव की सहायता से जमना और सरस्वती अच्छा काम कर सकती हैं।

औरत०। निःसन्देह! क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि जमना और सरस्वती ने भी इन्द्रदेव से ऐयारी सीखी है? मगर यह बात बहुत गुप्त है।

दूसरा० । भला मुझे इस बात का पता क्योंकर लग सकता है ? मगर आश्चर्य है कि तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई !!

औरत० । अकस्मात मुझे यह बात मालूम हुई ।

दूसरा० । क्योंकर ?

औरत० । उन दोनों को मैंने परसों भेष बदल कर घोड़े पर सवार काशी की तरफ जाते हुए देखा था ।

पहिला० । जब भेष बदले हुए थीं तब तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि ये दोनों वे ही हैं ?

औरत० । मैं उस समय घोड़े पर सवार मामूली तौर पर केवल मर्दाना कपड़ा पहिरे हुए रणधीरसिंह के यहाँ जा रही थी । यकायक रास्ते में मेरा और उन दोनों का मुकाबला हो गया । सरस्वती ने मुझे पहिचान लिया और नाम लेकर पुकारा। मैं उन दोनों को पहिचान न सकी परन्तु पुकारने पर और अपना नाम सुन कर रुक गई । उन दोनों ने बड़ी मुहब्बत से मुझे अपने पास बुलाया । मैं डरती हुई उनके पास गई । तब जमना ने मुझसे कहा, "छन्नो ! तू कहाँ जाती है ? मैं तुझे पहिचान गई मगर तू हम दोनों को बिना बताए नहीं पहिचान सकती । मेरा नाम जमना और इसका सरस्वती है । ओफ ओह ! बहुत दिनों के बात तुझे देखा है ! तुझे देख कर मेरे दिल में इस समय वही लड़कपन की मुहब्बत पैदा हो गई है । मेरी प्यारी छन्नो ! क्या आज कल तू मेरे ससुराल में नहीं रहती ?"

पहिले तो मुझे उन दोनों के जमना और सरस्वती होने का विश्वास नहीं हुआ मगर जब उन्होंने लड़कपन की दो चार बातें याद दिलाईं तब मुझे विश्वास हो गया और मुहब्बत से मेरा जी भी उमड़ आया क्योंकि मैं बहुत दिनों तक उन दोनों के साथ रह चुकी हूँ । इस तीनों में बड़ी ही मुहब्बत रही । जब वे दोनों अपने ससुराल से गायब हो गईं और उन दोनों के मरने की खबर मशहूर हुई तब मैंने भी रणधीरसिंह का घर छोड़ दिया था ।

पहिला० । यह अजीब बात तुम सुना रही हो ? अच्छा तब क्या हुआ ?

औरत० । मैं तुरत घोड़े पर से उतर पड़ी और जमना के पैर के साथ लिपट गई । वे दोनों भी घोड़े पर से उतर पड़ीं और मुझे गले से लगा लिया । वहाँ बिल्कुल ही सन्नाटा था, सड़क के दोनों तरफ जंगल और बड़े बड़े साखू आसन

तथा सलई के पेड़ लगे हुए थे। हम तीनों सड़क से किनारे होकर पेड़ों की आड़ में चली गईं और बागडोर के सहारे घोड़ों को पेड़ों के साथ बाँध कर एक ठिकाने बैठ गईं और देर तक बातें होती रहीं। बस उसी समय मुझे मालूम हुआ कि उन दोनों ने भी इन्द्रदेव से ऐयारी सीखी है।

पहिला०। यह तो तुमने बड़ी बेढब बात सुनाई। मुझे नहीं मालूम था कि उन दोनों से तुम्हारी मुहब्बत है।

औरत०। कैसे मालूम होता, इस बात का कभी जिक्र तो आया नहीं था।

दूसरा०। अच्छा तो क्या तुमने दयाराम वाला सब भेद उससे कह दिया?

औरत०। अभी नहीं, मैं ऐसा पसन्द नहीं करती कि काम अधूरा रहने पर किसी से ऐसा कठिन मामला कहूँ।

पहिला०। मगर क्या तुम दोनों से यह भेद कहोगी?

औरत०। सो मैं अभी नहीं कह सकती।

दूसरा०। मगर नहीं, उन दोनों को इसका भेद नहीं कहना चाहिये, नहीं तो हम लोगों का मेहनत करना ही व्यर्थ हो जायगा। तुम्हारे कहने ही से हम लोग इस मामले में उद्योग करने के लिये तैयार हुए हैं। यद्यपि इसके साथ ही साथ लालच का पल्ला भी हम लोगों ने पकड़ा हुआ है तथापि ईमानदारी का ख्याल भी हम लोगों के दिल से दूर नहीं हो सकता। यदि कदाचित तुम्हारा यही विचार हो कि यह भेद अथवा खुशखबरी जमना सरस्वती या इन्द्रदेव से कहो तो हम लोगों की सिफारिश के साथ इस ढङ्ग से कहो कि उन लोगों को हम लोगों से भी मदद लेने की जरूरत पड़े, यदि ऐसा न कर सको तो आज ही से हम लोगों को साफ साफ जवाब दे दो, जो कुछ मेहनत कर चुके हैं उसी पर सन्तोष करेंगे।

औरत०। (मुस्कुराती हुई) नहीं नहीं, हताश मत होवो, यदि मुझे ऐसा ही करना होता तो तुम लोगों को अपना साथी क्यों बनाती? तुम इस बात का पूरा विश्वास रक्खो क्योंकि इस मामले में मुझे रुपये पैसे की कुछ लालच नहीं है, मैं जो कुछ कर रही हूँ और जो तकलीफ उठा रही हूँ वह सब जमना सरस्वती और दयाराम की मुहब्बत के कारण है। तुम लोगों को भी यही उचित है कि जिसमें काम जल्दी हो वही उपाय करो और इस बात का ख्याल न करो कि किसी भी दूसरे को यह भेद मालूम न हो या किसी भी दूसरे का हाथ इस मामले में न लगे

क्योंकि केवल तुम्हीं दोनों के भरोसे पर रह जाना यह नीति के विरुद्ध है, सम्भव है कि तुम दोनों की मेहनत से कोई अच्छा नतीजा न निकले और देर हो जाने के कारण दयाराम की जान पर आ बने.....

दूसरा० । (कुछ बिगड़ कर और बात काट कर) इतने दिन बीत गये दयाराम की जान पर नौबत न आई और अब महीने पन्द्रह दिन को देर होने से उनकी जान चली जायगी ! यह कैसा ख्याल है ? हाँ यह कहो कि तुम्हारा दिल ही डगमगा रहा है और हम लोगों पर कुछ भरोसा ही नहीं होता । मगर इस बात को खूब समझ रखना कि ऐयार होने के अतिरिक्त जिस शहर में दयाराम हैं हम दोनों भी उसी शहर के रहने वाले हैं । घर घर का भेद जो हम लोगों को मालूम है या मालूम हो सकता है वह किसी दूसरे को नहीं मालूम हो सकता ।

औरत० । इसी से तो मैं तुम्हें मेहनत करने के लिए कह रही हूँ और समझती हूँ कि इस काम को तुम बहुत जल्द कर सकोगे ।

दूसरा० । नहीं, अगर ऐसा समझतीं तो किसी दूसरे आदमी का पुछल्ला मेरे साथ न लगातीं और यह भेद किसी दूसरे से कहने का इरादा न करतीं । क्या इस बात का ध्यान तुम्हें नहीं है कि ज्यादे आदमियों को इस बात की खबर हो जाने से धीरे धीरे यह बात दुश्मन के कान तक पहुँच सकती है और दुश्मन चौकन्ना हो सकता है ।

औरत० । (मुस्कुरा कर) अगर इस बात का ख्याल न होता तो मैं इस काम में जल्दी ही क्यों करती ?

पहिला० । असल तो यह है कि तुम दिल का भाव छिपा छिपा कर बातें करती हो, उचित तो यही है कि अपना इरादा साफ साफ जाहिर कर दो ।

औरत० । मैं दिल का भाव तुमसे नहीं छिपाती, इसका शक तो तुम अपने दिल से दूर कर दो और इरादे को जो कहते हो सो इरादा तो मेरा यही होता है कि यह भेद जमना सरस्वती और इन्द्रदेव से कह दूँ, वे इस काम की धुन में लगें और तुम उनकी मदद करो ।

दूसरा० । मगर हम दोनों को यह बात पसन्द नहीं है ।

औरत० । (कुछ सोच कर) खैर पसन्द नहीं है तो जाने दो, तुम ही दोनों

इस काम को कर डालो और दयाराम को खोज निकालो, मैं किसी और से इसका जिक्र न करूँगी।

पहिला०। अच्छा तो दयाराम के विषय में जो जो बातें तुम्हें मालूम हो चुकी हैं वह सब हमें सुनाओ।

औरत०। यह मामला कल पर रहने दो, इतना तो मैं तुम्हें कही चुकी हूँ कि फलाने शहर में दयाराम पड़े हुए हैं, बाकी और जो कुछ भेद की बातें मुझे मालूम होने वाली हैं उनका आज निश्चय कर के तब कल तुमसे कहूँगी, तुम दोनों कल पुनः इसी समय इसी जगह आ कर मुझसे मिलना।

दोनों०। बहुत अच्छा, कल जरूर आवेंगे।

इतनी बातें होने के बाद वे तीनों वहाँ से उठ खड़े हुए और अपने अपने घोड़े पर सवार हो कर चले जाने की फिक्र करने लगे। भूतनाथ बड़ी फुर्ती और चालाकी से खिसकता हुआ एक घनी झाड़ी के अन्दर जा छिपा और जब वे लोग वहाँ से चले गये तो उसने उस औरत को छोड़ कर दोनों मर्दों का पीछा किया जो बड़ी खुशी के साथ आपुस में बातें करते हुए धीरे धीरे पच्छिम की तरफ जा रहे थे।

तीसरा बयान

भूतनाथ ने जो कुछ बातें छिप कर सुनीं वह उसके लिए बड़े ही ताज्जुब की थीं। हम इस जगह पर यह नहीं कह सकते कि इन बातों को सुन कर भूतनाथ के दिल की क्या अवस्था हुई अथवा इससे उसके दिल पर क्या असर पड़ा, हाँ इतना तो जरूर मालूम होता है कि इस समय भूतनाथ का दिल उसके काबू में नहीं है और वह बहुत ही बेचैन मालूम पड़ता है।

भूतनाथ इस फिक्र में हुआ कि किसी तरह इन दोनों को गिरफ्तार करना चाहिये परन्तु इस समय वह किसी तरह की ऐयारी नहीं कर सकता था क्योंकि जिनको वह गिरफ्तार किया चाहता था वे घोड़े पर सवार जा रहे थे और भूतनाथ अपनी असली सूरत में था इसलिए कोई अच्छी कार्रवाई करना बहुत कठिन था परन्तु इस मौके को वह छोड़ भी नहीं सकता था।

कई सायत तक वह खड़ा सोचता और उन दोनों सवारों की तरफ देखता रहा। इसी बीच में उसे कोई बात याद आ गई। वह झट से एक पेड़ के नीचे बैठ गया और जो कुछ उसे करना था बड़ी तेजी और फुर्ती के साथ किया अर्थात् बटुए में से नकाब निकाल कर अपने चेहरे पर लगाई, इसके बाद एक शीशी निकाली जिसमें बहुत सी गोलियाँ भरी हुई थीं, उसमें से एक गोली निकाल कर अपने मुँह में रक्खी और फिर दो चीठियाँ जो लिफाफे में बन्द थीं और दो चाँदी की डिबियाएँ निकाल कर जेब में रखने बाद बटुआ बाँध कर उन दोनों सवारों का पीछा किया जो आपुस में बातें करते हुए धीरे धीरे चले जा रहे थे।

थोड़ी ही देर में भूतनाथ उन दोनों सवारों के पास जा पहुँचा और सामना रोक कर दोनों को सलाम किया, साथ ही जेब में से डिबिया और चीठी निकाल कर एक एक डिबिया और एक एक चीठी दोनों के हाथ में दे कर कहा, "एक औरत ने जो अभी अभी (हाथ का इशारा करके) उस तरफ जा रही है ये चीजें आपको देने के लिये मुझे भेजा है और कहा है कि बातचीत करने की धुन में यह डिबिया और चीठी आप लोगों को देना मैं बिल्कुल भूल गई थी।"

दोनों सवारों ने ताज्जुब के साथ भूतनाथ के हाथ से डिबिया और चीठी ले ली और पूछा, "तुम उन्हे कहाँ मिले? वे तो वहाँ हम लोगों के पास अकेली आई हुई थीं!!"

भूत०। इसका जवाब देना मैं उचित नहीं समझता, जो कुछ काम मेरे सुपुर्द किया गया था उसे मैं पूरा कर चुका अब जाता हूँ।

एक सवार०। ठहरो ठहरो, इस डिबिया और चीठी को देख तो लेने दो, शायद कुछ जवाब देने की जरूरत पड़े।

भूत०। अच्छा मैं ठहरता हूँ आप देख लीजिये।

इतना कह कर भूतनाथ एक किनारे खड़ा हो गया और उन दोनों का तमाशा देखने लगा। उन दोनों ने पहिले तो डिबिया खोली और देखा कि उसमें नर्म मोम की तरह कोई खुशबूदार चीज भरी हुई। डिबिया खुलने के साथ ही उसके अन्दर की खुशबू ने उन दोनों का दिमाग मुअत्तर कर दिया, यहाँ तक कि उन डिबियों को अच्छी तरह सूँघे बिना उन दोनों से रहा न गया। इसके बाद डिबिया बन्द कर के जेब में रक्खी और चीठी खोल कर पढ़ने लगे।

उन चीठियों में अजीब कुढङ्गा हर्फ लिखा हुआ था जो कि बिल्कुल ही समझ में नहीं आता था। समझ लेना चाहिये कि वे चीठियाँ खाली बारीक लकीरों ही से भरी हुई थीं जो कि केवल धोखा देने के लिये भूतनाथ के बटुए में पड़ी रहा करती थीं। चीठी पढ़ते पढ़ते उन्हें कुछ देर हो गई मगर कुछ समझ न सके, आखिर एक ने भूतनाथ की तरफ देख के कहा, 'यह क्या है ?''

भूत०। मैं क्या जानूँ !

एक०। आखिर उस औरत ने क्या कह कर तुम्हें मेरे पास भेजा है ?

भूत०। कुछ भी नहीं, जो कुछ होगा उस चीठी में लिखा होगा।

दूसरा०। यह चीठी तो पढ़ी ही नहीं जाती !!

भूत०। तो मैं क्या करूँ ?

पहिला०। मालूम होता है कि तू हमसे चालाकी खेलता है।

भूत०। शायद ऐसा ही हो।

इतना कह कर भूतनाथ कई कदम पीछे की तरफ हट गया और गौर से उन दोनों की तरफ देखने लगा।

भूतनाथ के ढङ्ग और उसकी बातों ने उन दोनों को क्रोधित कर दिया और उन्हें इस बात का शक हो गया कि यह कोई ऐयार है क्योंकि डिबिया के अन्दर की खुशबूदार चीज के सूँघने से उनके ऊपर धीरे धीरे बेहोशी का असर होता जाता था। बातचीत करते करते यद्यपि वे दोनों बेकार हो चुके थे तथापि क्रोध में भरे हुए वे दोनों अपने को रोक न सके और घोड़ा बढ़ाकर भूतनाथ पर हमला किया। पैंतरा बदल कर भूतनाथ ने उनका वार बचा लिया और इधर उधर घूम फिर कर उन दोनों को चक्कर लगाने और शरीर हिलाने का मौका दिया। इसके बाद वे अपने को सम्हाल न सके और दोनों आदमी बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़े।

सब के पहिले भूतनाथ ने दोनों घोड़ों पर कब्जा किया और उन्हें किनारे ले जा कर बागडोर के सहारे एक पेड़ के साथ बाँध दिया और इसके बाद बारी बारी से उन दोनों आदमियों को भी उठा कर घोड़ों के पास ले गया। धीरे धीरे बड़ी होशियारी और मुस्तैदी के साथ भूतनाथ ने उन दोनों को घोड़े पर रख कर बागडोर से बाँधा और दोनों घोड़ों की लगाम थामे हुए अपने घर का रास्ता लिया।

इस समय वह अपनी कार्रवाई पर दिल ही दिल में खुश होता था कि 'कल इन दोनों के बदले में हम अपने किसी शागिर्द को ले कर उस औरत से मिलेंगे और देखेंगे कि किस्मत क्या दिखाती है।

चौथा बयान

दूसरे दिन दोपहर दिन चढ़ने के बाद वह औरत फिर उसी जङ्गल में उसी ठिकाने पहुँची और उन दोनों आदमियों को अपने पहुँचने के पहिले ही से वहाँ एक पत्थर की चट्टान पर बैठे पाया। उसे देखने के साथ ही एक ने कहा, "हम लोग बहुत देर से आपका इन्तजार कर रहे हैं।"

औरत०। मेरे आने में कुछ देर तो हुई नहीं।

एक०। ज्यादे नहीं मगर कुछ देर जरूर हुई।

औरत०। (एक पत्थर पर बैठती हुई) शायद ऐसा ही हो।

दूसरा०। खैर सुनाइए क्या हाल है।

औरत०। बस वही, जो कुछ कल मैं तुम लोगों से कह चुकी हूँ उससे ज्यादे कोई काम की बात मालूम नहीं हुई, सिर्फ उतने ही से काम चलाना होगा।

पहिला०। तो क्या आप निश्चय रूप से कहती हैं कि दयाराम फलानी जगह और फलाने की कैद में हैं?

औरत०। जो कुछ मैंने कहा है उसमें किसी तरह का शक मत करो और विश्वास रक्खो कि दयाराम दारोगा साहब के कब्जे में हैं। चाहे दारोगा साहब ने उन्हें अपने घर में कैद कर छोड़ा हो या अपने किसी दोस्त के घर में, मगर वे हैं निश्चय रूप से दारोगा ही के कब्जे में।

एक०। खैर कोई चिन्ता नहीं समझ लिया जायगा, अच्छा इस विषय में कुछ कह सकती हैं कि राजसिंह के यहाँ से निकल कर दारोगा के कब्जे में दयाराम क्योंकर जा फँसे?

औरत०। इसका हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। राजासिंह के लड़के ध्यानसिंह ने जो चीठी भूतनाथ को लिखी थी उसमें कैदखाने की तस्वीर दिखाने के अतिरिक्त केवल इतना ही लिखा है कि "बेशक मेरे बाप ने दयाराम को

पकड़ा था मगर वह अपनी सजा को पहुँच गया। भूतनाथ और दलीपशाह ने धोखा खाया। असल में दयाराम को जमानियां के दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया। दयाराम अभी तक जीते हैं और जीते रहेंगे। दयाराम को अपने कब्जे में रख कर दारोगा अपना मतलब भूतनाथ से निकालने की इच्छा रखता है। भूतनाथ सम्हलो और इस भेद को जानो। इस खबर के बदले में मैं तुम से मित्रता की भिक्षा माँगता हूँ।" बस इतना ही मजमून लिखा है।

पहिला०। (मुस्कुराता हुआ) मानों अक्षर अक्षर तुम ने याद कर रक्खा है।

औरत०। बेशक ऐसा ही है, इसमें मैंने कोई शब्द कम या ज्यादे नहीं कहा है।

दूसरा०। (मुस्कुराता हुआ) ध्यानसिंह अब गदाधरसिंह से दोस्ती करना चाहता है!!

औरत०। भूतनाथ का आज कल पता नहीं लगता, अगर उसका ठिकाना मालूम होता तो वह चीठी भूतनाथ के पास पहुँच गई होती और भूतनाथ ध्यानसिंह से मिल कर न मालूम क्या कर चुका होता।

पहिला०। अब इस समय वह चीठी किसके पास है?

औरत०। सो मैं नहीं कह सकती क्योंकि मैं अपनी जान बचा कर सब काम किया चाहती हूँ। अच्छा अब तो यही सही बात भी मैंने तुमसे कह दी अस्तु जिस तरह बन पड़े तुम दयाराम का पता लगाओ और टोह लेते हुए बीच बीच में बराबर मुझसे मिलते रहो।

पहिला०। तुम्हारा ठिकाना कहाँ रहेगा और हम लोग कहाँ पर तुम से मिला करें?

इस बात का जवाब उस औरत ने कुछ भी न दिया बल्कि गौर में पड़ गई और आश्चर्य से उस आदमी का मुंह देखने लगी। सबब इसका यह था कि कल जिन दो आदमियों से इस औरत ने बातचीत की थी वे इसका पता अच्छी तरह जानते थे मगर इस समय इससे बातें करने वाले असल में वे दोनों नहीं हैं बल्कि आज वह भूतनाथ और उसके शागिर्द से बातचीत कर रही है। भूतनाथ को उसका ठिकाना मालूम न था इसलिये वह भूल कर ऐसा सवाल कर बैठा। औरत

समझ गई कि यह कोई दूसरा ऐयार है। वह चौंक कर इस भेद को खोला और कुछ कहा ही चाहती थी कि उसे एक खयाल ने ऐसा करने से रोक दिया। उसके दिल में यह बात पैदा हो गई कि अगर यह वास्तव में कोई दूसरा ऐयार है तो मेरे चौंकने और जाहिर कर देने से यह मेरा दुश्मन बन जायगा और मुझे गिरफ्तार कर लेगा। मैं औरत की जात इस समय बिल्कुल बेबस और अकेली हूँ और ये दो आदमी हैं। इतना सोच वह चुप हो रही और उसने अपना चेहरा इस ढङ्ग का बना लिया मानों कुछ गौर कर रही है। कुछ देर के बाद उसने पुनः उस आदमी से कहा, "अभी तक मेरा ठिकाना कोई निश्चय नहीं हुआ मगर हाँ कल तक यह बात भी तै पा जायगी। तुम एक दफे और तकलीफ करो और परसों पुनः मुझसे इसी ठिकाने मिलो, मैं अपने ठिकाने का हाल तुमसे कह दूँगी तथा और भी जो कुछ भेद इस बीच में मालूम होगा वह भी बयान करूँगी।' इतना कह कर वह औरत जाने के लिये तैयार हो गई और उसे मुस्तैद देख कर वे दोनों आदमी भी उठ खड़े हुए तथा अपने अपने घोड़े पर सवार हो वहाँ से चलते बने।

हमारे पाठक जरूर समझ गये होंगे कि उस औरत से बातें करने वाले दोनों आदमियों में से एक भूतनाथ और दूसरा उसका शागिर्द था। वहाँ से रवाना होने और कुछ दूर निकल आने के बाद भूतनाथ और उसके शागिर्द से इस तरह दो चार बातें हुईं!

भूत०। मेरे लिये इतना ही मालूम हो जाना काफी है कि दयाराम जीते जागते और दारोगा के कब्जे में है तथा ध्यानसिंह मुझे खोजता और मुझसे दोस्ती किया चाहता है।

शागिर्द०। बेशक इतना काफी है। बातें कुछ और भी जरूर मालूम होतीं मगर आखिर का एक सवाल भूंडा पड़ जाने से वह समझ गई कि हम दोनों कोई दूसरे ही हैं।

भूत०। बेशक उस सवाल में मुझसे भूल हो गई और उसे शक पड़ गया। मैंने सिर्फ इस खयाल से वह सवाल किया था कि उसका पता मालूम हो जाय तो मैं और भी कोई काम निकाल सकूं मगर खैर जितना मालूम हुआ उतना ही

बहुत है पहिले तो मेरे जी में आया कि उसे पकड़ लूं परन्तु कई बातों को सोच कर रह गया।

शागिर्द०। नहीं, उसका गिरफ्तार कर लेना ठीक न होता।

इसके बाद चलते चलते उन दोनों में जो कुछ बातें हुई वह ऐसी न थीं कि लिखी जायँ।

वह औरत जब वहाँ से रवाना हुई तो उसका चेहरा बहुत उदास और सुस्त था। उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उसका भेद किसी दूसरे ऐयार को मालूम हो गया। उसे भूतनाथ का डर बहुत ही ज्यादे लगा रहता था क्योंकि उसे विश्वास था कि अगर यह भेद भूतनाथ को मालूम हो जायगा तो प्यारा की जान किसी तरह न बचेगी अस्तु वह तरह तरह की बातें विचारती हुई जमना और सरस्वती से मिलने की नियत करके इन्द्रदेव के मकान की तरफ तेजी के साथ रवाना हुई। उसे यह बात मालूम थी कि इन्द्रदेव आजकल "कैलाशभवन" में रहते हैं और जमना तथा सरस्वती से उसी मकान में मुलाकात होगी।

रात दो घण्टे से ज्यादे बीत गई होगी जब हव औरत कैलाशभवन के दर्वाजे पर पहुँची। पहरेदारों की जुबानी इत्तला कराने पर वह अन्दर बुला ली गई और मामूली जाँच करने पर वह उस जगह पहुँचाई गई जहाँ जमना सरस्वती और इन्दुमति रहती थीं। देखने के साथ ही जमना और सरस्वती ने उसे बड़े प्यार से अपने पास बैठाया और पूछा, "कुछ पढ़ती है?" इसके जवाब में उसने कहा, "हाँ महाभारत पढ़ने लगी हूँ।"

यह एक गुप्त इशारा था जो इसके पहिले वाली मुलाकात में जमना और सरस्वती ने इसे सिखाया था और कहा था कि मुलाकात होने पर मेरे सवाल के जवाब में जब तू ऐसा कहेगी तब मैं समझूँगी कि यह वास्तव में 'छन्नो' है। ऊपर के बयान में यह अपने दोनों साथियों से कह चुकी है कि जमना और सरस्वती से मेरी मुलाकात हो चुकी है?

छन्नो०। (जमना और सरस्वती से) कहो मिजाज तो अच्छा है?

सर०। मेरा मिजाज अच्छा है या बुरा सो क्या तुझसे छिपा है।

छन्नो० । छिपा तो नहीं है और मैं सब कुछ जानती भी हूँ परन्तु फिर भी और कुछ नहीं तो शारीरिक अवस्था का कुशल तो पूछना ही पड़ता है ।

सरस्वती० । मनुष्य की शारीरिक अवस्था भी आन्तरिक अवस्था के ही आधीन है । जिसकी अन्तरात्मा प्रसन्न हैं उसका शरीर भी सबल और पुष्ट रहता है और जिसकी अन्तरात्मा दुःखी है उसका शरीर बिना रोग के भी सदैव रोगी रहता है । मेरी अन्तरात्मा का हाल तुझसे छिपा नहीं है और जो कुछ छिपा था सो भी उस दिन मुलाकात होने पर मैंने तुझसे दिल खोल कर कह दिया । अब तो मेरी प्रसन्नता का कोई कारण भी मेरे पास नहीं रह गया है जिससे इस बात की आशा हो कि मुझे भी किसी दिन प्रसन्न होने और दिल खोल कर हँसने का मौका मिलेगा सिवाय इसके कि दुश्मन पर फतह पाऊँ और उसे अत्यन्त दुःखी देख कुछ काल के लिये अपने को सुखी मानूं ।

छन्नो० । नहीं नहीं, ऐसा नहीं सोचना चाहिये । उस महामाया की माया का अन्त नहीं, है और न कोई बात उसके लिये कठिन है । अगर इतने दिन तक तुम दोनों को विधवा रख के वह आज सधवा बना दे तो यह भी उसके लिये कुछ दूर नहीं है ।

जमना० । क्यों छन्नो ! क्या तू हम लोगों से दिल्लगी करती है ? हम लोगों के पाप की कोई बात तूने सुनी है ।

छन्नो० । (दाँत तले जुबान को दबा कर) राम राम ! भला ऐसी भी कोई बात है कि मैं तुम दोनों को व्यभिचारिणी समझूं या इस तरह की गन्दी दिल्लगी करूँ ! ऐसा कदापि खयाल न करना । बात यह है कि मैं तुम दोनों को तुम्हारे पति के अभी तक जीते रहने की मुबारकबाद देती हुई खुशखबरी सुनाने के लिये तैयार हूँ इसीलिये इस ढंग की बातें करती हूँ ।

दोनों० । यह दूसरी दिल्लगी है ।

छन्नो० । मैं तुम्हारी ही कसम खाकर कहती हूँ कि तुमसे झूठ नहीं बोलती और यही सच्ची खबर सुनाने के लिये मैं तुम्हारे पास इस समय आई हूँ ।

जमना० । क्या तू ईश्वर और धर्म की कसम खा कर ऐसा कह सकती है ?

छन्नो० । हाँ हाँ, ईश्वर और धर्म की भी कसम खा कर कहती हूँ कि इसका पूरा पूरा सबूत पाकर मैं तुम्हें खबर देने के लिये आई हूँ परन्तु यह खबर देने के

बाद मैं नहीं कह सकती कि दुश्मनों के हाथ से मैं जीती बचूँगी या नहीं क्योंकि जब मेरे दुश्मनों और साथियों को यह बात मालूम हो जायगी कि मैंने उनसे अलग होकर यह भेद तुमसे कह दिया है तब वे मुझे मारने के लिये कोई बात उठा न रक्खेंगे। मुझे अपने मरने की चिन्ता नहीं है अगर चिन्ता है तो केवल इतनी ही कि मैं अपनी जिन्दगी में तुम दोनों को प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पति के साथ बैठी हुई देख लूँ।

छन्नो की बातों ने जमना और सरस्वती के दिल में प्रसन्नता के साथ ही साथ एक अजीब तरह की खलबली पैदा कर दी। मारे खुशी के रोमांच होकर उनका कण्ठ रुद्ध हो गया और मुश्किल से उन्होंने अपने को सम्हाल कर छन्नो की बात का जवाब दिया।

जमना०। अगर वे जीते हैं तो कहाँ और किस अवस्था में हैं?

छन्नो०। जमानिया के दारोगा ने उन्हें कैद कर रक्खा है मगर किस अवस्था में है सो मैं नहीं कह सकती।

जमना०। यह तुझे कैसे मालूम हुआ?

छन्नो०। खुद मेरी मौसेरी बहिन निरंजनी ने इस बात का पता लगाया है। इस काम में मैं भी उसके साथ थी और साथ देना चाहती थी मगर जब मैंने देखा कि निरंजनी का दिल बेईमान हो गया और वह दयाराम जी को खोज निकालने के साथ ही साथ स्वयम् जमना या सरस्वती बन कर उनके साथ सुख किया चाहती है तब मैंने उसका साथ छोड़ दिया और तुम्हें यह कहने के लिये आई हूँ कि तुम अपनी रक्षा करने के साथ ही साथ स्वयम् उन्हें निरंजनी के पहिले ही कैद से छुड़ा लो और निरंजनी को अपने ऊपर अहसान जताने का भी मौका मत दो। इन्द्रदेव जी की मदद पा कर तुम दोनों जो कुछ कर सकती हो वह निरंजनी को कदापि नसीब नहीं हो सकता। तुम इन्द्रदेव जी को यहाँ बुलाओ या अपने साथ मुझे उनके पास ले चलो। मैं सब हाल उनके सामने ही बयान कर दूँगी जिसमें दोहराने की नौबत न आवे और इस काम में देर न हो।

इतना सुनते ही जमना और सरस्वती उठ खड़ी हुईं और छन्नो का हाथ थामे हुए इन्द्रदेव के पास रवाना हुईं जो इस समय संध्योपासन से निवृत्त हो कर अपने एकान्त के कमरे में बैठे हुए कुछ लिख रहे थे।

इन्द्रदेव इन तीनों को देख कर प्रसन्न हुए और बैठने का इशारा कर के बोले, "मैं इस समय तुम तीनों को बुलाने वाला ही था (छन्नो की तरफ देख कर) क्या दयाराम जी के अभी तक जीते रहने की खबर ले कर आई है ?"

जमना० । (बड़े ही आश्चर्य के साथ) जी हाँ ऐसा ही है मगर आपको यह बात कैसे मालूम हुई ?

इन्द्र० । अभी तुरत ही मुझे भी इस बात की खबर लगी है और मालूम हुआ है कि वे अभी तक दारोगा की कैद में पड़े हुए हैं परन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि यह खबर कहाँ तक सच है ।

छन्नो० । बेशक यह खबर सच है और मैं इसका पूरा पूरा सबूत आपको दूँगी।

इन्द्र० । अगर यह खबर सच है तो इससे बढ़ कर कोई खुशी मेरे लिये हो नहीं सकती । बैठो और खुलासा हाल बयान करो ।

जमना० । क्या आपको आपके किसी शागिर्द ने यह खबर दी है ?

इन्द्रदेव० । हाँ कल छन्नो एक जंगल में बैठी हुई दो ऐयारों से इसी विषय में बातचीत कर रही थी और मेरा एक शागिर्द उसी जगह छिप कर सब बातें सुन रहा था तथा एक तरफ भूतनाथ भी छिपा हुआ वह सब बातें सुन रहा था...

छन्नो० । (बात काट कर) क्या भूतनाथ ने वे सब बातें सुन लीं और उसे भी दयाराम के जीते रहने की खबर लग गई ?

इन्द्र० । हाँ उसे बस बातें मालूम हो गईं मगर कोई चिन्ता नहीं अब तुम्हारे कहने से मुझे विश्वास हो गया और मैं होशियार हो गया हूँ । मेरे सामने उसकी कोई कार्रवाई चल न सकेगी चाहे वह नेकनीयती के साथ करे या बद-नीयती के साथ । भैया राजा का कथन तो यही है कि अब भूतनाथ किसी प्रकार की बुराई न करेगा उसकी नीयत साफ हो गई, परन्तु मुझे उस पर अभी तक विश्वास नहीं होता । (छन्नो से) तुम्हें यह सुन कर आश्चर्य मालूम होगा कि उस एकान्त जंगल में तुम लोगों की बातें सुनने के लिये मेरा शागिर्द क्योंकर जा पहुँचा ।

छन्नो । बेशक यह आश्चर्य की बात है ।

इन्द्र० । मैं यह कह कर तुम्हारा आश्चर्य दूर कर देता हूँ कि मेरा शागिर्द

आज महीने भर से तुम्हारे और निरंजनी के पीछे लगा हुआ है। इसका सबब यह है कि जमना और सरस्वती ने राजसिंह के कुल का अपने हाथ से सत्यानाश करने का प्रण किया है जो दयाराम को गिरफ्तार कर ले गया था। यद्यपि यह बात मुझे पसन्द नहीं है तथापि इन दोनों की खातिर मुझे सब कुछ करना ही पड़ता है अस्तु आज कल मेरे दो शागिर्द राजसिंह के इलाके में और उसके घर के इर्द गिर्द कई बातों की टोह लगाने के लिये घूमा करते हैं। किसी कारण वश राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह को इस बात की खबर लग गई कि आज कल कई ऐयार हमारे इलाके में घूम रहे हैं, अस्तु वह चैतन्य हो गया और डर के मारे उसने घर से निकलना बन्द कर दिया। साथ ही इसके वह गदाधरसिंह को दोस्त बनाने का फिक्र करने लगा यह सोच कर कि वह जमना और सरस्वती का दुश्मन है। इसी बीच में तुम्हारी बहिन निरञ्जनी ने ऐयारों के साथ वहाँ पहुँच कर उसकी लड़की को हर लिया और उसे कैद करके अपने घर ले गई। मेरे शागिर्द ने मुझे इस बात की इत्तला दी और स्वयं इस बात की जांच में लग गया मगर जमना और सरस्वती को मैंने इस बात की खबर नहीं दी और उसके आगे का भेद मालूम करने लगा। काशी में जिस मकान में आज कल तुम और निरञ्जनी रहती हो वह मकान मेरा ही है। मेरे शागिर्द ने निरञ्जनी के एक ऐयार को गिरफ्तार कर लिया और खुद उसकी सूरत बन निरञ्जनी के साथ रहने लगा तथा बातें बना कर और बहुत कुछ ऊँच नीच समझा कर मेरा वह मकान जिसमें मेरे नौकर लोग रहा करते थे और निरञ्जनी को इस बात की कुछ भी खबर न थी खाली करा कर थोड़े किराये में निरञ्जनी को दिलवा दिया और तुम लोगों ने उसी मकान में आकर डेरा डाला तथा ध्यानसिंह की लड़की को भी निरञ्जनी ने उसी मकान में ले जाकर कैद किया। इसके बाद निरञ्जनी ने अपने ऐयारों की मदद से जिसमें मेरा शागिर्द भी शामिल था ध्यानसिंह के उस आदमी को मार डाला जो ध्यानसिंह की चीठी लेकर भूतनाथ की खोज में जा रहा था। उस चीठी के साथ दयाराम के कैद के विषय में एक नक्शा भी था। मेरे शागिर्द ने उस नक्शे और चीठी को अच्छी तरह देखा और पढ़ा था। जब मेरे शागिर्द ने इन सब बातों की मुझे खबर दी तब मैंने तिलिस्मी राह से वहाँ पहुँच कर उस लड़की को कैद से छुड़ाया। आज ही वह लड़की यहाँ लाई गई। इस समय मैं जमना और

सरस्वती से उसकी मुलाकात कराने वाला था। अब तुम समझ गई होवोगी कि वह अभी तक तुम लोगों के पीछे लगा हुआ है और इसी सबब से उसने उस जङ्गल में पहुँच कर तुम्हारी सब बातें सुन ली थीं।

इन्द्रदेव की बातें सुनकर छन्नो हैरान हो गई और उसने हाथ जोड़ कर इन्द्रदेव से कहा, "आप धन्य हैं! आपकी बुद्धिमानी का कोई हद्द हिसाब नहीं। मैं तो यही समझे हुए थी कि मैं यह नई खुशखबरी आपको सुनाऊंगी मगर अब मालूम हुआ कि आप मुझसे भी ज्यादा इस विषय में जानकार हैं जिससे कि मुझे अपनी कार्रवाई पर शर्म आती है।"

इन्द्र०। नहीं नहीं इसमें शर्म की कोई बात नहीं है। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने नेकनीयती के साथ यहाँ आ कर इन सब बातों की जमना और सरस्वती को इत्तला दी जिसे सुन कर मुझे अपने शागिर्द की बातों पर और भी विश्वास हो गया। अच्छा अब कहो कि तुमने यहाँ आ कर जमना सरस्वती को क्या क्या बातें सुनाईं।

इन्द्रदेव बातें सुन कर जमना और सरस्वती बहुत ही प्रसन्न हुईं तथा छन्नो ने जो कुछ उसे मालूम था सब हाल इन्द्रदेव से बयान किया और अब भविष्य में क्या करना चाहिए इस विषय में राय पूछी।

हमारे प्रेमी पाठक तो इस बात को समझ ही गये होंगे और जो न समझे हों अब समझ जायं कि निरञ्जन ने जिस लड़की को उस लोहे वाले जंगले में कैद कर रक्खा था वह ध्यानसिंह की लड़की ही थी और जो उस कैदखाने में उसका मददगार बन कर पहुँचा था (अथवा जमीन के अन्दर से निकला था) वह इन्द्रदेव थे।

इसके बाद उन सभों में फिर इस तरह बातचीत होने लगी—

सरस्वती०। (इन्द्रदेव से) तो क्या वास्तव में अभी तक वे जीते हैं?

इन्द्र०। मालूम तो ऐसा ही होता है! ईश्वर करे यह बात सच निकले और मैं उन्हें छुड़ा कर तुम लोगों के पास ला सकूँ। (छन्नो से) इस भेद को अब तुम लोग बहुत गुप्त रखना जिसमें दारोगा के कान तक यह बात पहुँचने न पावे*।

* यह बात इमेशे के लिये गुप्त रह गई इसीलिये चन्द्रकान्ता संतति में भूतनाथ का हाल कहते हुए दलीपशाह ने इस किस्से को बयान नहीं किया क्योंकि उसे यह हाल मालूम ही न था।

छन्नो० । जी नहीं अब मैं इस विषय में किसी से भी बातचीत न करूँगी ।

इन्द्र० । और तुम अब कुछ दिनों तक हमारे इस मकान से बाहर न जाना ।

छन्नो० । जो आज्ञा !

इन्द्र० । अभी तक मैंने ध्यानसिंह की लड़की से कुछ विशेष बातचीत नहीं की है, अस्तु उसे यहाँ बुलवाता हूँ । तुम उससे बातचीत करो और मैं भी उससे पूछ कर देखता हूँ कि इस विषय में और क्या क्या बातें बताती है ।

छन्नो० । जरूर बुलवाना चाहिये । अच्छा यह तो बताइये कि निरञ्जनी का वह ऐयार जिसे आपके शागिर्द ने पकड़ लिया था कहाँ है ?

इन्द्र० । वह हमारे कब्जे में है । उसे इस बात का ज्ञान अभी तक नहीं हुआ कि उसे किसने गिरफ्तार किया और वह किसके मकान में है । भविष्य में भी उसे इस बात की खबर न होगी क्योंकि वह बेहोश करके किसी जंगल मैदान में छोड़ दिया जायगा जहाँ से वह तुम्हारी बहिन निरञ्जनी के पास पहुँच जायगा। आज ही उसे भी रिहाई देने की इच्छा है ।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठे और बाहर जाकर उन्होंने अपने किसी आदमी को हुक्म दिया कि ध्यानसिंह की लड़की को यहाँ ले आवे । थोड़ी ही देर में वह लड़की वहाँ आ पहुँची जहाँ जमना सरस्वती छन्नो और इन्द्रदेव बैठे बातें कर रहे थे ।

इस लड़की की सूरत शक्ल के विषय में कुछ थोड़ा सा हम निरञ्जनी के बयान में लिख आये हैं, यहाँ पुनः लिखने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती । यहाँ केवल इतना लिख देना काफी होगा कि अभी तक उसके चेहरे पर से उदासी और घबराहट दूर नहीं हुई । इसका विशेष कारण तो यही जान पड़ता है कि वह बेचारी वहाँ भी कैद थी और यहाँ भी अपने को कैदी ही समझती है ।

इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर वह लड़की जिसका नाम ज्वाला था बैठ गई । तब इन्द्रदेव ने उसे कहा, "बेटी ! मैं तुझे कई दफे कह चुका हूँ कि 'तू अपने दिल से डर और उदासी को दूर कर दे, मेरे यहाँ तुझे किसी तरह की भी तकलीफ न होगी, मगर न मालूम क्यों तुझे मेरी बातों का विश्वास नहीं होता ।"

ज्वाला० । मुझे आपकी बातों का पूरा विश्वास है, मुझे आपका बहुत भरोसा है, आप मेरे बहुत बड़े वक्त में काम आये हैं और आप ने मेरी रक्षा की है । मैंने निरञ्जनी के घर में जो जो तकलीफें उठाई हैं वह मेरा ही जी जानता है ।

अगर आप मेरी सहायता न करते तो न मालूम मुझे क्या क्या तकलीफें झेलनी पड़तीं, मैं जीती भी रहती या नहीं, परन्तु अब मुझे सिवा अपने घर पहुँचने के और किसी बात की फिक्र नहीं है।

इन्द्र०। मैं तुझसे इस बात का वादा कर चुका हूँ कि तुझे बड़ी इज्जत के साथ तेरे घर पहुँचा दूँगा।

ज्वाला०। निःसन्देह आपने वादा किया है, आप की बात कदापि झूठ नहीं हो सकती (उन्नों की तरफ देख के) इनको देख के मैं इस समय पुनः डर गई हूँ क्योंकि निरञ्जनी के साथ इनको मैं देख चुकी हूँ। यद्यपि इनके हाथ से मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई बल्कि मार पीट के समय इन्होंने मेरी सिफारिश की थी और मुझे बचाया भी था परन्तु.....

इन्द्र०। तेरा विचार ठीक है और तेरा डरना उचित ही है मगर मैं तुझे जोर देकर कहता हूँ कि इससे डरने की तुझे कोई जरूरत नहीं। इसके और निरञ्जनी के मिजाज में उलटे सीधे का फर्क है। निरञ्जनी की बुरी नियत देख कर इसने निरञ्जनी का साथ छोड़ दिया और अब मेरे घर में (जमना और सरस्वती की तरफ इशारा कर के) इन दोनों के पास चली आई है क्योंकि यह लड़कपन ही से इन दोनों के साथ प्रेम और सचाई के साथ रहती आई है। तू इन दोनों को नहीं पहिचानी और अभी मैं नहीं बताऊँगा कि ये दोनों कौन हैं पर इस बात के लिए तुझे दुःख न मानना चाहिये। इतना मैं तुझे जरूर कहूँगा कि इन दोनों से भी तुझे डरना न चाहिये और इससे जिसका नाम छन्नो है, कदाचित तुझे मालूम हो, सिवाय भलाई के बुराई की उम्मीद मत कर। इसे मैं आज से नहीं बल्कि बहुत दिनों से जानता हूँ, अगर ऐसा न होता तो इस पर विश्वास कर के आज मैं इसे अपने घर में कदापि न आने देता।

ज्वाला०। आपके कहने से मैं बिल्कुल बेफिक्र हो गई परन्तु यह जानने की इच्छा जरूर है कि (जमना और सरस्वती की तरफ इशारा कर के) ये दोनों कौन हैं और छन्नो यहाँ क्यों आई है ?

इन्द्र०। मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि इन दोनों का भेद अभी मैं तुझ से न कहूँगा, हाँ यदि तू कुछ दिन यहाँ रह गई तो तुझसे कुछ छिपा न रहेगा। छन्नो यहाँ दयाराम का समाचार लेकर आई है जिनका भेद जानने के लिए निरञ्जनी ने

तुझे निरफ्तार किया था। तुझे वह बात अभी मालूम न हुई होगी कि निरञ्जनी ने तेरे बाप के एक सिपाही को मार कर एक चीठी जिसके साथ और भी कई चीजें थीं ले ली जो कि तेरे बाप ने भूतनाथ के पास उससे दोस्ती करने के लिए भेजी थीं। उससे दयाराम का पूरा पूरा हाल निरञ्जनी को मालूम हो गया है।

ज्वाला०। यह हाल मुझे मालूम नहीं है, हाँ दयाराम के विषय में मैं बहुत कुछ निरञ्जनी को बता चुकी हूँ। मेरे पिता को बहुत दिनों तक इस बात की कुछ खबर न थी कि उनके घर में से दयाराम को कौन चुरा ले गया। हाल में इस बात का पता लगा है कि यह काम जमानिया के दारोगा ने किया है और अभी तक दयाराम उसी के घर में हैं (हाथ जोड़ कर) मेरे दादा की तरह निःसन्देह मेरा पिता भी इस मामले में दोषी हैं परन्तु मैं बिल्कुल ही बेकसूर हूँ। यदि मैं किसी योग्य होती तो पिता के घर में कदापि न रहती, न उसके साथ ही साथ अपनी भी बेइज्जती कराती।

इन्द्र०। बेशक यही बात है। अब भी मैं तुझे यही राय दूँगा कि पिता के घर का ध्यान छोड़ दे क्योंकि तेरा पिता ताज्जुब नहीं कि किसी दिन अपने कर्मों का फल इसी जीवन में पा जाय, ऐसी अवस्था में तुझे वहाँ बड़ी तकलीफ होगी।

ज्वाला०। तकलीफ क्या मैं बिल्कुल बेइज्जत हो जाऊँगी और किसी काम के लायक न रहूँगी। अब तो मैंने आप ही को पिता और ईश्वर मान लिया है। आप जो आज्ञा देंगे मैं वही करूँगी। मैं अपने घर का यदि कुछ ख्याल करती हूँ तो केवल अपनी माँ की मुहब्बत से।

इन्द्र०। ठीक है, ईश्वर चाहेगा तो तू अपनी माता से किसी अच्छे मौके पर मिला दी जायगी। यदि तेरी माता को यह मालूम होगा कि तू इतने दिनों तक इन्द्रदेव के यहाँ रही है तो वह कदापि तुझ से असन्तुष्ट न होगी और न तेरी इज्जत या चालचलन में किसी तरह का फर्क मानेगी।

ज्वाला०। निःसन्देह ऐसा ही है, आपके यहाँ रहने में मुझे किसी प्रकार का भी हर्ज नहीं है।

इन्द्र०। (जमना सरस्वती और छन्नो से) अब तुम लोग इस लड़की को

अपने साथ ले जाओ और इसे अपनी लड़की समझ कर खातिर के साथ अपने साथ रक्खो (ज्वाला से) इन तीनों के साथ तू बेफिक्री के साथ रह कर ईश्वर से शुभ दिन के प्राप्ति की प्रार्थना कर और दयाराम के विषय में जो कुछ ये तीनों पूछें उसके बताने में किसी प्रकार का संकोच मत कीजियो।

ज्वाला०। जो आज्ञा।

इसके बाद जब वहाँ से उठने की तैयारी हुई तब छन्नो ने इन्द्रदेव की तरफ देख कर कहा, "एक बात मैं आपसे कहना भूल गई।"

इन्द्र०। वह क्या?

छन्नो०। आपको मालूम ही होगा कि भूतनाथ से और नागर से कुछ दोस्ती है।

इन्द्र०। हाँ मैं इस बात को बखूबी जानता हूँ।

छन्नो०। इसलिए भूतनाथ अपने हाल चाल की चीठी जिसमें बहुत सी भेद की बातें भरी रहती हैं नागर को लिखा करता है। निरञ्जनी भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई बहुत सी चीठियाँ नागर से माँगनी माँग लाई है और उससे भूतनाथ के भेद जान कर उस पर अपना रोआब जमाना चाहती है। अभी तक वे चीठियाँ निरञ्जनी के पास मौजूद हैं।

इन्द्र०। अच्छा किया जो तूने यह हाल मुझे बता दिया, अगर हो सका तो इस विषय में भी मैं कोई कार्रवाई करूँगा, अच्छा अब तुम लोग जा कर आराम करो।

पांचवां बयान

दयारामजी को खोज निकालने की धुन में तीन आदमी अपने अपने स्थान से बाहर निकले। निरञ्जनी को दारोगा साहब से नागर की बदौलत कुछ घनिष्ट सम्बन्ध था और नागर निरञ्जनी को बहुत प्यार करती थी अस्तु निरञ्जनी पहिले नागर ही के घर की तरफ रवाना हुई। भूतनाथ यद्यपि दारोगा से कुछ लड़ गया था परन्तु उसे इतना जरूर विश्वास था कि यदि मैं दारोगा के घर उसका दोस्त बन कर जाऊंगा तो वह मेरी खुशामद करने के लिये तैयार मिलेगा और चाहेगा कि मुझे किसी तरह अपना दोस्त बनावे, इसलिये दारोगा से मिलने के लिये

अपनी असली सूरत में जमानिया की तरफ रवाना हुआ। इन्द्रदेव से दारोगा निःसन्देह डरता था और यह बात इन्द्रदेव को मालूम थी परन्तु इन्द्रदेव को विश्वास था कि यदि मैं दयाराम के विषय में दारोगा से कुछ कहूँगा तो वह जरूर अनजान बन कर इन्कार कर जायगा और कहेगा कि उनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता इस खयाल से इन्द्रदेव ने दारोगा को अपने घर ही में बुला कर कुछ कार्रवाई करना मुनासिब समझा और अपने एक सवार को चीठी दे कर दारोगा के पास रवाना किया जिसमें यह मजमून लिखा हुआ था :—

मेरे परम प्रिय गुरूभाई !!

पत्र देखते ही हजार काम छोड़ कर मेरे पास चले आओ। मैं खुद तुमसे मिलने के लिये आता परन्तु मैं अपने स्वास्थ के बिगड़ जाने से बिल्कुल लाचार हो रहा हूँ, नहीं तो आपको कष्ट न देता। यदि किसी कार्यवश महाराज भी आपको रोकें तो उनसे मेरी तरफ से क्षमा प्रार्थना करना परन्तु आने में विलम्ब न करना।

आपका—इन्द्रदेव।

इस पत्र को ले कर सवार तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुआ और इन्द्रदेव दारोगा के आने का इन्तजार करने लगे।

तीसरे दिन सन्ध्या के समय दारोगा साहब इन्द्रदेव के घर आये और उन्होंने बड़ी खातिर से दारोगा को अपने कैलाशभवन के एक सुन्दर कमरे में उतारा जो उस मकान या खण्ड से बिल्कुल ही निराले पड़ता था जिसमें इन्द्रदेव की गृहस्थी और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति वगैरह रहती थीं।

खातिरदारी से छुट्टी पाने बाद जब दोनों आदमी निश्चिन्ती से एकान्त में बैठे तो इन्द्रदेव और दारोगा से इस तरह बात चीत होने लगी :—

दरो०। कहो क्या मामला है जो तुमने इस तरह यकायक जल्दी के साथ मुझे बुला भेजा ? तुम्हारी चीठी पा कर तो मैं बहुत ही घबड़ा गया था। ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं यहाँ आकर तुम्हें तन्दुरुस्त पाता हूँ।

इन्द्र०। नहीं मैं तन्दुरुस्त नहीं हूँ। यद्यपि उस दिन की बनिस्बत जिस दिन मैंने आपको चीठी लिखी थी आज अच्छा दिखाई देता हूँ, और मुझमें चलने फिरने तथा घोड़े पर चढ़ने की भी हिम्मत हो गई है परन्तु फिर भी मैं अपने को

तन्दुरुस्त नहीं मानता और वैद्य की बात पर विश्वास करता हूँ जिसने मुझे संकोच छोड़ कर यह कह दिया है कि "इन्द्रदेव ! अगर तुम पन्द्रह दिन तक जीते बच गये तो फिर तुम्हें इस बीमारी से किसी तरह का डर न रहेगा।"

दारो० । (आश्चर्य और दुःख के साथ) हैं ! ऐसी बात है ? आखिर तुम्हें बीमारी क्या है सो भी तो मालूम हो ?

इन्द्र० । मुझे एक अजीब तरह की बीमारी हो गई है । मेरे पैरों में सख्त दर्द रहता है । कभी कभी यह दर्द आठ आठ दस दस घण्टे तक बन्द रहता है और जब यकायक उभड़ता है तो अधमुआ करके छोड़ देता है । इसी तरह दिन में दो तीन मरतबे कलेजे में दर्द होता है । उस समय तो मैं अपने जीवन से बिल्कुल ही निराश हो जाता हूँ । खाना पीना बिल्कुल ही नष्ट प्राय हो रहा है, केवल मूँग की दाल खाने की आज्ञा वैद्य जी दे गये हैं ।

दारोगा० । बड़े दुःख की बात सुना रहे हो ।

इन्द्र० । आप जानते हैं कि मेरा कोई लड़का नहीं है और मैं एक भारी तिलिस्म का दारोगा हूँ ।

दारोगा० । मैं खूब जानता हूँ ।

इन्द्र० । यद्यपि मेरे घर में लड़का होने की उम्मीद है सही परन्तु नहीं कह सकता कि लड़का होगा या लड़की अथवा दोनों ही की उम्मीद जाती रहेगी ।

दारोगा० । परमात्मा न करे ऐसा हो ।

इन्द्र० । भविष्य के गर्भ में क्या है सो कोई नहीं जानता !

दारोगा० । बेशक ऐसा ही है ।

इन्द्र० । अतएव मैं चाहता हूँ कि आपको तिलिस्म में ले चल कर वहाँ के कुछ भेद समझाने के साथ ही साथ एक वसीयतनामा और तिलिस्म की तालियों का गुच्छा आपके हवाले कर दूँ । ईश्वर की कृपा से यदि मैं अच्छा रहा तो पन्द्रह बीस दिन बाद तालियों का गुच्छा आपसे वापस ले लूँगा नहींतो उस वसीयतनामे के पढ़ने से आपको तिलिस्म का सब हाल मालूम हो जायगा तथा और भी जो कुछ मैंने उस वसीयतनामे में लिख रक्खा है उसे आप बखूबी पूरा करेंगे, ऐसी आशा केवल आप ही से रख सकता हूँ ।

इन्द्रदेव की बीमारी का हाल सुन कर दारोगा साहब को दुःख हुआ सही

परन्तु इन्द्रदेव जिस तिलिस्म का दारोगा है वहाँ का भेद मालूम हो जायगा और वहाँ की तालियाँ मिल जायंगी इस आशा से वह दिल में बहुत ही खुश भी हुआ मगर इस खुशी को अपने चेहरे से जाहिर न होने दिया।

सराहना तो इन्द्रदेव की करनी चाहिये कि दारोगा की इतनी दुष्टता देख कर भी उससे जाहिरदारी तोड़ने का विचार नहीं करता और दारोगा को चार दिन के लिये कैद करके अपना काम निकालना चाहता है मगर दारोगा को दुःख देना अथवा उससे जबर्दस्ती करना नहीं चाहता और न यह चाहता है कि दारोगा को उसके ऊपर किसी तरह का शक हो।

दारोगा ने अपने दिल की प्रसन्नता के भाव को छिपाया और जाहिर में अपने चेहरे को रञ्जीदा बना कर इन्द्रदेव से कहा :—

दारोगा०। इन्द्रदेव! तुम्हारी बातों को सुन सुन कर मेरा दिल डूबा जाता है। जो कुछ कहोगे उसे मैं करूँगा जरूर परन्तु इन दुःखमय बातों को सुनकर मेरे कलेजे में चोट लगती है। इस दुनिया में मेरा मददगार सिवाय तुम्हारे और कोई भी नहीं है अस्तु तुम्हारी बात सच निकली तो तुम्हारे बाद मेरी क्या दशा होगी?

इन्द्र०। ईश्वर सब अच्छा करेगा। दुनिया में किसी के बिना किसी का काम अटका नहीं रहता। अच्छा अब भोजन करके आराम कीजिये, कल प्रातः काल आपको साथ लेकर मैं तिलिस्म की तरफ रवाना होऊँगा।

दारोगा०। तुम्हारी बातों ने मेरी भूख प्यास तो नष्ट कर दी है अब मैं कुछ भोजन न करूँगा।

इन्द्र०। नहीं ऐसा न होगा।

इन्द्रदेव ने दारोगा के लिये भोजन इत्यादि का सामान ठीक कराया, दारोगा के साथ ही साथ इन्द्रदेव ने भी कुछ भोजन किया और तब दोनों आराम करने के लिये अलग अलग कमरे में चले गये।

दूसरे दिन सुबह की दो घड़ी रात रहते इन्द्रदेव उठे और उन्होंने दारोगा साहब को नींद से होशियार किया। घण्टे भर के अन्दर ही दोनों आदमी जरूरी कामों से निपट सफर करने के लिये तैयार हो गये। हुक्म के मुताबिक दो घोड़े

तैयार कर के हाजिर किये गये और उन पर दारोगा साहब तथा इन्द्रदेव सवार होकर घर से बाहर निकले तथा उत्तर की तरफ रवाना हुए।

दोपहर दिन चढ़े तक ये दोनों आदमी मामूली चाल पर बराबर चले गये। इसके बाद इनको पहाड़ की तराई मिली और सुन्दर तथा साफ जल से भरा हुआ एक कुदरती तालाब नजर आया। इन्द्रदेव ने दारोगा से कहा कि अब यहाँ पर उतर कर स्नान और कुछ भोजन करना चाहिये। रात को मैंने अपने एक शागिर्द को आज्ञा दे दी थी कि वह यहाँ पर कुछ भोजन की सामग्री तैयार रक्खे, सम्भव है कि वह यहाँ आ चुका हो अथवा आता ही हो।

यद्यपि दारोगा वहाँ ठहरना नहीं चाहता था और तिलिस्म के अन्दर शीघ्र पहुँचने के लिये उसका जी बेचैन हो रहा था तथापि इन्द्रदेव की इच्छानुसार उसे रुकना ही पड़ा। दोनों आदमी उस तालाब के पास चले गये और एक सायेदार पेड़ के नीचे घोड़े पर से उतर पड़े। दोनों ने अपना अपना घोड़ा (कुछ टहलाने और शान्त करने के बाद) पेड़ से बांध दिया और जरुरी कामों से निपटने की फिक्र करने लगे।

थोड़ी देर में सब कामों से निश्चिन्त हो कर दोनों आदमी पुनः वहाँ पहुंचे जहाँ उनके घोड़े पेड़ से बन्धे हुए थे और जीनपोश बिछा कर बैठ गये। उसी समय एक आदमी सर पर छोटी सी दौरी रक्खे उनकी तरफ आता हुआ दिखाई दिया। इन्द्रदेव ने दारोगा से कहा, "लीजिये जलपान का सामान भी आ पहुंचा।"

उस आदमी ने पास पहुंच कर जलपान की दौरी उनके सामने रख दी और पानी का बन्दोबस्त करके पेड़ की आड़ में चला गया और ये दोनों भोजन करने लगे। इन्द्रदेव ने तो बीमारी का पाखण्ड रच ही रक्खा था इसलिये केवल एक दो फल खाकर रह गये मगर दारोगा ने तरह तरह की चीजों पर खूब ही हाथ फेरा।

जलपान से छुट्टी पाकर जब दोनों आदमी निश्चिन्त हुए तब उनमें इस तरह बातचीत होने लगी :—

इन्द्र०। बीमारी ने मेदा ऐसा कमजोर कर दिया है कि एक दो फल खाना भी भारी हो रहा है छाती में बोझ सा हो गया और सर घूमने लगा।

दारोगा०। अफसोस ! तुम्हारी तन्दुरुस्ती बहुत ही खराब हो गई।

इन्द्र०। (लेट कर) बैठना मुश्किल हो गया, सर का चक्कर बढ़ता जाता है।

दारोगा० । सर तो मेरा भी घूम रहा है । ऐसा मालूम होता है कि खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिली हुई थी ।

इन्द्र० । मुझे भी ऐसा ही शक होता है किसी ऐयार ने मेरे आदमी को धोखा तो नहीं दिया ! उस आदमी की जाँच करनी चाहिये जो खाने का सामान लाया है ।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठ बैठे और "रामा रामा" कह कर उस आदमी को पुकारने लगे । वह पेड़ की आड़ में खड़ा था पुकारने से सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "आपका रामा मेरी बदौलत कहीं जहन्नुम की सैर करता होगा । मैं तुम्हारे दुश्मन का ऐयार हूँ और अब तुम दोनों को गिरफ्तार कर के अपने मालिक के पास ले जाऊँगा ।"

इतना कह कर वह कुछ दूर पीछे हट गया । उसकी बात सुन दारोगा के तो होश उड़ गये । इन्द्रदेव ने जान बूझ कर जमीन पर लेट के आँखें बन्द कर लीं । दारोगा ने समझा कि यह बेहोश हो गए, क्रोध में आकर उठ खड़ा हुआ और तलवार खैंच कर उस ऐयार की तरफ बढ़ा मगर कुछ कर न सका, थोड़ी ही दूर जाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया । दारोगा को बेहोश देख कर वह आदमी इन्द्रदेव के पास आया और धीरे से बोला, "उठिये, दारोगा साहब बेहोश हो गये ।"

इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और अपने शागिर्द से बोले, "अब इन्हें हमारे मकान में ले जा कर कैद करो । जहाँ मैं तुम्हें बता चुका हूँ उसी जगह पर इन्हें रखना और खाने पीने का खयाल रखना । इसको यह न मालूम होने पाने कि कहाँ पर और किसके यहाँ कैद हैं । इन्हें मैं घोड़े पर लाद देता हूँ तुम भी उसी पर सवार हो जाओ । जङ्गल की राह से धीरे धीरे जाओ जिसमें रात्रि के समय घर पहुँचो । मैं किसी काम के लिए तिलिस्म में जाता हूँ !"

शागिर्द के साथ मिल कर इन्द्रदेव ने दारोगा को घोड़े पर लादा और शागिर्द को भी उसी पर चढ़ा कर घर की तरफ रवाना किया और स्वयम् उसी तरफ को चले गये जिधर जा रहे थे ।

छठवां बयान

अब हम अपने पाठकों का ध्यान भूतनाथ के तीसरे हिस्से के पहिले और दूसरे बयान की तरफ ले जाते हैं जिसमें भूतनाथ से चन्द्रशेखर का मिलना, नागर के यहाँ बाबू साहब (रामलाल) की मौजूदगी में भूतनाथ का आना, साहब से तथा भूतनाथ से बात होना और उसी जगह पुनः किसी आदमी का पहुँच कर भूतनाथ के आगे लिफाफा फेंक कर भाग जाना इत्यादि लिखा गया है।

उस बयान के पढ़ने से यह तो मालूम ही हो चुका होगा कि उस समय नानक की माँ रामदेई से भूतनाथ का सम्बन्ध हो चुका था और बाबू साहब (रामलाल) भूतनाथ का साला कहा जाता था। मगर भूतनाथ का और बाबू साहब का उन दिनों मुद्दत से सामना नहीं हुआ और भूतनाथ के मामलों से बाबू साहब को बहुत कम वाकफियत थी तथापि बाबू साहब लुक छिप कर अपनी बहिन रामदेई से मिलने के लिए अक्सर जाया करते थे और वह भी रुपये पैसे से इनकी मदद खुले दिल के साथ किया करती थी।

बाबू साहब यद्यपि डरपोक आदमी थे मगर ऐयाश जरूर थे और दो चार बदमाश लुँगेड़ों को भी अपने साथ रखते थे। इन्हीं दिनों इन्हें एक और भी गैबी मदद मिल गई थी जिसके कारण इनका दिमाग कुछ बढ़ने लग गया था जो आखिर यहाँ तक बढ़ा कि उस घटना के (जिसका जिक्र ऊपर कर आये हैं) थोड़े ही दिन बाद ये बहादुर बन गये, ऐयारी का दम भरने लगे और भूतनाथ के दुश्मन बन गये। अब सुनिये कि वह गैबी मदद क्या थी और उसके सबब से रामलाल की कैसी अवस्था बदली तथा चन्द्रशेखर के कारण भूतनाथ को कैसी परेशानी उठानी पड़ी।

हम भूतनाथ के दूसरे हिस्से के नौवें बयान में लिख आये हैं कि भूतनाथ ने अपने बारह शागिर्दों के साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया और उन्हें कैद करके एक गुफा में डाल दिया मगर जब बाहर से लौट कर पुनः उन सभों को देखने के लिये गया तो किसी का भी वहाँ न पाया।

असल में उन शागिर्दों को भी इन्द्रदेव ही ने (घाटी के अन्दर ही अन्दर किसी गुप्त रास्ते से पहुँच कर) छुड़ा दिया था मगर ऐसे ढंग से कि उन शागिर्दों

को इस बात का कुछ भी निश्चय न हुआ कि उनका छुड़ाने वाला कौन है, हाँ छुड़ाने वाले ने इतना जरूर कह दिया था कि 'मैं प्रभाकरसिंह की आज्ञा से तुम लोगों को छुड़ाता हूँ, अब मुनासिब है कि तुम लोग भूतनाथ से अपना बदला लो और उस तलवार को भी छीन लो जिसके सबब से उसने तुम लोगों पर फतह पाई है। वह तलवार असल में प्रभाकरसिंह की है, उसका जख्म जरा सा भी जिसको लग जाता है वह बेहोश हो जाता है मगर उस पर उसका असर कुछ भी नहीं होता जिसके पास उसके जोड़ की अंगूठी होती है। वह अँगूठी भी जो लोहे की सी है भूतनाथ की उँगली में तुम देखोगे। सब कुछ करना मगर भूतनाथ को जान से मत मारना नहीं तो हम तुम लोगों को भी जीता न छोड़ेंगे। हमने तुम लोगों को उसके फन्दे से छुड़ा कर जो कुछ तुम लोगों पर अहसान किया है उसका बदला यही चाहते हैं कि भूतनाथ को जान से मत मारना, तक लीफ जितनी तुम्हारे जी में आवे और जो तुम से हो सके देना।' इस बात को उन लोगों ने बड़ी खुशी से मंजूर कर लिया था और अपने छुड़ाने वाले को दिल से धन्यवाद दिया था।

केवल इतना ही नहीं, चलती समय महात्मारूपी इन्द्रदेव ने उन ऐयारों को को मदद की तौर पर कुछ अशर्फियाँ और जवाहिरात भी दिया और उनके सामने से देखते देखते गायब हो गये।

इस तरह पर वे ऐयार लोग भूतनाथ के पञ्जे से रिहाई पा कर उद्दंड हो गए और भूतनाथ को सताने की फिक्र करने लगे।

हम कई जगह लिख आये हैं कि 'भूतनाथ ने अपने रहने के लिये कई स्थान बना रक्खे थे और सभी जगह वह थोड़ी बहुत दौलत भी रखता था।' उन सब स्थानों और खजानों का हाल उन सब शागिर्दों को मालूम था अस्तु सब के पहिले उन लोगों ने भूतनाथ के खजानों पर धावा किया और जहाँ तक बन पड़ा उन्हें बहुत जल्द अपने कब्जे में कर लिया इसके बाद अपने रहने के लिए एक सुयोग्य स्थान नियत करके और आपुस में मिलने जुलने का इशारा बाँध कर बिदा हुए और कार्रवाई करने की फिक्र में लगे। उन लोगों ने बहुत जल्द भूतनाथ का पता लगा लिया और सूरत बदले हुए मौके मौके से उसका पीछा करने लगे तथा इस बात की भी फिक्र करने लगे कि भूतनाथ के बाकी शागिर्दों को भी

अपना हाल सुना कर भड़कावें और अपना साथी बनावें आखिर दो ही चार रोज के हेर फेर में उन लोगों ने भूतनाथ के कई शागिर्दों को जो उन लोगों में से कई के रिश्तेदार भी थे तोड़ कर अपना साथी बना लिया जिसकी खबर भूतनाथ को कई दिनों तक न लगी। इनमें से दो शागिर्दों के नाम विजय और बहादुर थे बहादुर भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था अस्तु बहादुर इस मण्डली में मिलने बाद सभों की राय के मुताबिक भूतनाथ के पास चला गया और समय का इन्तजार करने लगा।

अपने विश्वासपात्र ऐयारों का साथ छूट जाने और बेइंतहा दौलत कब्जे से निकालने के बाद जब भूतनाथ ने वह घाटी छोड़ी तो बहुत दुःखी और उदास होकर पुनः अपने मालिक रणधीरसिंह के पास स्थिर भाव से रहने का विचार किया और उनसे बहुत कुछ बातें बनाने और माफी मांगने के बाद उन्हें प्रसन्न करके उनके पास रहने लगा जिससे उसके बागी शागिर्दों को यकायक उसे सताने और उससे बदला लेने का मौका न मिला मगर वे लोग निरन्तर इसकी धुन में लगे ही रहे।

एक दिन भूतनाथ मिरजापूर से निकल कर अपनी स्त्री रामदेई से मिलने के लिए काशी की तरफ रवाना हुआ। उसे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि उसके बागी शागिर्द उसकी धुन में लगे हुए हैं और सफर में वह जहाँ टिका या ठहरा करता था प्रायः उन जगहों पर रूप बदल बदल कर उन लोगों ने दखल जमाया हुआ है।

भूतनाथ जब काशी जाया करता था तो एक बाग में जो करीब करीब सफर के मध्य में पड़ता था वह दो चार घण्टे के लिये जरूर ही ठहरा करता था बल्कि अक्सर वहाँ रईस ी बनाया करता था क्योंकि उसके पास ही में एक छोटा सा बाजार भी था और उस बाग के माली लोग लालचवश भूतनाथ की खिदमत भी किया करते थे और सीधा तथा बरतन पानी इत्यादि सुबीते से जुटा दिया करते थे तथा और भी जो कुछ जरूरत पड़ती थी खिदमत कर दिया करते थे। वह बाग "रामबाग" के नाम से मशहूर था।

वह बाग किसी रसोई या जिमीदार का न था बल्कि किसी खटिक और मालियों का था जो उसका फल फूल तथा मेवा और दरख्त वगैरह बेच कर

फायदा उठाते थे और प्रायः उसमें रहा भी करते थे। भूतनाथ के दो शागिर्दों ने भी उसी में जाकर नौकरी की और रहने लगे। दोपहर का समय था जब सफर से थके हुए भूतनाथ ने आकर उस बाग में आराम किया और नहा धो कर रसोई बनाने की फिक्र में लगा। मालियों ने सब सामान मौजूद कर दिया और भूतनाथ रसोई बना कर भोजन करने के बाद वहाँ से रवाना हुआ। वहाँ के मालियों में से एक आदमी किसी काम का बहाना करके भूतनाथ के साथ ही साथ बातें करता हुआ उसी तरफ रवाना हुआ जिधर भूतनाथ जाता था।

थोड़ी दूर जाने बाद भूतनाथ को नशा सा चढ़ आया, जमीन घूमती हुई मालूम होने लगी और पैरों में लड़खड़ाहट पैदा हो गई। भूतनाथ ने घूम कर अपने साथ आते हुए माली की तरफ देखा और कहा, 'क्या आज तुम लोगों ने मेरे खाने के सामान में कोई नशीली चीज मिला दी है?"

माली०। (साथ से कुछ अलग हट कर) जी हाँ, आज कुछ ऐसा ही मामला हुआ है। उस बाग के माली सब तो आपके खैरख्वाह और ताबेदार हैं उन बेचारों पर किसी तरह का आपको शक न करना चाहिये मगर मैं आपका दुश्मन जरूर हूँ और आप ही से बदला लेने की नीयत से मैंने उन शूद्र मालियों की क्षत्री हो कर नौकरी भी की थी। आज मेरा मनोरथ सिद्ध हुआ और आपके भोजन की सामग्री में दवा मिलाने का मुझे मौका मिला (हँस कर) आप बहुत दिनों से दूसरों के लिए जहरीले पेड़ लगा रहे थे जिसमें अब फल लगने शुरू हो गये हैं और वे फल आप ही को चखने पड़ेंगे।

भूतनाथ०। (क्रोध से उस माली की तरफ देख कर) तू कौन है? मैं तेरा नाम सुना चाहता हूँ!!

माली०। हाँ तुम बार बार मेरे हाथों से सताये जाओ इसलिए तुम्हें मेरा नाम जरूर याद कर लेना चाहिये जो कि मैं खुशी से बताने के लिए तैयार हूँ। मेरा नाम है 'चन्द्रशेखर।'

भूत०। तुम किसके नौकर हो?

चन्द्र०। अपने दिल के।

भूत०। मेरे साथ दुश्मनी करने का कारण?

चन्द्र०। तुम्हारी बदनीयती और बेईमानी।

भूत० । तुम्हारा मैंने क्या बिगाड़ा है ?

चन्द्र० । इज्जत और हुर्मत ।

भूतनाथ० । (चिढ़ कर) साफ साफ और सीधी तरह से क्यों नहीं बातें करता है ।

चन्द्र० । इस लिए कि तुम सीधी तरह से सीधे होने वाले नहीं हो ।

मारे गुस्से के भूतनाथ पेचोताब खाने लगा और उसने जोश में आ कर खञ्जर के कब्जे पर हाथ रक्खा मगर कुछ कर न सका । उसका क्रोध बेफायदे था और उसका गुस्सा व्यर्थ, क्योंकि अब उस पर बेहोशी का पूरा असर हो चुका था अस्तु खञ्जर खैंचते ही वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा ।

आने जाने वाले मुसाफिरों की निगाह से बचने का खयाल करके चन्द्रशेखर उसी समय भूतनाथ को उठा कर सड़क से बहुत दूर, एक नाले में ले गया जहाँ बिल्कुल सन्नाटा था और किसी के आने की भी आशा न थी ।

चन्द्रशेखर ने पहिले उस अनूठी अँगूठी और तलवार पर कब्जा किया जो भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह से ली थी । इसके बाद उसका ऐयारी का बटुआ ले लिया ! अन्त में उसके कपड़े भी उतार लिए तथा और भी जो कुछ उसके पास था लेकर केवल लङ्गोटा पहिरे छोड़ दिया और दूसरी तरफ का रास्ता लिया ।

सन्ध्या होने के बाद जब भूतनाथ होश में आया तो उसने अपने को बड़ी दुर्दशा में पाया । कपड़ों के चले जाने का दुःख तो साधारण था परन्तु अपनी बेइज्जती होने और बटुए के चले जाने का उसे बड़ा ही रञ्ज हुआ । थोड़ी देर तक कुछ चिन्ता करने बाद उठ खड़ा हुआ और क्रोध से होठ चबाता हुआ अपने अड्डे की तरफ रवाना हुआ ।

चन्द्रशेखर भूतनाथ के दुश्मन शागिर्दों का दोस्त तथा एक बहुत तेज और होशियार ऐयार था । उसका असली नाम कुछ दूसरा ही था परन्तु भूतनाथ के लिए उसने अपना बनावटी नाम चन्द्रशेखर रख लिया था । जब वह भूतनाथ को लूट कर अपने दोस्तों के पास गया तो बहुत ही खुश था क्योंकि भूतनाथ का ऐयारी का बटुआ उसके कब्जे में था और उसमें उसके मतलब की बहुत सी चीजें हाथ लगी थीं । नागर की लिखी हुई कई चीठियाँ भी उसमें से मिली थीं । जिनमें से कई भूतनाथ की चीठी के जवाब में

लिखी हुई थी और जिनके पढ़ने से इस बात का पता लगता था कि उन दोनों में किस तरह पर किस मामले की बातें हो रही हैं तथा भूतनाथ कैसे कैसे दुर्घट मामलों के फेर में पड़ा हुआ है। यों तो वे लोग भूतनाथ के शागिर्द ही थे और उसके बहुत से मामलों से जानकार थे परन्तु इन चीठियों के पढ़ने से उन्हें बहुत सी बातें ऐसी मालूम हो गईं जिनका उन्हें कुछ गुमान भी न था और जिनका प्रगट होना भूतनाथ के लिये बहुत ही बुरा था।

भूतनाथ को अपनी अवस्था पर बहुत ही दुःख हुआ और मारे क्रोध के बेतरह पेचोताब खाने लगा। उसे उस अनूठी तलवार तथा अपने ऐयारी के बटुए के चले जाने का बड़ा ही सदमा हुआ क्योंकि उसमें उसकी तरह तरह की अनूठी चीजें भरी हुई थीं। खास करके नागर की चीठियों का जाना उसने अपने हक में बहुत ही बुरा सगुन समझा अस्तु उसने इस बात का निश्चय कर लिया कि यदि मेरा यह दुश्मन किसी तरह मेरे हाथ लगेगा तो उसे बिना जान से मारे कदापि न छोड़ूगा। यद्यपि उसे इस बात का निश्चय न था कि उसका सताने वाला चन्द्रशेखर कौन है तथापि देर तक सोचने के बाद उसने यही निश्चय किया कि उसके उन बिगड़ैल शागिर्दों ही में से वह कोई है जिन्हें उसने बहुत ही बेइज्जत किया था।

गुस्से में भरा और होठों को चबाता हुआ भूतनाथ वहाँ से उठा और जंगल हो जङ्गल लोगों की नजरों से अपने को बचाता हुआ अपने अड्डे की तरफ रवाना हुआ और वहाँ पहुँच कर फिर से उसने अपना सामान दुरुस्त किया।

उन शागिर्दों के निकल जाने पर भी भूतनाथ के पास कई शागिर्द हैं जो दिलोजान से भूतनाथ का काम करते हैं और हर तरह से उसका साथ देने के लिए तैयार रहते हैं परन्तु उनके विषय में भी भूतनाथ को खुटका बना ही रहता है और इस बात का बराबर डर रहता है कि कहीं उसके बागी शागिर्द लोग उन नेक शागिर्दों को भी भड़का कर बे दिल न कर दें। इस ख्याल से वह अपने खैरख्वाह शागिर्दों के साथ बहुत ही नेकी और मेहरबानी का बर्ताव करता है और अपने को उन पर ऐसा नेक साबित करता है कि जिससे उनको इस बात का विश्वास न हो कि भूतनाथ ने अपने अमुक अमुक शागिर्दों के साथ वास्तव में बुरा बर्ताव किया होगा।

भूतनाथ के बागी शागिर्दों ने उसे बड़ा ही तङ्ग किया और कई मर्तबे उसकी बेतरह बेइज्जती की जिससे वह एक दम घबरा गया और अपने बचाव की फिक्र करने लगा मगर उन शागिर्दों से वह अपने को किसी तरह छिपा नहीं सकता था और वे लोग बार बार उसके पास धमकी की चीठियाँ भेजा करते थे और अपने नाम की जगह 'सर्वगुणसम्पन्न चांचला सेठ' इत्यादि लिखा करते थे।

तीसरे हिस्से के दूसरे बयान में जैसा कि हम लिख आये हैं कि नागर के मकान में भूतनाथ के सामने बाबू साहब ने चन्द्रशेखर का हाल बयान करके कहा था कि "मैंने उसे बरना के किनारे देखा था, उसके साथ विमला थी और प्रभाकरसिंह भी थे।' असल में बाबू साहब ने वह बात झूठ नहीं कही थी। प्रभाकरसिंह तथा कला और विमला का रूप उन्हीं शागिर्दों ने धरा था और बाबूसाहब तथा नागर से मुलाकात करके भूतनाथ को धोखा दिया चाहते थे।

कुछ ही दिन बाद भूतनाथ के बागी शागिर्दों ने भूतनाथ के साले बाबू साहब को भी अपनी मण्डली में मिला लिया, इस खयाल से कि वह अपनी बहिन रामदेई से मिला जुला करता है अतएव उसके जरिये से बहुत कुछ हाल चाल मिला करेगा। इसके अतिरिक्त खुद बाबू साहब भी भूतनाथ से रञ्ज रहा करते थे क्योंकि उनका नाता भूतनाथ से धर्मविरुद्ध होने से लज्जा का कारण था। यह थोड़ा सा संक्षेप हाल हमने केवल सिलसिला मिला देने के लिए लिख दिया आगे चल कर मौके मौके से हमारे पाठकों को इस बात का पता लगता रहेगा कि अपने बागी शागिर्दों की बदौलत भूतनाथ को कैसी कैसी तकलीफें उठानी पड़ीं।

सातवां बयान

जमानियां में दारोगा साहब का मकान कैसा है इसका कुछ हाल हमारे पाठकों को मालूम हो चुका है। जमना सरस्वती और इन्दुमति उस मकान की हवा खा चुकी हैं और भैयाराजा को भी दारोगा उस मकान का मजा चखा चुका है। इस समय पुनः हम अपने पाठकों को उस मकान में ले चल कर दिखाते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है।

हाथ में छोटी सी लालटेन और तालियों का एक बड़ा सा गुच्छा लिये हुए आधी रात के समय हम एक आदमी को उस मकान में घूमते हुए देखते हैं।

इस आदमी का तमाम बदन स्याह कपड़े से छिपा हुआ है और इसके चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई है। तालियों के गुच्छे में से वह तालियाँ लगा लगा कर कोठड़ियाँ खोलता और देखता है कि उसके अन्दर क्या है और फिर बन्द कर देता है। इसी तरह पर घूम फिर कर कोठड़ियाँ खोलता और देखता हुआ वह आदमी एक ऐसी कोटड़ी के दर्वाजे पर पहुँचा जिसके आगे मिट्टी का एक टूटा हुआ घड़ा और कुछ सूखी रोटियाँ पड़ी हुई थीं तथा मामूली ताले के अलावे एक और भी मोटी जञ्जीर लगी हुई थी और उसमें बहुत बड़ा ताला बन्द था।

उस आदमी ने उस ताले मिट्टी के घड़े और सूखी रोटियों को बड़े गौर से देखा और कुछ सोचता हुआ पहिले की तरह उसी ताली के गुच्छे में से एक ताली चुन कर उस कोठड़ी का भी ताला खोला मगर उस बड़े ताले की ताली उस गुच्छे में न दिखाई दी जो जञ्जीर में लगा हुआ था और न दूसरे तालों की तरह उस ताले पर कोई नम्बर या निशान लगा हुआ पाया।

कुछ क्षण चिन्ता करने के बाद उस आदमी ने धीरे से यह कह कर कि 'जरूर इसी में है।' लालटेन जमीन पर रख दी और ऐयारी का बटुआ खोल कर उसमें से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का अर्क भरा हुआ था। इस अर्क से नकाबपोश ने ताले वाली जंजीर का मध्य भाग अच्छी तरह तर किया और खड़े रह कर इस बात का इन्तजार करने लगा कि जंजीर दो टुकड़े हो जाय तो कोठड़ी के अन्दर कदम रक्खे।

आधी घड़ी के अन्दर ही जंजीर का लोहा उस जगह से जहाँ अर्क लगाया गया था गल कर बह गया और एक हलकी आवाज देती हुई वह जंजीर बीच में से दो टुकड़े हो कर जुदा हो गई। नकाबपोश ने लालटेन उठा ली और धीरे से दर्वाजा खोल कर कोठरी के अन्दर कदम रक्खा।

भीतर से यह कमरा बहुत बड़ा और कई बादकश * बने रहने के कारण हवादार था, अन्धकार तो मानों उसके हिस्से ही पड़ा था यद्यपि इस समय वह नकाबपोश लालटेन लिये हुए उस कमरे के अन्दर चला गया है परन्तु उस लालटेन की

* जिस नल की राह से धूँआ बाहर निकल जाता है अथवा हवा मकरे के अन्दर आती और पुनः बाहर निकल जाती है उसे बादकश कहते हैं।

रोशनी उस बड़े कमरे के अन्धकार को किसी तरह भी दूर नहीं कर सकती। तथापि नकाबपोश ने इतना जरूर देखा कि एक आदमी जमीन पर बैठा हुआ उसी नकाबपोश अथवा दर्वाजे की तरफ देख रहा है क्योंकि नकाबपोश के अन्दर जाने के पहिले ही उस बदनसीब कैदी को दर्वाजा खुलने की आहट मिल चुकी थी और इसी सबब से वह चैतन्य हो चुका था।

कैदी०। (नकाबपोश से) क्या अभी कोई और बद खबर सुनना बाकी है? मैं समझता हूँ कि अब तुम्हें ज्यादे दिनों तक मुझे सताने की जरूरत न पड़ेगी क्योंकि इस कैद की बदौलत अब मेरा शरीर चलता नजर नहीं आता। आज तुम नकाब पहिरे चारों की तरह आये हो इसमें कोई भेद जरूर है।

नकाबपोश०। मैं कोई बद खबर सुनाने के लिये नहीं आया हूँ बल्कि खुश-खबरी सुनाने के लिये आया हूँ। अब यह कैदखाना तुम्हारी जान का ग्राहक नहीं बन सकता। मैं वह नहीं हूँ जिसने तुम्हें इस मकान में कैद कर रक्खा है।

कैदी०। अर्थात् जमानिया राज्य के कर्ता धर्ता दारोगा साहब!

नकाबपोश०। जी हाँ, मैं वह दारोगा नहीं हूँ।

कैदी०। तब आप कौन हैं? क्या अपना नाम बता सकते हैं?

नकाबपोश०। जी हाँ, अगर आपका नाम वास्तव में दयाराम है तो मैं अपना नाम बता सकता हूँ।

कैदी०। निःसन्देह मेरा नाम दयाराम है।

नकाब०। मुझे क्यों कर विश्वास हो कि यही आपका नाम है?

कैदी०।आपका नाम मुझे मालूम हो तो मैं कोई परिचय का शब्द कह सकता हूँ क्योंकि उस शब्द को मेरे दोस्त ही समझ सकते हैं।

नकाब०। ठीक है, अच्छा अगर मेरा नाम इन्द्रदेव हो तो आप कौन शब्द परिचय का दे सकते हैं?

कैदी०। अगर आप वास्तव में इन्द्रदेव होंगे तो परिचय ले कर मैं "भुवन-मोहनी" की बातें आपको सुना दूँगा।

नकाब०। तब तो "कामेश्वर" का कहना बहुत सच होगा।

यद्यपि वह कैदी बहुत ही कमजोर और दुबला हो रहा था परन्तु नकाबपोश अर्थात् इन्द्रदेव की आखिरी बात सुन कर वह बैठा न रह सका, उठ खड़ा हुआ

और दौड़ कर इन्द्रदेव के साथ चिपट गया और इन्द्रदेव ने भी प्यार से उसे गले लगा लिया और देर तक न छोड़ा। जब दोनों अलग हुए तो यों बातचीत होने लगी :—

दया०। चाचा! * तुम तो मुझे एक दम भूल गये! ताज्जुब की बात है कि इतने दिनों तक तुमने मुझे याद क्यों नहीं किया!!

इन्द्र०। मेरे प्यारे भतीजे! मेरे दिल से तुम्हारी याद कभी भूल नहीं सकती, इसकी गवाही खुद तुम्हारा दिल दे सकता है मगर अफसोस! हमलोगों को इस बात का गुमान भी नहीं था कि तुम अभी तक जीते जागते हो। दुनिया को यही मालूम था कि दयाराम मारे गये और हम लोग दस पाँच आदमियों को यही निश्चय था कि खुद भूतनाथ के हाथ से तुम्हारी जान गई है क्योंकि यह मामला मेरे दोस्त दलीशाह के सामने ही हुआ था अर्थात् मेरे शागिर्द ने राजसिंह के घर तुम्हारा पता लगाया था और मैंने अपने शागिर्द शम्भू के साथ दलीपशाह को राजसिंह के घर भेजा था। दलीपशाह वहाँ पहुँचा और राजसिंह को गिरफ्तार करके तथा तुमको उसके कैद से छुड़ा कर अपने यहाँ ले आया। अब मालूम हुआ है कि दलीपशाह तुमको नहीं बल्कि राजसिंह के भतीजे को जो बहुत दिनों से बीमार था दयाराम समझ के उठा लाया था। यकायक भूतनाथ पता लगाता हुआ वहाँ पहुँच गया जहाँ दलीपशाह राजसिंह को और उसके भतीजे को दयाराम समझ कर ले गया था। राजसिंह को वहाँ देख कर भूतनाथ को विश्वास हो गया कि दलीपशाह राजसिंह के साथ मिला हुआ है अस्तु भूतनाथ और दलीपशाह में लड़ाई हो गई, भूतनाथ ने राजसिंह को मार डाला और उसके भतीजे को भी मार डाला। तब दलीपशाह ने भूतनाथ से कहा कि 'हम इन्द्रदेव के कहने से दयाराम की खोज में निकले थे और पता लगा कर दयाराम की खोज में निकले थे और पता लगा कर दयाराम को तथा उनके दुश्मन राजसिंह को यहाँ ले आये थे, तुमने राजसिंह को मार डाला सो तो अच्छा नहीं किया मगर अफसोस की बात यह है कि दयाराम को भी अपने हाथ से स्वर्ग पहुँचा दिया। दलीपशाह को विश्वास ही था कि यही दयाराम हैं परन्तु भूतनाथ को भी दलीपशाह के

* इन्द्रदेव को दयाराम चाचा के समान मानते थे और चाचा ही कह कर पुकारते थे।

कहने से तथा वहाँ की कई बातों से विश्वास हो गया कि यही दयाराम हैं और वास्तव में उसने उन्हें धोखे में मार डाला है। उसी दिन से हमलोग यही विश्वास करते चले आये कि वास्तव में दयाराम भूतनाथ के हाथ से मारे गये। यद्यपि यह घटना भूतनाथ के लिये बहुत ही दुःखदाई हुई परन्तु लोगों में प्रसिद्ध होने न पाई क्योंकि शम्भू दलीपशाह और मैं सिर्फ तीन आदमी इस बात को जानते थे सो भूतनाथ के माफी मांगने तथा आजिजी करने पर और यह समझ कर कि वास्तव में भूतनाथ बेकसूर है चुप हो रहे और इस भेद को प्रगट होने न दिया, सिर्फ मन ही मन रोते और अफसोस करते रहे। बातें बहुत लम्बी चौड़ी हैं मगर यह मकान तथा कैदखाना इस योग्य नहीं है कि हमलोग यहाँ बेफिक्री के साथ बातें करें। असल यह है कि हम लोगों को स्वप्न में भी इस बात का गुमान नहीं था कि तुम्हें इस कैदखाने में एक दिन भालू की सूरत में देखेंगे, कैद की सख्ती उठाने से और बालों के बढ़ जाने से वास्तव में तुम्हारी ऐसी ही सूरत हो रही है।

दया०। आपका कहना बहुत ठीक है। यह कैदखाना निश्चिन्ती से बातें करने लायक नहीं है और मुझे भी उन घटनाओं के सुनने की जल्दी नहीं है जो मेरे पीछे हुई हैं और न अपनी रामकहानी सुनाने की जल्दी है, हाँ इतना जरूर पूछूंगा कि मेरे चाचा रणधीसिंह और दोनों स्त्रियों का क्या हाल है?

इन्द्रदेव०। वे दोनों कुशल से हैं। यद्यपि तुम्हारी दोनों स्त्रियाँ अभी तक मेरे मकान में मौजूद हैं परन्तु दुनियाँ में यही मशहूर है कि वे दोनों मर गईं, इस बात के मशहूर करने का कारण मैं ही हूँ क्योंकि तुम्हारी स्त्रियों को भूतनाथ से बदला लेने का शौक पैदा हुआ और उनकी जिद्द मुझे माननी पड़ी। मैंने खयाल किया कि यदि भूतनाथ को यह बात मालूम हो जायगी कि वे दोनों मुझसे बदला लिया चाहती हैं तो वह जरूर इन दोनों को मार डालेगा अस्तु पहिले ही से इन दोनों को मरा हुआ मशहूर कर देना उचित है। यह सब कुछ हुआ परन्तु मेरी इच्छानुसार वे दोनों बहुत दिनों तक अपने को छिपा न सकीं भूतनाथ को उनका जीते रहना मालूम हो गया और वह अभी तक उन दोनों को मारने की फिक्र में लगा हुआ है। इस विषय में भी बड़ी बड़ी अनूठी घटनाएँ हो गई हैं। जिन्हें सुन कर तुम आश्चर्य करोगे परन्तु यह मौका ठीक नहीं है।

अब हम एक नजर इस कमरे को अच्छी तरह देखने के बाद तुम्हें साथ लेकर बाहर निकलना चाहते हैं।

दया०। हाँ देखिये कैसा भयानक कैदखाना है! यहाँ का रहने वाला चाहे कितना ही चिल्लाये मगर उसकी आवज किसी के कान में भी नहीं पहुँच सकती। यह देखिये यही दोनों कम्बल मेरी किस्मत में सौंपे गये हैं। यह मिट्टी का घड़ा है जो चौथे या पाँचवें दिन भरा जाता है मगर इधर आठ दिन से इसमें पानी नहीं डाला गया है। शायद अब इसमें एक या दो गिलास से ज्यादा पानी न हो देखिये यह मेरे भोजन की टोकरी है, जब इस घड़े में पानी डाला जाता है तभी इस टोकरे में पूरियाँ और कुछ तरकारी तथा नमक मिच रखने का दिन होता है। महीने में एक दफे नहाने के लिये जल मिलता है, यह कोने में मिट्टी का ढेर लगा दिया गया है बस इसी को बदन में मल कर मैं मानों भस्म स्नान करता हूँ और यों ही सन्ध्या भी कर लिया करता हूँ। यह इधर पायखाना बना हुआ है, पायखाना काहे को खासा कूँआ है, वह भी इतना गहरा है कि मिट्टी का ढोंका फेंकने से आवाज नहीं आती। यह टूटी हुई चारपाई पड़ी है, पहिले मैं इसी पर सोता था मगर जब से यह टूट गई तब से जमीन को ही मखमली फर्श समझता हूँ।

इन्द्र०। मकान की हालत को मैं खूब जानता हूँ सिर्फ तुम्हारा सामान देखना था। (आँखों से आँसू पोंछ कर) हा दैव! हम लोगों ने कौन सा ऐसा पाप किया था जिसका फल इस तरह भोग रहे हैं? मनुष्य को उसके ही कर्मों का फल देना तेरा काम है या अपनी तरफ से भी दया करके कुछ देना जानता है? खैर, मैं तुझसे कुछ भी नहीं चाहता परन्तु तेरा भरोसा जरूर रखता हूँ।

दया०। चाचा! इसके लिये हम ईश्वर को किसी तरह का दोष देना पसन्द नहीं करते, उसका तो यह काम ही है कि लोगों को उनके कर्मों का फल भुगवाया करे, उसमें ज्यादे या कम करने से वह बेइन्साफ कहा जायगा। अगर वह कर्म्म के अतिरिक्त एक के साथ भी कुछ उपकार करेगा तो औरों को भी उपकार कराने का हक हो जायगा क्योंकि उसकी निगाह में उसके सभी बच्चे एक समान हैं इस लिये हम लोगों को एक तौर पर यही समझ रखना चाहिये कि हमारा

कर्म्म ही हमार ईश्वर है अतएव कर्म्म और उद्योग में लगे रहना ही अपना धर्म है फल चाहे जो हो।

इतने ही में बाहर की तरफ से कुछ खटके की आवज आई और दोनों ध्यान लगा कर दर्वाजे की तरफ देखने लगे।

दया०। शायद दारोगा आ पहुँचा।

इन्द्र०। नहीं, वह तो हमारी कैद में हैं मगर उसे यह नहीं मालूम कि मुझे इन्द्रदेव ने कैद कर रक्खा है, हाँ भूतनाथ हो तो ताज्जुब नहीं क्योंकि उसे भी तुम्हारे जीते रहने और यहाँ कैद भोगने की खबर लग चुकी है। साथ ही इसके जिस तरह मैं इस मकान के रग रग से बाकिफ हूँ उसी तरह या अगर उतना नहीं तो उसी के करीब भूतनाथ भी जानकार है मगर इतना जरूर है कि मैं दारोगा के सन्दूक में से तालियों का गुच्छा लेता आया हूँ जिससे सभी दर्वाजे खोल सकता हूँ मगर भूतनाथ के पास तालियाँ न होंगी।

दया०। ऐसी अवस्था में यहाँ से शीघ्र निकलना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि वह बाहर से इस कोठड़ी का दर्वाजा बन्द कर दे।

इन्द्र०। ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि दर्वाजे में जड़े हुए ताले की ताली मेरे पास है और जञ्जीर को अभी मैं काटता हुआ आया हूँ तथापि अब चलने में विलम्ब न करना चाहिये। मैं तुम्हारे ओढ़ने के लिये एक अबा और चेहरे पर लगाने के लिये नकाब लेता आया हूँ

इतना कह कर इन्द्रदेव ने जेब में से एक नकाब निकाल कर दयाराम को दी और अपने ऊपर से स्याह अबा उतार कर उन्हें उढ़ा दिया क्योंकि वह दो अबा ओढ़े हुए थे इसके बाद वे दोनों उस कैदखाने के बाहर चले। उसी समय बाहर से पुनः खटके की आवज आई मानो किसी ने जोर से धक्का देकर किवाड़ का पल्ला खोला हो।

दयाराम को साथ लिये हुए इन्द्रदेव उस कैदखाने के बाहर हुए और जिस राह से दरवाजा खोलते हुए आये थे उसी राह से कोठड़ियों को पार करते और ताला बन्द करते रवाना हुए क्योंकि जो ताले उन्होंने खोले थे वे अभी तक खुले ही रह गये थे।

इन्द्रदेव और दयाराम ने सिर्फ चार या पाँच कोठड़ियाँ पार की होंगी कि

सामने से एक आदमी स्याह अबा ओढ़े स्याह नकाब लगाये तथा खंजर और रोशनी हाथ में लिये आता दिखाई दिया। वास्तव में यह भूतनाथ ही था। इन्द्रदेव पर निगाह पड़ते ही भूतनाथ ने कहा, "मैं समझता हूँ कि आप दारोगा साहब ही होंगे क्योंकि सिवाय आपके किसी दूसरे का इस मकान में आना और इन तालों को खोलना बड़ा ही दुर्घट है।"

इन्द्र०। (कई दफे खाँस कर भारी आवाज से) आओ भूतनाथ, कहो अच्छे तो हो? वास्तव में मैं तुम्हारा दोस्त और खैरखाह दारोगा ही हूँ। सर्दी और खाँसी से तबीयत परेशान हो रही है। यह बड़े ही ताज्जुब की बात मैं देख रहा हूँ कि तुम मामूल के खिलाफ चोरों की तरह छिपे छिपे मेरे इस गुप्त स्थान में आधी रात के समय घूम रहे हो।

भूत०। बेशक आपके लिये यह ताज्जुब की और मेरी आदत के खयाल से नई बात है परन्तु मेरे पास इसका काफी जवाब है जिसके सुनने से सन्तोष हो जाने के साथ ही साथ आपका आश्चर्य भी जाता रहेगा मगर मैं यह निश्चय कर लेने के बाद जवाब दूँगा कि आप वास्तव में दारोगा साहब ही तो हैं। क्या आप अपने चेहरे पर से नकाब नहीं हटा सकते?

इन्द्र०। (अपने चेहरे से नकाब हटा कर)

किस बात का पर्दा है, लो मैं चेहरा दिखा देता हूँ।

दारोगा को कैद करने के बाद दारोगा ही की सूरत बन कर इन्द्रदेव इस मकान में आये और दो दिन तक रहे थे। नौकरों को इस बात का गुमान भी नहीं हुआ था इसलिये उन लोगों ने वैसी ही खिदमत इन्द्रदेव की भी की थी जैसी दारोगा की करते थे। इसीलिये इस समय भी वे उचित समझ कर दारोगा ही की सूरत में थे सिर्फ नकाब चेहरे पर डाले हुए थे अस्तु भूतनाथ को चेहरा देखते ही विश्वास हो गया कि यह वास्तव में दारोगा हैं मगर दयाराम को कुछ आश्चर्य जरूर हुआ परन्तु परिचय का शब्द इन्द्रदेव के मुँह से सुन चुके थे इसलिये उनका दिल मजबूत बना रहा।

भूत०। (चेहरा देखने के बाद) हाँ, अब मुझे विश्वास हो गया कि आप दारोगा साहब ही हैं अस्तु अब मैं अपने इस तरह यहाँ आने का सबब बताता हूँ मगर एक बात और पूछने की है।

इन्द्र० । वह क्या ?

भूत० । (दयाराम की तरफ इशारा करके) यह आपके साथ कौन है ?

इन्द्र० । हमारा ही विश्वासी आदमी है, इसे जरूरत समझ कर साथ लेता आया था ।

भूत० । अच्छा तो अब मैं अपने आने का कारण आपसे कहता हूँ सुनिये । मैं आप ही के पास आया था मगर आप से मुलाकात न होने के कारण इस तरह छिप कर अपना काम करने की नीयत से आया हूँ मुझे इस बात का ठीक पता लग चुका है कि मेरे दोस्त दयारामजी आपके यहाँ कैद हैं ।

इन्द्र० । (हँस कर) तुम्हारे मुँह से यह बात सुन कर मुझे आश्चर्य होता है ! क्योंकि तुमने खुद अपने हाथ से दयाराम की जान ली है !!

भूत० । यह आपको किसने कह दिया ?

इन्द्र० । जमाने की जानकारी ने । भला यह तो बताओ कि जमना और सरस्वती ने क्यों तुम्हारा पीछा किया हुआ हैं और तुमने उन्हें मारने के लिए कौन-सी कार्रवाई उठा रक्खी है ?

भूत० । (चिढ़ कर) आपको इन सब बातों को कहने का कोई हक नहीं है और न मुझे जवाब देने की कोई जरूरत है । जब इस बात का निश्चय हो ही चुका कि दयाराम आपके कब्जे में हैं तब मेरे ऊपर उनके मारने का इल्जाम नहीं लग सकता ।

इन्द्र० । खैर तो मैं सीधी ही बातों में जवाब देता हूँ कि दयाराम मेरे यहाँ नहीं हैं और न मुझे उनके बारे में कुछ खबर ही है ।

भूत० । आपका यह कहना बिल्कुल ही झूठ है । मुझे जो कुछ खबर लग चुकी है उसमें किसी तरह की भूल नहीं हो सकती ।

इन्द्र० । मानने न मानने का तुम्हें अख्तियार है असल बात जो कुछ थी वह मैंने कह दी । हां अगर तुम्हारा कहना ठीक है और वास्तव में दयाराम जीते हैं तो इस खबर से मैं बहुत ही खुश हूँ, ईश्वर करे की उनका पता लग जाय और कुशलपूर्वक वे अपने दोस्तों में हँसते खेलते दिखाई दें मगर फिर भी मुझे इस बात का डर लगा ही रहेगा कि कहीं वे पुनः तुम्हारे पञ्जे में न फँस जायँ और इतने दिन की तकलीफ उठा कर अन्त में वे तुम्हारे हाथ से मारे न जायँ ।

भूत० । (चिढ़ कर) आप आवाजा कसने से बाज नहीं आते और खानखाह मुझे बेईमान बना कर क्रोधित करते हैं ।

इन्द्र० । तुम्हारे बेईमान होने में शक ही क्या है ? दूसरे की बात तो दूर रहे तुमने खास अपने उन शागिर्दों के साथ जो हर वक्त तुम्हारे लिए अपनी जान हथेली पर लिये रहते थे ऐसा बुरा बर्ताव किया है कि नालायक और बेईमान आदमी भी नहीं करेगा । वे लोग भी तुम्हें ऐसा मजा चखावेंगे कि जन्म भर याद करोगे । मेरे पास वे लोग मदद मांगने के लिये आये थे मगर तुम्हारे मुलाहिजे से हम अभी तक उन्हें टालते जाते हैं ।

यद्यपि नकली दारोगा यानी इन्द्रदेव की बातों से भूतनाथ को बेहिसाब क्रोध चढ़ आया परन्तु अपने शागिर्दों की खबर सुन कर और बिगड़ने का मौका न जान कर वह अपने गुस्से को पी गया और नरमी के साथ बोला :—

भूत० । नहीं नहीं मेरे दोस्त ! आपने जो कुछ सुना है या मेरे शागिर्दों ने जो कुछ खबर आपको दी वह बिल्कुल गलत है । वास्तव में वे सब बड़े ही बेईमान और कमीने हैं । आपने बहुत ही अच्छा किया कि उनकी मदद नहीं की और मुफ्त में मुझसे दुश्मनी नहीं खरीदी । मुझ पर आपका बड़ा ही अहसान होगा यदि आप मुझे उन नालायकों का पता बता देवें ।

इन्द्र० । तुम्हारे कहने के पहिले ही मैं यह सोच रहा था कि इस मामले की तुम्हें खबर दूँ और इसीलिए उनसे टालबटाल करता चला आ रहा हूँ मगर इधर बहुत दिनों से तुमसे मुलाकात ही नहीं हुई और न तुम्हारा पता ही लगा ।

भूत० । खैर इस समय तो मैं मौजूद हूँ ।

इन्द्र० । ठीक है पर इस समय मैं अपने काम में लगा हुआ हूँ और विशेष बातचीत नहीं कर सकता, हाँ अगर कल तुम मुझसे मिलो तो बेशक मैं उनका सब हाल तुमसे कहूँगा मगर मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है कि तुम मेरे मकान में इस तरह चोरों की तरह घुस कर मानों मेरी बेइज्जती करते हो !!

भूत० । इसके लिए मैं आपसे माफी माँगता हूँ । मैं तो केवल आपसे मिलने की नीयत करके यहाँ आया था ।

इन्द्र० । खैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब बाहर चलो मैं कल तुम से बातें करूँगा ।

भूतनाथ ने बहुत कुछ पेचोताब खाया मगर अपने बिगड़ैल शागिर्दों का खयाल करके चुप हो रहा क्योंकि उसे अपने शागिर्दों का बड़ा ही डर लगा हुआ था और समझता था कि यदि वे लोग पकड़े न जायँगे तो मेरी जान किसी तरह बचने न पावेगी इससे उचित यही है कि दारोगा साहब से पहिले उन शागिर्दों का पता लगा लिया जाय और तब दयाराम के बारे में बीतचीत की जाय। इन्हीं सब बातों को सोच कर वह इस समय तरह दे गया और अपने कसूर की माफी माँग कर इन्द्रदेव क साथ ही साथ इस मकान के बाहर निकला।

भूतनाथ ने इन्द्रदेव से बिदा माँग कर जंगल और मैदान का रास्ता लिया तथा दयाराम को साथ लिए इन्द्रदेव पहिले हुए उस कमरे में गये जहाँ दारोगा साहब रात के समय रहा करते थे। वहाँ उन्होंने एक लोहे की आलमारी खोल और उसमें वह तालियों का झब्बा जिससे ऊपर वाले कमरे खोले थे रख कर दयाराम को साथ लिए हुए मकान के बाहर चले गये। पहरे वालों ने मामूली ढंग पर उन्हें दारोगा समझ कर रोक टोक न की और चुपचाप अपने काम पर जहाँ के तहां मुस्तैद खड़े रहे।

कदम बढ़ाते हुए तेजी के साथ दोनों आदमी शहर के बाहर निकल गये और एक तालाब के पास पहुँचे जहां इन्द्रदेव की आज्ञानुसार उनके आदमी दो घोड़े और एक रथ लिए तैयार थे। इन्द्रदेव ने दयाराम से पूछा, "कहिये आप इस समय घोड़े पर सवार हो सकते हैं या नहीं?"

दया०। आपकी आज्ञा हो तो मैं सवार हो जाऊँ परन्तु मैं कमजोर बहुत हो रहा हूँ शायद.....

इन्द्र०। तो तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं, रथ तैयार ही है, इस पर हमलोग बखूबी सफर कर सकेंगे, हां यदि आप कुछ भोजन करना चाहें तो इसी रथ पर सामग्री तैयार है और तालाब का जल भी बहुत स्वच्छ है।

दया०। अब तो मैं आपकी कृपा से स्वतन्त्र हो गया हूँ ऐसी अवस्था में बिना स्नान और सन्ध्योपासन से निवृत्त हुए तथा ईश्वर को धन्यवाद दिये मैं भोजन नहीं कर सकता, हां यदि आपकी आज्ञा हो तो यहां इन कामों से मैं निवृत्त हो सकता हूँ, परन्तु कपड़ों का अभाव.....

इन्द्र० । (बात काट कर) नहीं नहीं कपड़ों का अभाव क्यों है ? इस समय का मुझे ध्यान था अस्तु मेरी आज्ञानुसार कपड़े भी इस रथ में जरूर आये होंगे ।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने कपड़ों की निस्बत अपने आदमी से दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि भोजन की सामग्री के साथ ही साथ कपड़े भी मामूली तौर पर आये हुए हैं । रात नाममात्र को बाकी थी, पूरब तरफ आसमान पर सुफेदी झलक मारने लग गई थी, अस्तु इन्द्रदेव और दयाराम दोनों ही नहाने धोने की फिक्र में लगे और घन्टे भर के अन्दर ही सब काम से छुट्टी पा रथ पर सवार हो पश्चिम की तरफ रवाना हो गये ।

आठवां बयान

दिन को दोपहर के समय हम इन्द्रदेव को एक घने जङ्गल में बहते हुए नाले के किनारे गुंजान पेड़ के नीचे बैठे देखते हैं । पास में उनका एक शागिर्द खड़ा है और सामने जमीन पर बेहोश दारोगा लिटाया हुआ है । नाले के जल से कपड़ा गीला कर के इन्द्रदेव दारोगा के सर पर बार बार रखते और बीच बीच में लखलखा भी सुँघाते हैं । कुछ देर में दारोगा ने आँखें खोलीं और अपने चारो तरफ घबड़ा कर देखने लगा । इन्द्रदेव पर ताज्जुब के साथ निगाह डाली तथा जब उसके होश हवास अच्छी तरह दुरुस्त हो गये तब वह उठ बैठा और इन्द्रदेव से उसने पूछा, "यह क्या मामला है ? हम और तुम यहाँ पुनः क्योंकर इकट्ठे हुए ?"

इन्द्र० । (अपने शागिर्द की तरफ इशारा करके) मेरे इस शागिर्द ने आज हम दोनों ही को दुश्मन के पंजे से छुड़ाया है । कम्बख्त दुश्मन ने हम दोनों को कैद तो कर ही लिया था परन्तु एक साथ रक्खा भी नहीं । अगर महलोग एक साथ रहते तो कुछ तो दिल बहलता ! मेरे इस शागिर्द ने हकीकत में बड़ी होशियारी और चालाकी का काम किया कि इतना जल्द हम लोगों का पता लगा लिया और छुड़ा भी लिया ।

दारोगा० । ईश्वर ने हम लोगों की जान बचाई नहीं तो मैं एकदम नाउम्मीद हो गया था, बचने की कुछ भी आशा न थी । खैर वह था कौन जिसने हम लोगों के साथ ऐसा बुरा बर्ताव किया ?

इन्द्र० । इस बात का तो निश्चय अभी तक नहीं हुआ है मगर दो चार दिन में छिपा भी न रहेगा ।

दारोगा० । उसका नाम जरूर मालूम होना चाहिये जिसमें आइन्दे उससे होशियार रहा जाय । मैं उस कम्बख्त से जरूर बदला लूंगा । तुम्हारे साथ रहने के कारण मैं इस तरह धोखे में आ गया नहीं तो यकायक धोखा खाने वाला नहीं हूँ ।

इन्द्र० । उसका पता लगाने के लिये पूरा उद्योग किया जायगा, आप खूब जानते हैं कि मैं भी कभी किसी के साथ बुराई नहीं करता तिस पर न मालूम क्यों मेरे साथ ऐसा बुरा बर्ताव किया गया । हाँ आपने अपने लिये बहुत से दुश्मन बना रक्खे हैं और जहाँ तक मैं समझता हूँ आप ही के सम्बन्ध से मुझे भी यह दुःख भोगना पड़ा ! इस बीमारी की हालत में ईश्वर ही ने मेरी रक्षा की नहीं तो मेरी कैद की अवस्था में बीमारी का बढ़ जाना कोई आश्चर्य की बात न थी सो इसके बदले मैं बराबर तन्दुरुस्त ही होता गया । शायद इसका कारण यह हो कि मैंने तीन दिन तक सिवाय जल पीने के कुछ भी भोजन नहीं किया क्योंकि जो कुछ भोजन की सामग्री मिली वह मुझ बीमार के खाने योग्य न थी । मैं आपको फिर भी यही कहता हूँ, कि आप अपनी चालचलन को बदल दीजिये । इस छोटी सी जिन्दगी में पापों का ढेर लगाते जाना और दिनों दिन दुश्मनों की गिनती बढ़ाते रहना आप ऐसे गृहस्थी शून्य पुरुष को अच्छा नहीं लगता । कौन आपके आगे बालबच्चों का बाजार लगा हुआ है कि जिनके लिये आप इतना अर्थप्रिय हो रहे हैं ताज्जुब नहीं कि इसके लिये आपको एक दिन हद्द दर्जे की तकलीफ उठानी पड़े ।

दारोगा० । तुम हमेशे ही मुझको इस तरह की नसीहतें किया करते हो मगर मैं अपने खयाल से कोई भी बुरा काम नहीं करता हूँ, हाँ मेरे साथ जो कोई दुश्मनी का बर्ताव करता है उसको मैं जवाब देने के लिये जरूर तैयार हूँ ।

इन्द्र० । खैर मैं आप से बहस करना पसन्द नहीं करता, जो कुछ आप करते हैं वह मुझसे छिपा हुआ नहीं है ।

दारोगा ० । अच्छा जो होगा देखा जायगा, यह समय इस तरह की बात-

चीत का नहीं है, आप यह बताइये कि हम लोगों का पता आपके शागिर्द को क्योंकर लगा और किस मकान से इसने हम लोगों को छुड़ाया ?

इन्द्र०। पता क्योंकर लगा इसकी कथा तो बहुत लम्बी चौड़ी है' ऐयार लोग जिस तरह पता लगाते हैं वह ढंग आपसे छिपा हुआ भी नहीं है, हाँ इतना कहना बहुत जरूरी है कि जमानिया में जो "हर मन्दिर" के समीप पुरानी टूटी फूटी इमारत है उसी के एक तहखाने में पास ही पास हम लोग कैद किये गये थे।

पुरानी इमारत का नाम सुन कर दारोगा थोड़ी देर के लिये गौर में पड़ गया और बहुत कुछ सोचने विचारने के बाद इन्द्रदेव से बोला :—

दारोगा०। हाँ मैं कुछ कुछ समझ गया, आशा है कि बहुत जल्द अपने दुश्मनों का पता लगा लूँगा। अब कुछ सवारी का बन्दोबस्त करना चाहिये जिसमें हम घर पहुँच सकें।

इन्द्र०। आपके और मेरे लिये यहाँ पास ही में कसे कसाये दो घोड़े तैयार हैं।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने अपने शागिर्द की तरफ देखा और कुछ इशारा किया। शागिर्द चला गया और कुछ ही देर में दोनों घोड़े जिनके साथ साईस भी थे ले आया। कुछ और मामूली बातचीत करने के बाद एक घोड़े पर दारोगा सवार हुआ और साईस को साथ लिये हुए जमानिया की तरफ रवाना हुआ, उसके बाद इन्द्रदेव भी दूसरे घोड़े पर सवार हुए और अपने शागिर्द से बातचीत करते धीरे धीरे कैलासभवन की तरफ चल पड़े।

नौवां बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। दारोगा के मकान में हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, सिवाय पहरे वाले सिपाहियों और दो तीन खिदमतगारों के और कोई जागता हुआ दिखाई नहीं देता। दारोगा अपने एकान्त के कमरे में बैठा हुआ कुछ लिख रहा है। लिखते ही लिखते वह यकायक किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो जाता है और देर तक उसकी वही हालत बनी रहती है। कभी कभी वह घबड़ा कर उठ बैठता और कमरे में इधर उधर टहलने लगता है।

कभी अपने कलमदान में से बाहर की आई हुई चीठियाँ निकाल कर देखता और फिर उसी तरह रख कर पुनः लिखने लग जाता है। उसका चेहरा बिल्कुल ही उदास और चिन्तित जान पड़ता है। उसके सामने एक संगमर्मर की चौकी पर मोमी शमादान जल रहा है और छत में लटकती हुई चार पाँच बिल्लौरी कुण्डियों में भी मोमबत्ती की रोशनी हो रही है।

इसी तरह कभी लिखते, कभी पढ़ते और कभी टहलते हुए उसने दो घण्टे का समय बिता दिया और अन्त में पुनः अपनी गद्दी पर आ कर गावतकिये के सहारे लेट गया, उसी समय एक खिदमतगार ने हाजिर हो कर अर्ज किया कि 'गदाधरसिंह आये हैं।'

दारोगा सम्हल कर उठ बैठा और बोला, "भेज दो।" कुछ क्षण में भूतनाथ आ मौजूद हुआ। दारोगा ने बड़ी खातिरदारी से उसे अपने पास बैठाया और कुशल मङ्गल पूछा। दो चार मामूली प्रश्न और उत्तर के बाद इस तरह बातचीत होने लगी—

दारोगा०। कहिये इधर कोई नई घटना भी देखने सुनने में आई है या नहीं?

भूत०। हमारे और आपके लिये नई घटना की कमी नहीं है। जब से मैंने सुना है कि दयाराम जी आपके कैद में हैं तब से मुझे क्षण क्षण में नई घटना का अनुमान होता है। मैं नहीं कह सकता कि मेरे और आपके प्रारब्ध में क्या लिखा हुआ है।

दारोगा०। (आश्चर्य का ढंग दिखाता हुआ) दयाराम का मेरे कैद में होना कैसा?

भूत०। हाँ इस बात से रात को भी आपने इन्कार किया था मगर साथ ही इसके यह आपने वादा किया था कि अगर तुम कल मिलोगे तो तुम्हारे बिगड़ैल शागिर्दों का तुम्हें पता बता देंगे।

दारोगा०। (सच्चे आश्चर्य से) यह मैंने तुमसे कब वादा किया था?

भूत०। (चिढ़ कर कुछ क्रोध से) आखिर रात आपने मुझसे क्या क्या बातें की थीं?

दारोगा०। किस रात का तुम जिक्र कर रहे हो कुछ यह भी तो मालूम हो।

भूतनाथ० । मैं आज ही की बीती हुई रात का जिक्र कर रहा हूँ । क्या आप नशे में तो नहीं थे ? या इस समय नशे में तो नहीं हैं ?

दारोगा० । मैं तो नशे में नहीं हूँ मगर तुम्हारे बारे में ऐसा जरूर शक कर सकता हूँ । कई दिन के बाद आज शाम को तो मैं घर आया हूँ । यहाँ के सभी आदमी इस बात को जानते हैं बल्कि हमारे अड़ोस पड़ोस वालों से भी यह बात छिपी हुई नहीं है और तुम कहते हो कि कल रात को तुमसे मुलाकात हुई थी !!

भूत० । (कुछ गौर और चिन्ता के बाद) यह अजीब बात है. आपका कहना मैं झूठ नहीं मान सकता मगर यह भी आप सच समझिये कि कल मैं आपके यहाँ आया था और आपसे मुलाकात भी हुई थी अगर वास्तव में वह आप नहीं थे तो जरूर आपकी सूरत में कोई आपका दुश्मन होगा ।

दारोगा० । मुझे भी शक होता है कि मेरे बाद कोई मेरा दुश्मन इस मकान में जरूर आया था क्योंकि मैं अपने कई तरह के सामानों में रद्दबदल देखता हूँ । तुम्हारी जुबानी खुलासा हाल सुनूँगा तो शायद कुछ पता चलेगा ।

भूत० । सच्ची बात तो यह है कि कल मैं आपसे लड़ने या आपको उराहना देने के लिये यहाँ आया था क्योंकि इस बात की खबर लगी है कि दयाराम जी आपके यहाँ कैद हैं, परन्तु आपसे मुलाकात न होने के कारण मैं वापस गया और रात को तलाशी लेने की नीयत से चोरों की तरह आपके मकान में पहुँच कर दयाराम को तलाश करने लगा । मैं विशेष ढूँढ़ने भी न पाया था कि दो नकाब-पोशों से आपके मकान के ऊपरी हिस्से में मुलाकात हुई । कई तरह की बातचीत होने के बाद उसने जब अपने चेहरे पर से नकाब हटाई तब आपकी सूरत दिखाई दी । केवल इतना ही नहीं, उसने कई ढङ्ग से अपने को दारोगा साबित कर के मुझ से तरह तरह की बातें कीं और आज मुझे यहाँ बुलाया ।

इतना कह कर भूतनाथ ने पूरा पूरा हाल अपने रात के यहाँ आने का बयान किया जिसे सुन कर दारोगा बड़ी चिन्ता में पड़ गया और भय चिन्ता तथा घबराहट के साथ भूतनाथ का मुँह देखने लगा । भूतनाथ ने पुनः दारोगा से पूछा, "क्या ये सब बातें आपसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखतीं ?"

दारोगा० । कुछ नहीं, मैं तो यहाँ था ही नहीं, बातें क्या खाक होतीं ! मगर यह घटना बहुत ही बेढब हुई ! मुझे यहाँ आये अभी ज्यादे देर नहीं हुई है तथापि

जब मैं यहाँ आया तो सोचता था कि कई दिनों के बाद मुझे देख कर मेरे नौकर चाकर बहुत प्रसन्न होंगे और मुझसे मेरे गायब होने का सबब पूछेंगे मगर कुछ भी नहीं, इन लोगों ने इतना भी न पूछा कि आप कहाँ गये थे आप का मिजाज कैसा है। मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ और मैं उनसे तरह तरह की बातें पूछने लगा जिससे मालूम हो कि मेरे कई दिन की गैरहाजिरी में यहाँ क्या हुआ था तथा कौन कौन आदमी मुझे ढूँढ़ने के लिए आये थे परन्तु मेरी बातों का जो कुछ जवाब मेरे आदमियों ने दिया उससे यही जाहिर होता था कि मानो मैं एक दिन के लिए भी घर से बाहर कहीं नहीं गया था। इन सब बातों से साबित होता है कि मुझे कैद कर लेने के बाद मेरा दुश्मन मेरी सूरत बन कर यहाँ आया था और कई दिन तक रहा भी था। मैंने अपने मुँह से अभी तक अपने आदमियों को यह नहीं कहा है कि वास्तव में मैं यहाँ नहीं था, मुझे किसी ने कैद किया था या मेरा दुश्मन मेरी सूरत ब कर यहाँ आया था, हाँ जब से आया हूँ अपने घर की अवस्था पर जरूर ध्यान दे रहा हूँ। दयाराम तो मेरे यहाँ है नहीं, यह खबर तुमने बिल्कुल ही झूठ सुनी है, हाँ एक आदमी मेरे यहाँ कैद जरूर था। जिसे वह छुड़ा कर ले गया जो मेरी सूरत बन कर आया था। इसके सिवाय और किसी तरह का मेरा नुकसान नहीं हुआ है।

भूत०। (आश्चर्य से) क्या आपको किसी ने कैद कर लिया था।

दारोगा०। हाँ गदाधरसिंह! भला मैं तुमसे क्यों छिपाऊँ, तुम तो मेरे मेहरबान ही ठहरे और तुम्हारा मुझे बहुत कुछ भरोसा रहता है। किसी दुष्ट ने मुझे और इन्द्रदेव दोनों ही को कैद कर लिया था। तीन दिन के बाद इन्द्रदेव के शागिर्द ने हमलोगों को छुड़ाया। अब खयाल होता है कि शायद इसी लिए कैद कर लिया था कि हमारे यहाँ से उस कैदी को ले जाय।

भूत०। (आश्चर्य से) क्या आपको और इन्द्रदेव को दोनों ही को कैद कर ले गया था!! यह तो बड़े ही आश्चर्य की बात है! इन्द्रदेव तो अजातशत्रु कहलाते हैं! उनका कोई दुश्मन ही नहीं कहा जाता फिर उनके साथ यह कैसा बर्ताव! इसके अतिरिक्त एक बात और है, आपके यहाँ से तो उसे कैदी को छुड़ा ले जाना था मगर इन्द्रदेव से क्या मतलब था!

दारोगा०। शायद उनसे भी कुछ मतलब हो! अब उनसे दरियाफ्त किया

जायगा तो मालूम होगा। या इसका यह सबब हो कि हम और वे उस समय एक साथ ही सफर कर रहे थे जब गिरफ्तार हुए हैं, ऐसी अवस्था में वह उन्हें छोड़ अकेले मेरे साथ क्योंकर दगा कर सकता था ?

भूत०। हाँ ऐसा ही हो सकता है मगर.....

दारोगा०। मगर क्या ?

भूत०। (अपने दिल का असली विचार छिपा कर) कुछ नहीं, मेरा ख्याल यही है कि दयाराम जरूर आपके यहाँ कैद हैं या वह दयाराम ही थे जिन्हें आप का दुश्मन यहाँ से छुड़ा कर ले गया है।

दारोगा०। नहीं नहीं भूतनाथ ! ऐसा खयाल मत करो ! अगर तुम मेरे दुश्मन का पता लगाओगे जिसने हमें कैद किया था तो खुद असल हाल तुमको मालूम हो जायगा।

भूत०। हाँ है तो ऐसी ही बात। आपके उस दुश्मन का जिसने आपको कैद किया था पता लगाये बिना ठीक ठीक हाल मालूम न होगा, पर यद्यपि मैं बहुत जल्द उसका पता लगा सकता हूँ मगर मुझे क्या गरज पड़ी है कि व्यर्थ इस मामले में हाथ डाल कर परेशान होऊँ। काम आपका निकलेगा मेहनत मुझे करनी पड़ेगी।

दारोगा०। क्या तुम मेरे दोस्त नहीं हो ? क्या मैं तुम्हारा भरोसा नहीं रख सकता ? या समय पड़ने पर मैं तुम्हारी मदद करने से भाग सकता हूँ ? न मालूम तुम्हारा दिल कैसा ईश्वर ने बनाया है !!

भूत०। (मुस्कुराता हुआ) आप जो कुछ कहें और समझें ठीक है मगर असल यह है कि आप मुझ से सफाई का व्यवहार नहीं रखते। मैं कई दफे कई मामलों में देख चुका हूँ कि आप बिना कुछ गिरह रक्खे मुझसे भेद की बात नहीं करते।

दारोगा०। यह तुम्हारा भ्रम है, यह तुम्हारी आदत है कि बिना कुछ समझे बूझे या बिना असल मामले की जाँच किये शक कर बैठते हो और खफा हो जाते हो, मैं तो तुम्हें भाई की तरह मानता हूँ और वक्त पर मदद करने के लिए तैयार रहता हूँ।

भूत० । आपके इस कहने का मैं शुक्रिया अदा करता हूँ मगर लाचार हूँ कि बिना कुछ मामला पड़े.....

दारोगा० । (बात काट कर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि तुम्हारा मिजाज शक्की है। जो कुछ इलजाम तुम मेरे ऊपर लगाते हो उसका कोई सबूत भी तुम्हारे पास है ?

भूत० । हाँ है ।

दारोगा० । कहिये जरा मैं भी सुनूँ ।

भूतनाथ० । पिछली बातों को जाने दीजिये एक बात तो इसी समय सामने मौजूद है कि आप उस कैदी का ठीक ठीक हाल नहीं बताते जो आपके यहाँ से निकाल लिया गया है और दयाराम के भेद को छिपाते हैं यद्यपि मैं इस उलझन को अच्छी तरह सुलझा चुका हूँ और रत्ती रत्ती भेद मय सबूत के पा चुका हूँ ।

दारोगा० । तो क्या किसी ने यह तुम्हें निश्चय दिला दिया है कि दयाराम को मैंने कैद कर रक्खा है ?

भूत० । बेशक ऐसा ही है । इस बात का इलजाम मैं आपको नहीं देता कि 'दयाराम को रणधीरसिंह के यहाँ से आप गिरफ्तार कर लाये थे, नहीं, वहाँ से तो उन्हें राजसिंह ले गया था, हाँ राजसिंह के यहाँ से आप चुरा लाये हैं और अब मेरा विश्वास यह है कि कल जो कैदी यहाँ से निकल गया है वह दयाराम ही थे । यह बात स्वयम् राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह ने मुझे लिखी है, उसके लिखने पर जब मैंने तहकीकात की तब अच्छी तरह से निश्चय हो गया कि ध्यानसिंह का लिखना ठीक है। अभी परसों ही की बात है कि मैं स्वयं ध्यानसिंह से मिलने गया था। उसका कथन है कि तुम खुद राजसिंह से दयाराम को माँग कर ले आये थे और इसके बदले में उसने तुमसे मनमानती रकम ली थी ।

दारोगा० । ये सभी बातें झूठ और बनावटी हैं । अगर ऐसा ही था तो इतने दिनों तक ध्यानसिंह ने तुमसे क्यों नहीं कहा ?

भूत० । इसके लिए तो उसने आपसे रकम ही वसूल की थी अस्तु इस भेद को छिपाना उसके लिए जरूरी था, साथ ही इसके वह मुझे दुश्मनी की निगाह से

देखता था मगर अब जब कि उसे मुझसे खास जरूरत आ पड़ी है तब सब कुछ कहने और सब भेद खोलने के लिए तैयार हुआ है।

दारोगा०। कुछ नहीं यह सब उसकी बदमाशी है, इन सब बातों का तुम कुछ खयाल मत करो, तुम जरा खयाल तो करो और सोचो तो सही कि जमना और सरस्वती के बारे में मैंने तुम्हारी कैसी मदद की थी। अगर मुझे तुमसे दुश्मनी ही करनी थी तो ऐसे गूढ़ मामले में मदद करने की मुझे क्या जरूरत थी? हाँ तुमने बेशक अपने वादे का कुछ भी खयाल नहीं किया और भैयाराजा के विषय में मदद करने की प्रतिज्ञा करके भी कुछ न किया। खैर अब तुम्हें उचित है कि मेरे दुश्मन का पता लगाओ और निश्चय करो कि मेरे कैदी को यहाँ से कौन निकाल कर ले गया है तब तुम्हें आप ही मालूम हो जायगा कि मैं सच्चा हूँ या झूठा।

भूत०। बेशक मैं आपकी खातिर आपके दुश्मन का पता लगाऊँगा और अगर आप सच्चे निकलेंगे तो मैं हमेशः आपका मददगार बना रहूँगा। भैयाराजा के विषय में मैं आपके लिये अभी तक कोशिश कर रहा हूँ। यद्यपि इस काम में मुझे हद दर्जे की तकलीफ उठानी पड़ी जो कि मैं अभी इसी समय आपसे बयान करने वाला हूँ परन्तु क्या करूँ मेरी आर्थिक अवस्था बहुत ही खराब हो रही है, रुपैं की मुझे सख्त जरूरत आ पड़ी है, मेरे कई शागिर्द मुझसे रञ्ज हो कर भाग गये हैं और मेरी तमाम दौलत चुरा कर ले गये हैं। मैं इस समय पूरा कंगाल हो रहा हूँ। रुपैं के बिना इन सब कामों में बड़ा ही हर्ज हो रहा है।

दारोगा०। मेरे लिये तुम अभी तक भैयाराजा के विषय में कोशिश कर रहे हो यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई। मैं इधर बहुत दिनों से तुम्हारा हाल जानने के लिए बेताब हो रहा हूँ। क्योंकि बहुत दिनों से मुलाकात न होने के कारण तरह तरह की चिन्ता लगी रहती है। मैं जरूर सुनूँगा कि इस बीच में तुम पर क्या क्या बीती और क्या क्या हाल हुआ। रुपैं पैसे के लिए तुम कुछ भी चिन्ता न करो मैं हर वक्त तुम्हारी मदद करने के लिये तैयार रहता हूँ मेरे पास जो कुछ है सब तुम्हारा ही तो है।

इसके बाद दारोगा और भूतनाथ में देर तक बातें होती रहीं जिनके लिखने की यहाँ कोई जरूरत नहीं जान पड़ती। इसके अतिरिक्त दारोगा ने रुपैं से भी भूतनाथ की पूरी मदद की।

दसवां बयान

दयाराम को कैद से छुड़ाने के बाद जब इन्द्रदेव अपने कैलाशभवन में पहुँचे तब उस समय आधी रात होने के कारण उनके मकान में सन्नाटा छाया हुआ था मगर एक कमरे में जिसमें जमना और सरस्वती रहती थीं सन्नाटा नहीं था, उसमें जमना सरस्वती, इन्दुमती, प्रभाकरसिंह और भैयाराजा बैठे जमानियाँ की अवस्था और अपने भाग्य पर तरह तरह की बातें कर रहे थे तथा दयाराम के मामले में चिन्ता के साथ सोचते हुए इन्द्रदेव जी का इन्तजार कर थे। सब के पहिले इन्द्रदेव अपने कमरे में गये और यहाँ अपने लोहे के सन्दूक में कुछ कागज वगैरह रखने बाद वहाँ गये जहाँ उनकी स्त्री सर्यू रहा करती थी। उस समय वह घोर निद्रा में थी परन्तु इन्द्रदेव के वहाँ पहुँचते ही पैरों की चाप सुन कर जाग गई और चारपाई से नीचे उतर कर उसने अपने पति को प्रणाम करके चारपाई पर बैठ जाने का इशारा किया।

इन्द्रदेव चारपाई पर बैठ गये और उन्होंने अपने सफर तथा दयाराम के छुड़ाने का हाल बयान करके यह भी कहा कि अब उनका इरादा क्या है तथा सर्यू को भी अब क्या करना चाहिये इसके बाद आधे घण्टे तक उन दोनों में भेद की बातें होती रहीं, अन्त में सर्यू को साथ लिये हुए वे उस कमरे में गये जिसमें जमना सरस्वती इन्दुमती प्रभाकरसिंह और भैयाराजा बैठे हुए इन्द्रदेव का इन्तजार कर रहे थे।

इन्द्रदेव को देख वे सब उठ खड़े हुए और यथा उचित दण्ड प्रणाम तथा साहब सलामत के बाद कुशल मंगल पूछ कर सब कोई बैठ गये और बातचीत करने लगे। इन्द्रदेव को अकेले देख कर जमना और सरस्वती वगैरह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्हें इसका पूरा पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव जरूर दयाराम को साथ लेकर घर में आवेंगे परन्तु उन्होंने दयाराम के बदले में सर्यू को उनके साथ देखा।

निराश हो जाने के कारण जमना और सरस्वती के चेहरे पर उदासी छा गई जिसे देखते ही इन्द्रदेव उसका कारण समझ गये और उन्होंने जमना तथा सरस्वती की तरफ देख कर कहा, "मैं तुम दोनों को इस बात की मुबारकबाद देता

हूँ कि मेरा यह सफर ईश्वर की कृपा से व्यर्थ नहीं गया और जिस काम के लिये मैं गया था उसे पूरा कर आया।"

इन्द्रदेव के मुँह से यह बात सुन कर दोनों प्रसन्न तो हुईं मगर उनकी चिन्ता दूर न हुई। जमना ने कुछ धीमी आवाज में इन्द्रदेव को यह जवाब दिया, "परन्तु मैं तो आपको यहाँ अकेला ही देखता हूँ।"

इन्द्रदेव०। हाँ अकेला देखती हो तो कुछ चिन्ता की बात नहीं।

प्रभाकर०। आपके कथन से तो यही जान पड़ता है कि आपने दयारामजी को कैद से छुड़ा लिया परन्तु यहाँ आपको अकेले आये हुए देख कर हमलोगों की चिन्ता अथवा उत्कंठा यदि बढ़ जाय तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

इन्द्र०। बेशक ऐसा हो सकता है परन्तु मैं साफ साफ कह देता हूँ कि मैं दयाराम को एक दुष्ट की कैद से छुड़ा लाया। यहाँ अपने साथ न लाने का कोई कारण है! मैं यही उचित समझता हूँ कि तुम लोग खुद चलकर उनसे मुलाकात कर लो, ऐसा करने से तुम लोगों को सच्चा आनन्द आवेगा।

जमना०। तो आप उन्हें कहाँ छोड़ आये हैं?

इन्द्रदेव०। अपने असली और पुराने मकान में जो मेरा और मेरे बुजुर्गों का वास्तविक स्थान है।

भैयाराजा०। अगर आप उन्हें यहाँ ले आते तो क्या हर्ज था?

इन्द्रदेव०। दुश्मनों के खयाल से मैंने ऐसा नहीं किया, कम्बख्त दारोगा कोई मामूली आदमी नहीं है और भूतनाथ को भी इस मामले की खबर लग चुकी है तथा वह भी अपना जाल पूरी तरह फैला चुका है। यह नहीं कह सकते कि दयाराम के विषय में उसकी नीयत क्या है। केवल इतना ही नहीं, मेरे इस मकान में दारोगा या भूतनाथ का आ पहुँचना कोई आश्चर्य की बात नहीं है परन्तु दयाराम की जिद यही है कि मैं अभी लोगों में अपने को प्रगट नहीं करूँगा बल्कि अभी किसी को इस बात का पता भी न लगने दूँगा कि वास्तव में दयाराम जीते हैं अथवा दारोगा की कैद से उन्हें रिहाई मिल गई।

प्रभाकर०। ऐसा क्यों?

इन्द्रदेव०। इसका सबब उनसे मुलाकात होने पर आप लोगों को मालूम हो जायगा। पहिले आप लोग उनसे मुलाकात तो कीजिये और देखिये तो सही कि

इस कैद की बदौलत उनकी सूरत क्या हो रही है। वह तिलिस्मी स्थान बहुत ही सुरक्षित है। वहाँ कोई हम लोगों का दुश्मन पहुँच नहीं सकता और उन्हें वहाँ किसी तरह की तकलीफ न हो सकती है। इसके अतिरिक्त तुम लोगों ने भी अभी तक हमारा स्थान देखा नहीं है केवल सुनते ही आते हो की इन्द्रदेव किसी तिलिस्म का दारोगा है, अब सब कोई चलो और देखो कि वह कैसा सुन्दर और सुहावना स्थान है। वहाँ चलनेके लिये आजसे बढ़कर अच्छा मौका कब मिलेगा?

सरस्वती०। तो आप वहाँ कब चलेंगे?

इन्द्रदेव०। अभी इसी समय मैं वहाँ चलने के लिये तैयार हूँ बल्कि रथ और घोड़ों को तैयार करने का हुक्म भी दे चुका हूँ। अब हम लोगों को जो कुछ बातें करना है वह वहाँ पहुँच कर ही करेंगे।

प्रभाकर०। बहुत अच्छी बात है।

इन्द्रदेव के तिलिस्मी स्थान के देखने की इन सभों की पहिले ही से इच्छा थी परन्तु लेहाज से कभी कुछ कह नहीं सके थे। आज वह जगह देखने में आवेगी और दयाराम से भी मुलाकात होगी यह जानकर सभी कोई प्रसन्न हुए और वहाँ जाने की तैयारी करने लगे। उसी समय एक लौंडी ने आकर इत्तला की कि सवारी हाजिर है।

पहर भर रात बाकी होगी जब जमना सरस्वती इन्दुमती और सर्यू रथ पर और इन्द्रदेव प्रभाकरसिंह तथा भैयाराजा घोड़ों पर सवार हो तिलिस्म की तरफ रवाना हुए।

इन्द्रदेव का तिलिस्मी मकान कैसा था और वहाँ पहुँचने का रास्ता किस ढंग का था इसका हाल चन्द्रकान्ता संतति में बहुत खुलासे तौर पर लिखा जा चुका है, आशा है कि हमारे प्रेमी पाठक उसे भूले न होंगे।

इन लोगों का सफर यद्यपि बहुत तेजी के साथ हुआ तथापि जब ये लोग उस पहाड़ के नीचे पहुंचे जिसके ऊपर कुछ और रास्ता तै करने के बाद उस तिलिस्मी घाटी का मुहाना मिलता था तो दिन दोपहर से कुछ ज्यादे ढल चुका था। ये लोग सवारी से नीचे उतरे और पहाड़ पर चढ़ने लगे। अभी तक इन लोगों में से किसी ने स्नान या भोजन नहीं किया था और दयाराम से मिलने की चाह में किसी को इस बात की चाह भी न थी मगर इन्द्रदेव ने ऐसा करना

उचित न जाना क्योंकि उन्हें विश्वास था कि जब ये लोग दयाराम के सामने पहुँच जाँयगे तो मारे खुशी के और बातचीत की धुन में इन लोगों को खाने पीने की कुछ भी सुध न रहेगी और न इसका मौका ही मिलेगा। अस्तु इन बातों को विचार कर पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ने बाद एक चश्मे के किनारे पहुँच कर इन्द्रदेव ने डेरा डाल दिया और सभों को निपटने और स्नान इत्यादि से छुट्टी पाकर कुछ जलपान करने के लिये कहा। इन्द्रदेव ने जलपान करने का इन्तजाम घर ही से कर लिया था अर्थात् कुछ मेवा और मुरब्बा वगैरह अपने साथ रथ पर लेते आये थे। लाचार हो कर सभों को इन्द्रदेव की आज्ञा माननी पड़ी।

घण्टे सवा घण्टे की देर में सब कोई अपने जरूरी कामों से निपटने के बाद कुछ भोजन इत्यादि करके निश्चिन्त हो गये। अब उन लोगों को पैदल ही सफर करना पड़ा परन्तु थकावट का चिन्ह किसी के भी चेहरे पर दिखाई नहीं देता था और वे लोग दयाराम जी से मिलने की धुन में बराबर कदम बढ़ाये चले जा रहे थे। केवल इतना ही नहीं, सर्यू और इन्द्रदेव को छोड़ के बाकी सभों को इस बात का भी शौक उभड़ रहा था कि देखें इन्द्रदेव का तिलिस्मी स्थान कैसा है।

घण्टे भर और सफर करने के बाद यह मण्डली उस गुफा या सुरंग के मुहाने पर जा पहुँची जो इन्द्रदेव की घाटी में जाने का रास्ता या दरवाजा था। इस गुफा के दोनों तरफ दो चौड़े चौड़े पत्थर रक्खे हुए थे जिन पर थोड़ी देर तक बैठ कर आराम करने के लिये इन्द्रदेव ने सभों को कहा। कुछ देर तक वहाँ आराम करने के बाद सभों ने इन्द्रदेव से कहा, "बस अब हम लोग आराम कर चुके, विशेष देर करना गढ़ाता है।"

इन्द्रदेव तैयार हो गये और सभों को साथ लिये हुए गुफा के अन्दर घुसे। यह गुफा अन्दर से बहुत खुलासा और प्रशस्त तो थी परन्तु उसके अन्दर बिल्कुल ही अन्धकार था। इन्द्रदेव के पीछे पीछे एक दूसरे का सहारा लिये हुए क्रमशः सब कोई रवाना हुये। लगभग सौ कदम जाने के बाद रास्ता घूमा और इन्द्रदेव के पीछे सब कोई बाईं तरफ रवाना हुए। थोड़ी दूर और जाने के बाद इन्द्रदेव रुके क्योंकि यहाँ पर उन्हें कोई दर्वाजा खोलना था और इसकी तरकीब बहुत ही गुप्त थी। लोगों को सिवाय एक खटके की आवाज सुनाई देने

के और कुछ भी मालूम न हुआ। उस समय इन्द्रदेव वहाँ खड़े हो गये और धीरे धीरे सभों को उस दर्वाजे के अन्दर करके स्वयं सब के पीछे रह गये और तब पुनः सभा को दर्वाजा बन्द होने की आहट मालूम हुई। अब इन्द्रदेव ने मोमबत्ती जलाकर रोशनी की।

सब कोई बहुत देर तक अन्धेरी गुफा में रहने और चलने के कारण घबड़ा गये थे, अब जो वहाँ रोशनी दिखाई दी तो सभों के जी में जी आया और आश्चर्य के साथ सब कोई इधर उधर देखने लगे। यहाँ पर नीचे उतरने के लिये कुछ सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। उसे खतम करके कुछ दूर और चलने के बाद सुरंग समाप्त हुई, और सभों की निगाह एक ऐसे सुन्दर सुहावने और रमणीक स्थान पर पड़ी कि जिसे देखते ही सभों का दिल बाग बाग हो गया और सभों ही के मुँह से वाह वाह की आवाज आने लगी।

यह सुन्दर सुहावना और दिलचस्प सुंदर सुंदर गुलबूटों से हरा भरा मैदान चारो तरफ की हरी भरी ढालवीं पहाड़ियों से घिरा हुआ था। हरे हरे तथा खुशबूदार फूलों से लदे हुए पेड़ तथा लताओं की बहुतायत से खुशबू निकल कर और मन्द मन्द हवा में मिल कर जिस तरह दिमाग को मुअत्तर कर रही थी उसी तरह रंग बिरंग की खुशनुमा चिड़ियों की आवाज तथा गूंजते और फूलों पर न्योछावर होते हुए भौंरों की पंक्तियाँ कानों और आँखों को भी बहुत ही भली और प्यारी मालूम होती थीं। यहां जी चाहता था कि यहाँ से क्षण भर भी हट कर कहीं न जाय और न इस स्वर्ग तुल्य स्थान को देखने से मुंह मोड़े। एक तरफ पहाड़ी की आधी ऊंचाई से सुंदर झरना नीचे की तरफ गिर रहा था जिसके साफ सुथरे और बिल्लौर के से जल की बदौलत उस मैदान के गुलबूटों और पौधों की सिंचाई बखूबी होती थी तथा और भी बहुत से छोटे छोटे झरने पहाड़ी पर से बह रहे थे जिससे वहाँ की तरावट में किसी तरह की कमी नहीं आने पाती थी और यहाँ के पेड़ भी हर वक्त सरसब्ज और शादाब बने रहते थे। दूसरी तरफ पहाड़ी के ऊपर एक सुन्दर बंगला या मकान भी दिखाई दे रहा था और वह अपने चारो तरफ के गुलबूटों और पौधों से ऐसा मालूम पड़ता था मानो बसन्त ऋतु में कामदेव के भवन को बाग बगीचों ने चारो तरफ से घेर रक्खा हो।

उन पहाड़ियों पर चढ़ने और उतरने के लिये हर तरफ छोटी बड़ी तथा

मनभावन सीढ़ियाँ बनी हुई थीं और जगह जगह पर बैठ कर आनन्द लेने के लिये रंग बिरंगे पत्थरों के बड़े बड़े चट्टान मौजूद थे जिनके इर्दगिर्द मौके मौके से खुशनुमा और कीमती गमले सजाये हुए थे।

वहाँ की ऐसी अवस्था देख कर सभों का चित्त प्रसन्न हो गया मगर जमना और सरस्वती की आँखें वहाँ के गुलबूटों का आनन्द उतना नहीं ले रही थीं जितना दयाराम को खोजने के लिये उतावली हो कर खंजन की सी चंचलता करती हुई चारो तरफ देख रही थी।

सभों को साथ लिये हुए इन्द्रदेव अपने बंगले की तरफ रवाना हुए! सब कोई सीढ़ियाँ उतर कर उस सुन्दर मैदान में पहुँचे और फिर बंगले की तरफ वाली पहाड़ी पर चढ़ने लगे! कुछ दूर ऊपर चढ़ने के बाद जमना और सरस्वती की निगाह यकायक किसी लताकुञ्ज के नीचे एक चट्टान पर बैठे हुए दयाराम के ऊपर जा पड़ी जो इस समय सर झुकाये हुए कुछ सोच रहे थे। यद्यपि इस समय हँसमुख दयाराम जी का वह गोरा गोरा सुन्दर और साफ चेहरा न था, न वह गोल-मोल तथा गठीला बदन ही था दिल की उदासी और कैद की सख्ती ने उनके चेहरे और तमाम बदन पर झुर्रियाँ डाल दी थीं और इसी सबब से अन्धेरे में रहते रहते नका रंग पीला पड़ गया था तथा मुद्दत से हजामत न बनने के कारण उनकी दाढ़ी मूँछ और सर के बाल बेहिसाब बढ़ गये थे जिससे उनका चेहरा भालू का सा और सूरत हबशी जंगलियों की सी हो रही थी तथापि नजर पड़ने के साथ ही जमना और सरस्वती का कलेजा धड़कने लगा। उनके दिल ने कह दिया कि "बेशक उनके प्यारे पति यही हैं।" बहुत दिनों तक कैद में पड़े रहने के कारण यदि उनकी ऐसी सूरत हो गई हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है अस्तु उनकी ओर इशारा करके जमना और सरस्वती ने इन्द्रदेव की तरफ देखा।

इन्द्रदेव ने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ दयाराम जी यही हैं। शायद हम लोगों के इन्तजार में वे बङ्गले से बाहर निकल कर यहाँ आ बैठे हैं। सम्भव था कि हम इनके चेहरे और बदन की सफाई कर देते परन्तु तुम लोगों को इनकी अवस्था दिखाने की नीयत से ऐसा नहीं किया। इनके विषय में तुम लोग किसी तरह का शक न करो, यद्यपि आज कल का जमाना बहुत बुरा हो रहा है—हर तरफ

ऐयारों और चालबाजियों का डंका बज रहा है परन्तु हमारे काम में और इनके दयाराम होने में किसी तरह का धोखा नहीं है। कैदखाने के अन्दर ही हमसे और इनसे गूढ़ तथा गुप्त बातें हो चुकी हैं और उसके बाद तो पहरों ही...देखो अब वे स्वयम् उठ कर हम लोगों की तरफ आने लगे।"

इन्द्रदेव की बातों ने सभों ही का ध्यान दयाराम की तरफ कर दिया और सभी कोई आश्चर्य और दुःख के साथ उनकी तरफ देखने लगे। जब यह देखा कि वे स्वयम् उठ कर उन लोगों की तरफ आने लगे तब सभों की चाल में तेजी आ गई और प्रसन्नता के साथ सब कोई कदम बढ़ाते हुए उनकी तरफ लपके।

हम नहीं कह सकते कि इस समय जमना और सरस्वती के दिल की क्या हालत थी। जब दयाराम नजदीक आ पहुँचे तब जमना और सरस्वती झपट कर उनके पैरों पर जा गिरीं और गर्म गर्म आँसुओं की धार से उनके चरण धोने लगीं। इन्द्रदेव को दयाराम जी पिता के बराबर मानते और इज्जत करते थे इसलिये उन्होंने इस समय अपने हृदय के वेग को रोका और जमना तथा सरस्वती के साथ वह बर्ताव नहीं कर सके जो एकान्त में अथवा केवल सखियों और दासियों के सामने करते, केवल इतना ही नहीं, उन दोनों को पैरों पर से उठाने के लिये जब झुके तो कोई ऐसा शब्द धीरे से बोल पड़े जिसे कोई दूसरा सुन न सका और जमना तथा सरस्वती को भी ज्ञान हो जाने के कारण उनके सादे बर्ताव पर कुछ दुःख न हुआ।

वे दोनों उनके पैरों पर से उठ कर हाथ जोड़े सामने खड़ी हो गईं और इसके बाद सभी कोई हँसते और मुबारकबाद देते हुए उनसे मिले। मिलती समय जिसको जिस तरह का बर्ताव मुनासिब था उसने वैसा ही किया। दयाराम जी ने भैयाराजा इन्द्रदेव और सर्यू को प्रणाम किया तथा प्रभाकरसिंह उनसे गले गले मिले। इस समय किसी के मुँह से यह न निकला कि चलो बँगले में चल कर आराम से बैठें और तब निश्चिन्ती से बातचीत करें, खुशी के मारे सब कोई उसी जगह जमीन पर बैठ गये और समयानुकूल तरह तरह की बातें करने लगे।

प्रभाकर०। (दयाराम से) हरे हरे! यह बात क्या कोई स्वप्न में भी विचार सकता था कि आप इस दुनिया में जीते जागते मौजूद हैं और एक दिन इस तरह पर हमलोग आपका दर्शन करेंगे?

भैया०। कदापि नहीं ! तमाम जमाने को इनके मरने का विश्वास हो चुका था। जो कुछ गम जिसके दिल में था वह भी धीरे धीरे जाता रहा यहाँ तक कि एक जमाना बीत जाने के कारण सर्वसाधारण के दिल से इनकी याद भी एक तरह जाती रही, हाँ जो इनके बड़े ही प्रेमी थे केवल उन्हीं के दिल में कभी कभी इनका ध्यान आ जाता हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है।

इन्द्रदेव०। मुझे तो इनका मिलना एक आश्चर्य सा जान पड़ता है परमात्मा की भी क्या विचित्र माया है !! जिस बात का कुछ शान न गुमान वह यकायक पैदा हो गई ! ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त मैं नहीं कह सकता कि और किसको इसके लिये धन्यवाद दूँ !!

कुछ देर तक इसी प्रकार की बातें होती रहीं परन्तु जमना और सरस्वती के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला, हाँ आँखों से आँसुओं की धारा बराबर बहाती रहीं। इसके बाद इन्द्रदेव सभों को बंगले में ले गये। वहाँ सभों के लिये अलग अलग कमरों और कोठड़ियों तथा कपड़ों का उचित प्रबन्ध करने के बाद अपने हाथ से दयाराम की हजामत बनाई और स्नान वगैरह करा कर कपड़े बदलवाये। इन सब कामों से छुट्टी पाते पाते तक सन्ध्या हो गई और तब सब कोई निश्चिन्त हो कर एक बड़े कमरे में बैठे और बातचीत तथा हँसी दिल्लगी करने लगे। आज यहाँ सभों का चित्त प्रसन्न था और सभों ही को दयाराम की कहानी सुनने का शौक हो रहा था।

सब के पहिले जमना और सरस्वती ने अपनी तथा अपने साथ ही साथ इन्दुमति की दर्दनाक राम कहानी दयाराम से कह सुनाई और कुछ प्रभाकरसिंह ने भी अपना और भूतनाथ का बचा हुआ हाल बयान करके उसकी कसर पूरी की। तत्पश्चात् भैयाराजा का हाल इन्द्रदेव ने बयान किया। इसी के बीच में भूतनाथ का भी हाल थोड़ा थोड़ा सभों की जुबान से दयाराम ने सुना और सब के अन्त में सभों ने दयाराम का हाल पूछा।

दयाराम ने कहा, "मेरा किस्सा न तो अनूठा है और न उसमें किसी अनूठी घटना का बयान हो सकता है सिवाय इसके कि वर्षों तक कैद में पड़े सड़ा किये और दुःख भोगते रहे। कैद में इतना मुझे जरूर मालूम हो गया था कि जमानिया का दारोगा राजसिंह का मददगार है और उसी की सहायता से

राजसिंह ने मुझे गिरफ्तार भी किया था। अन्त में भूतनाथ पर कब्जा करने की नीयत से दारोगा मुझे अपने यहाँ ले आया और तब से मैं दारोगा का कैदखाना आबाद किये हुए था। मुझे अपने छूटने या छुड़ाने का कभी भी कोई अच्छा मौका नहीं मिला और न कोई मददगार ही दिखाई दिया, यदि आपको यकायक मेरा पता न लगता तो शायद मेरी जिन्दगी उसी कैदखाने में पूरी होती और अंत में मेरी लाश बिना संस्कार ही के जमीन में गाड़ दी जाती। आप लोगों की जुबानी जो कुछ मैंने सुना है उससे यही जान पड़ता है कि दारोगा के दिल में सदा ही से हम लोगों की दुश्मनी की जड़ जमी हुई है और वह हम सभों ही के साथ खोटा बर्ताव करता चला आया है परन्तु आप भी सदा ही उसका अपराध क्षमा करते चले आये और अपनी तरफ से किसी प्रकार का रञ्ज भी उस पर प्रगट होने नहीं दे रहे हैं। ऐसा दिल और ऐसी बर्दाश्त शायद ही दुनिया में किसी को हो। केवल दारोगा ही के साथ नहीं बल्कि गदाधरसिंह के साथ भी आपने वैसा ही बर्ताव किया। जिस तरह भीष्मपितामहजी ने अपने प्रण की रक्षा की थी अर्थात् पिता के प्रसन्नार्थ न तो उन्होंने शादी ही की और न तमाम शरीर बाणों से बिध जाने पर भी उन्होंने शिखण्डी पर शस्त्र या अस्त्र ही चलाया, उसी तरह आप भी आज तक अपने बचन की रक्षा करते चले आये और सैकड़ों आघात सह कर भी आपने उन पर किसी तरह का वार नहीं किया।"

प्रभाकर०। बेशक ऐसी ही बात है! इन्द्रदेव जी ने जो कुछ किया वह दूसरा कोई नहीं कर सकता।

दयाराम०। परन्तु अब जो मैं देखता हूँ तो उन दोनों के लिये बहुत बुरा समय आया हुआ दिखाई देता है। मेरा और मेरी दोनों स्त्रियों का तथा प्रभाकरसिंह और भैयाराजा जी का यकायक प्रगट होना कोई मामूली बात नहीं है। इससे उन दोनों का बड़ा ही अनिष्ट होगा। चाचाजी (इन्द्रदेव) के चुप रह जाने पर भी दुनिया उन्हें सत्यानाश कर डालेगी।

भैया०। क्या इसमें भी कोई शक है? उन दोनों का अनिष्ट होने के साथ ही साथ यह बात भी छिपी न रह जायगी कि इन्द्रदेवजी ने हम लोगों के विषय में क्या क्या कार्रवाइयाँ की है और उन दोनों के साथ कितना मुलाहिजा करते आये हैं।

इन्द्रदेव० । मुझे अगर कुछ डर है तो इसी बात का । मैं नहीं चाहता कि मेरी इन कार्रवाइयों का सर्वसाधारण को पता लगे और न मैं यह चाहता हूँ कि दारोगा तथा भूतनाथ को यह मालूम हो कि मैंने उनके विपक्ष में कोई काम किया है अथवा उनके भेदों को मैं जानता हूँ (कुछ सोच कर) परन्तु यह बात असम्भव सी जान पड़ती है ।

दयाराम० । बेशक यह बात असम्भव है लेकिन मैं अपने शरीर से कदापि आपका प्रण झूठा न होने दूँगा । जिस तरह भीष्मजी ने अपने पिता की प्रतिज्ञा रक्खी थी उसी तरह मैं सब तरह का दुःख सहन करने पर भी आपकी, जिसे मैं पिता के बराबर समझता हूँ प्रतिज्ञा रक्खूँगा और अपने विषय में उन दोनों के ऊपर किसी तरह का दोष न लगने दूँगा ।

इन्द्रदेव० । (आश्चर्य से) यह कैसे हो सकेगा ?

दयाराम० । इसका होना कोई कठिन नहीं है । तमाम जमाना जान चुका है कि दयाराम मर गये । मेरे आत्मीय और सम्बन्धियों के दिल से धीरे धीरे मेरा रङ्ग भी निकल चुका है अस्तु अब मुझे इस बात की कोई जरूरत नहीं रह गई कि मैं खुले मैदान प्रगट होकर उन लोगों से मिलूँ और सभों को अपना तथा आपका हाल मालूम होने दूँ । बस इसी सुन्दर घाटी में आप मुझे कहीं थोड़ी जगह दे दें जहाँ मैं अपनी स्त्रियों के साथ रह कर अपनी बची हुई जिन्दगी ईश्वराराधन में बिता दूँ ।

इन्द्र० । शाबाश ! शाबाश !! इस हिम्मत को देख कर मैं तुम्हारी सराहना करता हूँ परन्तु यह कैसे हो सकता है कि मैं अपने हाथ से तुम्हारे पैर में कुल्हाड़ी मारूं और इतने दिनों तक कैद की तकलीफ उठाने के बाद रिहाई मिलने पर भी तुम्हें दुनिया की हवा खाने या दुनिया के सुख दुःख से वञ्चित रक्खूं ।

दया० । नहीं नहीं, इसके लिये आप जरा भी चिन्ता न करें, मैं सत्यपूर्वक आपसे कहता हूँ कि मुझे इन बातों की अब कुछ भी लालसा नहीं है और कदाचित कभी मेरे दिल में यह आ भी जाय कि यहाँ से बाहर निकल कर दुनिया की हवा खाऊँ और जमाने की चाल चलन को देखूँ तो यह बात भी आपको कृपा से मेरे और मेरी स्त्रियों के लिए सहज हो जायगी अर्थात् हम लोगों को आप थोड़ी सी ऐयारी सिखा देंगे तो उसकी बदौलत दुनिया की भी सैर कभी कर लिया

करूँगा। बात यह है कि ऐसा करने में मेरे दिल को जरा भी कष्ट न होगा इसे आप सत्य समझें।

इन्द्र०। (प्रेम के कारण डबडबाई हुई आँखों से दयाराम की तरफ देख के) बेटा! तुम्हारी जहाँ तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है। जब कि मेरी इज्जत बात प्रण की रक्षा करने वाला तुम्हारे ऐसा सुपुत्र इस दुनिया में मौजूद है तब मुझे किसी बात की परवाह हो सकती है? निःसन्देह मैं तुम्हें पाकर अपने को कृतकृत्य समझता हूँ! ईश्वर तुम्हें चिरायु करे। जमना और सरस्वती को दुनिया की आफतों से बचे रहने के लिए मैंने ऐयारी सिखाई है और तुम्हें भी अवश्य सिखाऊँगा बल्कि इसके सम्बन्ध की बड़ी बड़ी अनूठी चीजें दूँगा जिससे तुम सदैव प्रसन्न रहोगे। बहुत नहीं तो थोड़े दिनों तक तो तुम इस स्थान में गुप्त रीति से रहो फिर जैसी ईश्वर की मरजी होगी देखा जायगा। वह सर्वशक्तिमान जगदीश्वर सब की इच्छा पूर्ण करने वाला है।

प्रभा०। (हाथ जोड़ कर) मेरी भी एक प्रार्थना है।

इन्द्र०। वह क्या?

प्रभा०। मुझे और इन्दुमति को भी आपने ऐयारी सिखाई है जिसके कारण यद्यपि मेरी हिम्मत और ताकत बहुत बढ़ी हुई है परन्तु मैं भी दयारामजी का अनुकरण किया चाहता हूँ। आप मुझे आज्ञा दें कि मैं भी इनके साथ इसी घाटी में रहा करूँ, सिवाय आप के मेरा तो इस दुनिया में कोई रोने वाला भी नहीं है।

इन्द्र०। यह तुम्हारा घर है, तुम खुशी के साथ जब तक चाहो यहाँ रह सकते हो परन्तु दयाराम की तरह गुप्त होकर तुम्हें रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। इन्दुमति को यहाँ रख कर तुम मेरी बदनामी को बचाते हुए दुनिया में घूम फिर कर लोगों का उपकार कर सकते हो परन्तु भूतनाथ और दारोगा से यदि अपने को बचा सको तो।

प्रभा०। मुझ अकेले को इन दोनों का कोई डर नहीं है, खैर जैसा होगा देखा जायगा।

भैया०। परन्तु मैं तो दारोगा को किसी तरह भी माफ नहीं कर सकता! मैं

उसका और भाई साहब का जरूर सामना करूँगा और देखूँगा कि उस दुष्ट दारोगा की चालबाजी कहाँ तक काम करती है।

इन्द्र०। बेशक आप को जमानिया में जा कर अपना घर देखना चाहिए परन्तु इस बात को आप जरूर छिपाए रहियेगा कि मैंने आप की कभी मदद की थी।

भैया०। हाँ इस बात को मैं जरूर बचाऊँगा और आप का भेद प्रकट न होने दूँगा।

इसी तरह की बातें सभों में बड़ी देर तक होती रहीं। जब भोजन का समय हुआ तब सब कोई वहाँ से उठे और दूसरे कमरे में जाकर सभों ने भोजन किया। इन्द्रदेव जी ने आज नाना प्रकार के भोजन की सामग्री तैयार कराई थी जिसे देख सभों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि शहर से इतनी दूर इस गुप्त स्थान में इतनी जल्दी ऐसा सामान क्योंकर तैयार कराया गया।

भोजन से निश्चिन्त होकर सब कोई आराम करने के लिए अपने अपने कमरे में गये जिसका बन्दोबस्त इन्द्रदेव ने पहिले ही से कर रक्खा था। दयारामजी के लिये तीन चार कमरों और कोठरियों का बन्दोबस्त हुआ था जिनमें तरह तरह के आराम का सामान मौजूद था। दयाराम और उनकी स्त्रियों में दुःख उठाने पर मुद्दत के बाद मुलाकात हुई थी इसलिए उन लोगों की खुशी का तो कहना ही क्या है अस्तु इस सम्बन्ध में हम इससे ज्यादे और कुछ भी कहना मुनासिब नहीं समझते कि आज की रात उन लोगों ने आँखों ही में बिता दी तिस पर भी उन लोगों का प्रेम का उद्‌गार किसी तरह कम न हुआ इस जिन्दगी में उन लोगों ने जो जो तकलीफें उठाई थीं वह सब आज मानों स्वप्न के समान मालूम हो रही थीं।

एक सप्ताह तक सभों ने उसी घाटी में रह कर हँसी खुशी से बिताया इसके बाद दयाराम जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को उसी जगह छोड़ कर बाकी सभों को साथ लिए हुए इन्द्रदेव उस तिलिस्मी घाटी के बाहर हुए।

ग्यारहवां बयान

इन्द्रदेव जी के कैलाशभवन में आज हम भूतनाथ को बड़ी बेचैनी बेताबी और उदासी के साथ बैठे हुए देखते हैं! इन्द्रदेव इस समय अपने पूजा के कमरे में बैठे पार्थिव पूजा कर रहे हैं, बीच बीच में जब मौका मिलता है तो भूतनाथ से दो चार बातें भी कर लेते हैं। सिवाय इन्द्रदेव और भूतनाथ के तीसरा कोई आदमी इस कमरे में दिखाई नहीं देता। हम नहीं कह सकते कि भूतनाथ को यहाँ आये हुए कितनी देर हुई है तथा इन दोनों में क्या क्या बातें हो चुकी हैं परन्तु अब जो कुछ बातें होने वाली हैं वे सुनने के योग्य हैं।

भूत०। मेरी जिन्दगी मुफ्त में बर्बाद हो रही है दिन रात दुश्मनों ही के ख्याल में बीतता है। अपनी सुफेद चादर में पड़े हुए एकमात्र धब्बे को ज्यों ज्यों धोकर साफ करने की मैं कोशिश करता हूँ त्यों त्यों वह चादर गदला ही होता जाता है और इसलिए मेरी अन्तरात्मा को सिवाय कष्ट के सुख का दर्शन भी नहीं होता।

इन्द्र०। तुम्हारी प्रारब्ध में जो कुछ बदा है उसे तुम भोग रहे हो इसके सिवाय और मैं क्या कहूँ। केवल तुम ही नहीं दुःख भोगते बल्कि अपनी बेवकूफी से अपने साथ ही साथ दोस्तों और साथियों को भी दुःखी करते हो। न मालूम कै दफे मैं तुमको समझा चुका हूँ कि तुम इन सब बखेड़ों को छोड़ो और इस बात की धुन में न पड़ो कि दयाराम के मारने का कलंक जो तुम पर लगा है उसे मिटा कर साफ करोगे, मगर तुम्हारे दिल में मेरी कोई बात बैठती ही नहीं! दयाराम वाली जिस बात को केवल चार आदमी जानते थे उसे अब तुम्हारी बेवकूफी से बीस आदमी जानने लग गये हैं, अगर तुम इस मामले को तूल न देते तो हम लोगों के मुँह से कोई गैर आदमी इस भेद को न सुनने पाता।

भूत०। बेशक मुझसे भूल हुई।

इन्द्र०। अभी क्या हुआ है, अभी तो तुम दिनों दिन भूल करते ही जाओगे। दयाराम के मारने का कलंक कोई सच्चा कलंक नहीं था, वह काम वास्तव में तुम से धोखे में हो गया, मगर उस सम्बन्ध में अब जो कुछ तुम कर रहे हो, वह जान बूझ कर कर रहे हो, अस्तु इन सब पातकों का फल तुम्हें अवश्य ही भोगना

पड़ेगा। इस समय जो तुम अपने लड़के के गम में बिकल हो रहे हो वह भी इन्हीं सब पापों का फल है। ऐसे कर्म करके भी तुम अपने बंश की वृद्धि चाहते हो ?

भूत०। (अपनी आँखों में आँसू पोंछ कर) अफसोस ? मैं कहीं का न रहा !!

इन्द्रदेव०। बेशक ऐसा ही है ! अब नहीं तो आगे चलकर तुम वास्तव में कहीं के भी न रहोगे। मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि जमना और सरस्वती के साथ क्या तुम्हें ऐसा ही बर्ताव करना उचित था जो तुमने किया ?

भूत०। उन्होंने खुद मेरे साथ दुश्मनी की नींव डाली, मैं नहीं चाहता था कि उनके साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव करूँ।

इन्द्र०। अगर थोड़ी देर के लिये मान लिया जाय कि वे दोनों तुम्हारे साथ दुश्मनी करने के लिये उतारू हुईं मगर क्या कोई कह सकता है कि तुम्हारे ऐसे ऐयार का वे मुकाबला कर सकती थीं ? कदापि नहीं, अगर तुम चाहते तो नेक-नीयती के साथ उन्हें अपना मालिक समझ कर उनके प्रहारों को बचाते हुए नेक और खिदमती कामों से उन्हें खुश कर लेते ! मगर नहीं, तुम्हें तो ऐयारी का घमण्ड चढ़ा हुआ था, तुम्हारे अदृष्ट ने तुम्हारा दिमाग आसमान पर चढ़ा दिया था, फिर ऐसा काम होता ही क्यों ? उनकी नेकनीयती और उनके पातिव्रत धर्म ने उनकी रक्षा की और अन्त में तुम उनका कुछ न बिगाड़ सके।

भूत०। जिसकी मदद आप करेंगे उसका भला मैं क्या बिगाड़ सकता हूँ ?

इन्द्रदेव०। (कुछ बिगड़े हुए ढंग से) तुम्हारे पास क्या सबूत है कि मैं उनका मददगार बना था ?

भूत०। सबूत तो कुछ भी नहीं है परन्तु...

इन्द्र०। सिवाय मेरे कोई दूसरा उन्हें तुम्हारे दोस्त दारोगा के फन्दे से छुड़ा भी नहीं सकता था। यही कहोगे या कुछ और ?

भूत०। विचार तो मेरा ऐसा ही है ! आज मैं आप से साफ साफ कहता हूँ कि बेशक मैं इस मामले में अपराधी हूँ और इसके लिये पश्चात्ताप करता हूँ।

इन्द्र०। जब तुम्हारे किये कुछ हो ही न सका तो अब जरूर ही पश्चात्ताप करोगे परन्तु इन्दुमति और प्रभाकरसिंह के बारे में शायद तुम पश्चात्ताप भी न करो।

भूत०। आज आप मुझसे बहुत ही जली कटी बात कर रहे हैं, ऐसा तो कभी नहीं करते थे !!

पूजा विसर्जन करके इन्द्रदेव ने पुनः जवाब दिया :—

इन्द्रदेव० । तुम्हारा कहना ठीक है । तुम्हारे दुष्ट कर्मों को देखते देखते आज मेरा चित्त बहुत ही दुःखी हो रहा है । मैं अपनी जुबान से तुम्हें दोस्त कह चुका हूँ उसी का निर्वाह करता चला आता हूँ नहीं तो.....

भूत० । निःसन्देह आपने आज तक उस शब्द का ऐसा निर्वाह किया कि जैसा कोई कर नहीं सकता ! आपका हौसला आपकी हिम्मत और आपकी मर्दानगी सराहने योग्य है ! अब मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ । आप मेरे अपराधों को क्षमा करें । आज मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मैं कदापि किसी पापकर्म में हाथ न डालूँगा ।

इन्द्रदेव० । तुम्हारी प्रतिज्ञा पर तो मैं विश्वास कर नहीं सकता परन्तु यह तुम स्वयम् जानते हो कि मैं अपनी तरफ से तुम्हें दुःख देने की इच्छा कदापि नहीं रखता और इस हिसाब से कहना चाहिये कि मैं हमेशा ही तुम्हारा कसूर माफ करता चला आता हूँ !

भूत० । निःसन्देह मुझे यह बात माननी पड़ेगी, मेरा दिल इस बात की गवाही देता है, मैं खूब समझता हूँ कि मेरे ऐसे को तबाह कर देने के लिये आपका इशारा काफी है मगर नहीं आप हमेशा ही मुझे समझाते और मेरे अपराधों को क्षमा करते चले आये हैं और इसी से आज मुझे पुनः आपके पास आने की हिम्मत हुई है नहीं तो वास्तव में मैं मुँह दिखाने लायक नहीं हूँ । आज मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई है कि जिसके प्रगट होने से मैं सदैव के लिये बेगुनाह साबित हो सकता हूँ और साथ ही इसके मेरे और मेरे दोस्तों का उपकार भी हो सकता है ।

इन्द्रदेव० । वह क्या ?

भूत० । मुझे इस बात का ठीक ठीक पता लग चुका है कि दयारामजी अभी तक जीते हैं और जमानिया के कम्बख्त दारोगा ने उन्हें कैद कर रक्खा है । आप जानते हैं कि तिलिस्म से सम्बन्ध रखने के कारण उनकी ताकत कितनी बढ़ी चढ़ी है, अस्तु यदि आप मेरी कुछ मदद करें तो मैं दयाराम को उसके पञ्जे से छुड़ाऊँ । दयारामजी के छूट जाने पर हम लोगों में एक अजीब

तरह की खुशी पैदा होगी और मेरे माथे से भी सदैव के लिये कलंक का टीका मिट जायगा।

इन्द्रदेव०। (सिर हिला कर) इस असम्भव बात को भला कौन मान सकता है? भला दयाराम को दारोगा से क्या सम्बन्ध? मैं इस बात को कदापि नहीं मान सकता और न इस आकाश कुसुम के फेर में पड़ता हूँ। इसके अतिरिक्त तुम जानते ही हो कि दारोगा मेरा गुरुभाई है अतएव मैं तुम्हारी तरह उसके ऊपर भी किसी तरह का प्रहार नहीं करना चाहता। तुम्हें यदि दयाराम के जीते रहने का विश्वास हो तो जो कुछ उद्योग करते बने करो मगर मुझ से किसी तरह पर मदद पाने की आशा मत रक्खो।

भूत०। (उदासीन होकर) क्या आपको दयारामजी के छूटने से प्रसन्नता न होगी?

इन्द्रदेव०। होगी और जरूर होगी परन्तु इसकी कोई आशा भी तो हो।

भूत०। यदि आप मेरी मदद करें तो मैं अपनी बात सच करके दिखा दूँ।

इन्द्र०। नहीं, दारोगा के बिरुद्ध किसी कार्रवाई की मुझसे तब तक आशा मत रक्खो जब तक मुझे इस बात का पूरा पूरा विश्वास न हो जाय।

भूत०। मुझे जिस तरह मालूम हुआ है वह हाल सुनने ही से आपको मेरी बातों पर विश्वास हो जायगा।

इन्द्र०। अजी वही निरञ्जनी और छन्नो वाली तो! मैं इस मामले को अच्छी तरह सुन चुका हूँ। वे दोनों तथा ध्यानसिंह तुम्हें धोखे में डाला चाहते हैं। दुश्मनों की बातों पर तुम न मालूम क्योंकर विश्वास कर बैठते हो!!

भूत०। (आश्चर्य से) यह बात आपको कैसे मालूम हुई?

इन्द्र०। मुझे सब कुछ मालूम है और जिस तरह तुमने जंगल में छिप कर छन्नो की बातें सुनी है वह भी मैं जानता हूँ, मुझसे कुछ छिपा नहीं है।

भूत०। तो क्या आपके खयाल में वे सब बातें झूठ हैं?

इन्द्र०। झूठ, बिल्कुल झूठ।

भूत०। मैं स्वयम् ध्यानसिंह के पास गया था, वह तो बड़े जोर से अपनी बातों की पुष्टि करता है।

इन्द्र०। भले ही किया करे।

भूत० । मगर मुझे उसकी बातों पर पूरा पूरा विश्वास होता है ।

इन्द्र० । अगर विश्वास होता है तो उद्योग करके देख लो ।

भूत० । मगर आप इस काम में कुछ भी मदद न करेंगे !!

इन्द्रदेव० । कदापि नहीं तुम्हारी मदद करके मैं स्वयम् बदनाम हो सकता हूँ । यद्यपि हजार दुष्टता करने पर भी तुम्हें और दारोगा को मैं बराबर माफ करता चला आया हूँ परन्तु किसी काम में भी तुम दोनों की मदद मैं नहीं कर सकता । बात तो यह है कि अब तुम दोनों ही से मुझे घृणा हो गई है ।

भूत० । मैं जो कह चुका कि भविष्यत् में कभी ऐसा काम न करूँगा और जो कुछ कर चुका हूँ उसके लिये माफी माँगता हूँ ।

इन्द्रदेव० । केवल इतना कहने ही से मैं सन्तुष्ट नहीं हो सकता । जब तक तुम दुनिया में नेक काम करके अपने बुरे कामों का प्रायश्चित्त न करोगे तब तक मैं तुमसे कोई वास्ता न रक्खूँगा, हाँ इस बात से तुम जरूर बेफिक्र रहना कि मैं तुम्हारे साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव अपनी जात से कदापि न करूँगा ।

भूतनाथ० । इसका तो मुझे जरूर भरोसा है और आपको भी शायद विश्वास होगा कि मैं आपका कैसा लेहाज करता हूँ । मेरी जात से आपको कभी भी तकलीफ नहीं पहुँच सकती और.....

इन्द्रदेव० । (बात काट कर) यह तो मैं समझता हूँ परन्तु मेरे स्वजनों को तो तुम तकलीफ देते हो, क्या उसका असर मेरे दिल पर नहीं होता है ?

भूत० । जरूर होता होगा, इस बात का तो मैं कसूरवार हूँ । मगर आप देख लीजियेगा कि आइन्दा मुझसे कभी ऐसी हरकत न होगी ।

इन्द्र० । अच्छा मैं तुम्हारी इस बात को भी आजमा कर देखूँगा ।

भूत० । जिस तरह चाहे आजमा लीजिये ।

इन्द्रदेव० । अच्छा अब तुम घर जाओ और दयाराम के विषय में उद्योग करना व्यर्थ समझो ।

भूत० । मैं उम्मीद करता हूँ कि इस विषय में उद्योग करने से आप मुझे रोकेंगे नहीं और मुझे मेरी हिम्मत भर कोशिश करने देंगे ।

इन्द्रदेव० । नहीं नहीं नहीं, यह कदापि न समझना कि मैं तुम्हें रोकता हूँ, हाँ अपने दिल का विश्वास तुम पर प्रगट करता हूँ, आइन्दे तुम्हारी खुशी ।

भूत० । अच्छा तो मैं जाता हूँ परन्तु एक बात पूछने की लालसा मेरे दिल में बनी ही रह जायगी जिसका कहना था तो बहुत जरूरी परन्तु आपके डर से अब पूछने में संकोच होता है ।

इन्द्रदेव० । संकोच की कोई बात नहीं है, मैं खुले दिल से तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि जो कुछ तुम्हारे दिल में आवे कहो और पूछो । मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि अपनी तरफ से तुम्हें सिवाय नसीहत करने के किसी तरह की तकलीफ कदापि न दूँगा । मगर साथ ही इसके यह बात भी जरूर है कि जब तक सीधी राह पर न आओगे और अपने पापों का प्रायश्चित न कर लोगे तब तक मैं किसी काम में तुम्हारी मदद न करूँगा, इसे खूब समझे रहना ।

भूत० । (कुछ सोच कर) बस, जब कि आपकी तरफ से कोरा कोरा जवाब ही मिल गया तब अब मुझे कुछ पूछने की जरूरत भी न रही ।

इन्द्र० । (मुस्कुराते हुए) तथापि मैं सुन तो लूँ कि तुम क्या क्या कहने को थे और क्या चाहते थे ?

भूत० । आपसे तो मैं वादा कर ही चुका हूँ कि भविष्यत में अब किसी तरह का अपराध न करूँगा और आपने भी मुझे विश्वास दिला दिया है कि अपनी तरफ से मुझे किसी तरह की तकलीफ न पहुँचने देंगे परन्तु मैं अपनी चन्द बेईमान शागिर्दों की तरफ से बहुत लाचार हो रहा हूँ जो कि मुझसे बागी हो गये हैं और मेरे जान के पीछे लगे हुए हैं, ताज्जुब नहीं कि मैं उनके हाथ से मारा जाऊँ अस्तु उसी विषय में आपसे मदद चाहता था ।

इस मामले को इन्द्रदेव तो जानते ही थे और उन्हीं के मदद से भूतनाथ के शागिर्दों की जान भी बची थी तथापि अनजान बन कर आश्चर्य नाट्य करते हुए इन्द्रदेव ने भूतनाथ से पूछा—"क्यों क्यों, ऐसा क्यों हुआ ? तुम्हारे शागिर्द तो तुम्हारे बड़े ही भक्त थे !!"

भूत० । हाँ था तो ऐसा ही मगर मुझसे उन लोगों के विषय में एक ऐसी भूल हो गई है कि जिसके लिये मैं बहुत ही पछता रहा हूँ ।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपने शागिर्दों का हाल और उनके विषय में जो कुछ उससे बेमुरौअती हो गई थी सब सच सच और साफ साफ बयान कर दिया जिसे सुन कर इन्द्रदेव ने कहा, "मैं बहुत खुश हुआ कि तुमने यह किस्सा

साफ साफ बयान कर दिया। बेशक वे लोग तुम्हें तकलीफ देंगे। मैं यद्यपि कह चुका हूँ कि तुम्हें किसी तरह की मदद न दूँगा तथापि तुम्हारी मुरौवत से इतना वादा करता हूँ कि तुम्हारी जान की रक्षा करूँगा और उन लोगों के हाथ से तुम्हारी जान पर नौबत न आने दूँगा इससे तुम निश्चिन्त रहो मगर तुम्हें यह किसी तरह भी न मालूम होने पावेगा कि मैं कब और किस तरह पर तुम्हारी मदद की।"

भूत०। आप समर्थ हैं, जो चाहें कर सकते हैं। अब मैं आप का भरोसा पा कर कुछ निश्चिन्त हो गया, अच्छा जाता हूँ, 'जय माया की।'

इतना कह भूतनाथ वहाँ से बिदा हुआ। जाती समय इन्द्रदेव ने कहा, "कभी कभी तुम मुझसे मिलते रहना जरूर।"

हमारे प्रेमी पाठक समझते होंगे कि चलो अब किस्सा खतम हो गया और बखेड़ा निपट गया। जमना और सरस्वती को दयाराम मिल ही गये, प्रभाकर-सिंह और इन्दुमती का संयोग हो ही गया, साथ ही इसके भूतनाथ ने भी यह प्रण कर ही लिया कि अब भविष्य में कोई बुरा काम न करूँगा इत्यादि, परन्तु नहीं, जमना सरस्वती दयाराम इन्दुमती और प्रभाकरसिंह वगैरह के लिये अभी सुख का जमाना नहीं आया। उनका अदृष्ट अभी तक उनके सर पर नाच रहा है। जमानियाँ में गोपालसिंह जिस घटना के शिकार हुए थे और भूतनाथ को उस घटना से जैसा कुछ सरोकार था उसी तरह इन लोगों को भी उस घटना से घनिष्ट सम्बन्ध था। इसलिये गोपालसिंह के साथ ही साथ इन सभों को भी बड़ी तकलीफें उठानी पड़ी जैसा कि आगे चल कर आपको मालूम होगा।*

---

* अपनी जीवनी लिखते लिखते भूतनाथ यहाँ पर नोट लिखता है, "मैं पहिले भी कह चुका हूँ और अब भी कहता हूँ कि मेरी यह जीवनी मेरे दोस्तों के भरोसे पर लिखी जाती है, अर्थात् राजा गोपालसिंह को ग्रहदशा से छुटकारा मिलने पर और राजा बीरेन्द्रसिंह की तरफ से मुझे माफी मिल जाने पर मुझे यह मौका मिला कि अपने इन्द्रदेव ऐसे मित्रों और मेहरबानों से जो कुछ भेद मुझे मालूम न थे उन्हें पूछ पूछ कर अपने किस्से का सिलसिला दुरुस्त करूँ। इसी तरह जो कुछ हाल दारोगा अथवा उसके साथियों से सम्बन्ध रखता था

बारहवां बयान

भूतनाथ जब इन्द्रदेव से बिदा हो कर चला गया तो सीधे जमानियाँ की तरफ रवाना हुआ। इस समय वह अपनी असली सूरत में था और सफर उसका पैदल ही था। कोस दो कोस से ज्यादे न गया होगा कि सामने से एक नकाबपोश सवार आता हुआ दिखाई दिया। चेहरे पर नकाब पड़े रहने के सबब से यद्यपि भूतनाथ उसे पहिचान न सका परन्तु उस नकाबपोश ने भूतनाथ के पास

उसका असल भेद मुझे मालूम न हुआ, जैसे भैयाराजा का परिणाम—उसे मैं किसी तरह भी पता लगा कर लिख न सका जिसके लिये कि मैं महाराज और महाराजकुमारों से क्षमा माँगता हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन दिनों मुझसे बड़े बड़े अपराध हो रहे थे और इन्द्रदेव उन सभों को क्षमा करते जाते थे परन्तु दारोगा के अपराधों को क्षमा कर देना जमानियाँ राज्य अथवा राजकुल के लिये जहर हो गया। चाहे इन्द्रदेव दारोगा को किसी तरह की सजा न देते पर उसकी धृष्टता में राजा गिरधरसिंह को और उनको नहीं तो कम से कम गोपालसिंह जी को भी होशियार कर देते तो उन पर ऐसी गहरी मुसीबत का पहाड़ आ कर न टूट पड़ता। यह सही है कि लक्ष्मीदेवी वाले मामले की इन्हें ठीक ठीक खबर नहीं हुई और यदि कुछ खबर हुई भी तो उस समय जब कि राजा गोपालसिंह जी का देहान्त हो जाना सर्वधारण में प्रसिद्ध हो चुका था और इसीलिये उस समय इन्द्रदेव ने इस मामले को उठाना कदाचित व्यर्थ ही समझा होगा। इसके अतिरिक्त वे अपनी लड़की और स्त्री के गम में बिल्कुल ही उदासीन हो गये थे अस्तु जमाने की अवस्था पर ध्यान देना क्यों कर अच्छा मालूम होता होगा! मतलब यह कि दारोगा के हालत से राजा गोपालसिंह की सच्ची आगाही न होना ही अनर्थ का मूल हो गया। भैयाराज का मामला भी राजा गोपालसिंह को ठीक ठीक मालूम न हुआ नहीं तो वे कुछ चैतन्य जरूर हो जाते। सच है "आग बुझाना और चिनगारी छोड़ देना, साँप मारना और उसके बच्चे की हिफाजत करना, बुद्धिमानों का काम नहीं है।" इन्द्रदेवजी ने दारोगा की ताकत को तोड़ दिया सही मगर उसे छोड़ दिया। सम्भव है कि मेरी नालायकी से भी उन्होंने धोखा खाया हो।"

आ कर उसे रोका और कहा, "कहो गदाधरसिंह ! इस समय कहाँ जा रहे हो ?" इतना कहने के साथ ही साथ उसने जरा सा नकाब हटा कर अपनी सूरत भी दिखा दी जिससे भूतनाथ पहिचान गया कि यह भैयाराजा हैं, फिर भी भूतनाथ को विश्वास न हुआ और वह सलाम करके बोला—"केवल चेहरा देख कर विश्वास कर लेने की हिम्मत नहीं पड़ती अस्तु कोई भेद की बात कह के अपना परिचय दीजिये और आइन्दे के लिये भी कोई परिचय नियत कर लीजिये।"

भैया०। हाँ हाँ, इस बात को मैं भी पसन्द करता हूँ। केवल उस दिन की बात याद दिला कर तुम्हें अपना परिचय देता हूँ जिस दिन तुमको मैंने तिलिस्मी बाग में बेहोशी की दवा पिलाई थी और तुमने भविष्यत् में नेक राह पर चलने के लिये कसम खाई थी। दूसरों को तुम्हारे कसम खाने पर चाहे विश्वास न हो परन्तु मैं तुम्हारी उस दिन की प्रतिज्ञा पर विश्वास करता हूँ।

भूत०। (झुक कर अदब से सलाम करने बाद) अब मुझे विश्वास हो गया। बेशक आप मुझे जब चाहे आजमा कर देख लीजिये, मुझे अपनी प्रतिज्ञा पर सदैव दृढ़ पावेंगे।

भैया०। अच्छा यह बताओ कि इस समय तुम कहाँ से आ रहे हो और कहाँ जाते हो ?

भूतनाथ०। इस समय इन्द्रदेवजी के यहाँ से आ रहा हूँ और दारोगा से मिलने के लिए जमानिया जाने का इरादा है।

भैया०। मैं एक जरूरी काम के लिये तुम्हें कई दिनों से खोज रहा था, इत्तफाक ही से तुम इस समय मुझे मिल गये।

भूतनाथ०। आज्ञा कीजिये, मैं दिलोजान से आपका काम करने के लिये तैयार हूँ इस शरीर से अगर आपका कुछ काम निकले तो मैं अपने को बड़ा भाग्यवान समझूँ।

भैयाराजा०। अच्छा यहाँ तो बातें करने का मौका नहीं है चलो किसी जंगल मैदान में चल कर निश्चिन्ती से बैठें और बातें करें।

भूत०। जो आज्ञा।

घोड़े पर सवार भैयाराजा और रिकाब थामे हुए भूतनाथ दोनों आदमी वहाँ

से रवाना हुए और डेढ़ घण्टे के अन्दर एक घने जंगल में पहुँच कर सुन्दर पत्थर की चट्टानों पर बैठ कर दोनों बातें करने लगे।

भैयाराजा०। आज क्या था कि तुम इन्द्रदेव के पास गए थे?

भूत०। मुझे इस बात का पता लगा है कि दयारामजी अभी तक जीते हैं और जमानिया के दारोगा ने उन्हें कैद कर रक्खा है, अस्तु उसी विषय में इन्द्रदेवजी से मदद माँगने के लिये मैं गया था।

भैयाराजा०। तो फिर क्या हुआ?

भूत०। उन्होंने मदद करने से सूखा जवाब दे दिया और कहा कि "मुझे दयाराम के जीते रहने का विश्वास नहीं होता।"

भैया०। अफसोस! न मालूम क्या समझ कर इन्द्रदेव ने ऐसा किया!! अच्छा तो अब तुम क्या करोगे?

भूत०। इन्द्रदेव को चाहे विश्वास न हो परन्तु मुझे दयाराम के जीते रहने का विश्वास है अतएव जहाँ तक बन पड़ेगा मैं इस काम के लिये कोशिश जरूर करूँगा आगे मेरी किस्मत।

भैया०। बेशक कोशिश करना चाहिये मगर जिस दारोगा को खुश करने के लिये तुम मेरी जान लेने को तैयार हो गये थे उस दारोगा के साथ तुम क्या करोगे सो मेरी समझ में नहीं आता, शायद अब तुम उससे दोस्ती का नाता तोड़ दोगे?

भूत०। दारोगा को खुश करने के लिये मैंने आपके साथ दुश्मनी नहीं की थी बल्कि अपना काम पूरा करने के लिये मैंने ऐसा किया था क्योंकि उस समय दारोगा मेरा काम कर रहा था और आपने मेरे काम में बाधा डाली थी। अब तो मैं अपना ढंग बदलने के लिये आप से प्रतिज्ञा ही कर चुका हूँ इसलिये आपसे झूठ बोलना या किसी बात का छिपाना भी मुझे उचित नहीं अस्तु जो बात है वह साफ साफ कह देता हूँ। मेरी और दारोगा की दोस्ती भला कब निबह सकती है? हाँ मतलब साधने के लिये मैं दारोगा से कभी मिल भी जाऊँ तो कोई आश्चर्य नहीं है। हाँ यह कहिये कि आप मुझे क्यों खोज रहे थे और अब अपने लिये क्या कार्रवाई सोची है। मेरी राय में आपका इस तरह छिपे छिपे काम करना उचित नहीं है। जिस तरह आप दो दफे महल में जाकर अपनी स्त्री

से मिले हैं वह ढंग भी अच्छा नहीं है, इसमें आपकी स्त्री बदनाम हो जायगी और दारोगा को उसके साथ बुराई करने का मौका मिल जायगा क्योंकि आपके भाई साहब उस दुष्ट के बस में हो रहे हैं इसके सिवाय मैं इस बात की इत्तला भी आपको इसी समय दे देता हूँ कि आप की स्त्री और कुँअर गोपालसिंह की माँ दोनों ही को मार डालने के लिये दारोगा यत्न कर रहा है। अगर आप इसी तरह पर और कुछ दिन बिता देंगे तो अपनी स्त्री को जीता न पावेंगे।

भैया०। (आश्चर्य और घबराहट से) क्या ऐसी बात है?

भूत०। बेशक ऐसा ही है, मैं आपसे झूठ न बोलूँगा।

भैया०। अगर तुम्हारा कहना ठीक है तो मुझे अपना ढंग जरूर बदल देना पड़ेगा। अच्छा अब तुमसे यह कह लूँ कि तुम्हें क्यों खोज रहा था तब इस मामले में तुमसे राय लूँ।

भूत०। जो आज्ञा।

भैया०। तुम क्या अपने उन शागिर्दों का हाल साफ साफ मुझसे बयान कर सकते हो जो तुमसे बागी हो गये हैं?

"जी हाँ मैं आपसे सच सच बयान कर देता हूँ" इतना कह कर भूतनाथ ने उन शागिर्दों का सब ठीक ठीक हाल भैयाराजा से बयान कर दिया जिसे सुनने के बाद भैयाराजा ने कहा, "उन शागिर्दों में से कई आदमी मुझे तुम्हारा दुश्मन समझ कर मुझसे मिले थे और मदद माँगते थे। मैंने उनसे मदद का वादा किया परन्तु यह खयाल कर के कि अब तुम अपने लिए अच्छा रास्ता कर रहे हो और तुम को बाहरी खतरों से बचाना चाहिये मैं तुम्हें उनकी बाबत इत्तला दिया चाहता हूँ।

भूत०। (खुश होकर) आखिरी मर्तबे वे लोग कब आपसे मिले थे?

भैया०। कल शाम को फिर उनसे मुलाकात हुई थी।

भूत०। क्या आपको उन लोगों का ठिकाना भी मालूम हुआ है कि वे लोग कहाँ रहते हैं?

भैया०। हाँ मालूम हुआ है, एक दफे मैं उनके डेरे पर भी गया था।

इसके बाद घण्टे भर तक भूतनाथ और भैयाराजा में बातचीत होती रही जिसके लिखने की यहाँ कोई जरूरत नहीं जान पड़ती अभी उन लोगों की बातें

समाप्त नहीं होने पाई थीं कि सामने से आठ आदमी नकाबपोश हर्बे लगाये और घोड़ों पर सवार इनकी तरफ आते हुए दिखाई पड़े। ये दोनों सम्हल कर खड़े हो गये और उन सवारों की तरफ देखने लगे। नजदीक पहुँचने पर उन लोगों ने तलवारें म्यान में से निकाल लीं जिससे इन दोनों को विश्वास हो गया कि ये सवार हमारे दुश्मन हैं, अस्तु भूतनाथ और भैयाराजा भी तलवार म्यान से निकाल कर मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये।

पास पहुँचते ही एक सवार ने भूतनाथ पर तलवार का वार किया। भूतनाथ पैंतरा बदल कर वार खाली दे गया और बगल में होकर अपनी तलवार से उस सवार को घायल किया। भूतनाथ की तलवार उसके दाहिने मोढ़े पर बैठी जिससे उसका दाहिना हाथ बेकार हो गया और तलवार उसके हाथ से निकल कर जमीन पर गिर पड़ी, साथ ही दूसरे सवार ने भूतनाथ पर वार किया जिसे भूतनाथ ने अपनी तलवार पर रोका और फिर उसी तलवार से उस सवार पर हमला किया। वह सवार भी उस वार को बचा गया मगर उस वार से उसका घोड़ा बेकार हो गया, उस समय बाकी के सवारों ने भी भूतनाथ पर हमला कर दिया और चारो तरफ से भूतनाथ को घेर लिया भैयाराजा अभी तक खड़े थे मगर जब उन्होंने भूतनाथ को घिरा हुआ देखा तो तलवार उठा कर उन सवारों पर टूट पड़े। भूतनाथ यद्यपि कई दुश्मनों में घिर गया था परन्तु उसकी फुर्ती दिलावरी और होशियारी ने किसी को उस पर हावी होने न दिया अर्थात् सभों के वार को बचाता हुआ वह बड़ी बहादुरी के साथ जवाब देता रहा और जब भैयाराजा भी उसकी मदद पर तैयार हो गये तब थोड़ी ही देर में उन सवारों की हिम्मत जाती रही क्योंकि भैयाराजा को भी उन सवारों ने वैसा ही बहादुर पाया जैसा भूतनाथ को !!

थोड़ी देर की लड़ाई में दो सवार जान से मारे गये और चार जख्मी हो कर जमीन पर सिसकने लगे, बाकी के दो सवारों ने पीठ दिखा कर मैदान का रास्ता लिया। यद्यपि भूतनाथ का यह इरादा हुआ था कि जख्मी दुश्मनों के चेहरे पर से नकाब हटा कर उनकी सूरत देखे और पहिचाने वे कौन हैं मगर इस काम को उसने पीछे करने के लिए छोड़ दिया और उन्हीं जख्मी दुश्मनों के घोड़ों में से एक पर कूद के सवार हो भैयाराजा को यह कहता हुआ कि—'आप इसी जग ह

ठहरिये और इनके चेहरे पर से नकाब हटा कर देखिये कि ये कौन हैं,—उन भागते हुए सवारों के पीछे घोड़ा दौड़ाया। भैयाराजा को यह बात पसन्द न थी इसलिए उन्होंने भूतनाथ को आवाज देकर रोकना चाहा मगर भूतनाथ ने कुछ भी न सुना और बड़ी तेजी के साथ उन भागने वालों का पीछा किया। इस समय दिन अनुमान पहर भर से कुछ ज्यादे बाकी था।

भैयाराजा ने देखा कि भूतनाथ ने उनकी कुछ भी न सुनी और भागने वाले दुश्मनों के पीछे चला ही गया तब वह भी अपने घोड़े पर सवार हो कर भूतनाथ के पीछे रवाना हुए और थोड़ी ही कोशिश में भूतनाथ के पास जा पहुँचे क्योंकि भैयाराजा का घोड़ा बहुत ही तेज और ताकतवर था।

घण्टे भर तक ये लोग बराबर भागने वालों का पीछा करते चले गये मगर उन दोनों को छू न सके, हाँ पास जरूर पहुँच गये, यहाँ तक कि भागने वालों के और इसके बीच में चालीस या पचास हाथ का फासला रह गया होगा। चारों के घोड़े पसीने से तरबतर और परेशान हो गये और उनके चाल की तेजी जाती रही।

कुछ देर के बाद वे लोग पहाड़ों की तराई में जा पहुँचे। यहाँ पर ऊँचे ऊँचे पहाड़ों का सिलसिला बहुत दूर तक चला गया था। कुछ दूर आगे बढ़ने पर यह मालूम होने लगा मानो ये लोग चारों तरफ से पहाड़ों के बीच में घिर गये हैं। पत्थरों के रोड़ों और ढोकों के कारण घोड़ों की चाल बहुत धीमी पड़ गई थी तथापि भूतनाथ और भैयाराजा बराबर ही पीछा किये चले गये। दिन यद्यपि घंटे भर से ज्यादे बाकी था परन्तु ऊँचे ऊँचे पहाड़ों के बीच में पड़ जाने के कारण इन लोगों को यही मालूम होता था कि अब संध्या हो गई।

पहाड़ों के बीच में चलते चलते दोनों भागने वाले कई दफे घुमघुमौवे रास्तों में चक्कर खाकर बहुत बड़े दर्रे के मुहाने पर जा पहुँचे और वहाँ भी न रुक कर बराबर दर्रे के अन्दर जाने लगे। जैसे जैसे आगे जाते थे ऊपर से दोनों तरफ के पहाड़ आपुस में मिलते जाते थे यहाँ तक कि उस पहाड़ी दर्रे ने बहुत ऊँचे खोह या गुफा की सूरत पकड़ ली और तब ये लोग मानो एक साधारण अन्धकार में जाने लगे। और भी कुछ दूर आगे जाने बाद भूतनाथ और भैयाराजा पूर्ण अंधकार में जा फँसे। उस समय दोनों ने अपने घोड़ों को रोका और भूतनाथ ने

भैयाराजा से कहा—"अब तो हमलोग बहुत अन्धकार और भयानक जगह पर आ पहुँचे हैं। यदि सामने से दस पाँच दुश्मन आ कर हम पर हमला करें तो हम लोगों को देखना और उनके हमले का जवाब देना भी कठिन हो जायगा।"

भैया०। बेशक हम लोग बहुत ही बेढब जगह पर आ पहुँचे हैं। हमने तो तुम्हें इनका पीछा करने से मना ही किया था मगर तुमने न जाने क्या समझ कर मेरी बात न मानी।

भूतनाथ०। मुझे विश्वास हो गया कि ये लोग जरूर मेरे बागी शागिर्दों ही में से हैं, पीछा करने से आज ही मुझे इन लोगों का पता मालूम हो जायगा।

भैया०। तुम्हारे बागी शागिर्दों का पता तो मैं खुद तुम्हें दिया चाहता था।

भूत०। मैंने खयाल किया कि उस तरह पता लगाने में बहुत दिन लग जायँगे और ताज्जुब नहीं कि उन लोगों ने अपना सच्चा ठिकाना आपको न दिखा कर आपको धोखे में डाला हो।

भैया०। मगर अब तो तुम उनका पीछा भी नहीं कर सकते और अगर पीछा करो भी तो उनका हाथ लगना असम्भव है।

भूत०। बेशक असम्भव है और रात हो जाने के कारण पीछे हट कर अपने ठिकाने पहुँचना और भी कठिन है। अच्छा अब मैं रोशनी करके एक दफे पुनः आगे बढ़ने की कोशिश करता हूँ।

भैया०। और अगर आगे चल कर अधिक दुश्मनों से मुकाबला हो गया तब क्या होगा?

भूत०। अब जो कुछ प्रारब्ध में लिखा हुआ होगा सो होगा। अफसोस! इस समय मेरे पास वह अनूठी तलवार न हुई जो मैंने प्रभाकरसिंह की कमर से पाई थी! कम्बख्त दुश्मन ने मुझे बेहोश करके वह तलवार ले ली।

भैया०। यह तो दस्तूर की बात है कि जब आदमी लाचार होता है तो उसे प्रारब्ध या दैव याद पड़ता है! मुझे उस तलवार का हाल अच्छी तरह मालूम है जो तुमने प्रभाकरसिंह से पाई थी। खैर उसके लिए तुम चिन्ता मत करो, मेरी कमर में भी इस समय वैसी ही एक तलवार है।

भूतनाथ०। (आश्चर्य से खुश हो कर) जो गुण उस तलवार में था

वही गुण आपकी तलवार में भी है ? तब तो मेरी हिम्मत किसी तरह टूट नहीं सकती !!

भैया० । बेशक इसमें भी वही गुण हैं, समझ लो कि यह उसी के जोड़ की तलवार है मगर यह न समझना कि यह तुम्हारी ही तलवार है या मैं ही ने वह तुम से छीन ली थी ।

भूत० । नहीं नहीं भला ऐसा मैं क्यों समझूँगा, आप तो नाहक मुझे शर्मिन्दा करते हैं ! अच्छा तो अब वह तलवार आप अपने हाथ में ले लीजिये और मैं अपने बटुये में से रोशनी का सामान निकाल कर आगे बढ़ने की कोशिश करता हूँ ।

भैया० । अच्छा मैं वह तलवार निकाल लेता हूँ, तुम रोशनी करो ।

भूतनाथ ने अपने बटुए में से रोशनी का सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और फिर दोनों आगे की तरफ बढ़े । उस खोह की लम्बाई चौड़ाई इतनी बड़ी थी कि ये दोनों खुले तौर पर घोड़ों पर सवार बखूबी आगे बढ़ते चले गये ।

आधे घण्टे बराबर चले जाने बाद ये दोनों आदमी खोह खतम करके मैदान में जा निकले और तब मालूम हुआ कि अभी सूर्य भगवान के अस्त होने में कुछ देर है । ये लोग एक बहुत बड़े मैदान में जिसमें बहुत से जङ्गली दरख्त भी लगे हुए थे जा पहुँचे जिसके चारो तरफ ऊँचे ऊँचे पहाड़ थे और बीच में चौथाई कोस का वह मैदान था ।

जिस तरह जङ्गली कोल और भिल्ल अपने रहने के लिए जंगली पेड़ों का काट काट कर कुटिया बनाते हैं, उसी तरह की कई झोपड़ियाँ उस मैदान में बनी हुई थीं और इधर उधर पेड़ों के साथ बँधे सात आठ घोड़े भी दिखाई दे रहे थे मगर किसी आदमी की सूरत इन दोनों को दिखाई न दी ।

भूतनाथ और भैयाराजा घोड़े से नीचे उतर पड़े और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये ! हमलोगों का यहाँ आना तो बिल्कुल ही बेकार मालूम पड़ता है । अब रात भी हुआ ही चाहती है ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि किसी मुश्किल का सामना आ पड़े ।

ये दोनों खड़े खड़े उन कुटियों की तरफ देखते हुए तरह तरह की बातें सोच ही रहे थे कि यकायक आठ दस आदमी झोपड़ियों के अन्दर से निकल कर इन

दोनों की तरफ आते हुए दिखाई पड़े। भैयाराजा ने भूतनाथ से कहा, "गदाधर-सिंह! तुमने बहुत ही नादानी का काम किया जो इन लोगों का पीछा किया! सिर्फ हम दो आदमियों को न मालूम कितने दुश्मनों का सामना करना पड़े और क्या हो। देखो ये लोग लड़ने के लिए मुस्तैद हो कर हमारी तरफ आ रहे हैं।"

तेरहवां बयान

अब हम थोड़ा सा हाल जमानिया का लिखना चाहते हैं क्योंकि वहाँ भैयाराजा की स्त्री बेचारी बड़े ही धर्म सङ्कट में पड़ी हुई है। यद्यपि उसे लोग सदैव ही साध्वी सती और सुसीला समझते रहे हैं परन्तु जब से भैयाराजा ने गायब हो कर अपना ढंग बदला है और छिप छिप कर कई दफे अपनी स्त्री के पास आये हैं तब से उसकी प्रतीष्ठा हीन हो रही है, सभों की निगाह में वह खटकने लग गई है और घर के सभी कोई उस पर व्यभिचार का दोष दबी जुबान से लगाने लग गये हैं। प्रायः सभों ही का यह ख्याल हो रहा है कि इसके पास इस महल में छिप कर आने वाला कोई इसका धर्मविरुद्ध दोस्त है। वह बेचारी पति की आज्ञानुसार इस भेद को छिपा तो रही है परन्तु अपने ऊपर कलंक लगते देख उसका चित्त बड़ा ही दुःखी हो रहा है। जिन बड़े लोगों की निगाह में वह हमेशा ही सीता और सावित्री सी बनी रहती थी आज वे ही लोग उस पर बदकारी का धब्बा लगाने लग गये हैं। यह सब उससे सहन नहीं होता परन्तु क्या करे मजबूर है, उसके पति की आज्ञा ही नहीं कि वह इस भेद को खोले और अपनी चादर पर से कलंक का धब्बा मिटावे। कम्बख्त दारोगा को भी उसे सताने या यह अच्छा मौका मिल गया है। वह बराबर महाराज को समझा कर उसकी तरफ से उनका दिल फेर रहा और उस बेचारी को बदकार साबित करता जाता है। अभी तक वह बेचारी सब कुछ सहती रही और पति की आज्ञा के विरुद्ध उसने कोई काम नहीं किया परन्तु अब उससे रहा नहीं जाता और सहते नहीं बन पड़ता। इधर बहुत दिनों से उसके पास भैयाराजा आये भी नहीं जो वह अपने दिल का हाल उनसे कहती या यह समझाती कि तुम्हारी यह चाल ठीक नहीं पड़ती और इससे लोगों की निगाह में तुम बेइज्जत हुआ चाहते हो। उसके पास एक दो बहुत नेक और

बुद्धिमान नमकहलाल लौंडियाँ हैं जिनकी जुबानी उसे सब तरह का हाल मिला करता है और वह जान रही है कि मेरी बेइज्जती दिनों दिन बढ़ती चली जाती है, ताज्जुब नहीं कि किसी दिन महाराज मुझे खुल्लम खुल्ला दोषी कह कर मार डालने का आज्ञा देदें। साथ ही इसके अब उसे पति की भी विशेष चिन्ता पड़ गई है क्योंकि बहुत दिनों से वे उसके पास नहीं आये हैं और न उनकी कुछ खबर ही मिली है। क्या करे? कहाँ जाय किससे अपने दिल का हाल कहे? और किस तरह अपने माथे का टीका मिटावे, वह प्रायः इसी तरह की चिन्ता में डूबी रहती है। इस समय भी हम उसे ऐसी ही अवस्था में देख रहे हैं। दोपहर का समय है, घर के सरदार लोग औरत मर्द सभी कोई खा पी कर अपने अपने कमरे में आराम कर हैं परन्तु वह बेचारी अपनी मलिन चारपाई पर बैठी हुई तलहत्थी पर गाल रक्खे इन्हीं सब चिन्ताओं में निमग्न है, तनोबदन की कुछ भी खबर नहीं है, कुछ भी नहीं मालूम कि मेरे पास कौन खड़ा है और क्या कह रहा है परन्तु उसकी नेक लौंडी कुछ देर से उसके पास खड़ी है और कुछ कहने की इच्छा से उसे तीन बार संबोधन कर चुकी है। कुछ देर बाद उसने आप ही आप एक लंबी साँस लेकर सर उठाया और दर्वाजे की तरफ देखने की इच्छा की। उस समय उसकी निगाह लौंडी पर पड़ी और उसने ताज्जुब के साथ उससे पूछा, "बेला! तू कब से यहाँ खड़ी है।"

बेला०। मैं तो बड़ी देर से यहाँ खड़ी हूँ बल्कि तीन दफे आपको बुला भी चुकी हूँ।

भैयाराजा की स्त्री०। हैं! तीन दफे मुझे बुला भी चुकी है!!

बेला०। जी हाँ।

भैया की स्त्री०। क्या कुछ नई खबर लाई है।

बेला०। जी हाँ मैं आपके लिये कुछ खुशखबरी लाई हूँ!

इतना कह कर बेला ने उसके हाथ में एक चीठी दे दी। यह चिठी भैयाराजा के हाथ की लिखी हुई थी जिसकी लिखावट को उनकी स्त्री अच्छी तरह पहिचानती थी। चीठी देखते ही उसका कलेजा धड़कने लगा और उसने बड़ी उत्कंठा से उस चीठी को पढ़ना आरम्भ किया। यह लिखा हुआ था:—

प्राणवल्लभे !

मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि इधर बहुत दिन बीत जाने पर भी तुमसे मिल न सका, तथापि आशा है कि तीन चार दिन तक में किसी न किसी तरह तुमसे मुलाकात जरूर करूँगा। दारोगा ने मेरे साथ जैसा बर्ताव किया है उसे मैं कदापि भूल नहीं सकता। ईश्वर ही ने मेरी जान बचाई। मेरा इस तरह गायब होना मेरे दोस्तों को बुरा मालूम होता है। वे कहते हैं कि तुम्हारा यह ढंग बिल्कुल ही अनुचित है। तुम्हारी भी यही राय है परन्तु मैं देखना चाहता हूँ कि मेरे भाई साहब मेरे लिये क्या करते हैं और उनके दिल में मेरी कितनी मुहब्बत है ! अभी तक तो मैंने कुछ भी नहीं देखा और तबियत को कुछ भी चैन नहीं मिला, अब भविष्य में देखा जाय कि क्या होना है। इधर मैं कई तरह की घटनाओं का शिकार हो रहा हूँ तथापि कुशल पूर्वक हूँ, तुम किसी तरह की चिन्ता न करना। अब कोई ऐसा बन्दोबस्त करना जिसमें महाराज का और तुम सभों का डेरा खास बाग में जाय। वहाँ ही मुलाकात कर सकूंगा।

तुम्हारा—शंकर

इस चिठी को पढ़ कर भैयाराजा की स्त्री बहुत प्रसन्न हुई। उसके चित्त से एक बोझ सा उतर गया और वह सोचने लगी कि अब मैं हर तरह से अपनी बदनामी को बचा सकूंगी, अब मुझे कलंकित करने वाला कोई भी न रहेगा, जब हर तरह से मजबूर हो जाऊँगी तो दुश्मनों का वार बचाने के लिये इसी चीठी को ढाल बनाऊँगी। अन्त में उसने बेला से पूछा कि यह चीठी तुझे किसने दी ? जिसके जवाब में बेला ने कहा कि जिस आदमी ने यह चीठी तुम्हारे पास पहुँचाने के लिये मुझे दी उसे मैं नहीं पहिचानती, जब मैं तुम्हारे पूजा के लिये चन्दन खरीदने बाजार गई थी तब वह आदमी मुझे मिला था। इस चीठी को हिफाजत से तुम्हारे पास पहुँचाने की ताकीद करके वह न मालूम कहाँ चला गया।

भैयाराजा की स्त्री की लौंडियों में यह बेला लौंडी बहुत ही विश्वासपात्र थी, साथ ही इसके यह बुद्धिमान और चालाक भी ऐसी थी कि राजा के महल में

कोई भी ऐसी लौंडी न थी जो किसी बात में इसका मुकाबला कर सकती। इसके अतिरिक्त इसमें बहुत अनूठा गुण यह था कि यह छोटे बड़े सभों ही को खुश रखती और जरूरत पड़ने पर सभों ही का थोड़ा बहुत काम कर दिया करती। यही कारण था कि बेला का काम भी बहुत जल्द निकल जाया करता और समय पड़ने पर सभी कोई उसकी मदद के लिये तैयार हो जाते।

बेला यद्यपि मजदूरनी थी मगर उसका दिल अमीराना था। खाना पीना पहिरना सभी बातों में उसकी सफाई बढ़ी चढ़ी थी और यद्यपि उसे रुपये पैसे की आमदनी बहुत ज्यादे थी मगर वह बटोरना या जमा करना नहीं जानती थी, जो कुछ उसके हाथ में आता सभी खर्च कर देती और इस सबब से वहाँ के सभी आदमी कुछ न कुछ उसके अहसान से दबे रहते थे। यह सब कुछ था मगर वह अपने मालिक और मालकिन की बहुत ही खैरख्वाह थी और उनके साथ सच्ची मुहब्बत रखती थी और वे दोनों भी उसे दिलोजान से चाहते थे। भैयाराजा के छिप कर इस महल में आने जाने का हाल बेला अच्छी तरह जानती थी परन्तु इस भेद को वह भी उसी तरह छिपाये हुए थी जैसा कि उसकी मालकिन अर्थात् भैयाराजा की स्त्री। जब कि भैयाराजा का भेद बेला को मालूम था तब समझ रखिये कि दारोगा की शैतानी का हाल या जो कुछ दारोगा ने भैयाराजा के साथ सलूक किया था वह भी बेला जरूर जानती थी। बेला की उम्र यद्यपि चालीस वर्ष के ऊपर होगी परन्तु वह काम काज और दौड़ धूप में बड़ी ही मेहनती थी। आसकता तो उसके हिस्सा में थी ही नहीं। बेला ने पुनः भैयाराजा की स्त्री से कहा, "रानी! मैं और लोगों की तरह तुम्हें केवल दिलासा देना और समझाना बुझाना पसन्द नहीं करती बल्कि होशियार कर देने की नीयत से तुम्हें हमेशा चौकन्ना रहने के लिये बारम्बार ताकीद करते रहना ही पसन्द करती हूँ। यद्यपि भैयाराजा जी को इस चीठी का आ जाना तुम्हारे लिये बहुत ही अच्छा सगुन है और यह तुम्हारे लिये बहुत ही अच्छा मसाला हो सकता है परन्तु फिर भी मैं कहती हूँ कि आज कल का जमाना तुम्हारे लिये अच्छा नहीं है। भैयाराजा जो न मालूम क्या समझ कर अभी तक छिपे हुए हैं और यहाँ आ कर खुलेमैदान कार्रवाई करना पसन्द नहीं करते! जहाँ तक मैं देखती और समझती हूँ उनके ऐसा करने से कम्बख्त दारोगा का जोर बढ़ता ही जाता है और महाराज की

निगाह में दिनों दिन उसकी कदर बढ़ती ही जाती है। ताज्जुब नहीं कि एक दिन भैयाराजा जी का सामना हो जाने पर वह उन्हीं को झूठा बनावे। मैंने यह भी सुना कि वह आज कल तुम्हें मरवा डालने की धुन में लगा हुआ है और बदनाम करने की कार्रवाई तो वह रोज ही किया करता है।

भै० स्त्री०। बेला! तेरा कहना बहुत ठीक है, उनकी कार्रवाई से मैं अच्छी तरह से बदनाम हो गई हूँ। दारोगा तो हम लोगों का दुश्मन हई है उसका कहना ही क्या, परन्तु अब मैं इस भेद को खोल देना ही पसन्द करती हूँ क्योंकि इस चीठी के आ जाने से मैं अपनी बेकसूरी साबित कर सकती हूँ यद्यपि उन्होंने चीठी में भी ऐसा करने की इजाजत नहीं दी है।

बेला०। आखिर इस चीठी में उन्होंने लिखा क्या है?

भै० स्त्री०। (चीठी बेला हाथ में दे कर) ले इसे तू खुद पढ़ ले।

बेला०। (चीठी पढ़ के) चाहे जो हो मगर मैं इनके इस विचार की पक्षपाती नहीं हूं। लो इसे रक्खो, बेशक इस चीठी से तुम्हें बहुत सहायता मिलेगी। अब तो मैं इस भेद को खोल देना ही पसन्द करती हूँ। आज कल में रानी साहेबा जरूर तुम से इस विषय में बातचीत करेंगी मुझे ऐसा अन्दाजा मिल चुका है।

भै० स्त्री०। खैर अगर वे इस विषय में मुझसे बातचीत करेंगी तो मैं जो कुछ कहना है साफ साफ कह दूँगी। अच्छा यह तो बता कि इस चीठी का जवाब लिख कर मैं उनके पास भेज सकती हूँ?

बेला०। मैं भी यही चाहती थी कि उन्हें एक चीठी लिख कर यहाँ के हाल चाल की खबर दी जाय मगर लाचार हूँ कि इस चीठी के लाने वाले ने जवाब का इन्तजार नहीं किया और न कुछ जुबानी कहा सुना, बस चीठी हाथ में देकर चलता बना, अब अगर जवाब जाय तो कहाँ और किसके हाथ जाय! उनका कुछ पता ठिकाना भी तो मालूम नहीं है।

भै० स्त्री०। फिर क्या किया जाय? (बाहर की तरफ देखती हुई चौंक कर) ले देख भाभी जी (रानी साहेबा) तो स्वयम् यहां आ रही हैं! आज वे बहुत जल्द सो कर उठ बैठी हैं।

बेला०। मालूम होता है कि वे इसी समय उस विषय में तुमसे बात चीत

किया चाहती हैं भरसक तुम तीन चार दिन के लिए और बचा लो अर्थात भेद खोलने से रुकी रहो क्योंकि इस चीठि में उन्होंने तीन चार दिन में तुमसे मिलने के लिये लिखा है, इसके बाद जैसा होगा देखा जायगा। अच्छा मैं बाहर जाती हूं।

इतना कह कर बोला कमरे के बाहर निकल गई और रानी साहेबा कमरे के अन्दर दाखिल हुईं। भैयाराजा की स्त्री को रानी साहेबा बहुरानी के नाम से सम्बोधन करती थीं इस लिये अब हम भी उन्हें बहुरानी के नाम ही से सम्बोधन करेंगे।

रानी साहेबा को देखते ही बहुरानी उठ खड़ी हुई और प्रणाम करने के बाद उन्हें अपने पलंग पर बैठा के स्वयम् नीचे बैठने लगीं मगर रानी साहेबा ने उसे ऐसा करने न दिया, प्यार से उनका हाथ पकड़ के अपने पास बैठा लिया और इस तरह उन दोनों में बातचीत होने लगी।

इस जगह हम इतना कह देना जरूरी समझते हैं कि इन दिनों महल के प्रायः सभी आदमी बहुरानी पर दोषारोपण कर रहे थे परन्तु रानी साहेबा उसे बहुत चाहती और प्यार करती थीं तथा उनका दिल बहुरानी को कलंकित करने का साहस नहीं करता था।

रानी०। बहुरानी! तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना चाहती और प्यार करती हूँ और यह भी तुम से छिपा हुआ न होगा कि आज कल तुम्हारे विषय में लोगों का खयाल कैसा हो रहा है? क्योंकि कई दफे किसी आदमी को कमन्द के सहारे तुम्हारे कमरे में आते हुए लोगों ने देख लिया है।

बहु०। बेशक मैं जानती हूँ कि इस महल में मुझे मानने और प्यार करने वाला अगर कोई है तो सिवाय आपके दूसरा नहीं। साथ ही इसके लोगों का दिल भी जिस तरह मेरी तरफ से फिर रहा है उसे मैं खूब समझती हूँ। यदि आपकी कृपा मेरे ऊपर न होती तो न मालूम अब तक लोग मुझे किस दर्जे को पहुँचा चुके होते। यद्यपि इस विषय में आपने अभी तक मुझसे कुछ भी नहीं पूछा है तथापि मैं सपथ पूर्वक सच सच आपसे कहती हूँ कि मैं व्यभिचारिणी नहीं हूँ, पापिनी नहीं हूँ और मुझ पर बदचलनी का धब्बा नहीं लग सकता। यद्यपि यह सच है कि मेरे पास एक आदमी कई दफे आ चुका है परन्तु वह

आदमी ऐसा नहीं है कि मेरे पास आने लायक न हो अथवा उसके आने से मैं किसी तरह बदनाम हो सकूं। यह भेद अब बहुत दिनों तक छिपा न रहेगा, पाँच चार दिन के अन्दर आप से आप खुल जायगा और तब आपको मालूम होगा कि मैं कहाँ तक सच्ची हूँ।

रानी०। (आश्चर्य के साथ) क्या तुम्हारे पास आने वाला कोई ऐसा आदमी है जिसे मैं जानती हूँ?

बहु०। बेशक आप जानती हैं और उसे लड़के के समान मानती तथा प्यार करती हैं। चार पाँच दिन के अन्दर ही आप पर यह भेद खुल जायगा।

रानी०। ओफ! तुम्हारे इस कहने से तो मेरी उत्कण्ठा और भी बढ़ गई! चार पाँच दिन तक सब्र करना मेरे लिये बड़ा ही कठिन है खास करके ऐसी अवस्था में जब कि वह भेद तुम्हें मालूम है और तुम हर तरह से मेरी दिलजमयी कर सकती हो अगर तुम मुझपर भरोसा रखती हो और मेरी तरह तुम भी मुझे प्यार करती हो तो मुझसे तुम्हें कुछ छिपाने की जरूरत नहीं है। हाँ इस बात का मैं तुमसे वादा करती हूँ कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मैं यह भेद किसी पर प्रगट न करूँगी जब तक तुम कहोगी इसे दिल की तरह छिपाये रहूँगी। ले अब तुम यह बता दो कि यह मामला क्या है?

बहु०। (कुछ सोच कर) लाचार हूँ कि आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं जिद्द नहीं कर सकती परन्तु मैं यही चाहती थी कि अपने पति की आज्ञा का पालन करूँ और स्वयम् इस भेद को अपने मुँह से न खोलूँ।

रानी०। (बड़े आश्चर्य से) तो क्या यहाँ तुम्हारे पास आने वाले भैयाराजा ही हैं?

बहु०। जी हाँ! अब इस भेद का छिपाना मैं आपही के सुपुर्द करती हूँ, यद्यपि मैं स्वयम् इसके विरुद्ध हूँ और नहीं समझ सकती कि ऐसा करने में उन्होंने क्या फायदा समझ रक्खा है? अगर कुछ फायदा है तो यही कि मैं व्यर्थ बदनाम होती हूँ।

रानी०। बेशक उन्होंने यह काम अच्छा नहीं किया। तुम देखती हो कि उनके गम में उनके भाई की क्या दशा हो रही है? चन्द ही रोज में कैसे

दुबले हो गये हैं ? भला यह कुछ तुम्हें मालूम है कि उनके गायब होने का कारण क्या है।

बहु०। हाँ मालूम है। दारोगा साहब उनका जीते रहना पसन्द नहीं करते और उन्हें मार डालने की फिक्र में लगे हुए थे। एक दिन मौका पाकर दारोगा साहब ने उन्हें अपने खयाल से मार कर जमीन के अन्दर अपने मकान में गाड़ दिया मगर उनके किसी दोस्त ने उन्हें वहाँ से निकाल कर उनके बदले में दूसरा आदमी वहाँ गाड़ दिया। ईश्वर की मर्जी थी कि उनकी जान बच गई। दारोगा को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है, शायद ही उसने वह लाश निकाल कर देखी हो और उसे कुछ आश्चर्य हुआ हो। यही सबब है कि वे भूत बन कर एक दफे भाई जी (राजा साहब को) दिखाई दिये थे और राजा साहब को उन्होंने जमीन पर लिख कर बता भी दिया था कि मुझे दारोगा ने मार डाला है।

रानी०। (आश्चर्य और क्रोध से) जो कुछ तुम कहती हो बेशक सच होगा। मैं उस कम्बख्त दारोगा की बदमाशी को खूब जानती हूं मगर बड़े ही दुःख की बात है कि राजा साहब को उसने वश में कर रक्खा है और वे उसे पूरा योगी और महात्मा ही समझे बैठे हैं। सबूत देने पर भी वे दारोगा को बुरा न समझेंगे और बिना सबूत के तो दारोगा के विषय में किसी को जुबान हिलाने की ताकत ही कहाँ है। अब जो यह सब हाल अगर राजा साहब से कह दूं तो वे मुझे और तुझे कदापि सच्चा न समझेंगे इसलिए इस भेद को अभी छिपाये रखना ही उचित है। खैर देखूंगी कि कम्बख्त दारोगा कहाँ तक साधू और महात्मा बनता है, दस पाँच दिन के बाद मौका देख कर मैं गोपाल (कुंअर गोपालसिंह) से बातचीत करूंगी वह बेचारा भी अपने बाप की बदौलत धोखे में पड़ा हुआ है। अच्छा यह तो बता कि आज कल भैयाराजा कहाँ हैं और किस फिक्र में हैं ? क्या इन दिनों यहाँ आये थे ?

बहु०। नहीं वे तो उस दिन के बाद फिर कभी नहीं आये जिस दिन उनके आने के कारण पिछले नजरबाग में कोलाहल मचा था। वह भी दारोगा ही का काम था। हाँ आज उनकी एक चीठी आई है।

रानी०। क्या वह चीठी मैं देख सकती हूं ?

बहुरानी०। हाँ हाँ आप देखें (चीठी दे कर) आप से भला मैं क्यों छिपाने लगी ?

रानी०। (चीठ पढ़ कर) खैर इस चीठी को पढ़ कर मुझे यह तो ढाढ़स हुई कि बेचारे भैयाराजा अभी तक कुशल पूर्वक हैं। नहीं तो उनके विषय में कैसे कैसे बुरे गुमान पैदा होते थे ! बहुरानी तू बेशक सच्ची और साध्वी है, मुझसे कसूर हुआ कि मैंने तुझ पर शक किया। पहिले पहिल जब मुझे इस बात की खबर लगी कि तेरे पास कोई आदमी छिप कर आता है, तो मारे गुस्से के मैं जल भुन कर कबाब हो गई, बिना कुछ सोचे बिचारे महाराज को भी इस बात की खबर कर दी और उस समय तो मेरे रञ्ज का कोई हद्द न रहा जब जाँच करने पर यह बात सच निकली। राजा साहब को भी इस बात का बड़ा ही दुःख हुआ मगर अब मैं अपनी भूल पर पछताती हूं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मैं तुझसे मुहब्बत रखती हूं और यही सबब है कि अपनी भूल साफ साफ बता देती हूं, छिपाने और बातें बनाने की कोई जरूरत नहीं समझती। अब मुझे इस बात की फिक्र पड़ गई कि महाराज का आइना रूपी दिल किस तरह साफ किया जाय जो कि तेरी तरफ से गदला हो गया है और कम्बख्त दारोगा दिनों दिन उसकी गंदगी और भी बढ़ा रहा है। इस भेद को खोल कर दारोगा पर जुर्म लगाना भी इस समय उचित नहीं जान पड़ता, कदाचित वादे के मुताबिक भैयाराजा यहाँ न आये तो हमलोग मुफ्त में झूठे और बेईमान ठहराये जायँगे। दारोगा को इस बात का भी मौका मिल जायगा कि हमारे सीधे साधे महाराज को हमलोगों की तरफ से भी रञ्जीदा कर दे।

बहु०। आपका विचार बहु ठीक है, मैं क्या कहूँ मेरी तो कुछ अक्ल ही काम नहीं करती। जो कुछ ठीक ठीक बात थी वह मैंने आपसे साफ साफ कह दी, अब जो आप मुनासिब समझें करें।

रानी०। अच्छा यह चीठी किसके हाथ आई है ? इसका कुछ जवाब भी तूने दिया है या नहीं ?

बहु०। बेला मेरे लिए चन्दन खरीदने बाजार गई थी, वहाँ ही एक आदमी ने उसे यह चीठी देकर मेरे पास पहुँचाने की ताकीद की और बिना कुछ जवाब पाये जल्दी के साथ वहाँ से चला गया। मैं नहीं समझ सकती कि इसका

जवाब उन्हें क्योंकर दिया जाय। खैर अब आप कोई ऐसा बन्दोबस्त करें जिसमें हमलोगों का और महाराज का डेरा कुछ दिन के लिए खासबाग * में जाय, फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

रानी०। यह कौन बड़ी बात है आज ही मैं इसका बन्दोबस्त करती हूँ। आशा है कि कल हमलोग खासबाग ही में दिखाई दें। वहाँ अगर भैयाराज से मुलाकात होगी तो उन्हें समझाना चाहिये कि 'दारोगा से बदला लेने के लिए तुम्हारा यह ढंग समयानुकूल नहीं है। तुम तो घर के सर्दार ठहरे, तुम्हें खुल्लम-खुल्ला दारोगा का मुकाबला करना चाहिये।'

बहु०। अबकी दफे अगर वहाँ उनसे मुलाकात हुई तो मैं जरूर आपका सामना कराऊँगी, आप उन्हीं की जुबानी सुनेंगी कि दारोगा ने उनके साथ कैसा बर्ताव किया था।

रानी०। मैं बहुत खुश होऊँगी अगर तुम मुझे उनसे मिलाओगी कम्बख्त दारोगा को मैं अच्छी तरह पहिचान गई हूँ। जब तक उस कम्बख्त को सजा न दी जायगी मेरे जी को चैन न पड़ेगा। आज दामोदरसिंह ने अपनी स्त्री को मेरे पास भेजा था और बहुत ही गुप्त रखने की ताकीद करते हुए यह कहला भेजा था कि—"दारोगा से होशियार रहना, वह तुमको और बहुरानी को मार डालने की फिक्र में है और चाहता है कि बलभद्रसिंह की लड़की से गोपालसिंह की शादी न होने पावे।"

बहु०। मुझे भी उड़ती हुई यह खबर लगी है।

रानी०। खैर जो होगा देखा जायगा, जितने दिन की जिन्दगी विधाता ने हमलोगों को दे रक्खी है उतने दिन तो कोई मारने वाला नहीं है और इसके अलावे जो कोई जैसा करेगा वैसा फल पावेगा।

बहु०। ईश्वर हमारा सहायक है आप किसी तरह की चिन्ता न करें। आप खास बाग में चलने की फिक्र करें फिर जैसा होगा देखा जायगा।

रानी०। कल जरूर हमलोग खासबाग में चले जायँगे, कुछ सामान वगैरह लादने की जरूरत तो है नहीं कि तरद्दुद करना पड़े, जिस तरह यहाँ सब सामान दुरुस्त है उसी तरह वहाँ भी किसी चीज की कमी नहीं है।

* खासबाग का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है जिसमें मायारानी रहा करती थी।

इसके बाद थोड़ी देर तक और भी इन दोनों में बातें होती रहीं और अन्त में रानी साहेबा बहुरानी को समझा बुझा कर वहाँ से चली गईं।

रानी साहेबा की इच्छानुसार महाराज ने भी खासबाग ही में जाना स्वीकार किया। दूसरे दिन प्रातःकाल खासबाग ही में महाराज का दरबार हुआ। बहुरानी और रानीसाहेबा भी खासबाग में अपने अपने ठिकाने जा विराजीं जहाँ वे सब प्रायः रहा करती थीं। उस दिन तो कोई घटना हुई नहीं मगर दूसरे दिन सूर्य उदय होते ही रानी साहेबा और बहुरानी को यह खबर लगी कि 'आज चौकबाजार में दारोगा साहब ठीक चौमुहाने पर बेहोश पाये गये। एक कान कटा और मुँह में कालख लगी हुई थी तथा गले में पुराने जूतों का हार पड़ा हुआ था। होश में आने के बाद उसी सूरत से वे महाराज के पास चले आ रहे हैं।'

चौदहवां बयान

देखते ही देखते भैयाराजा और भूतनाथ को कई दुश्मनों ने आकर घेर लिया और सभों ने उन पर वार करना शुरू किया मगर वाहरे भूतनाथ ? जिस तरफ वह तलवार घुमाता हुआ टूट पड़ता था उस तरफ दुश्मनों के दिल भी टूट जाते थे। यद्यपि भूतनाथ के बदन पर कई जख्म लगे परन्तु पाँच आदमियों को उसने बेकार करके जमीन पर सुला दिया। भैयाराजा की तो बात ही न्यारी थी, उनकी तिलिस्मी तलवार की बदौलत जो दुश्मन उनके सामने आया जख्मी और बेहोश होकर जमीन पर जा रहा और किसी को तनोबदन की खबर न रही मगर भैयाराजा का भी बदन जख्मी होने से बचा न रहा।

अब पुनः उस मैदान में केवल भूतनाथ और भैयाराजा दिखाई देने लगे। यद्यपि उस समय उन्होंने अपने दुश्मनों पर फतह पाई थी मगर इन दोनों का शरीर भी थकावट से चूर चूर हो रहा था। एक तो सफर की हरारत दूसरे दुश्मनों से लड़ाई होने के कारण ये दोनों ऐसे थक गये कि अब तलवार का हाथ हिलाना भी कठिन सा हो गया था, साथ ही इसके दिल में दुश्मनों की तरफ से बेफिक्री भी नहीं होती थी। यही सोचते थे कि शायद और दुश्मनों का सामना हो जाय तो मुश्किल होगी क्योंकि अब रात हो गई है जिसके कारण दुश्मनों का वार बचाना और भी कठिन हो जायगा।

भैयाराजा और भूतनाथ दोनों आदमी एक पेड़ के नीचे बैठ गये और तरह तरह की बातें सोचने लगे।

भैया०। भूतनाथ! मैं इस समय तुम से पुनः एक सवाल किया चाहता हूँ।

भूत०। कहिये?

भैयाराजा०। तुम ठहरे दारोगा साहब के दोस्त, चाहे वह दोस्ती जाहिरदारी और खुदगरजी ही के साथ क्यों न हो, मगर मैं हूँ दारोगा साहब का दुश्मन, क्योंकि उसने मुझे मार डालने में किसी तरह की कसर नहीं उठा रक्खी थी और इस बात को तुम खुद ही जानते हो और तुम उसके सहायक ही थे, या यों भी कह सकते हैं कि तुम्हारी ही मदद करते हुए दारोगा को मेरे साथ दुश्मनी करने की जरूरत आ पड़ी थी.....

भूत०। (बात काट कर) अब आप कृपा कर इन सब शर्मिन्दा करने वाली बातों को तो जाने दीजिये, मैंने जो कुछ किया वह आपसे छिपा हुआ नहीं है। मैं खुद कह चुका हूँ कि मुझसा पापी और पतित इस दुनियां में कोई दूसरा न होगा, भविष्यत् के लिये अपना रास्ता बदलने की कसम खाता हुआ आपसे माफी माँग चुका हूँ और आपने मुझे माफी देकर अपना बना लिया है अस्तु अब पुनः जब तक आप मुझे पाप करते हुए न देखें या सुने तब तक आपको ऐसी बात.....

भैया०। (बात काटते हुए) नहीं नहीं भूतनाथ! मेरे इस कहने का यह मतलब नहीं है कि तुम्हें उन सब बातों की याद दिला कर शर्मिन्दा करता हूँ तुम मेरी बात तो पूरी तरह सुन लो। मैं कहता हूँ कि तुम अभी दारोगा से दोस्ती रक्खा चाहते हो और मैं उससे बदला लेने की फिक्र में हूँ ऐसी अवस्था में अगर इस जगह दारोगा से मुलाकात हो जाय तो तुम उसके साथ कैसा सलूक करोगे। क्योंकि ताज्जुब नहीं कि यह कार्रवाई दारोगा की तरफ से की गई हो, ये सब उसी के आदमी हों और यहाँ खुद उससे मुलाकात भी हो जाय! मेरा दिल घड़ी घड़ी इन्हीं बातों की तरफ ढुलकता है।

भूत०। जमना और सरस्वती के विषय में निस्सन्देह दारोगा ने मेरी मदद की थी जिसके लिये मुझे उसका शुक्रगुजार होना चाहिये था मगर अब जब कि मैंने अपना रास्ता बदल दिया तो अपने पहिले के पापकर्म में साथ रहने वाले

पापी भाइयों के साथ भाईचारे का बर्ताव नहीं कर सकता। यद्यपि किसी कारण से मैं उसके साथ जाहिरदारी का बर्ताव कर रहा हूँ सही मगर अब तो मुझे उसकी भी जरूरत न रही क्योंकि अब न तो मुझे जमना सरस्वती इत्यादि के साथ दुश्मनी करनी है और न मुझे उससे कुछ काम लेने की जरूरत ही जान पड़ती है, मैंने तो अब अपने को दयामय परमात्मा के भरोसे पर छोड़ दिया है और आपकी शरण में आ गया हूँ, अस्तु जो कुछ होनी हो सो हो, मैं आपका ताबेदार आपके साथ हूँ, आप जो आज्ञा करेंगे वही करूंगा।

भैया०। खैर तुम्हारी तरफ से तो मेरी दिलजमई हो ही चुकी थी अब पुनः हो गई मगर अफसोस यह है कि इन्द्रदेव अभी तक दारोगा के साथ हजार दुःखी होने पर भी कोई खोटा बर्ताव नहीं किया चाहते और मैं इन्द्रदेव के विरुद्ध कोई काम न करूंगा।

भूत०। बेशक ऐसा ही है। मुझे भी इन्द्रदेव का खयाल है और साथ ही इसके दारोगा की जात से दयाराम जी का पता लगाना भी जरूरी है।

भैया०। (चौंक कर) वह देखो सामने से रोशनी कैसी आ रही है!!

भूत०। कोई आदमी लालटैन लिये हुए इसी तरफ आ रहा है।

भैया०। क्या इसे भी हम अपना दुश्मन ही समझें।

भूत०। ऐसे मौके पर दोस्त की उम्मीद कब हो सकती है? अगर हो भी तो हमें अपनी तरफ से होशियार ही रहना चाहिये। उसका साथी कोई मालूम नहीं पड़ता। चलिये हमलोग आगे चलें।

यद्यपि ये दोनों आदमी बहुत सुस्त हो रहे थे तथापि हिम्मत कर के उठ खड़े हुए और म्यान से तलवार निकाले हुए उस तरफ बढ़े जिधर से वह आदमी लालटैन लिये हुए आ था। अन्धेरी क्षण क्षण में बढ़ती जाती थी और आदमी के बदन की हरकत दिखाई नहीं पड़ती थी फिर भी वह आदमी तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ वे खौफ इन दोनों के पास आ पहुँचा और बोलाः—

आदमी०। भैयाराजा जी! दुश्मनों के घर में भी अकसर दोस्त दिखाई दे जाया करते हैं, देखिये मेरे हाथ में सिवाय इस लालटैनके और कोई हर्बा नहीं है। कहिये इस लालटैन का और मुझ "मेघराज" का आप मुकाबिला कर सकते हैं?

भैया०। (उत्साह से भरीहुई आवाज में) जब तक "मेघराज" गरजेंगे नहीं

तब तक मैं मुकाबिला करने के लिये तैयार हूँ। आओ मेरे प्यारे दोस्त! तुम खूब आये और अच्छे मौके पर आये, शायद इस जगह तुम कुछ मेरी मदद कर सको।

मेघ०। बेशक मैं आपकी मदद कर सकता हूँ। एक नहीं अगर आपके हजार दुश्मन भी यहाँ आ जाँय तो मैं अकेला आपको उनसे बचा सकता हूँ।

इतना कहकर मेघराज ने अपना अंग झटकारा और उसके तमाम बदन से खौफनाक चिनगारियाँ निकलने लगीं जिसे देख कर भूतनाथ हैरान हो गया और डर कर कई कदम पीछे की तरफ हट गया। इसके बाद मेघराज ने सिर्फ भूतनाथ को दिखाने की नीयत से लालटैन ऊंची की जिससे उसके तमाम बदन की अवस्था साफ साफ दिखाई देने लगी। भूतनाथ ने देखा कि वह एक बहुत ही बारीक सुनहरी तार से बना हुआ सुन्दर कवच पहिरे हुए है जिससे उनका सिर से पैर तक हर एक अंग बखूबी महफूज जान पड़ता है और वह कवच ऐसी खूबी के साथ बना हुआ है कि हाथ पैर और ऊंगलियाँ इत्यादि कुछ भी हिलाने में किसी तरह की अन्डस नहीं मालूम पड़ती। उसी ढंग के बनावट की एक टोपी भी उसके सर पर थी जिसके पिछली तरफ की झालर गरदन के नीचे तक लटक रही थी जिसमें उसकी गरदन पर भी कोई हर्बा काम नहीं कर सकता था। केवल इतना ही नहीं कि उसने कवच से अपने बदन को रक्षित कर रक्खा था बरन् वह चाल ढाल और रंग ढंग से भी बहादुर मालूम होता था तथा कसरती और बदन का गठीला जान पड़ता था। मेघराज ने लालटैन नीची करके पुनः भैयाराजा से कहा:—

मेघराज। मैं इत्तफाक ही से यहाँ आ पहुँचा हूँ, मुझे इस बात की पहिले कुछ भी खबर न थी कि आपके दुश्मन यहाँ आप ही के लिये आये हुए हैं और उन्होंने आपको फंसाने के लिये यहाँ कोई कार्रवाई कर रक्खी है अथवा आप यहाँ आकर दुश्मनों से घिर गये हैं। मुझे तो ईश्वर ने अकस्मात यहाँ पहुँचा दिया मैं उतरती समय पहाड़ के उपर से आप लोगों की लड़ाई देख रहा था और बहुत जल्द आपके पास पहुंचने की कोशिश कर रहा था परन्तु रास्ता ऐसा खराब है कि हजार कोशिश करने पर भी मैं समय पर आपके पास न पहुँच सका कि आपकी मदद करता तथापि मैं जानता था कि आपके पास तिलिस्मी तलवार

मौजूद है जिससे सिर्फ इतने दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और इस सबब से मुझे ढाढ़स भी बंधी हुई थी। मैं परसों से इन लोगों को यहां आते जाते देख रहा हूं मगर कारण कुछ समझ में नहीं आता था और इस समय भी मैं इन्हीं लोगों के देखने को आ रहा था। आपको शायद यह बात अभी मालूम न हुई होगी कि यह कार्रवाई आपके दारोगा साहब की है और यह सब आदमी भी उसी के हैं।

भैया०। (आश्चर्य्य से) हां !! क्या यह सब आदमी दारोगा ही के हैं ?

मेघ०। जी हां ये सब उसी शैतान के आदमी हैं बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह खुद भी इन्हीं लोगों में कहीं बेहोश पड़ा हुआ हो। इस लालटैन से सभों की सूरत देखने पर मालूम होगा।

भैया०। तो देखना चाहिये वह यहां है या नहीं। तुम जानते ही हो कि जब तक मैं इन लोगों को होश में न लाऊं तब तक ये सब स्वयम् यकायकी थोड़ी देर में चैतन्य नहीं हो सकते।

मेघ०। हां मैं इस बात को और आपकी तिलिस्मी तलवार की तासीर को खूब जानता हूं।

भैया०। अच्छा कुछ यह भी बता सकते हो कि हमारे दुश्मनों में से कोई और भी है या बस इतने ही थे जो इस समय यहां जख्मी और बेहोश पड़े हुए हैं ?

मेघराज०। सो मैं बिना तहकीकात किये नहीं कह सकता खैर चलिये अपने बेहोश दुश्मनों की सूरत तो देखिये, यहाँ अगर और कोई होगा भी तो हमारा क्या कर लेगा।

इतना कह कर लालटैन लिये हुए मेघराज आगे बढ़ा और उसके पीछे पीछे भैयाराजा तथा भूतनाथ चलने लगे। भूतनाथ को मेघराज के विषय में बड़ा ही आश्चर्य था और यह जानने के लिये उसका दिल बहुत ही बेचैन हो रहा था कि यह मेघराज कौन है। इस बात को वह जरूर समझ गया था कि भैयाराजा उसे देखते ही पहिचान न सके इसलिये उसने बात के इशारे ही में अपना परिचय दिया और भैयाराजा ने भी इशारे ही में परिचय देकर अपने को प्रगट

किया। इसमें तो कोई शक नहीं कि यह भैयाराजा का दोस्त है मगर कौन है सो मालूम नहीं होता !!

लालटैन की रोशनी में भैयाराजा ने सभी दुश्मनों की सूरतें देखीं और उनमें से कैदियों को पहिचान भी, बीच ही में दारोगा साहब भी पाये गये जो कि भैयाराजा की तिलिस्मी तलवार से जख्मी हो कर बेहोश हो गये थे।

इस काम से निश्चिन्त होकर तीनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर बातचीत करने लगे और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। उस समय भूतनाथ ने मौका पा कर मेघराज के विषय में भैयाराजा से पूछा कि "यह कौन साहब हैं ? यदि कोई हर्ज न हो तो आप मुझे इनका परिचय दीजिये।" इसके जवाब में भैयाराजा ने भूतनाथ से कहा, "हम लाचार हैं कि इनकी (मेघराज की) इच्छा के विरुद्ध इनका परिचय तुम्हें नहीं दे सकते, ये खुद अगर मुनासिब समझेंगे तो अपना परिचय तुम्हें देंगे।"

भैयाराजा का जवाब पा कर भूतनाथ चुप हो रहा और फिर इसे मेघराज के विषय में कुछ पूछने की हिम्मत न पड़ी !!

भैया०। (मेघराज से) अब बेहोश दुश्मनों के बारे में आपकी क्या राय होती है ? इनके साथ क्या सलूक करना चाहिये ?

मेघ०। यह बात आपकी राय पर है जो आप मुनासिब समझें करें।

भैया०। मैं तो यही चाहता हूँ कि इन सभों को कहीं पर कैद कर दूँ मगर मेरे पास कोई जगह इस योग्य नहीं है।

मेघ०। ठीक है परन्तु यह भी आप जानते ही हैं कि अपने यहाँ मैं इन सभों को नहीं रख सकता अस्तु बेहतर होगा कि इन सभों को कुछ सजा दे कर छोड़ दिया जाय। दारोगा के लिये भी इस समय यही मुनासिब होगा।

भैया०। आप ठीक कहते हैं, इन सभों को नाक कान काट के छोड़ दिया जाय और दारोगा कम्बख्त का सिर्फ दाहिना कान थोड़ा सा काट कर उसे जमानियाँ सदर बाजार के चौमुहाने पर रखवा दिया जाय जिसमें वहाँ के सभी आदमी अपने राजा के वजीर को ऐसी हालत में देख कर खुश हों (भूतनाथ की तरफ देख कर) मैं तो यही मुनासिब समझता हूँ, कहिये आपकी क्या राय है ?

भूतनाथ० । सजा तो बहुत अच्छी तजवीज की गई है । जब कि आप इस दारोगा का सरे दरबार मुकाबिला किया चाहते हैं तो अभी इसे कत्ल करने की जरूरत नहीं है । हुक्म दीजिये तो मैं काम शुरू करूँ ?

भैया० । हाँ अब देर करने की जरूरत नहीं है, इन सभों के नाक कान काट-कर दुरुस्त करें । इन सभों के हर्बे भी ले लेने चाहिये ।

भैयाराजा का हुक्म पाते ही भूतनाथ ने कार्रवाई शुरू कर दी तलवार से सभों के नाक कान काट डाले और अन्त में दारोगा का भी थोड़ा सा दाहिना कान काटने के बाद अपने ऐयारी के बटुए में से स्याही निकाल कर खूब अच्छी तरह उसका मुँह काला किया और कुछ रंग रोगन भी लगा कर उसकी विचित्र सूरत बना दी । इसके बाद एक घोड़े पर उसे कस के कमन्द से अच्छी तरह बाँध दिया ।

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस मैदान में डाकुओं के कई घोड़े भी मौजूद थे, अस्तु उन्हीं घोड़ों में से एक घोड़ा ले कर भूतनाथ ने दारोगा को उस पर कसा और तब भैयाराजा से कहा, "बस अब यहाँ से चलती समय इसको अपने साथ ले चलेंगे और रात को मौका देख कर जमानियाँ के चौमुहाने पर छोड़ देंगे ।"

भैया० । ठीक है (मेघराज से) यहाँ आने का रास्ता बहुत ही टेढ़ा और खराब है, ताज्जुब नहीं कि लौटती समय हमलोग रास्ता भूल जाँय ! क्या यहाँ आने जाने का रास्ता बन्द भी कर दिया जा सकता है ?

मेघ० । जी नहीं । यह तो एक खुली घाटी है, सिर्फ यहाँ आने का रास्ता पेचीला और भयानक होने के कारण कोई इस जगह आता नहीं हाँ इतना जरूर है कि यह घाटी किसी तिलिस्मी घाटी के साथ मिली हुई है और तिलिस्म से भी कुछ सम्बन्ध रखती है । शायद दारोगा को यहाँ का हाल मालूम है आप को नहीं, यद्यपि यह सरजमीन आप ही के राज में है ।

भैया० । बेशक यहाँ का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं ।

मेघ० । मेरा ईरादा था कि मैं रात भर के लिये आप लोगों को यहाँ रोक लेता जिसमें आपलोगों की थकावट रात भर आराम करने से अच्छी तरह मिट-

जाती और कुछ भोजन भी कर लेते। मैं यहाँ बहुत जल्द आप लोगों के खाने पीने का इन्तजाम कर सकता हूँ।

भैया०। अगर ऐसा हो सके तो क्या ही अच्छी बात है, मैं भी यही चाहता हूँ कि कुछ भोजन और बेफिक्री के साथ आराम करने का इन्तजाम हो जाता और इसके पहिले मैं स्नान भी कर लेता मगर खौफ यही है कि कहीं और भी दुश्मन लोग यहाँ न आ जायँ।

मेघ०। अब दुश्मनों के यहाँ आने का आपको खयाल ही क्यों होता है? मेरी मौजूदगी में दो चार सौ दुश्मन आकर भी आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते और अगर यह समझिये कि और लोग आकर आपके इन दुश्मनों को छुड़ा कर ले जायँगे तो इनके लिये भी जो कुछ आप किया चाहते थे कर चुके, अब चाहे ये सब खुद बखुद चले जायँ या इन्हें कोई इनका दोस्त यहाँ आ कर ले जाय काम केवल इतना बाकी है कि दारोगा को जमानियाँ बाजार के चौमुहा पर पहुँचा देना सो इस काम में यदि विघ्न भी पड़ जाय तो आपका कोई हर्ज नहीं है।

भैया०। (कुछ सोच कर) अच्छा तो फिर जैसा आप कहें किया जाय।

मेघ०। बस यही ठीक होगा कि आप दोनों आदमी मेरे डेरे पर चले चलें और दारोगा को जो घोड़े पर लाद दिया गया है उतार कर एक गुफा में जो मैं आपको बताऊँगा रख दें फिर जाती समय पुनः घोड़े पर लाद दिया जायगा।

इतना कह कर भूतनाथ को साथ ले मेघराज ने दारोगा को घोड़े पर से उतार और एक गुफा में जो वहाँ से थोड़ी ही दूर पर थी रख कर उसका मुँह पत्थर से ढाँक दिया। उस समय किसी चीज की रोशनी उस मैदानमें घूमती हुई दिखाई दी जिसे देखते ही मेघराज चैतन्य हो गया और अपनी लालटेन का उसने खटका दबाया जिससे एक मोटा शीशा लालटेन के मुँह पर आ गया जिसके कारण रोशनी तेज हो गई और दूर तक जाने लगी। मेघराज भी उस लालटेन की रोशनी पहाड़ पर दौड़ाने और घुमाने लगा मानो उस पहिली रोशनी का जवाब देता था। पहिले की आई हुई रोशनी उस सरजमीन पर अजीब ढंग से घूम रही थी और मेघराज अपनी लालटेन की रोशनी से उसका जवाब देता था। पास खड़ा हुआ भूतनाथ बड़े आश्चर्य से इस तमाशे को देखने लगा।

भूतनाथ ने यह तो जरूर समझ लिया कि मेघराज रोशनी का जवाब रोशनी से दे रहा है, वह कोई मेघराज का साथी है जिसने वहाँ लालटेन की रोशनी पहुँचाई है, वह रोशनी के इशारे से बात करता है और मेघराज उसका जवाब देता है परन्तु हजार अक्ल दौड़ाने पर भी भूतनाथ को इस बात का पता न लगा कि उन दोनों में रोशनी के इशारे से क्या क्या बातें हो रही हैं और किस तरह के अक्षर बनाये जा रहे हैं।

आधे घण्टे से ज्यादे देर तक मेघराज इस काम में लगा रहा इसके बाद वह रोशनी गायब हो गई और मेघराज ने भी लालटेन से रोशनी देना बन्द करके अपनी लालटेन कोई खटका दबा कर फिर पहिले की तरह दुरुस्त कर ली।

मेघ०। (भैयाराजा से) अच्छा तो अब आप दोनों आदमी मेरे पीछे चले आइये मैं आपको अपने मकान पर ले चलूँ।

भैया०। मैं चलने के लिये तैयार हूँ मगर यह तो बताओ कि इस लालटेन की रोशनी से तुम किस आदमी के साथ बातचीत कर रहे थे और क्या बात कर रहे थे।

मेघ०। अभी मैं इसका जवाब न दूँगा, समय पर आपको स्वयम् मालूम हो जायगा।

भूत०। उस वक्त मालूम हो जायगा जब कि सुनने के लिये मैं आपके साथ न रहूँगा।

मेघ०। (भूतनाथ से) हाँ जी गदाधरसिंह! बेशक यही बात है। तुम्हारे सामने अपना भेद प्रगट करते डर मालूम होता है। चाहे भैयाराजा ने तुम पर भरोसा कर लिया हो मगर और आदमियों को इतनी हिम्मत कहाँ कि तुम पर भरोसा करें!!

भूतनाथ०। निःसन्देह मैं अपने कर्मों की बदौलत ऐसा ही जवाब सुनने के योग्य हूँ!!

मेघ०। आप खफा न हों, मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं आपको बातों से रञ्ज पहुँचाऊँ। आज कल जमाने का ढंग ही कुछ ऐसा हो रहा है कि किसी को किसी पर भरोसा करने का साहस नहीं होता।

भूत०। है तो ऐसा ही, खैर चलिये आप अपना काम कीजिये।

"मेरे पीछे पीछे चले आइये" इतना कह कर मेघराज आगे बढ़ा और भैयाराजा तथा भूतनाथ उसके पीछे पीछे रवाना हुए। तमाम मैदान खतम करके बाद पहाड़ी के ऊपर चढ़ने की नौबत आई। रात का समय होने से यद्यपि चढ़ने में तकलीफ होती थी मगर फिर भी लालटैन का सहारा पाते हुए ये तीनों आदमी बराबर चले गये और लगभग पौन कोस रास्ता चलने के बाद एक ऐसे गुफा के मुँह पर पहुँचे जिसमें खड़ा खड़ा आदमी बखूबी जा सकता था। दोनों आदमियों को साथ लिये हुए मेघराज उस गुफा के अन्दर चला। रास्ता बहुत ही पेचीला घूमघुमौआ था तथा चढ़ाई की तरफ चला गया था। लगभग चौथाई कोस चले जाने बाद वे तीनों आदमी बाहर मैदान में निकले और पुनः कुछ दूर चलने के बाद दूसरे गुफा के अन्दर घुसे मगर उसमें ज्यादे दूर जाना न पड़ा, कुल दो ढाई सौ कदम जाने बाद एक बन्द दर्वाजा मिला जिसे मेघराज ने किसी गुप्त रीति से खोला और अपने दोनों साथियों को अन्दर कर लेने के बाद पुनः दर्वाजा बन्द कर दिया। ध्यान लगाये रहेने पर भी भूतनाथ को दर्वाजा खोलने और बन्द करने का ढंग मालूम न हो सका।

अब ये तीनों आदमी एक ऐसे कमरे में पहुँचे जिसकी लम्बाई बीस गज और चौड़ाई दस गज के करीब होगी। कमरे में सभी तरह का सामान जिनकी जरूरत आदमी को रोज ही पड़ा करती है मौजूद था कमरे के एक तरफ सुन्दर फर्श भी बिछा हुआ था जिस पर दस बारह आदमी बखूबी आराम कर सकते थे। सामने की तरफ तीन दर्वाजे थे जिनमें से इस समय एक दर्वाजा खुला हुआ था जिसमें से मेघराज अपने दोनों साथियों को कमरे के बाहर ले गया। अब ये तीनों आदमी एक छोटे से बाग में पहुँचे जो जंगली गुलबूटों और क्यारियों की बदौलत बहुत ही भला मालूम पड़ता था। पूरब तरफ से उदय हो कर चन्द्रदेव कुछ ऊँचे हो अपनी चाँदनी फैलाने लग गये थे जिससे उस बाग पर और भी जोबन चढ़ रहा था और दिखाई दे रहा था कि यह पहाड़ी बाग तीन तरफ से ऊँची ऊँची पहाड़ियों से घिरा हुआ है। उन पहाड़ियों पर कई सुन्दर सुन्दर मकान और बंगले बने हुए थे जिसमें से चार या पाँच बंगलों के आगे तेज और चाँद का मुकाबला

करने वाली सुफेद रोशनी हो रही थी जिससे वहाँ की सरजमीन पर दूर दूर तक की चीजें बहुत साफ दिखाई दे रही थी और इस बाग पर उनका असर बहुत अच्छी तरह पड़ रहा था भूतनाथ ने देखा कि इस बाग में चार पाँच आदमी भी मौजूद हैं जो न मालूम किस काम में व्यग्र और दौड़ धूप कर रहे हैं।

बाग के बीच सुंदर सङ्गमर्मर का चबूतरा था और उस पर तरह तरह की कई कुर्सियाँ रक्खी हुई थीं। मेघराज उसी चबूतरे पर चला गया और लालटैन रख कर अपने दोनों साथियों को बैठने के लिए कहा।

इस बाग में आने से यद्यपि भूतनाथ और भैयाराजा की तबीयत बहुत प्रसन्न हुई मगर थकावट और भी ज्यादे हो गई थी इसलिए दोनों आदमी आराम कुर्सी पर बैठ गये और पैर फैला कर चाँदनी में चारों तरफ की कैफियत देखने लगे। इस समय भूतनाथ के पेट में कुछ अजीब तरह की खिचड़ी पक रही थी और मेघराज का असल हाल जानने के लिये वह बहुत ही बेचैन हो रहा था।

यहाँ पहुँच कर मेघराज ने जफील बुलाई जिसे सुन कर बात की बात में तीन आदमी वहाँ आ पहुँचे और इशारा पा कर हर तरह का सामान जुटाने लगे। भैयाराजा और भूतनाथ ने स्नान किया और सन्धोपासन से निवृत हो भोजन किया और फिर निश्चिन्त होकर बैठने के बाद आपुस में बातचीत करने लगे। इस समय रात पहर भर ज्यादे जा चुकी थी और चाँदनी भी अच्छी तरह फैल रही थी। सहसा एक आदमी जो हाथ में कोई चीज लिए हुए था इन लोगों के सामने लाया गया जिसे देख कर भूतनाथ चौंक पड़ा और घबराहट तथा खौफ के साथ उसकी तरफ देखने लगा। इस आदमी के हाथ में यद्यपि हथकड़ी न थी मगर पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थी।

मेघ०। (भूतनाथ से) कहो गदाधरसिंह इस आदमी को पहिचानते हौ।

भूत० (दुःखित ढङ्ग से) बेशक पहिचानता हूँ। इस का बाप राजसिंह मेरी जिन्दगी का शैतान था, उसी की बदौलत मेरे ऐशो आराम में फर्क पड़ा तथा मेरे धर्म और ईमान में बट्टा लगा। मेरे दोस्त दयाराम से मेरी जुदाई हुई और आज तक मैं दुर्दशाग्रस्त तरह तरह की तकलीफों को सहता हुआ मारा मारा फिरता हूँ। इसका नाम ध्यानसिंह है। यदि आप की आज्ञा हो तो मैं इस से दो चार बातें करूँ।

मेघ० । हाँ हाँ, तुम इससे जो चाहे बातें कर सकते हो !

भूत० । (ध्यानसिंह से) कहो ध्यानसिंह ! तुमने तो मुझे विश्वास दिलाया था कि 'दयाराम जी अभी तक जीते हैं और जमानिया के कम्बख्त दारोगा के कब्जे में हैं ।'

ध्यान० । बेशक मैंने आपसे ऐसा ही कहा था और अभी तक मैं अपनी राय पर कायम हूँ ।

भूतनाथ० । मगर तुम बिलकुल झूठे और बेईमान हो । अच्छा हुआ कि तुम इस समय मुझे इस हालत में यहाँ दिखाई दिये । मैं तुम से मिलने ही वाला था ।

ध्यान० । आप चाहे जो कुछ समझें और कहें मगर मैं अपनी बात का पूरा पूरा सबूत रखता हूँ अगर आप मेरी मदद लेकर दयारामजी को खोजते तो जरूर दारोगा के यहाँ.....

भूत० । यह सब फजूल बातें हैं, मैं तुम पर किसी तरह भी भरोसा नहीं कर सकता (मेघराज से) क्या इसे आपने गिरफ्तार किया है ? इसके गिरफ्तार करने से दयारामजी का कुछ पता लगा या केवल सजा देने ही के लिए यह गिरफ्तार किया गया है ?

मेघ० । इसका जवाब मैं कुछ भी नहीं दे सकता । यद्यपि मैं भैयाराजा की जुबानी सुन चुका हूँ कि तुमने प्रतिज्ञा की है कि भविष्यत् में अच्छी राह पर चलूँगा और इन्होंने तुम पर भरोसा करके तुम पर विश्वास भी कर लिया है परंतु हमलोगों का दिल भैयाराजा का सा नहीं है, हमलोग बिना जाँच किये किसी पर भरोसा नहीं करते ।

मेघराज की बातों से यद्यपि भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया मगर वह चुप हो रहा कुछ भी न बोला । मेघराज ने भैयाराजा को वहाँ से उठाया और बाग की एक रविश पर ले जाकर एकान्त में खड़े हो कुछ बातें की और इधर भूतनाथ भी तब तक ध्यानसिंह से कुछ बातें करता रहा । इन सभों में क्या क्या बातें हुईं इसके लिखने की यहाँ कोई जरूर नहीं मालूम पड़ती ।

बातों से छुट्टी पा कर पुनः सब कोई उस चबूतरे पर इकट्ठा हो गये, ध्यान-

सिंह वहाँ से हटा दिया गया और तब भैयाराजा ने मेघराज से कहा, "गदाधर-सिंह की जुबानी मैंने सुना है कि दारोगा अब मेरी स्त्री को मार डालने की फिक्र में है इसलिए मैं चाहता हूँ कि वहाँ जाकर उसकी रक्षा करूँ और बन पड़े तो उसे वहाँ से निकाल लाऊँ।"

मेघ०। बेशक आपको दारोगा के हाथ से उसकी रक्षा करनी चाहिये और महाराज के सामने ही दारोगा से यह भी पूछना चाहिये कि उसने आपके साथ ऐसा गन्दा सलूक क्यों किया! आपको छिप छिप कर कार्रवाई करना मैं तो पसन्द नहीं करता।

भैया०। मेरे और दोस्तों की भी राय है अस्तु बेहोश दारोगा को जमानिया सदर बाजार के चौमुहाने पर पहुँचा देने के बाद मैं प्रगट हो जाऊँगा और देखूँगा कि भाई साहब के सामने ही मुझ से और दारोगा से क्योंकर निपटती है। अच्छा तो अब मुझे यहाँ से रवाना हो जाना चाहिये, अब हम लोगों की थकावट अच्छी तरह मिट गई और हमलोग बखूबी सफर करने लायक हो गये।

मेघ०। मैं तो यही चाहता था कि रात भर आप लोग यहाँ आराम करके प्रातःकाल सफर करते।

भैया०। नहीं, अब मैं जहाँ तक शीघ्र जमानिया पहुँचू अच्छा है, तुम मुझे पुनः उसी जगह पहुँचा दो जहाँ से लाये हो।

मेघ०। बहुत खूब, चलिये।

मेघराज ने भैयाराजा और भूतनाथ को पुनः उसी जगह पहुँचा दिया जहाँ से लाया था। इन लोगों ने बेहोश दारोगा को गुफा के बाहर निकाला और मिल जुल कर एक घोड़े पर लादने बाद बागडोर से अच्छी तरह कस दिया। बेहोश और जख्मी दुश्मनों को उसी जगह छोड़ दारोगा को लिए हुए भूतनाथ और भैयाराजा वहाँ से रवाना हुए। मेघराज भी तब तक भैयाराजा के साथ गये जब तक कि वे लोग पेचीले रास्ते को तै कर के सीधे रास्ते पर न जा पहुँचे।

मेघराज के विषय में भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य और खुटका हो गया था। यद्यपि भूतनाथ ने देखा था कि वह अपना चेहरा नकाब से ढाके हुए नहीं है तथापि यह निश्चय हो गया था कि सूरत जरूर बदली हुई है। मेघराज को पहि-

चौंकने के लिए उसने उद्योग किया था मगर सफल मनोरथ न हुआ। अब भी उसे यह आशा जरूर थी कि सफर करते हुए भैयाराजा से मेघराज का भेद पूछेंगे और मुझे वे जरूर बता देंगे। मगर ऐसा न हुआ अर्थात् भैयाराजा ने उसे दिलासा दे दिया मगर मेघराज का असल भेद नहीं बताया। इस बात की मजबूरी दिखाई कि 'मेघराज ने अपना भेद छिपाने के लिए मुझ से कसम खिला ली है।'

❀ पाँचवाँ हिस्सा समाप्त ❀

दुर्गा प्रेस, दुण्डिराज, बनारस।

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

छठवाँ हिस्सा

पहिला बयान

जमानिया में इस बात की धूम मची हुई थी कि दारोगा साहब सरे बाजार चौमुहाने पर बेहोश पाये गए, उनका कुछ मुँह काला था और दाहिना कान कटा हुआ था, गले में जूतों का हार था, तथा बदन पर भी कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए थे। इस खबर से उनके दोस्त डर गये थे और दुश्मनों के चेहरों पर हँसी दिखाई दे रही थी। आदमियों के झुण्ड के झुण्ड उनकी अवस्था देखने के लिये चले जा रहे थे और जो देखता था वही खुश होता था। प्रायः सौ में नब्बे यही कहते थे कि—"बहुत अच्छा हुआ! ऐसों की ऐसी ही सजा होनी चाहिये!"

यहाँ के राजा साहब सूधे सादे रहमदिल और धर्मात्मा थे सही, मगर बिल्कुल ही बेपेंदी के लोटा थे। उनके आत्मीय मित्र और सम्बन्धी लोग समय पड़ने पर जो कुछ उन्हें समझा देते थे वे उसी पर विश्वास कर लेते थे मगर जब कोई उसके विपरीत समझा देता तो वह पहिला खयाल उनके दिल से निकल जाता, अपनी राय कुछ भी कायम नहीं कर सकते थे, और इस सबब

भी उनकी रियाया में एक तरह की बेचैनी रहा करती थी और दारोगा की खूब चल बनी थी। वह महाराज के नाक का बाल हो रहा था और महाराज समझते थे कि हमारा राज्य इसी दारोगा की बदौलत रौनक पर है। महाराज आसकती और आरामपसन्द बहुत ज्यादे थे और दारोगा उनकी इस आदत को बढ़ाने के लिये हमेशा कोशिश किया करता था।

होश में आकर दारोगा ने न तो अपना चेहरा साफ किया और न गले में से जूते का हार निकाला, उसी सूरत और हालत से सीधे महाराज की तरफ चला। खबर पाकर उसके कई नौकर सिपाही भी वहाँ आ गये थे जिनकी जुबानी यह सुन कर कि 'महाराज का डेरा खास बाग में गया है' वह भी खासबाग ही की तरफ रवाना हुआ।

जमानिया बाजार के चौमुहाने पर पहुँचा देने के पहिले दारोगा को भैयाराजा होश में ले आये थे और आईने के जरिये से उसे बता दिया था कि तेरी सूरत कैसी की गई है और यह भी कह दिया था कि 'इसी सूरत में तू जमानिया बाजार के चौमुहाने पर छोड़ा जायगा जिसमें तमाम रियाया तेरी इस बेहूदी हालत को देखे, इसके बाद मैं भाई साहब के सामने पहुँच कर उसी जगह तुझसे बदला लूँगा।' इसके बाद दारोगा बेहोश करके बाजार के चौमुहाने पर पहुँचा दिया गया था।

होश में आने के साथ ही दारोगा को भैयाराजा की बात याद आ गई और वह बिना कुछ जाँच किये ही सीधे महाराज की तरफ रवाना हो गया। खासबाग के दर्वाजे तक तो उसके साथ सैकड़ों आदमियों की भीड़ गई मगर आगे न जा सकी क्योंकि पहरे वाले किसी गैर को बिना आज्ञा के अन्दर नहीं जाने देते थे। दारोगा को किसी ने नहीं रोका और वह सीधा महाराज के पास चला गया।

इस समय राजा साहब बाग के दूसरे दर्जे में नजरबाग में बैठे मुँह धो रहे थे और तीन चार मुसाहब उनके इर्द गिर्द बैठे तमाम शहर की झूठी सच्ची खबरें सुना रहे थे। यकायक दारोगा उनके सामने जा पहुँचा और उनके पैरों पर गिर कर जार जार रोने लगा। राजा साहब उसकी विचित्र सूरत देख कर हैरान हो गये और क्रोध में भर कर बोले, "यह तुम्हारी क्या दशा है? किसने

तुम्हारी यह सूरत बनाई ?"

दारोगा० । (गले से जूते की माला निकाल कर) यह सब आपके भाई साहब भैयाराजा की बदौलत है, उन्होंने ही मेरी यह दुर्दशा की है ।

राजा० । भैयाराजा कहाँ हैं ? ईश्वर उन्हें चिरायु करे । मैं तो उनके बिना अधमुआ हो रहा हूँ, अगर ईश्वर की कृपा से वे जीते हैं तो मेरे पास क्यों नहीं आते ?

दारोगा० । आपके सामने क्यों आवेंगे ! वे तो आपसे बागी हो गये हैं, स्वयम् जमानिया के राजा बना चाहते हैं ! अच्छा जो कुछ उनके जी में आवे करें, आप जानें और वे जानें, पर मेरी यह दुर्दशा क्यों हो रही है ! केवल इसी लिये तो कि मैं आपका खैरख्वाह हूँ और आपने कुल राज्य का बोझ मेरे ऊपर डाल रक्खा है, इसी से तो लोग डाह करते हैं। खैर जो कुछ होना था हो गया, अब आप जानिये और आपका राज्य जाने, अपना काम आप देखिये, मैं ऐसी बेइज्जती की नौकरी से इस्तीफा देता हूँ। मैं साधू और फकीरों की तरह जिन्दगी बिताने वाला, सिर्फ आपकी मुहब्बत में फँस कर बार बार इस इस तरह की बेहुर्मती बर्दाश्त कर रहा हूँ, घर गृहस्थी को छोड़ कर भी मुझे आराम नसीब नहीं ।

राजा० । खैर कुछ कहो भी तो सही कि क्या मामला है ? भैयाराजा तुम्हें कहाँ मिले और तुम्हारी ऐसी दशा उन्होंने क्यों की ? आखिर इसका कुछ सबब भी तो होगा ?

दा० । सबब तो मैं आपसे कहा चुका कि वह जमानिया का राज्य किया चाहते हैं और मेरे जीते जी उनकी यह आशा पूरी नहीं हो सकती ।

राजा० । उनकी यह आशा क्यों नहीं पूरी हो सकती ? मै बड़ी खुशी से उन्हें यह राज देने के लिये तैयार हूँ । यद्यपि इस राज्य का मालिक मेरा लड़का मौजूद है मगर वह भी मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करेगा । यदि मैं भैयाराजा को यहाँ की गद्दी दे दूँगा तो गोपाल भी कुछ न बोलेगा ।

दा० । तो आप यह भी करके देख लीजिये, जिसमें आपकी जान सलामत रहे मैं भी उसी में खुश हूँ मगर मेरी जान क्यों आफत में डाली जाय और मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक क्यों हो ? अपने हाथ से जब आप कुँअरजी का हक

मारने के लिये तैयार हैं तो दूसरे को बोलने की क्या गरज पड़ी है ? मेरा हाल जो आप सुना चाहते हैं तो सुनिये मैं बयान करता हूँ। परसों भैयाराजा के भेजे हुए दो आदमी मेरे पास आये और एकान्त में मुलाकात करके इधर उधर की बातें करके बोले कि भैयाराजा ने आपको बुलाया है, वे आपसे कुछ बातें किया चाहते हैं। मैं यह सुन कर बड़ा ही प्रसन्न हुआ कि ईश्वर की कृपा से भैयाराजा जीते हैं क्योंकि मुझको और आपको भी उनके मरने का विश्वास सा हो रहा था, अस्तु मैंने सोचा कि अब विलम्ब करना ठीक नहीं है, जहाँ तक जल्द हो सके उनसे मिलना और समझा बुझा कर उन्हें आपके पास ले आना चाहिये। खैर उन आदमियों की इच्छानुसार सन्ध्या हो जाने पर मैंने तीन घोड़े मँगवाये, एक पर आप सवार हुआ और दो पर उन दोनों को सवार करा के उनके पीछे पीछे चल निकला। यहाँ से सात कोस की दूरी पर जो "सुन्दर-घाटी" नाम का आपका शिकारगाह है उसी में भैयाराजा टिके हुए थे और वे दोनों आदमी मुझे उसी जगह ले गये। मैं भैयाराजा को देख कर बहुत ही खुश हुआ और उनके पैरों पर गिर पड़ा। उन्होंने मुझे उठा कर गले लगा लिया और अपनी बगल में बैठा कर बातचीत करने लगे। उस समय दस बारह आदमी नंगी तलवारें लिये उनके पास मौजूद थे। मुख्तसर यह कि मैंने उनसे यकायक गायब हो जाने का कारण पूछा, उनकी जुदाई में आपका जो कुछ हाल हो रहा है उसे कह कर बहुत कुछ समझाया बुझाया और यहाँ आने के लिये जोर दिया, मगर मेरी बातों का उन पर कुछ भी असर न हुआ क्योंकि उनके दिल में राजा बनने का शौक उभड़ा हुआ था, अस्तु मेरी बातों को काट कर वे मुझी को समझाने और लालच में डालने लगे। मुझे तरह तरह का सब्जबाग दिखा कर बोले कि तुम राजा साहब और गोपालसिंह को मार कर मुझे जमानिया का राजा बनाओ, जो कुछ तुम कहोगे मैं तुम्हें दूँगा और जन्म भर तुम्हारा गुलाम बना रहूँगा। इत्यादि बातें तो बहुत लम्बी चौड़ी हुईं मगर मैं आपसे बहुत ही संक्षेप में बयान करता हूँ। मैंने उन्हें फिर भी बहुत कुछ धर्म अधर्म की बातें समझा कर कहा कि आप घर चले चलिये, महाराज बड़ी खुशी से आपको गद्दी देने के लिये तैयार होंगे और अगर वे ऐसा न करेंगे तो मैं आपसे वादा करता हूँ कि जिस तरह बनेगा मैं आपको राजा बनाऊँगा। यह सब कुछ मैंने कहा

और समझाया मगर उनके दिल में एक न बैठी, बोले कि उन दोनों के जीते रहते मैं निष्कण्टक राज्य न कर सकूँगा, हमेशे खुटका बना ही रहेगा इसलिये उन दोनों को मार डालना ही उत्तम है। इत्यादि बातें सुनते सुनते मेरा जी ऊब गया और मैंने रंज होकर उन्हें साफ जवाब दे दिया और कह दिया कि यह सब काम मेरे किये न होगा, मैं अपने मालिक के साथ नमकहरामी न करूँगा। मुझसे जवाब पाकर उन्हें क्रोध चढ़ आया और उन्होंने जो कुछ मेरे साथ किया उसका नमूना यही है जो कि आपने देखा। बहुत कुछ गाली गुफ्ता के बाद मैं जबर्दस्ती बेहोश कर दिया गया और इस दर्जे को पहुँचाया गया।

दारोगा की बातें सुन कर राजा साहब को क्रोध चढ़ आया और भाई की मुहब्बत को एकदम भूल कर मारे क्रोध के काँपने लगे। एक चोबदार को कुँअर गोपालसिंह को बुला लाने की आज्ञा देकर दारोगा से बोले, "मैं नहीं जानता था कि भैयाराजा के पेट में ऐसा जहर भरा हुआ है! मैं उसे बहुत ही नेक और सूधा समझता था!!"

दारो०। खयाल तो मेरा भी ऐसा ही था मगर परसों जो कुछ मैंने उनकी जुबान से सुना वह इस योग्य न था कि मेरे ऐसा आदमी बर्दाश्त कर सके। छिः, ऐसे सूबे भाई और ऐसी संघदिली!!

राजा०। ऐसे भाई का तो मुँह न देखना चाहिये! अरे मैं तो खुद उन्हें राज देने के लिये तैयार था, फिर ऐसी बदनीयती क्यों? बेचारे गोपालसिंह ने उनका क्या बिगाड़ा था?

दारोगा०। कुछ न पूछिये, उनकी बातें सुन कर तो मेरे होश उड़ गये, मैंने जो कुछ कहा वह बहुत ही मुख्तसर में है, कहीं उनकी जुबान से निकली हुई सभी बातें आपसे कहूँ तो आपके दुश्मनों की तबियत ही खराब हो जाय! मैं आपको रंज पहुँचाना नहीं चाहता, पर उन्होंने मुझे इसकी धमकी दी कि मैं भैया के पास पहुँच कर अपने सामने तेरी दुर्गति कराऊँगा और तुझे बेईमान साबित करके जेलखाने की गन्दी कोठड़ी में जन्म भर के लिये भेजवाऊँगा। अब देखिये परमात्मा क्या दिखाता है!

राजा०। परमात्मा जो कुछ करेगा अच्छा ही करेगा। वह मेरे सामने आवें भी तो।

इस तरह की बातें कह कह कर दारोगा कुछ देर तक राजा साहब के गुस्से को बढ़ाता रहा, यहाँ तक कि कुँअर गोपालसिंह भी आ पहुँचे और दारोगा की अवस्था देख कर आश्चर्य करने लगे तथा अपने पिता को क्रोध में भरे देख कर वे बहुत ही बेचैन हुए। प्रणाम करने के बाद हाथ जोड़ कर खड़े हो गये और हुक्म का इन्तजार करने लगे। राजा साहब ने मुहब्बत की निगाह से कुँअर साहब की तरफ देखा और अपने पास वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।

कुँअर। (कुर्सी पर बैठ कर दारोगा से जो अभी तक जमीन पर बैठा हुआ आँसू गिरा रहा था) यह क्या मामला है? आप ऐसी सूरत में क्यों दिखाई देते हैं?

राजा०। तुम्हारे चाचा साहब ने इनकी यह दुर्दशा कर रक्खी है।

कुँअर। (आश्चर्य से) सो क्यों! क्या चाचाजी की कुछ खबर मिली है?

राजा०। हाँ, वे ईश्वर की कृपा से कुशलपूर्वक हैं मगर हमारे और तुम्हारे दुश्मन हो रहे हैं।

कुमार०। सो क्यों? हम लोगों ने तो उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ा! वे तो मुझ पर बड़ी ही कृपा रखते हैं और आपसे भी वे अकृत्रिम स्नेह रखते थे।

राजा०। वह सब दिखौआ मामला था, नहीं तो इस बेचारे की ऐसी दुर्दशा वे न करते। इन्हें अपनी राय में मिलाना चाहते थे मगर जब इन्होंने हमारा पक्ष न छोड़ा तब इनके साथ ऐसा बर्ताव किया गया। यही सुनने के लिये तो हमने तुमको बुलाया है (दारोगा की तरफ देख कर) हाँ, एक दफे वे सब बातें और बयान कर जाओ जिसमें गोपाल को भी मालूम हो जाय कि इनके चाचा साहब इन पर कैसे मेहरबान हैं।

राजा साहब की आज्ञा पाकर दारोगा ने पुनः किस्सा बयान किया जो पहिले बयान कर चुका था, जिसे सुन कर कुँअर साहब हैरान हो गये, मगर उनके दिल में यह बात बैठी नहीं इसलिये दारोगा तथा अपने पिता को कुछ जवाब न दिया, केवल यह सोचते रह गये कि यह किस्सा कहाँ तक सच होगा! यदि चाचा साहब मिलें तो बातों का मुकाबला करके कोई राय कायम की जाय।

राजा०। (कुँअर से) कहो चुप क्यों हो? जो कुछ हाल था तुमने सुन ही लिया!

कुँअर० । जी हाँ, सुना मगर यह भी मालूम हुआ कि 'चाचा साहब स्वयम् आने वाले हैं ।' यदि वे आ गये तो उनकी बातें सुनने पर अपनी राय कायम कर सकूँगा ।

राजा० । बाबाजी * जो कुछ कहते हैं उसमें रत्ती बराबर झूठ नहीं होगा ।

कुंअर० । सम्भव है ।

राजा साहब ने अपने हाथ से दारोगा को जमीन पर से उठाया उसके आंसू पोंछे और अपने सामने ही सफाई करने का हुक्म दिया । उन दिनों यह नियम था कि जब राजा साहब का डेरा खासबाग में जाता था तब दारोगा को भी उसी बाग के नियत स्थान में रहना पड़ता था अस्तु राजा साहब ने उसे दिलासा देकर और समझा बुझा कर उसके डेरे में भेजा और स्वयं स्नान सन्ध्या इत्यादि की फिक्र में पड़े । कुंअर गोपालसिंह वहां से उठ कर महल में गये और अपनी माता से मिल कर दारोगा का सब हाल बयान किया और जो कुछ किस्सा उसने अपनी दुर्दशा का कहा था वह भी बयान किया । जवाब में रानी साहेबा ने कहा कि दारोगा ने भैयाराजा के विषय में जो कुछ किस्सा कहा है वह सब झूठ है, असल में कसूर दारोगा ही का है, वह खुद भैयाराजा को मारने की फिक्र में पड़ा हुआ है ।

इतना कह रानी साहेबा ने वह सब हाल जो बहुरानी की जुबानी सुना था कुँअर गोपालसिंह से बयान किया जिसे सुन कर वे बहुत ही हैरान हुए, यद्यपि मुँह से कुछ न बोले मगर दिल में बड़े गौर के साथ सोचने लगे कि असल में भेद क्या है और बात कौन सी सच है ।

भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर कुँअर गोपालसिंह पुनः अपने पिता के पास गये और कुछ देर तक वहां बैठकर बातचीत करने बाद हाथ जोड़ कर बोले,— "इधर बहुत दिनों से इन्द्रदेवजी से मुलाकात नहीं हुई, वे भी यहां न आये, न मालूम क्या सबब है ! उनसे मिलने को जी चाहता है, आज्ञा हो तो एक दिन के लिये उनके पास जाऊँ ।" महाराज ने यह सुन कर इन्द्रदेव के पास जाने की इजाजत दी कि 'जाओ मगर होशियार रहना, क्योंकि तुम्हारा चाचा तुम्हारे

* उन दिनों दारोगा ब्रह्मचारियों और साधुओं की तरह अपने को बनाये रहता था ।

खून का प्यासा हो रहा है, ऐसा न हो कि कहीं रास्ते में मिले और तुम्हें धोखा दे। अपने साथ आदमी और सवार काफी तौर पर ले जाना।"

दूसरा बयान

इन्द्रदेव अपने कैलाशभवन के नजरबाग में सन्ध्या के समय क्यारियों में घूम फिर कर गुलबूटों का आनन्द ले रहे थे जब कुँअर गोपालसिंह के आने की उन्हें इत्तला मिली। वे खुशी खुशी कदम बढ़ाये हुये दरवाजे की तरफ गये तथा इस्तकबाल करके उन्हें अपने साथ पुनः उसी नजरबाग में ले आये और एक चबूतरे पर जहाँ कई कुर्सियां बिछी हुई थीं दोनों आदमी बैठ कर बातें करने लगे।

इन्द्र०। आज तो आपके अनूठे दर्शन हुए! भला किसी तरह मेरी याद तो आई।

कुंअर०। (मुस्कुराते हुए) आप अगर मुझे भूल गये तो क्या मैं भी आपको भूल जाऊँ!

इन्द्र०। असल में तो मित्रों और मुलाकातियों को भूल जाना आप ही लोगों का काम है, मैं तो गरीब आदमी हूँ जो कि कभी भी अपने अमीर मेहरबानों को भूल नहीं सकता।

कुँअर०। यही सबब है कि इतने दिनों तक आपने मेरी खबर न ली। आखिर मैं अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद होकर आपके पास दौड़ा आया। सोचा कि क्या जाने कल को क्या हो जाय, एक दफे चलके मुलाकात तो कर लें।

इन्द्र०। इसका क्या अर्थ? जिन्दगी से नाउम्मीद हो जाना कैसा?

कुँअर०। सुना है कि मेरे चाचा साहब मुझसे नाखुश हैं और मुझे तथा मेरे पिता को भी मार डालने की फिक्र में पड़े हुए हैं।

इन्द्र०। (हँस कर) यह आपको किसने कह दिया? भैयाराजा ऐसे महात्मा आदमी पर ऐसा कलंक लगाने वाला कौन निकल आया! स्वप्न में भी मुझे ऐसी बेतुकी बातों पर विश्वास नहीं हो सकता। क्या उनका कुछ पता लगा?

कुँअर०। हाँ, आपके गुरुभाई साहब ने ही तो यह बात कही।

इतना कह कर गोपालसिंह ने दारोगा साहब का कुल हाल जो हम ऊपर

लिख आये हैं इन्द्रदेव से बयान किया और पूछा कि इस मामले में आपकी क्या राय है ?

इन्द्र० । असल में जो कुछ मामला है उसे मैं खूब जानता हूँ मगर अपनी तरफ से मैं दारोगा को नुकसान पहुँचाना नहीं चाहता और आपसे भी ऐसी ही आशा रखता हूँ, परन्तु इतना जरूर कहूँगा कि आप अपने चाचा साहब की तरफ से बिल्कुल ही बेफिक्र रहिये और दारोगा की तरफ से क्षण भर के लिये भी गाफिल मत होइये । यह तो मुझे विश्वास नहीं है कि वह आपको तकलीफ देगा मगर इसमें कोई शक नहीं है कि वह आपके चाचा साहब का जानी दुश्मन है और एक दफे वह उन पर अच्छी तरह हाथ साफ कर चुका है मगर ईश्वर ने उनकी जान बचा ली ।

कुँअर० । अच्छा यह तो बताइये कि चाचा साहब और दारोगा के बीच में दुश्मनी क्यों पैदा हो गई और चाचा साहब ने एकदम से हम लोगों को क्यों छोड़ दिया ?

इन्द्रदेव० । मामला बड़ा पेचीला है । असल में वह आपके चाचा साहब का दुश्मन न था मगर मजबूर होकर अपनी जान बचाने के लिये उसे दुश्मनी करने की जरूरत पड़ी । यदि आप इस बात का वादा करें कि मेरी तरह से आप भी इस भेद को छिपाये रहेंगे और उन दोनों का फैसला उन्हीं दोनों की अक्ल पर छोड़ देंगे तो मैं आपसे यह रहस्य बयान करूँ । इसमें शक नहीं कि मेरी जुबानी जो कुछ आप सुनेंगे इससे आपको दारोगा पर क्रोध जरूर आवेगा परन्तु आपके लिये बेहतर यही होगा कि आप दोनों में किसी का भी पक्ष न लें क्योंकि आपके पिता दारोगा साहब को इष्टदेव की तरह मानते हैं और हमलोगों के हजार कहने पर भी वे दारोगा को झूठा और नमकहराम नहीं समझेंगे, ऐसी अवस्था में अपनी जुबान हिला कर राजा साहब से बुरे बनना बुद्धिमानी के विरुद्ध है, मौका मिलने पर जो कुछ होगा देखा जायगा ।

कुँअर० । आपका कहना बहुत ठीक है, आप भरोसा रक्खें कि मैं आपकी आज्ञा के विरुद्ध कभी कोई काम न करूँगा और इस भेद को जब तक आप न कहेंगे आप ही की तरह अपने दिल में छिपाये रहूँगा तथा दारोगा को भी मालूम न होने दूँगा कि मैं उससे होशियार हूँ ।

इन्द्र०। ऐसा ही होना चाहिये। अच्छा सुनिये, मैं आपसे असल भेद कहता हूँ। आपको दयाराम का कुछ हाल मालूम है?

कुँअर०। इतना तो मुझे आप ही ने कहा था कि उन्हें राजसिंह कैद करके ले गया था और वे धोखे में भूतनाथ ही के हाथ से मारे गये। बस इससे ज्यादे मुझे कुछ भी नहीं मालूम है।

इन्द्र०। हाँ, बेशक मैंने आपसे कहा था मगर यह नहीं कहा था कि उनकी दोनों स्त्रियाँ मेरे पास जीती जागती मौजूद हैं क्योंकि उनके मरने की खबर तमाम दुनिया में फैल चुकी थी। यह भेद मैंने आपसे इसलिये छिपा रक्खा था कि उन दोनों ने भूतनाथ से अपने पति का बदला लेने के लिये प्रण कर लिया था मगर भूतनाथ का वे कुछ बिगाड़ नहीं सकती थीं क्योंकि वह बड़ा ही होशियार है और मैं भी इस खयाल से भूतनाथ का मारा जाना पसन्द नहीं करता था कि असल में उसका कोई कसूर नहीं है, उसने जान बूझ कर दयाराम को नहीं मारा था बल्कि धोखे में ऐसी घटना हो जाने का उसे बड़ा ही दुःख था मगर चूँकि दलीपशाह वगैरह को यह बात मालूम थी और दलीपशाह पर भूतनाथ को भरोसा नहीं था इसलिये भूतनाथ इस फिक्र में बराबर ही लगा रहता था कि यह भेद खुलने न पावे और मैं बदनाम न हो जाऊँ। दयाराम की दोनों स्त्रियों को मैंने इस बात की इजाजत तो दे दी कि तुम लोग गदाधरसिंह से बदला लो और स्वयम् उनकी मदद भी करता रहा, पर इस बात की सख्त ताकीद कर दी कि गदाधरसिंह की जान पर कोई धक्का लगने न पावे। मगर वे उस काम का खूबी और खूबसूरती के साथ न कर सकीं, यहाँ तक कि गदाधरसिंह पर उनका भेद खुल गया और वह उन दोनों को मार डालने की फिक्र में पड़ा क्योंकि उसे उन दोनों के जरिये से अपनी बदनामी का खयाल हो गया। इस काम में गदाधरसिंह ने दारोगा से मदद ली और दारोगा ने उन दोनों को तथा साथ ही उसके प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को गिरफ्तार कर लिया। यह हाल भैयाराजा को मालूम हो गया और वे उन सभों को छुड़ाने के लिये दारोगा पर टूट पड़े मगर दारोगा ने चालबाजी से अपना भेद छिपाये रखने की नीयत से भैयाराजा को भी कैद कर लिया मगर मैंने बड़ी मुश्किल से उन सभों को दारोगा और गदाधर के पक्ष से छुड़ा लिया, ऐसे ढङ्ग से कि अभी तक दारोगा

तथा गदाधरसिंह को इस बात का गुमान भी न हुआ कि मैंने ही उन सभों को उनके पञ्जे से छुड़ाया था।

कुँअर०। (आश्चर्य करते हुए) यह तो बहुत अनूठा किस्सा आप बयान कर रहे हैं मगर कहने के ढंग से मालूम होता है कि आप बहुत संक्षेप से कह रहे हैं, ऐसा नहीं आप मेहरबानी करके खूब खुलासे तौर पर बयान कीजिये।

इन्द्र०। आप मेरे दिली दोस्त हैं इसी लिये मैं आपसे यह भेद की बात कह रहा हूँ मगर खूब होशियार रहें कि कोई आपके दिल के अन्दर से यह भेद निकालने न पावे बल्कि किसी को गुमान भी न होने पावे कि यह सब हाल आपको मालूम है। मैं खुलासा बयान करता हूँ।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने जमना, सरस्वती, इन्दुमति, प्रभाकरसिंह, दारोगा और भूतनाथ इत्यादि का तथा अपने मदद करने का कुल हाल जो हम ऊपर लिख आये हैं गोपालसिंह से बयान किया। दयाराम, निरञ्जनी, छन्नो और ध्यानसिंह वगैरह का हाल भी कहा, मगर यह नहीं कहा कि दयाराम को हम दारोगा की कैद से छुड़ा लाये हैं और वे फलानी जगह हैं।

सब के अन्त में इन्द्रदेव ने अपनी तरफ से यह राय दी कि "मेरी समझ में गदाधरसिंह और दारोगा वगैरह सभी बेकसूर समझे जा सकते हैं क्योंकि सभी कोई अपनी अपनी जान बचाने की नीयत से ऐसे पाप के भागी हुए हैं। मगर आपके दारोगा साहब का नीयत अच्छी नहीं है। हम नहीं कह सकते कि उनके पापों की गिनती कहाँ तक तरक्की करेगी मगर आपको अभी एकदम से सन्नाटा खैंचे रहना चाहिये, क्योंकि अगर आप ऐसा न करेंगे तो राजा साहब की मुहब्बत आप पर से जाती रहेगी। देखिये भैयाराजा से राजा साहब की कितनी मुहब्बत थी मगर अब इस समय दारोगा के सामने उस मुहब्बत की कुछ भी कदर न रही।"

कुँअर०। आपका कहना बहुत ठीक है, जो कुछ आपने कहा है मैं वैसा ही करूंगा। मगर इस किस्से को सुन कर तो मैं हैरान हो गया! मेरी बुद्धि ठिकाने न रही! ताज्जुब नहीं कि कई दिनों तक मुझे रात को नींद न आवे! आह! दुनिया भी क्या चीज है और इसमें कैसी कैसी घटनाओं का आविर्भाव हुआ करता है!!

इन्द्र० । बेचारे भैयाराजा बिलकुल ही निर्दोष हैं, उनका तो व्यर्थ ही होम करते हाथ जला है, थोड़ी सी भूल ने उन्हें बर्बाद कर रक्खा है, बिना सोचे विचारे जल्दी में जब आदमी से कोई चूक हो जाती है तो फिर उसका सम्हलना मुश्किल हो जाता है। जब दारोगा के पंजे से मैंने उन्हें छुड़ाया था उसी समय अगर वे महाराज के सामने जा पहुँचते तो जरूर अपना दिल ठण्ढा कर लेते मगर अब तो दारोगा ने अपना रंग जमा लिया। मुझे उनकी बड़ी ही फिक्र लगी हुई है, देखा चाहिये क्या होता है।

कुँअर० । आपने बहुत ही अच्छा किया कि यह सब हाल मुझसे कह दिया नहीं तो क्या जाने मुझसे कोई भारी भूल हो जाती और पीछे पछताना पड़ता।

इन्द्र० । इसी खयाल से तो मैंने आपको होशियार कर दिया अब आपको बड़ी होशियारी और चालाकी से काम लेना चाहिये।

तीसरा बयान

रात का समय है और दारोगा अपने खासबाग * वाले मकान में एकान्त के कमरे में बैठा हुआ जैपाल से बातें कर रहा है।

दारोगा० । न मालूम क्या समझ कर भैयाराजा ने मेरी जान छोड़ दी नहीं तो मैं बड़े ही बेमौके जा फँसा था। कार्रवाई तो मैंने बहुत की थी मगर इस बात की खबर न थी कि भैयाराजा के पास तिलिस्मी तलवार मौजूद है।

जैपाल० । खैर जो कुछ होना था सो हो गया अब आपको बहुत सम्हल के काम करना चाहिये, ताज्जुब नहीं कि भैयाराजा अब खुद राजा साहब के पास आवें और आपका मुकाबला करें, यद्यपि मेरा तो खयाल यही है कि अब राजा साहब उनकी बातों पर कदापि विश्वास न करेंगे क्योंकि आपने राजा साहब को खूब ही दुरुस्त कर रक्खा है।

दारोगा० । बेशक अब राजा साहब उनका पक्ष न करेंगे हाँ गोपालसिंह का बन्दोबस्त करना बहुत जरूरी है।

जै० । जब कि आप यह सोचते हैं कि भैयाराजा और उनकी स्त्री को मार

* खासबाग में दारोगा के लिये एक मकान मुकर्रर था और वह भी खास-बाग के तिलिस्म से मिला हुआ था।

डालने के बाद रानी साहबा और राजा साहब को भी मार डालेंगे तो गोपाल-सिंह को जीते छोड़ने की क्या जरूरत है। उन्हें भी निपटा कर निष्कण्टक राज कीजिये!

दारोगा०। यह सोचना तुम्हारी भूल है। हमारी कुमेटी के बड़े बड़े रईस लोग जो अभी तक मेरी इज्जत करते हैं वे एकदम से मेरे दुश्मन हो जायँगे और समझेंगे कि दारोगा ने राजा बनने ही की नीयत से यह कुमेटी रची थी वे मुझे कदापि राजा न बनने देंगे और तमाम फौज भी मेरी दुश्मन बन जायगी। ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि कोई दूसरा राजा आकर जमानिया में दखल जमा ले, और अगर ऐसा हुआ तो मैं बड़ी दुर्दशा से मारा जाऊँगा। मुझे राजा बनने में सुख नहीं है, मैं नाम मात्र के लिये गोपालसिंह का राजा बनाऊँगा और खुद राज करूँगा। जब गोपालसिंह की शादी हेलासिंह की लड़की से हो जायगी तब बेशक गोपालसिंह मारे जायँ तो कोई हर्ज नहीं। उस समय उनकी स्त्री को रानी बनाऊँगा और उसे ऐयाशी पर उतारू करके आप आनन्द करूँगा। फिर मेरा मुकाबला करने वाला कोई भी न रहेगा।

जैपाल०। बात तो आपने बड़े दूर की सोची! मेरा खयाल इन सब बारी-कियों की तरफ नहीं गया था। बेशक आपकी बुद्धि तेज है और आप नीति को खूब समझते हैं।

दारोगा०। अब तो मैं गोपालसिंह को खुशामद से या जिस तरह बनेगा अपने ऊपर प्रसन्न करूँगा और तब देखूंगा कि किस्मत क्या दिखाती है। सब से बड़ा काम तो यह है कि उनकी शादी हेलासिंह की लड़की से हो जाय।

जय०। बेशक बेशक! ईश्वर चाहेगा तो आपका काम बखूबी हो जायगा। मगर राजा साहब के जीते जी यह बात नहीं होने की।

दारोगा०। मगर दयाराम वाला खुटका मेरे दिल को बहुत ही बेचैन किये हुए है, न मालूम उसे कौन छुड़ा ले गया और अब दयाराम कहां हैं यह और भी ताज्जुब है कि वह अभी तक प्रगट नहीं हुआ! जब प्रगट होगा तो मुझे कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा! उस समय इन्द्रदेव भी मेरा दुश्मन बन जायगा।

जैपाल०। बेशक दयाराम का गायब हो जाना बहुत ही बुरा हुआ! मेरा

खयाल है कि खुद गदाधरसिंह उसे छुड़ा ले गया। जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह का भी कुछ हाल मालूम नहीं हुआ वे सब भी तो आपकी फिक्र में होंगे।

दारोगा०। बेशक उनके लिये भी मैं तरद्दुद में हूँ। हां अगर गदाधरसिंह ने मेरा साथ दिया तो मैं उन सभों की तरफ से शायद बेफिक्र हो जाऊँगा।

जैपाल०। गदाधरसिंह को तो खुद ही उन लोगों की बदौलत नाक में दम हो रहा है।

दारोगा०। सही है मगर फिर भी जब वह उन लोगों की फिक्र में है तो कुछ कर ही के छोड़ेगा।

जै०। अगर वह ऐसा करे भी तो उसमें आपकी क्या भलाई हो सकती है जब कि वह गदाधरसिंह स्वयं आपसे रंज है? इधर वाला मामला बहुत ही बुरा हो गया, भैयाराजा के साथ ही साथ आप गदाधरसिंह पर भी वार कर बैठे सो अच्छा नहीं किया।

दारोगा०। अगर मेरा वार खाली न जाता और भैयाराजा तथा गदाधरसिंह मारे जाते तो तुम ऐसा न कहते बल्कि मेरी तारीफ करते, अब तो मामला बिगड़ गया है जो चाहे कहो। फिर भी मुझे इस बात से दिलजमयी है कि गदाधरसिंह लालची है, दौलत के आगे वह धर्म ईमान और इज्जत वगैरह कुछ नहीं समझता।

जैपाल०। गदाधरसिंह को कब्जे में करने के लिये यह तर्कीब बहुत अच्छी होगी कि आप उसके बागी ऐयारों (शागिर्दों) को अपना पक्षपाती बनाव।

दारोगा०। बात तो बहुत अच्छी है मगर मैं उन लोगों को खोजूँ क्योंकर? उन सभों का मिलना ही तो बड़ा कठिन है।

जैपाल०। उनमें से एक आदमी मुझे मिला था और मैंने उससे आपके विषय में बातचीत भी की थी, अगर आप कहें तो मैं इस बारे में उद्योग करूँ।

दारोगा०। जरूर कोशिश करनी चाहिये, खर्च करने के लिये मैं हर तरह से तैयार हूँ। बात यह है कि या तो गदाधर हमारे कब्जे में आ जाय या फिर दुनिया से उठा दिया जाय। (ऊँची साँस लेकर) अफसोस!! दयाराम का हमारे कब्जे से निकल जाना बहुत ही बुरा हुआ! नहीं तो गदाधरसिंह मेरे तलवे

चाटा करता और जो कुछ मैं कहता वह झख मार के करता। तुम कहते हो कि दयाराम को गदाधरसिंह छुड़ा ले गया मगर मेरा दिल इस बात को कबूल नहीं करता। जब दयाराम के विषय में बातचीत करने के लिये वह मेरे पास आया था उसके पहिले ही कोई मेरी सूरत बन कर दयाराम को छुड़ा ले गया था, जैसा कि भूतनाथ ने भी मुझसे कहा था और मैंने भूतनाथ से बहाना किया था कि वह दूसरा ही कैदी था।

जैपाल०। हो सकता है। तो अगर गदाधरसिंह नहीं तो भैयाराजा का यह काम होगा क्योंकि वे जमना और सरस्वती की दिलोजान से मदद कर रहे हैं

दारोगा०। सम्भव है कि भैयाराजा ही ने ऐसा किया हो। अफसोस यह कई दफे मेरे पक्ष में आकर निकल गया। अच्छा, बकरे की माँ कब तक खैर मनावेगी! अबकी दफे तो भैयाराजा की तिलिस्मी तलवार ने बचा लिया जख्म लगते ही मैंने पहिचान लिया कि फलानी तलवार है, ईश्वर चाहेगा तो आइन्दे मेरी कमर में भी ऐसी ही एक तलवार होगी, मैं बहुत जल्द महाराज से माँग लूँगा।

जैपाल०। आप तिलिस्म के दारोगा ठहरे, आपके पास तो जरूर ऐसी तलवार होनी चाहिये, बल्कि मेरे पास भी होनी चाहिये क्योंकि मै आपका मित्र हूँ

दारोगा०। अच्छा अब मैं उस काम की फिक्र करता हूँ जिसके लिये तुमने राय दी थी। तुम अब जाकर अपना रथ तैयार कराओ और खुद हाँकते हुए खासबाग के पिछले दर्वाजे की तरफ लाकर मेरा इन्तजार करो। ईश्वर चाहे तो आज ही मेरा यह काम हो जायगा फिर दूसरे की फिक्र करूँगा।

जैपाल०। बहुत अच्छा मैं जाता हूँ।

चौथा बयान

खास बाग में महल के अन्दर जो कमरा बहुरानी के लिये मुकर्रर था उसमें इस समय सिवाय बहुरानी के कोई दूसरा दिखाई नहीं देता, यहाँ तक कि कोई लौंडी भी उस कमरे में मौजूद नहीं है जो जरूरत पर काम आवे, हम आश्चर्य के साथ देखते हैं कि उस कमरे में दीवार के साथ जो कई आलमारियाँ बनी हुई हैं उनमें से इस समय एक आलमारी कुछ अधखुली सी मालूम पड़ती है

और उसके अन्दर से एक आदमी सर निकाल कर उस कमरे की अवस्था को बड़े गौर से देख रहा है।

आधी रात का समय है, कमरे के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ है, केवल एक सुन्दर मशहरी पर बहुरानी आराम की नींद सो रही है और उसके नथुनों से कोमल खुर्राटे की आवाज आ रही है। कमरे में पूरब और पश्चिम तरफ की खिड़की खुली हुई है और पूरब तरफ वाली खिड़की से जो आम की बारी की तरफ पड़ती है, ठण्ढी ठण्ढी हवा आ रही है जिससे बहुरानी की मशहरी का जालदार नफीस पर्दा दरियाई लहरों की तरह झकोरे ले रहा है। कमरे की दीवारगीरों में से दो में मोमबत्ती की रोशनी हो रही है।

उस आदमी ने जो आलमारी के अन्दर से सर निकाल कर झाँक रहा है, देखा कि इस कमरे का सदर दर्वाजा जिधर से लोग इस कमरे में आते जाते हैं खुला हुआ है मगर जहाँ तक बाहर की तरफ निगाह जाती है कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता।

धीरे धीरे उस आलमारी का दोनों पल्ला अच्छी तरह खुल गया और वह आदमी जो सर निकाल कर झाँक रहा था और जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी निकल कर कमरे में दाखिल हुआ। धीरे धीरे पैर रखता हुआ वह सदर दर्वाजे के पास पहुँचा और उसे बहुत धीरे से बन्द करके अन्दर से कुण्डी चढ़ा ला और तब उस मशहरी के पास आया जिस पर बहुरानी आराम कर रही थी। उसने मशहरी का पर्दा हटाया और हाथ से हिला कर बहुरानी को जगाया। बहुरानी जब चैतन्य हुई तो अपने सामने एक नकाबपोश को देख कर हैरान हो गई मगर दिल कड़ा करके बोली, "तुम कौन हो जी?"

इसके जवाब में नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब हटा कर कहा—"देखो और पहिचानो कि मैं कौन हूँ।"

नकाब हटते ही भैयाराजा की सूरत देख बहुरानी शरमा गई। मुसकुराती हुई उठ खड़ी हुई और बोली, "मैं कई दिन से तुम्हारा इन्तजार कर रही हूँ। तुमने तो मुझे ऐसा छोड़ा कि मानों मैं तुम्हारी कुछ थी ही नहीं! ऐसा ही था तो मुझे भी अपने साथ ले जाते, जो कुछ मुसीबत आती उसके झेलने में मैं भी शरीक होती और खुशी खुशी तुम्हारे साथ दिन बिताती!"

मैया०। (मुस्कुराते हुए) यह तो ठीक है मगर बिना किसी तरह का बन्दोबस्त किये तुम्हें ले जाना क्या सहज बात है ? मैं तो मर्द ठहरा, हर तरह पर हर जगह जाकर समय बिता सकता हूँ मगर तुम्हारे लिये तो यह बात नहीं हो सकती। अब मौका देख कर मैं तुम्हारे पास आया हूँ और खास करके इसी लिये आया हूँ कि तुम्हें यहाँ से ले जाऊँ।

बहु०। खैर मैं चलने के लिये तैयार हूँ मुझे उज्र ही क्या हो सकता है, आराम से बैठो और सुनाओ तो सही कि इधर क्या क्या मामले हुए ? दारोगा कम्बख्त को तो आपने खूब ही छकाया ! (दर्वाजे की तरफ देख कर) क्या इस दर्वाजे को तुमने बन्द कर दिया है ? मैं तो खुला छोड़ कर सोई थी।

मैया०। हाँ मैंने ही बन्द किया है।

बहु०। अच्छा बैठिये और मेरी बातों का जवाब दीजिये।

मैया०। नहीं, मैं इस लिये नहीं आया हूँ कि आराम से तुम्हारे पास बैठूँ और बेफिक्री के साथ तुमसे बातें करूँ। समय बहुत नाजुक है, बस तुम्हें यहाँ से जल्द चल देना ही चाहिये।

बहु०। (शोखी से) अब इतनी जल्दी क्या पड़ गई ? बैठो तो सही, मैं तो सोचे हुए थी कि अबकी दफे तुम आओगे तो प्रगट रूप से अपने भाई के साथ मिलोगे और खुल्लमखुल्ला दारोगा का मुकाबला करोगे जैसा कि तुमने लिखा था। इस राय को मैं बहुत पसन्द करती हूँ और तुम्हारी भावज भी ऐसा ही करने के लिये कहती है। उनसे मुलाकात तो कर लो। मैंने उनसे वादा किया है कि अबकी आवेंगे तो तुम्हारा सामना कराऊँगी।

मैया०। बेशक मैं भी ऐसा ही चाहता था मगर अब मेरे दोस्तों की दूसरी राय हो गई है जो इससे बहुत अच्छी है। बस अब तुम किसी तरह का सोच विचार मत करो और जल्दी से मेरे साथ चलो चलो, किसी को खटका हो जायगा तो ठीक न होगा।

बहु०। तो क्या अब निश्चय हो गया कि मैं तुम्हारे साथ चली चलूँ ?

मैया०। हां, मैं तो कहता हूँ कि चलने में जल्दी करो।

बहु०। अब इसी तरह बिना कुछ सामान लिये ?

मैया०। हां, बस इसी तरह !

बहु०। अच्छा चलो, मैं तुम्हारे साथ चलने में खुश हूँ, किस राह से चलोगे ?

भैया०। जिस तिलिस्मी रास्ते से मैं आया हूँ उसी गुप्त राह से तुम्हें ले चलूंगा। मैं तो इतनी देर भी न लगाता जितनी बातचीत में लग गई है और तुम्हें बेहोश करके अपनी पीठ पर लाद के जल्दी ले भागता मगर क्या करूँ रास्ता इस लायक नहीं है बहुत ही तंग है। मेरे पीछे पीछे चली आओ, कुछ दूर तक अन्धकार में चलना होगा।

बहु०। मैं हर तरह से चलने के लिये तैयार हूँ, चलो।

इतना कह कर बहुरानी तैयार हो गई और भैयाराजा के पीछे पीछे चल खड़ी हुई। भैयाराजा जिस आलमारी के अन्दर से निकले थे उसी में अपनी स्त्री को लिये हुए चले गये। भीतर से वह आलमारी बहुत लम्बी चौड़ी थी और उसमें नीचे की तरफ उतर जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं। भीतर जाकर भैयाराजा ने न मालूम किस ढंग से दरवाजा बन्द कर लिया और नीचे उतरने लगे। आगे आगे भैयाराजा और पीछे पीछे उनकी पीठ पर हाथ रक्खे हुए बहुरानी जाने लगी, रास्ता तंग और अन्धकारमय था मगर सीढ़ियां बहुत छोटी छोटी थीं इसलिये उतरने में आसानी थी।

बहुत दूर तक नीचे उतर जाने के बाद वे दोनों एक कोठड़ी में पहुँचे जिसमें एक लालटैन की रोशनी हो रही थी। यह लालटैन भैयाराजा ऊपर जाते समय छोड़ गये थे।

इस कोठड़ी में पूरब और पश्चिम की तरफ दो दरवाजे थे जिनमें से पूरब तरफ वाला दर्वाजा इस समय खुला हुआ था। भैयाराजा ने वह लालटैन उठा ली और बहुरानी को साथ लिये हुए वे उस दर्वाजे के अन्दर चले गये। भीतर जाकर उन्होंने दर्वाजा बन्द कर दिया। केवल दोनों पल्ला मिला कर दबाने ही से एक खटके की आवाज हुई और वह दर्वाजा मजबूती के साथ बन्द हो गया। अब वे दोनों आदमी एक सुरंग में दाखिल हुए और चुपचाप बहुत दूर तक चले गये। आधी घड़ी के बाद पुनः एक कोठड़ी मिली जिसका दर्वाजा भैयाराजा ने एक मुट्ठा घुमा कर जो उस दर्वाजे में लगा हुआ था खोला। बहुरानी इस दरवाजे के खोलने का ढंग भी अच्छी तरह समझ न सकी क्योंकि मुट्ठा

घुमाने में भी कोई खास तरकीब थी।

दरवाजे के अन्दर घुस कर भैयाराजा ने लालटैन बुझा दी और अब पुनः बहुरानी को अन्धकार में चलना पड़ा। यह बात बहुरानी को अच्छी नहीं मालूम हुई और उसने कुछ चिढ़ कर भैयाराजा से कहा, "भला यहाँ पर लालटैन बुझा देने की क्या जरूरत थी ? व्यर्थ ही अन्धकार में चला कर तकलीफ देना...!"

भैया०। घबड़ाओ मत, यहाँ पर दो चार चीजें ऐसी हैं जिन्हें देख कर तुम डर जातीं, इसीलिये मैंने लालटैन बुझा दी। तुम बेखटके मेरे पीछे पीछे चली आओ, मगर देखो आगे कुछ दूर तक पानी में चलना पड़ेगा !

वास्तव में यही बात थी। बहुरानी के कान में पानी बहने की मीठी मीठी आवाज आई और चन्द कदम चलने के बाद पानी में पैर पड़ा और तब वह कपड़ा कुछ उठा कर चलने लगी। मालूम होता था कि सुन्दर चिकने फर्श पर साफ पानी बह रहा है जो कि कहीं बित्ता भर ज्यादे और कहीं उससे भी कम होगा। वहाँ पर बहुरानी को कई दफा चक्कर लगाना पड़ा और अन्त में वह एक चौखट नाँघ कर सूखी जमीन पर पहुँची और पीछे से पुनः दर्वाजा बन्द होने की आवाज आई।

यहाँ पर भैयाराजा ने लालटैन जलाई और बहुरानी को साथ लिये हुए आगे की तरफ बढ़े। अब वे दोनों एक मामूली सुरंग में जा रहे थे और रास्ता ऊँचाई की तरफ चढ़ रहा था। कुछ दूर जाने के बाद पुनः एक दर्वाजे के पास पहुँचे और जब वह खोला गया तो दोनों आदमी बाग के बाहर मैदान में पहुँचे जहाँ ठण्डी ठण्डी हवा के झोंके लग रहे थे और एक रथ जिसमें मजबूत घोड़े जुते हुए थे सामने खड़ा था।

दरवाजा बन्द करने के बाद भैयाराजा ने बहुरानी को उस रथ पर सवार कराया और आप भी सवार होकर रथ हाँकने का हुक्म दिया। रथ कुछ दूर निकल जाने के बाद उन्होंने बहुरानी से कहा, "मैं वास्तव में भैयाराजा नहीं हूँ, मैं वही दारोगा हूँ जिसे भैयाराजा ने बेइज्जत किया था। तुम्हें जहन्नुम की सैर कराने के वास्ते लिये जाता हूँ। ताज्जुब नहीं कि वहाँ बहुत जल्द असली भैयाराजा से तुम्हारी मुलाकात हो। बस खबरदार, चिल्लाने की कोशिश मत करना !"

पांचवां बयान

बहुरानी के फँस जाने के घण्टे भर बाद असली भैयाराजा उसी राह से बहुरानी के कमरे में दाखिल हुए जिस राह से दारोगा उसे धोखा दे कर ले गया था। बहुरानी की मशहरी खाली देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ और यह सोच कर कि कोई दुर्घटना जरूर हुई है उनका कलेजा धड़कने लगा। वे इधर उधर की चीजों पर निगाह दौड़ाते हुए सदर दरवाजे पर गये तो दरवाजे को अन्दर से बन्द पाया जिसमें उनका शक और भी मजबूत हो गया और वे सोचने लगे कि जरूर बहुरानी इसी कमरे में थी, अगर यहाँ न होती तो यह दर्वाजा अन्दर से क्यों बन्द होता! तो क्या वह अपनी खुशी से कहीं बाहर चली गई? नहीं, बाहर जाने का यह तिलिस्मी रास्ता तो उसे मालूम ही न था, वह क्योंकर बाहर गई होगी! तब वह जरूर किसी धोखे में डाली गई।

इसी प्रकार से कुछ देर तक सोचने के बाद पुनः भैयाराजा सदर दर्वाजे के पास गये और उसकी कुण्डी जो अन्दर से बन्द थी खोल कर उसी तिलिस्मी राह से दर्वाजे खोलते और बन्द करते हुए मकान और बाग के बाहर निकल गये और उस जगह पहुँचे जहाँ दारोगा ने बहुरानी को रथ पर चढ़ाया था। वहाँ भूतनाथ खड़ा उनका इन्तजार कर रहा था जिसे वे बाग के बाहर ही छोड़ गये थे।

भूत०। (आश्चर्य से) आप बहुत जल्द बाहर चले आये!

भैया०। हाँ, जिस काम के लिये मैं गया था वह काम नहीं हुआ अर्थात् मेरी स्त्री उस कमरे में मुझे नहीं मिली जो उसके रहने का स्थान था। मैं वहां कुछ देर तक ठहर कर उसका इन्तजार करता अगर उस कमरे का दरवाजा खुला हुआ देखता मगर आश्चर्य तो यह है कि कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द था।

भूत०। अगर दरवाजा अन्दर से बन्द था तो वे जरूर कमरे के अन्दर ही रही होंगी अस्तु या तो वे अपनी इच्छानुसार किसी तिलिस्मी राह से बाहर निकल गई हों या ताज्जुब नहीं किसी मुसीबत में फँस गई हों।

भैया०। मैं भी तुम्हारे दूसरे खयाल का पक्षपाती हूँ, वह जरूर किसी मुसी-

बत में फँस गई है क्योंकि एक तो उसे वहां से बाहर निकल जाने का तिलिस्मी रास्ता मालूम न था, दूसरे.....

भूत० । तो जरूर कोई दुश्मन वहां पहुँचा जिसने उन्हें धोखा दिया ।

भैया० । यह काम दारोगा के सिवाय और कौन कर सकता है ? अगर वह वास्तव में कहीं गायब हो गई है या उसे किसी दुश्मन ने फँसा लिया है तो कल मेरे जासूस मुझे जरूर इस बात की खबर देंगे ।

भूत० । मैं तो इस समय भी पता लगाने की कुछ कोशिश करूँगा ।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुये में से सामान निकाल कर बत्ती जलाई और वहां की जमीन को गौर से देखने लगा रथ के दाहरे पहिये का निशान जमीन पर देख कर वह चौंका और बोला, "देखिये यह चार पहिये के रथ का निशान यहां मौजूद है ! जरूर वह यहां तक लाई गई हैं और यहां से रथ पर बैठा कर उन्हें कोई ले गया है । अब आप अपने डेरे पर जाइये और मुझे पता लगाने के लिये इसी जगह छोड़ दीजिये, मैं इसी निशान से दुश्मन का पता लगा लूंगा ।

भैया० । अगर मैं भी तुम्हारे साथ रहूँ तो क्या हर्ज है ?

भूत० । नहीं, मुझे इस काम में रोशनी का सहारा लेना पड़ेगा, चाहे वह रोशनी किसी चिराग या मोमबत्ती की हो या चमकते हुये सूर्य्य भगवान के किरणों की । अगर मुझे कोई देख भी लेगा तो कुछ चिन्ता नहीं मगर आपको कोई देखेगा तो आपकी इच्छा के विरुद्ध होगा ।

भैया० । हां, यह तो ठीक है खैर तुम अपना काम करो, मैं कुछ देर तक तुम्हारे साथ रह कर फिर मौका पा हट जाऊँगा और सवेरा होते होते तक भाई साहब के पास पहुँचूँगा तथा मुकाबले में देखूंगा कि ईश्वर की तरफ से हमारा क्या फैसला होता है ।

भूत० । बहुत खूब, इसमें मुजायका नहीं ।

उस रथ के पहियों का निशान बिना कहीं से बिगड़े या खराब हुए दारोगा के मकान तक चला गया था क्योंकि अभी तक उस रास्ते पर आमदरफ्त नहीं हुई थी कि जिससे वह निशान बिगड़ता और नष्ट होता अस्तु भूतनाथ और भैयाराजा को विश्वास हो गया कि बहुरानी को मुसीबत में डालने वाला यह

दारोगा है।

भैयाराजा०। लो गदाधरसिंह! हम लोगों का गुमान बहुत ठीक निकला। अब तुमको चाहिये कि उस दुष्ट के कब्जे से मेरी स्त्री की जान बचाओ।

भूत०। आप इस काम का बोझ मुझ पर डाल कर जाइये और राजा साहब से मिलने की फिक्र कीजिये। वहां जाने पर आपको महल के अन्दर का हाल चाल भी मालूम हो जायगा जो आपके स्त्री के गायब होने बाद वहाँ पैदा हुआ होगा तथा इस घटना की भी सचाई जानी जायगी।

"अच्छा!" कह कर भैयाराजा वहां से चले गये और सूर्य्य उदय होने के पहिले ही बिना रोक टोक खास बाग में दाखिल होकर राजा साहब के पास पहुँचे जो कि नहर बाग के सामने एक चन्दन की चौकी पर बैठे हाथ मुह धो रहे थे। अभी तक बहूरानी के गायब होने का हाल उन्हें मालूम नहीं हुआ था मगर महल के अन्दर लौंडियों में कानाफूसी मची हुई थी।

भैयाराजा पर निगाह पड़ते ही राजा साहब अपना काम छोड़ उठ खड़े हुए और चौकी से नीचे कूद कर नंगे ही पांव उनकी तरफ लपके जो राजा साहब को उठते देख तेजी के साथ उनकी तरफ बढ़े आ रहे थे।

राजा साहब ने बड़े प्रेम से भैयाराजा को गले लगा लिया और दोनों की आँखों से प्रेम के आंसू बहने लगे। कई आदमी दौड़े हुए कुंअर गोपालसिंह के पास चले गये और उन्हें भैयाराजा के आने की खबर दी। कुछ देर के बाद भैयाराजा का हाथ पकड़े हुए राजा साहब दालान में आये जहां बहुत सी कुर्सियों के अतिरिक्त चांदी सोने की भी दो कुर्सियाँ रक्खी हुई थीं जिन पर हां नहीं करते हुए दोनों भाई बैठ गये और इस तरह बातचीत करने लगे :—

राजा०। क्यों भाई! हमने क्या कसूर किया था जो तुम इस तरह हमें छोड़ कर चले गये थे?

भैयाराजा०। मैं तो सदा ही से आप के चरणों का दास हूँ और जितना प्रेम आप मेरे साथ करते हैं उसे भी मैं खूब जानता हूँ फिर यह कब हो सकता है कि मैं आपको कसूरवार समझूं और रंज होकर कहीं चला जाऊं। मगर इतना जरूर है कि आपने दारोगा के फेर में पड़ कर मेरी जान का कुछ खयाल न किया! मैंने आपके कमरे में पहुँच कर यह प्रगट कर दिया कि दारोगा ने मुझे

मार डाला है मगर आपने इस पर कुछ भी ध्यान न दिया! यद्यपि यह बात बहुत ठीक थी और वास्तव में दारोगा ने मुझे मार ही डाला था। ईश्वर ने एक मददगार पहुँचा दिया जिसने मेरी जान बचा ली और अपने घर ले जाकर मुझे आराम से रक्खा। मैं कई दिनों तक इस बात का इन्तजार करता रहा कि देखें आप मेरे लिये क्या करते हैं। मगर जब मैंने देखा कि मेरी बनिस्बत दारोगा पर आप ज्यादे मुहब्बत रखते हैं तब मैं लाचार और हताश होकर रह गया।

राजा०। मेरे सोने वाले कमरे में पहुँच कर जो कुछ तुमने किया और जमीन पर लिख कर बताया उस पर मुझे कैसे विश्वास हो सकता था? मैं उसे भूत प्रेत का तमाशा समझ कर चुप हो रहा। आश्चर्य है कि तुम दारोगा की शिकायत करते हो और कहते हो कि "उसने तुम्हें मार डालने का प्रयत्न किया" मगर मेरी समझ में नहीं आता कि उसने तुम्हारे साथ ऐसा सलूक करने में अपना क्या फायदा समझ रक्खा था? आखिर यह भी कहो कि उसने ऐसा क्यों किया? मैं समझता हूँ कि इस मामले में तुम्हें धोखा हुआ और इसी धोखे में पड़ कर तुमने दारोगा के साथ बड़ी बेइन्साफी की। उसका कान काट डाला और मुंह काला करके तथा जूतों का हार गले में डाल कर सरे बाजार छोड़ दिया।

भैया०। जी नहीं, मुझे धोखा नहीं हुआ और दारोगा के साथ जो मैंने यह कार्रवाई की वह भी बेजा नहीं की। असल में तो वह मार डालने के लायक था मगर इस खयाल से मैंने उसकी जान नहीं ली कि आप उसे अपना दोस्त समझते हैं और मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहता। केवल थोड़ी सी सजा देकर छोड़ दिया सो भी ऐसी हालत में जब कि आपने मेरे बारे में उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

इसी बीच में कुँअर गोपालसिंह भी आ गये और आश्चर्य करते हुए अपने पिता और चाचा को प्रणाम करके एक कुर्सी पर बैठ गये।

राजा०। फिर भी मैं यही कहता हूँ कि तुमको दारोगा के बारे में धोखा हुआ! जब कि इतने दिनों तक उसने तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया तो अब उसे ऐसी कौन सी जरूरत आ पड़ी थी कि तुम्हें.....

भैया०। (बात काट कर) अजी उस दिन की घटना ही ऐसी बेढब थी

कि दारोगा को मुझे मार डालने की जरूरत आ पड़ी मैं वह घटना बयान करता हूँ आप सुनिये।

इतना कह कर भैयाराजा ने उस दिन का सब हाल बयान किया और जमना सरस्वती तथा प्रभाकरसिंह का हाल भी कह सुनाया मगर यह नहीं कहा कि भूतनाथ को इस मामले से क्या सम्बन्ध था अर्थात् भूतनाथ को इस मामले से बिल्कुल ही अछूता रक्खा, यहाँ तक कि इस किस्से में उसका नाम भी नहीं लिया।

भैयाराजा की जुबानी सब हाल सुन कर राजा साहब को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वे सिर झुका कर कुछ देर तक सोचते रहे और फिर बोले :—

राजा०। इस समय जमना, सरस्वती और प्रभाकरसिंह कहाँ हैं?

भैया०। वह अपने उसी दोस्त के यहाँ हैं जिसने उनकी और उनके साथ ही साथ मेरी भी रक्षा की थी। मैं उन्हें आपके सामने बुला कर उनकी गवाही दिला सकता हूँ।

राजा०। नहीं नहीं, गवाही की क्या जरूरत है? अगर मैं तुम्हें झूठा समझूँगा तो उन्हें सच्चा क्यों समझूँगा? मगर तुमने बात बड़े ही आश्चर्य की कही! दारोगा ने तो तुम्हारी दुश्मनी का कारण मुझसे और ही कुछ बयान किया था?

भैया०। उसने क्या कहा था?

इसके जवाब में सीधे सादे राजा साहब ने वह सब हाल कह सुनाया जो दारोगा ने गढ़ कर राजा साहब से कहा था अर्थात् "भैयाराजा आपको और कुँअर गोपालसिंह को मार कर स्वयं जमानिया के राजा बना चाहते हैं और इसी काम में मुझसे मदद मांगते थे, मैंने इन्कार किया तब मेरी यह दुर्दशा की गई इत्यादि।

भैया०। (क्रोध में भर कर) क्या उस दुष्ट ने आपसे ऐसा कहा? और आपके दिल में भी यह बात बैठ गई?

इसका जवाब राजा साहब ने कुछ भी न दिया जिससे भैयाराजा समझ गये कि दारोगा की बातों पर भाई साहब को विश्वास हो गया है।

भैया०। खैर आप दारोगा को यहां बुलवाइये मैं जरा उससे पूछूँ तो सही।

राजा०। हमारी तुम्हारी बातों में उसे बुलाने की जरूरत ही क्या है?

ऐसा जवाब राजा साहब ने इस खयाल से दिया कि उन्हें इस बात का शक

हो गया कि दारोगा यहां आवेगा तो भैयाराजा उसे जरूर मारेंगे। मगर भैयाराजा को यह जवाब बहुत बुरा लगा और वह राजा साहब का मतलब समझ गये। भैयाराजा कुछ और कहा ही चाहते थे कि लौंडियों का कोलाहल सुन कर सब कोई चौंक पड़े और उस तरफ देखने लगे जिधर तीन चार लौंडियाँ घबड़ाई हुई आकर खड़ी हो गई थीं। बहुरानी के गायब हो जाने से महल में कोलाहल मच चुका था और वही खबर सुनाने के लिये लौंडियाँ आई थीं।

राजा साहब ने बड़े ही आश्चर्य के साथ यह खबर सुनी और भैयाराजा की तरफ देख कर कहा, "मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारी ही इच्छानुसार यहाँ से चली गई होगी क्योंकि मैंने सुना है कि तुम कई दफे महल में उससे मिलने के लिये आये थे। पहिले तो मुझे यह बात मालूम न थी और महल में आने वाले को चोर या बदमाश समझता था मगर जब तुम्हारी भावज ने यह हाल तुम्हारी स्त्री से सुन कर मुझसे कहा तब मुझे मालूम हुआ कि महल में आने वाले तुम्हीं हो और तब मैं एक तरह पर निश्चिन्त सा हो गया।"

भैया०। (कुछ क्रोध में आकर) बेशक यह काम भी आपके दारोगा साहब ही का है। मैं जब तक अपने लिये कोई ठिकाना नहीं बना लेता तब तक उसे यहाँ से क्योंकर ले जा सकता था? आप दारोगा को जरूर बुलवाइये, बिना उसके आये मेरी बातों का कोई नतीजा नहीं निकलेगा। मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि उसने अपना पाप छिपाने के लिये मुझे आपका और बेचारे गोपालसिंह का दुश्मन बनाया और आपने भी उस पर विश्वास कर लिया। जरूर मेरी स्त्री का भी चोर वही दुष्ट है आप इस बात से निश्चिन्त रहिये, मैं कदापि जमानिया का राजा बनना नहीं चाहता। यदि आपको इस बात का विश्वास न होगा तो मैं अपने को आपके सामने ही मार कर आपके दिल से यह खटका दूर कर दूँगा मगर अपने मरने से दारोगा को सुखी न होने दूँगा। पहिले दारोगा को और अपनी स्त्री को भी मार कर निश्चिन्त हो जाऊँगा तब आपके चरणों में अपना सर अर्पण करूँगा। अपनी स्त्री को इस लिये मारूँगा कि मेरे बाद उसे किसी तरह का दुःख न भोगना पड़े।

राजा०। नहीं नहीं नहीं, ऐसा न करो, मैं इस खून खराबे को पसन्द नहीं करता, मैं खुशी से तुम्हें यहाँ का राजा बनाने के लिये तैयार हूँ। मुझे विश्वास

है कि गोपाल को भी इसमें कोई उज्र न होगा क्योंकि वह बड़ा ही पितृ-भक्त है और मेरी आज्ञा को ईश्वर की आज्ञा के समान मानता है साथ ही इसके दारोगा को भी इस राज से अलग करके तुम्हें बेफिक्र कर दूँगा और उसे अपने साथ जगल में ले जाकर किसी ठिकाने निवास करूँगा क्योंकि वह मेरा साथ छोड़ना पसन्द न करेगा।

भैया०। अफसोस! आपकी सभी बातों से दारोगा की तरफदारी टपकती है! उसके सामने आपके दिल में मेरी कुछ भी कदर नहीं है और उसकी बातों के आगे मेरी बातें सच्ची नहीं समझी जाती हैं, अस्तु मैं वही करूँगा जो कह चुका हूँ क्योंकि इतना हो जाने पर भी मैं आपको ईश्वर के समान मानता हूँ। मैं इस बात को साबित करके दिखा दूँगा कि मेरी स्त्री का चोर भी वही है। बेशक मुझसे भूल हुई कि इतने दिनों तक गायब रह कर आपकी मुहब्बत की जांच करता रहा!! आज मुझे मालूम हो गया कि दारोगा के सामने मेरी कितनी इज्जत है! मैं अब एक क्षण भी यहाँ रहना पसन्द नहीं करता और आपका चरण छू कर बिदा होता हूँ।

इतना कह कर भैयाराजा उठ खड़े हुए और राजा साहब का चरण छू कर वहाँ से रवाना हुए। राजा साहब कितना ही "हाँ हाँ, सुनो सुनो!!" कहते रहे मगर भैयाराजा ने एक भी न सुनी, लाचार राजा साहब बैठे के बैठे रह गये मगर कुँअर गोपालसिंह उठ खड़े हुए और भैयाराजा के पीछे पीछे खास बाग के बाहर निकल गये। वहां पर गोपालसिंह ने भैयाराजा का पैर पकड़ लिया और कहा, "आप जहां जी चाहे जाइये मगर मेरी दो चार बातें सुनते जाइये। मैंने आपका कोई कसूर नहीं किया है और न मैं आपको अपना दुश्मन समझता हूँ, अस्तु मुझ पर जो आपका प्रेम है उसका खून मत कीजिये!!

भैयाराजा अटक गये, उन्होंने गोपालसिंह को उठा कर छाती के साथ लगा लिया और बोले, "नहीं! मुझे तुमसे कुछ रंज नहीं है बल्कि तुम्हारे मिजाज और तुम्हारी लायकी से मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ, तुम्हें होनहार समझता हूँ और तुम पर भरोसा रखता हूँ। कहो क्या कहते हो?

गोपाल०। मुझे जो कुछ कहना है एकान्त में कहूँगा, यहां बहुत से आदमी हैं।

भैया०। अच्छा मैं तुम्हारे साथ एकान्त में चलता हूँ।

छठवाँ बयान

दिन तीन पहर से ज्यादे ढल चुका है और बाजारों में लोगों की आमदरफ्त बढ़ती जा रही है जो कि दोपहर के समय धीरे धीरे घटती हुई बिल्कुल ही कम हो गई थी। बाजार की बड़ी बड़ी दूकानें भी धीरे धीरे खुलती जा रही हैं जो कि सुबह से दोपहर तक व्यवहार करने के बाद बन्द हो गई थीं और उन छोटी छोटी दुकानों की भी रौनक बढ़ती जा रही है जिनके मालिक सुबह से खोल कर दो घण्टे रात जाते तक भी बन्द करना पसन्द नहीं करते।

जमानिया यद्यपि बहुत छोटा राज्य और मामूली शहर है मगर फिर भी यहां का चौक और महाजनी बाजार रौनक पर है और जरूरत की सभी चीजें मिल जाया करती हैं। महाजनों में लेन देन हुण्डी पत्री का व्यवहार भी अच्छी तरह से होता है तथा बजाजे और बनारसी माल की दुकानें भी बहुत सी हैं जिनको कभी इनकी शिकायत करने का मौका नहीं मिलता कि "बिक्री कम होती है और मुनाफे में लज्जत नहीं है!" इस बात की शिकायत लोग जरूर करते हैं कि हमारे राजा साहब को किसी बात का शौक नहीं है, अगर होता तो इस शहर की रौनक चोगुनी हो गई होती!

शहर की गलियां बहुत तंग और इमारतें मामूली दर्जे की हैं परन्तु चौक और महाजनी बाजार की सड़कें कुछ चौड़ी और इमारतें तथा दूकानें बहुत बड़ी बड़ी हैं क्योंकि इसमें पास ही यहां के राजा साहब का मकान है और बड़े बड़े ओहदेदारों कारिन्दों और फौजी अफसरों का रहना भी इस बाजार के पास ही होता है।

धीरे धीरे चौक बाजार में भिश्तियों ने छिड़काव भी कर दिया (जो कि दूकानदारों की तरफ से था) और दूकानें सब खुल गईं तथा सन्ध्या होते होते बाजार पूरी रौनक पर हो गया और सैलानी लोग भी टहलते हुए दिखाई देने लगे। ऐसे समय हम एक ऐसे आदमी को जो रंग ढंग से जमींदार मालूम होता था सड़क पर टहलते और इधर उधर निगाहें दौड़ाते हुए देखते हैं।

इसकी पोशाक कुछ अजीब ढंग की है। सर पर बहुत बड़ी गुलेनार रंग की पगड़ी और बदन में घेरादार जामा है जिसके दोनों बगल खूब चुन्नत पड़ी हुई

है तथा पायजामे की मोहरी भी इतनी चौड़ी है कि एक एक पैर में खासा मोटा ताजा आदमी बखूबी घुस जाय। बसन्ती रंग का बारह या चौदह हाथ लम्बा कपड़ा जिसमें चारों तरफ सुनहरा गोटा टँका हुआ है कमर में लपेटे है और उसमें एक खञ्जर भी खुसा हुआ है। माथे में रामानन्दी तिलक और गले में तीन चार छोटे बड़े दानों की तुलसी की माला है और सब से बढ़ कर यह बात है कि हाथ में मोटा सा माथे तक लम्बा लट्ठ लिये हुए है जो हर कदम पर अपने भद्दे पैरों के साथ ही साथ पटकता हुआ चल रहा है।

इस आदमी के पीछे पीछे इसका एक नौकर भी है जिसके सर पर गन्दा मटमैला सापा और बदन में जगह बजगह से फटी हुई मिरजई पड़ी हुई है। यद्यपि उसकी धोती का कपड़ा छोटा नहीं है मगर घुटने के ऊपर ही दिखाई देता है! कन्धे पर छोटा सा थैला जिसमें शायद लोटा डोरी कोयला तथा तम्बाकू वगैरह होगा और हाथ में बड़ा सा नारियल लिये कुछ पीछे पीछे जा रहा है।

इस जमींदार सूरत वाले आदमी की निगाह चौक में एक बहुत बड़ी दूकान के ऊपर पड़ी जिसके ऊपर लटके हुए तख्ते पर बड़े बड़े हरफों में यह लिखा हुआ था :—

"यहां पर ऐयारी का सभी सामान मिलता है,
ऐयारी सिखाई जाती है, और ऐयारों को
रोजगार भी दिलाया जाता है, आइये
दूकान की सैर कीजिये—"

इस लिखावट को पढ़ कर वह आदमी अटक गया और दूकान की तरफ गौर से देखने लगा। दूकान बड़ी और खूबसूरत रंगी हुई थी। खम्भों पर रंग बिरंगी कपड़ों का गिलाफ चढ़ा हुआ था और आगे की तरफ एक सुन्दर सायबान बना हुआ था जिसके चबूतरे पर बैठने के लिये छोटी बड़ी बहुत सी कुर्सियां रक्खी हुई थीं। कमर में तलवारें लगाये चार पांच सिपाही भी काम काज करते हुए दिखाई देते थे।

कुछ देर तक देखने बाद वह आदमी दूकान के अन्दर चला गया और वहां की चीजों को बड़े गौर से देखने लगा। एक आदमी जो शायद सौदा

बेचने के लिये मुकर्रर था उसके सामने आया और बड़ी लन्तरानी के साथ चीजों की तारीफ करता हुआ तरह तरह की चीजें दिखाने लगा जो कि शीशे की सुन्दर आलमारियों मे करीने से सजाई हुई थीं। दूकानदार ने कहा :—

"देखिये ये तरह तरह की दाढ़ी और मूछें तैयार हैं। बीस वर्ष से लेकर सौ वर्ष का आदमी बनना चाहे तो बन सकता है! जो पूरी तौर पर ऐयारी नहीं जानते और बनावटी दाढ़ी मूछें तैयार करने का जिन इल्म नहीं है वे इन दाढ़ी मूछों को बड़ी आसानी से लगा कर लोगों को धोखे में डाल सकते हैं मगर जो काबिल ऐयार हैं और मनमानती सूरत बनाया करते हैं अथवा जो किसी की नकल उतारने में ओस्ताद हैं उनके लिये तरह तरह के खुले हुए बाल अलग रक्खे हुए हैं। (लकड़ी के डब्बों को खोल कर दिखाते हुए) इन सुफेद और स्याह बालों से वे अपनी मनमानती सूरतें बना सकते हैं। देखिये बारीक मोटे सादे और घुंघराले वगैरह सभी तरह के बाल मौजूद हैं। इसके अलावे यह देखिये (दूसरी आलमारी की तरफ इशारा करके) तरह तरह की टोपियां जो कि पूरब पश्चिम उत्तर और दक्खिन के मुल्कों वाले पहिरा करते हैं तैयार हैं और इसी तरह हर एक मुल्कों की पोशाकें भी इधर उधर खूंटियों पर देखिये तैयार लटक रही हैं। साफे पगड़ी और मुड़ासो की भी कमी नहीं है, बस सर पर रख लेने की देर है आइये इधर दूसरे कमरे में देखिये तरह तरह के बटुए भी लटक रहे हैं जिनमें रखने के लिये हर तरह का सामान भी इस दूकान में मौजूद रहता है। (तीसरे कमरे में ले जाकर) ये छोटे बड़े हलके भारी सभी तरह के कमन्द और हर्बों की सैर कीजिये जिनकी प्रायः सभी ऐयारों को जरूरत पड़ती है आप ऐयार हैं इसलिये मै आपको यहां हर एक चीजों की सैर अच्छी तरह कराया चाहता हूँ।"

"आप ऐयार हैं" यह सुन कर वह जमींदार ठमक गया और दूकानदार का मुँह देखने लगा।

दूकानदार०। आप आश्चर्य क्यों करते हैं! मैं अभी बहुत सी चीजें आपके दिखलाऊँगा क्योंकि ऐयार होने के साथ ही आप अमीर भी मालूम पड़ते हैं

जमींदार०। आपका खयाल गलत है। आपने क्योंकर जाना कि हम ऐयार हैं और अमीर हैं!

दूकानदार०। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है! मेरा तो दिन रात यह काम ही ठहरा, मैं खुद ऐयार हूँ और हर घड़ी ऐयारों से वास्ता पड़ा ही करता है। अक्सर ऐयार लोग मुझसे अपने काम में सलाह लेने आया करते हैं और मैं उन्हें अपनी फीस लेकर अच्छी सलाह दिया करता हूँ मगर किसी का भेद नहीं खोलता और एक की बात दूसरे से नहीं कहता। यहां तो मेरी हाल ही में यह नई दूकान हुई है, हर एक बड़े शहरों में मेरे मालिक की बड़ी बड़ी दूकानें हैं जिनमें मेरे ऐसे ऐसे सैकड़ों ऐयार काम करने के लिये नौकर हैं। ऐयारों से दिन रात व्यवहार करते करते हम लोग पक्के हो गये हैं। अतएव आपको पहिचान लिया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है और इसके लिये आप किसी तरह की चिन्ता न करें। आइये और दूसरे कमरे का सैर कीजिये जिसमें तरह तरह की दवाइयां तैयार हैं और होती हैं।

दूकानदार की चलती फिरती बातें सुन कर वह जमींदार दंग हो गया और फिर कुछ भी न बोला। उसके साथ ही साथ दूसरे कमरे की सैर करने चला गया और वहां देखा कि तरह तरह की बहुत सी शीशे की आलमारियों में सोने चांदी तांबे और पीतल के बड़े छोटे कई प्रकार के डब्बे और डिबियायें सजाई रक्खी हैं और कई नौकर जमीन पर बैठे खल बट्टा चला रहे हैं, जिनमें हरी पीली सुफेद और काली तरह तरह की दवायें घुट रही हैं।

दूकानदार०। यह देखिये इन आलमारियों में जितने डब्बे और डिबियायें आप देखते हैं सभों में तरह तरह की दवाइयां मौजूद हैं जो कि ऐयारों के सुभीते के लिए बना कर रक्खी हुई हैं। हमारी दवाओं में इस बात की शर्त है कि पांच बरस तक कुछ भी खराब नहीं होती और इसके इस्तेमाल से किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचता। इस दूकान में कोई भी ऐसी दवा आपको नहीं मिलेगी कि जिसमें किसी तरह का जहरीला असर हो या जिससे किसी को किसी तरह का नुकसान पहुँचे क्योंकि किसी ऐयार का यह धर्म नहीं है कि अपने काम से सर्वसाधारण या किसी खास व्यक्ति को नुकसान पहुँचावे। अगर ऐसा करे तो वह ऐयार नहीं पूरा बेईमान और दगाबाज है। ऐयार का यही काम है कि अपने मालिक के लिये छिपे हुए मामले का पता लगावे, दुष्टों चोरों और खूनियों का पता लगावे, राजाओं और रईसों की लड़ाइयों को जिनमें बहुत से

आदमियों का खून होना सम्भव है अपनी कारीगरी से रोके और सहज ही में मामले को तै कर डाले। जो लोग इसके विपरीत करते हैं, उन्हें मैं ऐयार नहीं समझता। वे चोर बदमाश और डाकू हैं तथा किसी भले आदमी के पास बैठने लायक नहीं हैं और उनका किसी रईस को भरोसा न करना चाहिये। अस्तु इस दूकान में जितनी चीजें हैं सब ईमानदार ऐयारों ही के लिये हैं। सम्भव है कि इन चीजों से कोई बुरा काम ले जिसमें कि हम लोगों का कोई कसूर नहीं है मगर हम लोग अगर किसी को करते देखते और सुनते हैं तो उसे सजा देने के लिये तैयार भी हो जाते हैं। हम लोग बहुत ठीक और कीमती दवाइयां रखते हैं। हमारे यहां की बेहोशी की दवा अगर किसी को ज्यादे भी खिला पिला या सुँघा दी जाय तो उससे कुछ नुकसान नहीं होता या अगर पांच पांच सात सात दिन तक भी उससे किसी आदमी को बेहोश रक्खा जाय तो दिल और दिमाग में किसी तरह की खराबी नहीं पहुँच सकती। इसी तरह चेहरे पर लगाने के लिये भी जितने तरह के रोगन हैं उनसे बदन की जिल्द में धब्बा नहीं पड़ने पाता और न चमड़े का रंग ही बदलता है। जिल्द में खुरखुरापन नहीं आता। इसके अलावा पक्का रोगन भी इस दूकान में मौजूद है जो कि एक खास किस्म के अर्क से अगर धोया जाय तो महीनों तक वह रंग कायम रखता है, मसा और तिल बनाने का मसाला भी इस दूकान में बहुत अच्छा तैयार है। तारीफ तो यह कि हमारे यहां की किसी दवा में भी बदबू नहीं है, सभी खुशबूदार चीजों के पुट देकर तैयार की जाती हैं। आप इस दूकान की कोई चीज इस्तेमाल करके देखिये। हां इस दूकान में खाने की चीजें भी ऐसी बनती हैं कि जिन्हें आप महीनों तक ऐयारी के बटुए में रख कर सफर में काम ले सकते हैं और बिगड़ने नहीं पातीं तथा उनमें किसी तरह की छूत भी नहीं है अर्थात् खालिस घी चीनी दूध और फलों से बनाई जाती हैं। आप नमूने के तौर पर कुछ खाकर भी देख सकते हैं।

जमी०। बेशक आपकी दूकान बड़े काम की है मगर मैं समझता हूँ कि यह दूकान थोड़े ही दिनों से कायम हुई है।

दूकानदार०। यह तो मैं खुद ही कह चुका हूँ कि बड़े बड़े शहरों में हमारे मालिक की बहुत सी दूकानें हैं, यहां भी थोड़े दिनों से एक शाखा खोली गई है।

इतने ही में एक आदमी की सूरत देख कर वह जमींदार चौंक पड़ा जो कि आलमारियों के शीशों को रेशमी कपड़े से पोंछ पोंछ कर साफ कर रहा था। यद्यपि जमींदार ने अपने दिल के भाव को छिपाने के लिये बड़ी कोशिश की मगर फिर भी दूकानदार समझ ही गया और बोला, "मगर इस शहर में हम लोगों को नौकरों की बड़ा तकलीफ हुई। हम सिर्फ सात आदमी ऐसे हैं जो कि एक साथ मालिक के भेजे हुए इस शहर में आये हैं और जिनका कि हम अपना साथी कह सकते हैं, बाकी के जितने आदमी आप देखते हैं सब इसी शहर से नौकर रक्खे गये हैं जिनकी चाल चलन का अभी हम लोगों को पता नहीं लगा है और इसीलिये हम लोग दवा के काम में इनसे मदद नहीं लेते।"

जमी०। ठीक है, यह काम आपने बड़ी होशियारी का किया क्योंकि (धीरे से कान में मुँह लगा कर) इस शहर के आदमी बड़े ही बेईमान होते हैं, खास कर इन दिनों तो.....

दूकानदार०। मैं उम्मीद करता हूँ कि आपसे इस काम में मुझे मदद मिला करेगी।

जमींदार०। जरूर! मैं अक्सर आया करूँगा और अपने दोस्तों को भी लाऊँगा।

दूकानदार०। कोई चीज खरीदने की इच्छा है?

जमी०। हां मुझे कुछ चीजों की जरूरत भी है जो कि मैं एकान्त में आपसे कहूँगा। आप किसी दूसरे कमरे में चलिये।

जमींदार को साथ लिये हुए दूकानदार साहब जिनका नाम रामेश्वरचन्द था, एक दूसरे कमरे में चले गये जो खास करके ग्राहकों और रईसों के बैठने व आराम करने के लिये मुकर्रर था। यह कमरा बहुत साफ और साधारण ढंग पर सजा हुआ था। इसकी दीवार और छत आसमानी रंग की थी और जमीन पर सुफेद फर्श बिछा हुआ था तथा दस बारह कुर्सियां और चार पांच कोच भी रक्खे हुए थे जिनकी गद्दियों के ऊपर सुफेद चांदनी बन्द के सहारे से बंधी हुई थी। छत में दस बारह शीशे लटक रहे थे जिनमें इस समय रोशनी हो चुकी थी। रामेश्वरचन्द ने जमींदार को ले जाकर एक कोच पर बैठा दिया तथा आप एककुर्सी खींच कर उसके पास ही बैठ गया और बातचीत करने लगा।

रामेश्वर० । हां, अब आप फर्मायें आपको किस किस चीज की जरूरत है ?

जमींदार० । एक तो मुझे ऐसी पोशाक की जरूरत है जो खास काबुल के रहने वाले अमीर मुगल लोग पहिरते हैं ।

रामेश्वर० । तैयार मौजूद है, और फर्माइये ?

जमींदार० । ऐसी दवा भी चाहिये जो आदमी को कम से कम सात दिन तक के लिये गूंगा बना सके ।

रामेश्वर० । करीब करीब ऐसी ही दवा मैं दे सकता हूँ जो कि किसी की जुबान पर लगा देने से वह बोलने लायक न रहेगा । जुबान की शक्ति बिल्कुल जाती रहेगी मगर उसे खाने पीने में किसी तरह की तकलीफ न होगी और न कोई चीज बदजायके मालूम पड़ेगी ।

जमीं० । बस इस वक्त तो मैं बतौर आजमाइश के सिर्फ दो ही चीजें आपके यहां से खरीदूँगा, अगर आपके यहां की दवा ठीक निकली तो मैं दो तीन दिन में आपसे मिल कर बहुत चीजें खरीदूँगा ।

दूकानदार रामेश्वरचन्द ने थोड़ी ही देर में दोनों चीजें लाकर जमींदार के सामने रख दीं और दस अशर्फी उनकी कीमत मांगी जो कि उसी वक्त जमींदार ने अपनी कमर से निकाल कर दे दी और कहा कि—"ये चीजें मेरे नौकर के हवाले कर दी जांय जिसे कि मैं दूकान के बाहर छोड़ आया हूँ ।" दूकानदार ने ऐसा ही किया । चलते समय जमींदार ने दूकानदार से कहा :—

जमींदार० । दूकान के लिये यह मकान आपको बहुत अच्छा मिल गया है । असल में यह ऐयारों ही के रहने लायक है । मैं इसके हर एक दर्जे, कोठरियों, कमरों और तहखानों से वाकिफ हूँ ।

रामेश्वर० । जी हां यह मकान हमको बहुत अच्छा मिल गया है और मालिक मकान भी बहुत नेक आदमी हैं ।

जमींदार० । हां मैं जानता हूँ । यह मकान यहां के एक ओहदेदार रईस दामोदरसिंह का है और उन्होंने अपने दामाद इन्द्रदेव को दहेज के साथ दे दिया है । तो आपने इसे किससे किराये पर लिया है ? दामोदरसिंहजी से या इन्द्रदेव से ?

रामेश्वर० । मेरे साथ तो दामोदरसिंहजी ने इसका बन्दोबस्त किया है ।

इन्द्रदेवजी की सूरत मैंने अभी तक नहीं देखी मगर सुना है कि यहां के दारोगा साहब के वे गुरुभाई हैं और बड़े लायक आदमी हैं।

जमींदार०। ठीक है, वास्तव में ऐसा ही है।

इतना कह कर जमींदार वहां से रवाना हुआ मगर अभी दूकान के बाहर नहीं हुआ था कि सामने से दूकान के अन्दर आते हुए गदाधरसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जो कि इस समय अपनी असली सूरत में था। जमींदार भूतनाथ को देख कर सहम गया लेकिन भूतनाथ ने उस पर एक मामूली निगाह डालने के अतिरिक्त और कुछ खयाल नहीं किया।

उस जमींदार के चले जाने बाद रामेश्वरचन्द ने भूतनाथ को अन्दर वाले एकान्त के कमरे में बड़ी खातिर से बैठाया और पूछा, "कहिये कुशल तो है?"

भूत०। हम लोगों से कुशल मंगल पूछना तो व्यर्थ ही है। जब तक निद्रा-देवी की गोद में हैं तब तक तो कुशल है और जहां उनसे सम्बन्ध छूटा कि दिमाग में चक्कर आने लगे। तरह तरह के खयालात तरह तरह के विचार और तरह तरह के मनसूबों से दम भर के लिये फुरसत नहीं। केवल इतना ही नहीं, शरीर का सुख भी मिलना कठिन ही होता है। न दिन को दिन गिनना पड़ता है न रात को रात, न जाड़े का खौफ न गर्मी का खयाल, न बरसात से डर न धूप से परहेज। बस केवल अपने काम की धुन लगी रहती है, तिस पर फिर मेरे ऐसे कम्बख्त का तो पूछना ही क्या है जिसे मालिक के काम का फिक्र तो नाम ही मात्र को है परन्तु बाहरी सैकड़ों तरह की तरद्दुदों का शिकार हो रहा हूँ। सच तो यों है कि ऐयारी का पेशा ही बहुत बुरा होता है।

रामेश्वर०। (मुस्कुरा कर) भला आपकी इस बात को मैं क्योंकर मान लूंगा?

भूत०। सो क्यों?

रामेश्वर०। आपको ऐयारी पेशे में तो किसी तरह की तकलीफ हुई नहीं, हां मानसिक विकारों के कारण आप जरूर परेशान हो रहे हैं। इसमें ऐयारी पेशे का तो कोई कसूर है नहीं, इसे तो आप मुफ्त ही बदनाम कर रहे हैं!!

भूत०। एक तौर पर आप का कहना भी ठीक ही है मगर मेरे मानसिक विकारों की उत्पत्ति भी तो ऐयारी पेशे ही के सबब से है।

रामेश्वर० । सो भले ही हुआ करे ! सभी ऐयारों का दिल तो एक सा नहीं होता ! इन्द्रदेव क्या ऐयार नहीं है ? फिर आपकी तरह तरद्दुद में क्यों नहीं फंसते ?

भूत०। (मुस्करा कर) उनकी बात जाने दो। वे महात्मा हैं बल्कि देवता हैं, हम लोग नालायक और अभागे हैं, अतएव दुःख भी हमीं लोगों के हिस्से में पड़ा हुआ है। खैर इस बहस को जाने दीजिये क्योंकि मुझे इस समय इतनी फुरसत नहीं है। यह बताइये कि आप को भैयाराजा की कुछ खबर है ? मैं इस समय उन्हीं का पता लगाने के लिये आपके पास आया हूँ। आपकी दूकान तो हम लोगों के लिये एक लाभदायक अड्डा है।

रामेश्वर० । इसी खयाल से तो यह कारखाना खोला गया है। अच्छा तो आप इस समय भैयाराजा का पता पूछना चाहते हैं या उनसे मिलना चाहते हैं ?

भूतनाथ०। वाह वाह ! अगर मुलाकात हो जाय तो फिर पूछना ही क्या है ?

रामेश्वर० । वे आज दोपहर के समय भेष बदले हुए मेरे पास आये थे। आपके नाम की एक चीठी भी दे गये हैं और कह गये हैं कि 'आधी रात के समय हम पुनः यहां आवेंगे, अगर गदाधरसिंह से मुलाकात हो जाय तो उन्हें उस समय यहां आकर मुझसे मिलने के लिये कह देना।' (जेब में से एक चीठी निकाल कर और भूतनाथ के हाथ में देकर) लीजिये इस चीठी को पढ़िये।

भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द्र के हाथ से चीठी ले ली और बड़े उत्साह से उसे पढ़ना आरम्भ किया। यह लिखा हुआ था :—

"मेरे प्यारे गदाधरसिंह !

क्या उस बात का पता लगा जिसकी खोज में तुम मुझसे जुदा हुए थे ? क्या वास्तव में वही शैतान उनका चोर है जिस पर तुमने शक किया था ? मैं आधी रात के समय यहां आऊँगा, अगर सम्भव हो तो मुझसे जरूर मुलाकात करो, यदि न मिल सको तो इस चीठी का जवाब लिख कर रामेश्वर के पास रख दो, मैं आकर ले लूँगा।

तुम्हारा वही

भैया०"

चीठी पढ़ने के बाद भूतनाथ ने उसी जगह से कलम दावात और कागज उठा कर यह जवाब लिखा :—

"मेरा खयाल ठीक निकला, उसी शैतान ने यह काम किया है।

भूत०"

चीठी लिफाफे में बन्द करके भूतनाथ ने उस पर अपनी मोहर लगाई और रामेश्वर के हाथ में देकर कहा, "यह जवाब उनको दे देना और कह देना कि मैं रात को यहां उनसे जरूर मिलूँगा, अगर मेरे आने में कुछ देर हो जाय तो मेरा इन्तजार करें।"

रामेश्वर०। (चीठी लेकर) बहुत खूब, मैं उन्हें तब तक रोके रहूँगा जब तक आप न आवेंगे। (मुस्कुरा कर) कहिये कुछ सौदा खरीदना है?

भूत०। (हँस कर) हां तुम्हारा सर खरीदना है। अच्छा यह तो बताओ कि वह जमींदार कौन था जो अभी अभी यहां से गया है?

रामेश्वर०। इसमें तो कोई शक नहीं कि कोई ऐयार है मगर बेवकूफ है। ज्यादे हाल अभी कुछ मालूम नहीं हुआ क्योंकि आज वह पहिले ही मर्तबे यहां आया है।

भूत०। मुझे इस पर शक होता है कि यह जरूर मेरे बागी शागिर्दों में से है।

रामेश्वर०। आपके शक को हम लोग यकीन के दर्जे तक मानते हैं, अगर ऐसा भी हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है। देखिये दूसरी मुलाकात में कुछ न कुछ पता लग ही जायगा।

भूतनाथ०। अच्छा तो अब मैं जाता हूँ ज्यादे देर तक नहीं ठहर सकता।

रामेश्वर०। क्या कोई जरूरी काम है? कुछ भंग बूटी की नहीं ठहरेगी?

भूत०। नहीं, इस समय मुझे भंग का कुछ खयाल नहीं है क्योंकि एक कठिन काम का बांधनू बांध चुका हूँ उसे अब जरूर पूरा करना है। हां, भैयाराजा से मिलने के समय जब रात को आऊँगा तो जरूर बूटी छानूँगा और स्नान करके तुम्हारा ही सर खाऊँगा भी।

रामेश्वर०। (हँस कर) बहुत अच्छा मैं हाजिर हूँ बन्दोबस्त कर छोड़ूँगा।

भूत०। (कुछ सोच कर) अच्छा, एक काम करो। कुछ सामान दो तो

मैं इसी जगह अपनी सूरत भी बदल लूँ नहीं तो तरद्दुद करना पड़ेगा।

रामेश्वर०। लीजिये हर तरह का सामान तो मौजूद ही है चलिये फिर तहखाने में।

भूत०। हां, चलिये।

दोनों आदमी उठ खड़े हुए और पास का एक दर्वाजा खोल कर दूसरे कमरे में चले गये।

कुछ देर के बाद भूतनाथ एक साधू की सूरत बना हुआ हाथ में एक सुन्दर तानपूरा लिये उस कमरे के बाहर निकला। साथ में रामेश्वरचन्द भी मौजूद थे जिनसे कुछ बातें करने के बाद भूतनाथ दूसरे चोर दरवाजे की राह से मकान के बाहर निकला।

भूतनाथ इस दूकान के अन्दर अकेला आया था सही परन्तु उस बाजार में वह अकेला नहीं आया था बल्कि उसके साथ सूरत बदले हुए उसके दो शागिर्द भी थे जिन्हें वह दूकान के बाहर बल्कि दूकान से कुछ दूर हट कर छोड़ गया था और कह गया था कि इसी जगह घूमते फिरते कुछ समय बिताओ और मेरे आने का इन्तजार करो। मैं रामेश्वचन्द की दूकान में जाता हूँ। शायद कोई काम बन जाय अस्तु जब भूतनाथ दूकान से निकल कर बाहर आया तो इशारे से अपने को प्रगट करके उन दोनों शागिर्दों को साथ लिया और उस सड़क पर चल पड़ा जो खास बाग की तरफ चली गई थी।

इसी सड़क पर कुछ दूर आगे जाकर नागर का मकान था जो एक छोटी सी बगीची के अन्दर बना हुआ था या यों कहिये कि उस मकान के चारो तरफ कुछ थोड़ी सी जमीन छूटी हुई थी जिसमें उसने कुछ फूल पत्ते और चन्द मेवों के दरख्त लगा रक्खे थे और एक छोटी सी चारदीवारी कायम करके सड़क की तरफ एक फाटक बनवाया था जहां प्रायः उसके दो एक नौकर रहा करते थे।

नागर के मकान के सामने एक महाजन का मकान था जिसके आगे ऊँचा और पक्का चबूतरा था जिस पर दस पन्द्रह आदमी बखूबी बैठ सकते थे। इस समय जब कि भूतनाथ वहां पहुँचा बिलकुल सन्नाटा छाया हुआ था। चलता चलता भूतनाथ वहां अटक गया और चबूतरे के पास खड़ा हो कर नागर के

मकान की तरफ देखने लगा। उसी समय फाटक के बाहर निकलते हुए एक आदमी को भूतनाथ ने देखा और अपने एक शागिर्द से कहा कि मैं इसी जगह ठहरता हूँ तुम इसके पीछे पीछे जाकर पता लगाओ कि यह आदमी कौन है। मुझे शक होता है कि यह दारोगा साहब का आदमी है।

आज्ञानुसार भूतनाथ का शागिर्द उस आदमी के पीछे पीछे चला गया और थोड़ी ही देर में लौट आकर बोला, "आपका खयाल बहुत ठीक है, वह दारोगा साहब का खास कृपापात्र (नौकर) टीमल है, आगे तम्बोली की दूकान पर बैठ कर पान बनवा रहा है।"

भूत०। (प्रसन्न होकर) तो बस इसमें कोई सन्देह नहीं कि दारोगा साहब यहां आ गये हैं। सच तो यों है कि इस समय ईश्वर ही ने मेरी सहायता की, जिस काम के लिये मैं जा रहा था वह ईश्वर चाहेगा तो इसी जगह निकल जायगा। अगर दारोगा के साथ ही साथ जैपाल भी यहा आया हो तो कहना ही क्या है।

शागिर्द०। जैपाल जरूर आया होगा। ऐसे ऐसे मौके पर दारोगा उसे अपना सहायक बना कर जरूर साथ रखता है और उसकी ताकत पर भरोसा करता है।

भूत०। तुम्हारा कहना बहुत ठीक है। अच्छा मैं इसी भेष में इस मकान के अन्दर जाने का उद्योग करता हूँ, जब जाऊँगा तुम दोनों को अपने साथ लेता जाऊँगा। वहाँ क्या करना होगा सो मैं अभी से इसी जगह तुम दोनों को समझा देता हूँ।

इतना कह कर भूतनाथ ने समय के अनुसार जो कुछ मुनासिब समझा अपने दोनों शागिर्दों को समझा दिया और इसके बाद उसी चौतरे पर बैठ कर तानपूरा छेड़ता हुआ गाने लगा।

भूतनाथ परले सिरे का गवैया था और इस फन को वह बहुत अच्छी तरह जानता था परन्तु सिवाय उसके अन्तरंग मित्रों के और कोई विशेष इस बात को जानता न था और न वह हर एक के सामने कभी गाता ही था, यहां तक कि दारोगा और नागर को भी इस बात का पूरा ज्ञान न था।

भूतनाथ ने बड़ी विज्ञता के साथ बागेश्वरी की एक तान लगाई जिसकी

आवाज नागर के कान तक पहुँची और एक दफे उसका कलेजा हिल गया। नागर वेश्या थी और गाने बजाने का काम करती थी। यद्यपि ओस्तादों के खयाल से वह इस फन में ओस्ताद नहीं मानी जाती थी परन्तु वास्तव में उसकी समझ अच्छी और गाने बजाने का उसको बहुत शौक था और वह हमेशा इस फन के ओस्तादों को ढूंढ़ा करती थी। भूतनाथ भी इसी सबब से कि नागर को संगीत का बहुत शौक है और वह बहुत अच्छा गाती भी है उसे जी जान से प्यार करता था। दारोगा का नागर से मुहब्बत करना यद्यपि भूतनाथ को बुरा मालूम होता था मगर नागर भूतनाथ से यही प्रगट करती कि 'मैं मुहब्बत तुम ही से करती हूँ और दारोगा साहब को केवल रकम वसूल करने के लिए लगा रक्खा है' मगर वास्तव में क्या बात थी सो नागर ही जाने, रण्डियों की माया बड़े बड़े बुद्धिमानों को उल्लू बना डालती है।

निःसन्देह इस समय दारोगा साहब और उनके साथ जैपाल भी नागर ही के यहां बैठे हुए थे और भूतनाथ की तान ने उन दोनों का दिल भी अपनी तरफ खैंच लिया था। कुछ देर तक तो वे तीनों सन्नाटे में आकर उस गीत को सुनते रहे इसके बाद नागर ने दारोगा से इजाजत लेकर अपना आदमी यह देखने के लिये भेजा कि गाने वाला कौन है।

जब उसे यह मालूम हुआ कि गाने वाला एक साधू है जो कि अपने दो शिष्यों के साथ सामने चबूतरे पर बैठा गा रहा है, तब उसने बड़े आग्रह के साथ साधूरूपी भूतनाथ को बुलवाया और दो चार नखरे तिल्ले तथा हां नहीं के बाद भूतनाथ नागर के पास गया जहां दारोगा और जैपाल मस्त बैठे हुए नागर से बातें कर रहे थे।

भूतनाथ अपने दोनों शागिर्दों को बंगले के बाहर बाग में छोड़ गया जहां नागर के कई नौकर सिपाही भी थे और खुद जब नागर के सामने गया तब उसे मालूम हुआ कि इस समय ये तीनों आदमी शराब के नशे में मस्त हैं, जरूर हमारे आने के पहिले यहां बोतल और प्याला भी मौजूद रहा होगा।

तीनों आदमियों ने साधूरूपी भूतनाथ को प्रणाम किया। नागर ने बड़ी खातिर से उसे अपने पास बैठाया तथा उसके गाने की तारीफ करने लगी।

नागर०। (साधू से) कहिये महात्माजी आपका मकान कहां है?

साधू० । भला साधुओं का भी कहीं मकान होता है ?

नागर० । क्यों नहीं आखिर कहीं गुरू का स्थान वा मठ वगैरह तो होता ही है ।

साधू० । जो अपना मठ और स्थल रखते हैं वे साधू नहीं हैं । हम उन लोगों में नहीं हैं जिन्हें अपने पीछे का खयाल रहता है । हम तो जहा रह गये वहीं हमारा स्थान है और जिसने हमें भोजन दे दिया वही हमारा गुरू और सर्वस्व है ।

नागर० । ठीक है, वास्तव में आप लोगों के लिये ऐसा ही होना चाहिये, अब यह बताइये कि इस समय आपका आना कहां से होता है ।

साधू० । हमें इस शहर में आये अभी तीन चार घण्टे से ज्यादे नहीं हुए हैं, नैपाल से आ रहे हैं, वहाँ बड़े बड़े गवैयों का जमघट हुआ था बस गाना सुनने के शौक में वहां गये थे ।

नागर० । आखिर इस समय डेरा कहां किया है ?

साधू० । मैं तो पहिले ही कह चुका कि जहां बैठ गये वही डेरा है ।

नागर० । तो बेहतर होगा कि आप मेरे ही मकान में डेरा डालें, यहां अक्सर गाना बजाना भी हुआ करता है और आप भी बहुत अच्छा गाते हैं ।

साधू० । खैर जैसा होगा देखा जायगा ।

नागर० । मुझे आपकी आवाज बहुत ही भली मालूम हुई इसीलिये आपको तकलीफ दी है, अगर कृपा कर कुछ गाइये तो.....

साधू० । क्या हर्ज है मैं गाता हूँ सुनिये, मालूम होता है कि आपको भी गाने का शौक है ।

इतना कह कर साधू महाशय ने तानपूरा छेड़ा और मालकौस का एक ध्रुपद गाकर तानपूरा जमीन पर रख दिया । इनका गाना सुन कर दारोगा नागर और जैपाल तीनों ही बहुत प्रसन्न हुए और उनकी यही इच्छा हुई कि बाबाजी और कुछ गावें मगर जब उन्होंने बाबाजी से गाने के लिये कहा तब बाबाजी ने यही जवाब दिया कि 'अब तो गाँजे का एक दम लगा लेंगे तब गावेंगे ।'

नागर० । मैं आपके लिये अभी अभी गाँजे का बन्दोबस्त करती हूँ ।

साधू० । बन्दोबस्त करने की कोई जरूरत नहीं मेरे पास सब सामान अर्थात्

गांजा सुर्ती और चिलम वगैरह तैयार है आप केवल अग्नि मँगा दीजिये और कमरे के सब दर्वाजे बन्द करके मेरा गाना सुनिये। दर्वाजा बन्द किये बिना आवाज कायम नहीं होती और गूँजती भी नहीं।

नागर०। जैसा आप कहते हैं, वैसा ही होगा।

नागर ने एक बर्तन में कण्डे की आग मँगवा दी और अपने हाथ से कमरे के सब दर्वाजे बन्द कर दिये। साधू ने अपनी कमर में से अनमोल अद्भुत गांजा जिसमें कि बेहोशी पैदा करने वाली एक प्रकार की दवा मिली हुई थी निकाला और चिलम तैयार कर धुएँ का गुब्बार बांधने लगे, यहां तक कि धुएँ से तमाम कमरा भर गया। यद्यपि यह बात दारोगा साहब को कुछ बुरी मालूम हुई मगर नागर की खातिर से चुप रहे! साधू ने तानपूरा उठा लिया और गाना शुरू किया।

अबकी दफे का गाना सुन कर सब के सब बदहोश हो गये। उस गांजे के धुएँ ने भी सब का दिमाग बिगाड़ दिया और धीरे धीरे नागर दारोगा और जैपाल तीनों आदमी बेहोश होकर जमीन पर लम्बे हो गये।

उस समय भूतनाथ कमरे के बाहर आया और अपने दोनों शागिर्दों को ढूँढ़ने लगा। थोड़ी दूर जाकर भूतनाथ ने देखा कि उसके दोनों शागिर्द वहां खड़े हैं और इधर उधर कई लौंडी गुलाम तथा सिपाही बेहोश पड़े हैं। भूतनाथ को देखते ही उसके एक शागिर्द ने कहा, "हम लोग अपना काम कर चुके हैं, अब यहां कोई आदमी ऐसा नहीं है जो होश में हो।"

भूत०। शाबाश !! खूब काम किया। कमरे के अन्दर मैं भी अपना काम कर चुका हूँ, अब तुम दोनों आदमी मेरे पीछे पीछे चले आओ।

दोनों शागिर्दों को साथ लिये हुए भूतनाथ पुनः कमरे के अन्दर गया। जैपाल के बदन पर से उसके तमाम कपड़े उतार कर उसने जैपाल को अपने शागिर्दों के हवाले किया और कहा, "बस इसे तुम दोनों आदमी उठा कर लामाघाटी में ले जाओ और कैद कर रक्खो तथा यहां जितनी हलकी और कीमती चीजें दिखाई देती हैं सभी उठा कर लेते जाओ।"

भूतनाथ की आज्ञानुसार उसके दोनों शागिर्द वहां की कीमती चीजें और जैपाल को लेकर चले गये और तब भूतनाथ कमरे का दर्वाजा बन्द करके दीवार

के साथ लगे हुए एक आइने के सामने बैठ गया बहुत चालाकी से उसने अपनी सूरत जैपाल की सूरत के समान बनाई और उसके तमाम कपड़े पहिर कर तथा कमरे का एक दरवाजा खोल कर उसी जगह दारोगा और नागर के पास लेट गया।

बची हुई रात और पहर भर दिन चढ़े तक वे लोग बेहोश पड़े रहे। भूतनाथ की आंखों में यद्यपि नींद नहीं थी परन्तु वह मौके का इन्तजार करता हुआ चुपचाप उसी जगह पड़ा रहा। इस बीच में भूतनाथ ने देखा कि नागर की लौंडियां और नौकर कई दफे कमरे के दर्वाजे पर उन लोगों को देखने के लिये आये परन्तु नागर और बाबाजी वगैरह को बेहोश देख चुपचाप लौट गये, उन लोगों को जगाने या होशियार करने की किसी ने हिम्मत नहीं की।

सबके पहिले दारोगा साहब की बेहोशी दूर हुई और वह उठ कर बड़ी घबराहट के साथ चारो तरफ देखने लगा तथा पहर भर दिन चढ़ा हुआ जान कर बहुत ही परेशान हुआ क्योंकि वह नागर के घर में बहुत चोरी के साथ छिप कर आया करता था। अब दिन के समय यहां से जाना उसे बड़ा ही कठिन मालूम हुआ तथा इस बात की भी चिन्ता हुई कि न मालूम हमारे घर पर हमारे न रहने के सबब से लोगों को क्या गुमान हुआ होगा और राजा साहब ने भी मुझे याद किया होगा या नहीं, इत्यादि।

होश हवास दुरुस्त करके दारोगा ने नागर और जैपाल को हिला हिला कर जगाया और जब वे दोनों भी उठ कर बैठे तो इस तरह पर बातचीत होने लगी—

नागर०। (आश्चर्य से चारो तरफ देख कर) यह हम लोगों को क्या हो गया था? (दारोगा से) आपने हमको जगाया क्यों नहीं!!

दारोगा०। मैं खुद जागता तब तो तुम्हें भी जगाता!!

नागर०। आखिर यह मामला क्या है?

जैपाल०। क्या उस साधू ने हम लोगों को धोखा दिया?

दारोगा०। बेशक यही बात है।

नागर०। (चारो तरफ देख कर) जरूर वह कोई ऐयार था! देखिये हमारी बहुत सी कीमती चीजें भी यहां से गायब हैं! सोने के गुलदस्ते, इत्रदान,

पानदान, रिकाबियां इत्यादि सभी चीजें तो गायब हैं! उस खूंटी पर हमारी मोती की माला टंगी हुई थी वह भी दिखाई नहीं पड़ती! बेशक वही इन सब चीजों को भी उठा ले गया! कम्बख्त लौंडी गुलाम और सिपाहियों ने भी हम लोगों की कुछ खबर नहीं ली!

दारोगा०। मालूम होता है कि उसी साधू ने उन लोगों पर भी कोई करामात की होगी, जरूर वह कोई ऐयार था मगर हम लोगों को यहां छोड़ क्यों गया यही आश्चर्य है!!

जैपाल०। अजी वह ऐयार नहीं था बल्कि चोर था, तभी तो यहां की कीमती चीजें सब उठा ले गया। ऐयार लोग चोरी करने के लिये किसी के घर में नहीं घुसते, अगर वह ऐयार होता तो जरूर हम लोगों में से किसी न किसी को ले गया होता।

दारोगा०। तुम्हारा कहना ठीक है, वह जरूर चोर था ऐयार नहीं।

नागर०। आखिर लौंडी गुलाम और पहरे के सिपाही लोग क्या झख मार रहे थे? मैं उन्हें बुलाकर पूछूं तो कुछ पता लगे।

इतना कह कर नागर वहां से उठी और बाहर जाकर उसने दरयाफ्त किया तो मालूम हुआ कि उस साधू के साथ दो शागिर्द भी थे जिन्हें वह बगले के बाहर छोड़ गया था। उन्हीं दोनों शागिर्दों ने अपनी कारीगरी से बाहर के लौंडी गुलाम और सिपाहियों को बेहोश करके बेकाम कर दिया था। इसलिये किसी को भी इस बात की खबर नहीं है कि वह साधू कमरे के अन्दर से क्या क्या ले गया और कब चला गया।

अपने नौकरों की फजीहत करने के बाद नागर पुनः कमरे के अन्दर आई और दारोगा साहब से बाहर का सब हाल सुना कर बोली, "आपकी हुकूमत इस जमानिया में बहुत ही अच्छी है!! ऐसे ऐसे चोर और बदमाश यहां बसते हैं और जब आप ही लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं तो बेचारे रिआया लोगों की रक्षा तो बस विधाता ही के अधीन है। मेरी जितनी चीजें यहां से गईं सब आप ही को देनी पड़ेंगी!"

दारोगा०। (शर्मिन्दगी के साथ) बेशक मैं दूंगा और तुम्हें दिखा दूंगा कि ऐसे ऐसे बदमाशों के साथ मैं कैसा सलूक करता हूं। (जैपाल की तरफ देख के)

अब यहां से घर जाना मेरे लिये बड़ा ही मुश्किल है, जितना ही मैं छिप कर रात के समय आता हूँ उतना ही मेरा परदा खुला चाहता है। अब दिन के समय मैं क्योंकर यहां से बाहर निकलूंगा? न मालूम मेरे घर पर कितने आदमी आकर लौट गये होंगे और लोगों के दिल में क्या क्या बातें पैदा हो रही होंगी अथवा लोग मेरी खोज में हैरान हो रहे होंगे। राजा साहब को अगर मेरे गायब हो जाने की खबर लगी होगी तो.....

जैपाल०। बेशक बड़ी मुश्किल का सामना है। मेरी तो यह राय है कि आज दिन भर आप इसी घर में रह जाइये, मैं जाकर सब तरह की आहट ले आता हूँ और आपके आदमियों को शांति दे आता हूँ। इसके अतिरिक्त यदि और कोई जरूरी काम हो तो कहिये मैं उसे भी ठीक कर आऊँ।

दारो०। तुम्हारा कहना ठीक है, ऐसा ही करने से काम चलेगा।

इतना कह कर दारोगा ने जैपाल को एकान्त में ले जाकर कुछ समझाया और अपने कमर में से तीन चार तालियों का गुच्छा निकाल कर और जैपाल के हाथ में देकर कहा, "हमारे घर में तुम्हें तो कोई रोकने वाला है नहीं क्योंकि हमारे सभी आदमी जानते हैं कि दारोगा साहब में और जैपाल में कोई भेद नहीं है, अस्तु तुम घर में जा कर एक दफे कैदियों की खबर लेना और उनके लिए भोजन और पानी का बन्दोबस्त अपने हाथ से कर देना। इसके बाद तुम राजा साहब से मिल कर हमारे कहे मुताबिक कार्रवाई करना और रामेश्वरचन्द की भी खबर लेना जिसने ऐयारी की दूकान खोल रक्खी है। असल में वह कौन है इस बात का पता लगाना बहुत जरूरी है। मैं अपने यहां के दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह को भी इस काम पर मुकर्रर कर आया था शायद उन्होंने कुछ पता लगाया हो। शाम को जब तुम यहां आओगे और तुम्हारीजुबानी सब हाल चाल मुझे मालूम हो जायगा तब मैं यहां से घर चलूंगा।

जैपाल—जो असल में भूतनाथ था—दारोगा से बिदा हो कर नागर के मकान से बाहर निकला और पहिले रामेश्वरचन्द की दूकान की तरफ चला, क्योंकि वह रामेश्वरचन्द से वादा कर आया था कि रात को जब भैयाराजा यहां आवें तो उन्हें रोकना मैं उनसे मिलने के लिये जरूर आऊँगा, अस्तु वह इस

बात से बहुत बेचैन था कि वादे के मुताबिक भैयाराजा से मिलने के लिये रामेश्वरचन्द की दूकान में न जा सका।

सातवां बयान

रामेश्वरचन्द की दूकान की तरफ जाते जाते रास्ते में भूतनाथ ने सोचा, "मैं रामेश्वरचन्द से मिलने के लिए जाता तो हूँ परन्तु यदि मैं अपना परिचय न दूँ और जैपाल ही बना हुआ उससे मिलूं तो क्या वह मुझसे सीधा सादा और रूखा बर्ताव करेगा? या दारोगा का दोस्त समझ कर डरेगा और खातिरदारी से मिलेगा? अथवा मुझे फंसाने की फिक्र करेगा? वह क्या करेगा इस बात को देखना चाहिये और कुछ देर तक जयपाल ही बने रह कर और जयपाल ही के ढङ्ग पर बातचीत करके देखना चाहिये कि वह कैसा बर्ताव करता है।"

इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ भूतनाथ रामेश्वरचन्द की दूकान पर जा पहुँचा और जब उनसे मुलाकात हुई तो जिस तरह पढ़े लिखे दूकानदार लोग ग्राहकों की खातिरदारी करते हैं उसी तरह खातिरदारी के साथ वह नकली जयपाल को दूकान के अन्दर ले गया और अपने एकान्त वाले बैठने के कमरे में ले जाकर कुर्सी पर बैठा कर बातचीत करने लगा।

रामेश्वर०। कहिये मिजाज तो अच्छा है?

जैपाल०। ईश्वर की कृपा से मैं बहुत अच्छा हूँ। (मुस्कुरा कर) आप अपनी दूकान का हाल कहिये, दिनों दिन तरक्की तो होती है न?

रामेश्वर०। आप लोगों की कृपा रहेगी तो तरक्की में सन्देह ही क्या है? अभी तो यहां मुझे आठ पहर भी नहीं बीते हैं, मगर फिर भी मैं यह जरूर कहूँगा कि आप और दारोगा साहब किस्मतवर हैं क्योंकि आने के साथ ही एक अनूठा शिकार मेरे हाथ लगा।

जैपाल०। (ताज्जुब और प्रसन्नता की सूरत बना कर) हां!! किसको फांसा सो तो कहो!

रामेश्वर०। यहां आकर हम लोगों ने असली रामेश्वरचन्द को खूब ही धोखा दिया और उसे फँसा लेने के बाद खुद रामेश्वरचन्द बन कर इस दूकान

पर कब्जा कर लिया। उसके नौकरों को अभी तक इस बात की कुछ भी खबर नहीं लगी। इसके बाद रात को तीन बजे भैयाराजा यहां आये। मालूम होता है कि उन्होंने गदाधरसिंह और रामेश्वरचन्द से यहां आकर मिलने का वादा किया था। खैर वे तो हमारी तरफ से बेफिक्र ही थे इसलिये सहज ही में फंस गये। कुछ खिला पिला कर हमने उन्हें बेहोश कर दिया और गिरफ्तार कर लिया।

जैपाल०। शाबाश शाबाश, यह बड़ा ही काम हुआ। इस समय वे दोनों कहां हैं?

रामेश्वर०। इसी मकान में हैं, नीचे के तहखाने में मैंने उन्हें बन्द कर रक्खा है, अब इस फिक्र में हूँ कि किसी तरह उन्हें मौका देख कर दारोगा साहब के घर पहुँचाया जाय और यहां के आदमियों को किसी तरह का गुमान न होने पावे।

जैपाल०। ठीक है तो इस काम को मैं अपने हाथ से करूँगा। रात को मैं कुछ आदमियों को साथ लेकर सौदा खरीदने के बहाने यहां आऊँगा और इस काम को बड़ी खूबसूरती के साथ कर दूँगा, तब तक तुम उनकी हिफाजत करो।

नकली जयपाल अर्थात् भूतनाथ का तो यहां की अवस्था जान कर कलेजा हिल गया। यह इत्तफाक की बात थी कि नकली रामेश्वरचन्द ने भूतनाथ को असली जैपाल समझ कर सब हाल कह दिया नहीं तो बड़ा ही कठिन होता और धोखे में पड़ कर स्वयं भूतनाथ भी शायद गिरफ्तार हो जाता मगर खैरियत गुजरी कि ऐसा नहीं होने पाया। असली रामेश्वरचन्द वास्तव में भूतनाथ का शागिर्द है और जितने आदमी दूकान के मुखिया हैं सभी भूतनाथ और भैयाराजा के शागिर्द और नौकर हैं।

भैयाराजा ने इन्द्रदेव की मदद से और भूतनाथ के भरोसे पर यह ऐयारी की दूकान कायम की थी और निःसन्देह इस दूकान के जरिये ये लोग बड़े बड़े अनूठे काम कर गुजरते मगर दारोगा के ऐयारों ने इनके काम में बाधा डाल दी जिससे भूतनाथ का बड़ा ही कष्ट हुआ और वह सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। बहुरानी को छुड़ाने की फिक्र करते करते भैयाराजा से भी हाथ धो बैठे। अब किस तरकीब से इन सभों को छुड़ाना चाहिये? अगर खुल्लम-

खुल्ला नकली रामेश्वर से भिड़ जाँय तो यह दूकानदारी चौपट हो जायगी और फिर दूकान के जरिये से कुछ भी काम न निकलेगा। दूकानदारी तो अब चौपट हो ही जायगी बल्कि चौपट हो गई क्योंकि दारोगा के ऐयारों को मालूम हो ही गया होगा कि यह जाल वास्तव में गदाधरसिंह का फैलाया हुआ है परन्तु फिर भी जब तक मैं जैपाल बना हुआ दारोगा को अपने कब्जे में रक्खूंगा तब तक इस दूकान से कुछ न कुछ काम निकलता ही रहेगा, या जब तक दारोगा को यह विश्वास रहेगा कि हमारा ही ऐयार रामेश्वरचन्द बना हुआ इस दूकान पर है तब तक यह दूकान कायम रहेगी। अगर कोई ऐसी तर्कीब निकल आवे कि हम इस ऐयार को गिरफ्तार करके पुनः अपने रामेश्वरचन्द को यहां कायम कर दें तो बड़ा ही काम हो। वह दारोगा के आदमियों के सामने दारोगा ही का ऐयार बना रहेगा और उन्हीं के ढब की बातें किया करेगा। ऐसी अवस्था में काम भी ज्यादे निकलेगा, मगर समस्या जरा कठिन है। मेरे ज्यादे देर तक यहां ठहरने से या विशेष बातचीत करने से कहीं इस ऐयार का मुझी पर शक न हो जाय। हाँ यह भी तो मालूम होना चाहिये कि असल में यह ऐयार कौन है? क्या बिहारीसिंह और हरनामसिंह में से यह कोई है? चलती समय दारोगा ने मुझसे कहा था कि मैंने अपने दोनों ऐयारों को इस काम पर मुकर्रर किया है। जरूर यह उन्हीं दोनों में से कोई होगा। इस समय दारोगा के मकान पर मेरा जाना भी बहुत जरूरी है, अगर ऐसा न करूँगा तो बड़ा हर्ज होगा। मगर अब इसका पीछा छोड़ देना भी मुझे अच्छा नहीं मालूम होता। यद्यपि मैंने इससे यह कह दिया है कि रात को आकर दोनों कैदियों को ले जाऊँगा, मगर यह बात ठीक नहीं है। खैर मैं कोई न कोई तरकीब ऐसी जरूर करूँगा कि इसे फँसा लूँ।

इसी तरह की बातें भूतनाथ ने बहुत थोड़ी देर में सोची सो भी ऐसे ढंग से कि नकली रामेश्वर को किसी तरह का शक न हुआ और न उसने यह समझा कि जैपाल कुछ सोच रहा है।

नकली रामेश्वर०। अच्छा तो अब आपका इरादा क्या है सो कहिये।

भूत०। इरादा तो यही था कि इस समय यहाँ से जाकर दारोगा साहब का एक जरूरी काम करूं और रात को यहां आकर दोनों कैदियों को ले जाऊं मगर

फिर सोचता हूँ कि रात को मेरा यहां आना शायद कठिन हो जाय तो ताज्जुब नहीं क्योंकि एक ऐयार ने दारोगा साहब को बेढब धोखे में डाल कर उन्हें नागर के मकान में फंसा दिया है और वे इस समय दिन होने के कारण अपने घर जा नहीं सकते, मैं उनके घर जा कर उनके बिगड़ते हुये कामों को सुधारने की फिक्र करूंगा और उनके गायब होने से जो घबराहट फैली हुई होगी उसे शान्त करने के बाद राजा साहब से मिलूंगा क्योंकि उन्होंने दारोगा साहब को जरूर याद किया होगा।

नकली रामेश्वर०। (आश्चर्य से) किस ऐयार ने दारोगा साहब को धोखे में डाला और क्या मामला हुआ सो तो कहिये।

भूत०। अजी ऐसी दिल्लगी हुई कि अगर सुनोगे तो हंसते हंसते लोट जाओगे।

नकली रामेश्वर०! क्या, क्या, कुछ कहो भी!

भूत०। एक बड़े महात्मा बाबाजी आये थे। नागर के सामने वाले मकान के नीचे जो चबूतरा है उसी पर बैठ कर गाने लगे। गाना बेशक मजेदार था, सुनने के साथ ही नागर का जी बेचैन हो गया, उसने बाबाजी को अपने यहां बुलवाया, बड़े नखरे तिल्ले के साथ बाबाजी आये और सभों को उल्लू बना गये।

इतना कह कर नकली जैपाल अर्थात् भूतनाथ ने मसखरेपन के साथ वह सब हाल बयान किया जो उसकी बदौलत नागर के मकान पर हुआ था! उसे सुन कर नकली रामेश्वरचन्द पहिले तो बहुत हंसा और अफसोस करने लगा। इसके बाद दोनों आदमियों में देर तक बातचीत होती रही। अन्त में भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द से कहा कि 'अच्छा होता अगर इस समय मैं असली रामेश्वरचन्द और भैयाराजा से मुलाकात कर लेता, सम्भव है कि उनकी मुलाकात से कोई काम निकल जाय, फिर क्या जानें रात को आना हो या न हो।'

नकली रामेश्वरचन्द ने इस बात को खुशी से मंजूर कर लिया और कमरे का दरवाजा बन्द करके (जिसमें किसी को कुछ मालूम न हो) भूतनाथ को उस कोठड़ी में ले गया जिसमें तहखाने का रास्ता दीवार में बहुत ही गुप्त ढंग से बना हुआ था। और जिसका हाल न मालूम किस ढंग से नकली रामेश्वरचन्द को मालूम हो गया था। यद्यपि उस तहखाने में भी एक रास्ता तहखाने और

मकान से बाहर निकल जाने के लिये था मगर उसका भेद नकली रामेश्वरचन्द को मालूम नहीं हुआ था अगर मालूम होता तो शायद उन कैदियों को उस तहखाने में बन्द न करता यद्यपि उन दोनों के हाथ पैर बंधे हुए थे और वे अपनी रिहाई के लिये कुछ उद्योग नहीं कर सकते थे।

नकली रामेश्वरचन्द भूतनाथ को साथ लिये हुए तहखाने के अन्दर चला गया और वहां पहुँच कर भूतनाथ ने अपने शागिर्द रामेश्वरचन्द और भैयाराजा को हथकड़ी बेड़ी से मजबूर बैठे हुए देखा। एक मद्धिम चिराग की रोशनी तहखाने में हो रही थी और गर्मी के सबब से दोनों कैदी परेशान मालूम पड़ते थे।

भैयाराजा को ऐसी अवस्था में देख कर भूतनाथ का जी बेचैन हो गया और क्रोध से उसकी आंखें लाल हो गईं। पहिले तो भैयाराजा के पास जाकर भूतनाथ ने कोई ऐसा बंधा हुआ इशारा किया जिससे भैयाराजा को मालूम हो गया कि यह जैपाल नहीं बल्कि भूतनाथ है, इसके बाद भूतनाथ ने नकली रामेश्वरचन्द की तरफ देख के कहा, "क्यों बे निमकहराम! तुझे अपने हाथों से भैयाराजा को हथकड़ी और बेड़ी पहिनाते शर्म नहीं आई? जिसके नमक से तेरा शरीर पला हुआ है उसके साथ ऐसी कार्रवाई करते तेरा कलेजा हिल नहीं गया और अब इनके सामने आते तुझे शर्म नहीं मालूम हुई?" भूतनाथ की ऐसी बातें सुन कर नकली रामेश्वर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वह गौर से नकली जयपाल अर्थात् भूतनाथ की सूरत देखने लगा और इसके बाद बोला, "मालूम होता है कि तुम कोई ऐयार हो जैपालसिंह नहीं!!"

भूत०। बेशक यही बात है, अगर अभी तक तू नहीं समझा तो अब समझ जा कि मेरा नाम गदाधरसिंह है। बस बस! भागने का उद्योग मत कर मैं इसी जगह मुकाबिला करने को तैयार हूँ।

रामेश्वर०। खैर अब सिवाय मुकाबले के और कुछ हो भी नहीं सकता।

इतना कह कर नकली रामेश्वर ने फुर्ती के साथ खञ्जर निकाल कर भूतनाथ पर वार किया मगर कुछ कर न सका। भूतनाथ ने उसका वार खाली कर दिया और पीछे पहुँच कर इस जोर से उसकी कमर में लात जमाई कि वह सम्हल न सका और मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा। तुरत भूतनाथ ने उस पर कब्जा

कर लिया और कमन्द से हाथ पैर बांधने के बाद एक किनारे रख दिया। इसके बाद वह भैयाराजा के पास पहुँचा और उनके हाथ पैर खोल देने के बाद असली रामेश्वरचन्द को भी हथकड़ी बेड़ा से रिहाई दी।

इतना करके भूतनाथ ने शागिर्द की मदद से जब नकली रामेश्वरचन्द की जांच की तो मालूम हुआ कि वह वास्तव में हरनामसिंह * है। कमन्द खोल कर उसे हथकड़ी और बेड़ी पहिरा दी गई और उसी तहखाने में उसे छोड़ कर तीनों आदमी बाहर निकल आये। ऊपर की कोठड़ी में पहुँच कर भूतनाथ ने भैयाराजा की सूरत बदली और थोड़ी ही देर में ये तीनों आदमी दूकानदार के कमरे में खुले आम बैठ कर बातचीत करते हुए दिखाई देने लगे। उस समय भूतनाथ ने अपना सब हाल भैयाराजा और रामेश्वरचन्द से बयान किया और कहा, "अब बहुत जल्द हमें कुछ काम करना चाहिये, समय बीतता चला जा रहा है।"

थोड़ी ही देर में तीनों आदमियों ने यह निश्चय कर लिया कि अब क्या करना चाहिये और इसके बाद रामेश्वरचन्द को उसी दूकान में छोड़ अपने साथी शागिर्दों को कुछ समझा कर भूतनाथ और भैयाराजा वहां से रवाना हुए। भूतनाथ जैपाल की सूरत में था भैयाराजा हरनामसिंह बने हुए थे। सबके पहिले इन दोनों ने दारोगा साहब के मकान में जाने का इरादा किया क्योंकि वहा से भैयाराजा की स्त्री को छुड़ाना बहुत जरूरी था। केवल इतना ही नहीं भूतनाथ यद्यपि इसके पहिले दारोगा के मकान में से सूखा लौट आया था तथापि अभी तक उसे इस बात का निश्चय था कि दयाराम जरूर दारोगा के मकान ही में कैद है अतएव उसको दयाराम की भी धुन लगी हुई थी।

भूतनाथ और भैयाराजा रामेश्वरचन्द की दूकान से बाहर निकल कर थोड़ी ही दूर आगे गये थे कि यकायक भूतनाथ की निगाह मेघराज पर पड़ी जिसे वह आज के कई दिन पहले एक तिलिस्मी पहाड़ी में विचित्र ढङ्ग से देख चुका था और भैयाराजा के साथ ही साथ वह भी जिनका मेहमान बन चुका था।

इस समय मेघराज अकेला नहीं था। इसके साथ सिपाहियाना ठाठ का

* चन्द्रकान्ता सन्तति में मायारानी के दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह का नाम आ चुका है।

एक आदमी और भी था जिसे भूतनाथ ने नहीं पहिचाना मगर उसे इस बात का विश्वास जरूर हो गया कि मेघराज की तरह यह भी अपनी सूरत बदले हुए है। मेघराज को देखते ही भूतनाथ का कलेजा हिल गया और एक दफे रोमाञ्च हो जाने के साथ ही कुछ देर के लिये उसके दिल में धड़कन पैदा हो गई। ऐसा क्यों हुआ सो तो हम नहीं कह सकते हां इतना कह देना जरूरी है कि इस समय भी मेघराज की सूरत शक्ल तथा पोशाक वैसी ही थी जैसी कि उस दिन भूतनाथ देख चुका था।

जिस तरह भूतनाथ और भैयाराजा ने मेघराज और उसके साथी को देखा उसी तरह मेघराज ने भी इन दोनों को देखा परन्तु ये दोनों जैपाल और हरनामसिंह की सूरत में थे इसलिये मेघराज ने इन दोनों की तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया। मगर भैयाराजा अपने को रोक न सके, उन्होंने आगे बढ़ कर मेघराज का हाथ पकड़ लिया और धीरे से कहा जिसे भूतनाथ ने भी सुना, "मेघराज! वाह वाह! खूब पहुँचे!! आज तुम हम लोगों के साथ हो मिल कर गरजो! अपना परिचय दो तो और भी कुछ कहूँ। मैं हूँ इन्द्र भैया!"

मेघ०। पावस में 'तड़ित' की कमी नहीं है। आपने धोखा नहीं खाया। मेरे साथ वैद्य है।

भैया०। बस तो ठीक है। जिस तरह मैं हरनामसिंह की सूरत में हूँ उसी तरह यह मेरा साथी भूतनाथ भी जैपाल की सूरत में है। बस अब और जो कुछ कहना है वह निराले में कहूँगा, आओ मौका अच्छा है, तुम भी मेरे साथी बन जाओ।

इतना कह कर भैयाराजा आगे की तरफ बढ़े और उस तरफ चले जिधर कुछ सन्नाटा मिलने की उम्मीद थी और उनके पीछे पीछे भूतनाथ तथा मेघराज और उनका साथी, ये तीनों रवाना हुए।

भैयाराजा ने इस समय मेघराज से जिस तरह की बातचीत की और अपना तथा भूतनाथ का भेद खोल दिया यह भूतनाथ को पसन्द न आया बल्कि बहुत बुरा मालूम हुआ मगर मौका मुनासिब न समझ वह कुछ न बोला और चुपचाप उनके पीछे चला गया।

थोड़ी ही देर में ये चारो आदमी एक छोटे से बागीचे में जा पहुँचे जहां

इन लोगों के लायक अच्छा सन्नाटा था। भैयाराजा ने भूतनाथ को एक पेड़ के नीचे बैठ जाने के लिये कहा और स्वयं वहां से कुछ दूर पर दूसरे पेड़ के नीचे मेघराज और उसके साथी को लेकर जा बैठे और बातचीत करने लगे।

भैयाराजा की पहिली कार्रवाई से भूतनाथ को रञ्ज हो ही चुका था, अब यह दूसरी कार्रवाई भूतनाथ के लिये और भी दुःखदाई हुई। भूतनाथ को अलग छोड़ कर तीनों आदमियों का एकान्त में बातचीत करना भूतनाथ को सहन न हुआ और उसके अन्दर क्रोधाग्नि एक दम धधक उठी, आंखों के साथ ही साथ उसके चेहरे ने भी सुर्खी पकड़ ली। कुछ देर तक तो वह टेढ़ी निगाह से उन तीनों की तरफ देखता रहा और फिर दांत पीस कर धीरे से बोल उठा, "क्या मैं भैयाराजा के हाथ बिक गया हूँ? वे मुझसे भेद रक्खें और मैं उनके लिये जान दूँ? गदाधरसिंह ऐसा उल्लू नहीं है!" इतना कह वह चुप हो गया और न मालूम क्या सोचने लगा।

भैयाराजा मेघराज और उसके साथी में आध घण्टे तक बातचीत होती रही। इसके बाद वे तीनों उठ खड़े हुए और भूतनाथ के पास आकर भैयाराजा ने कहा, "चलो साहब अब उठो और अपने काम की फिक्र करो।"

भूत०। (उठ कर और मेघराज की तरफ बता कर) ये दोनों साहब अब किधर जायंगे?

भैया०। ये दोनों भी हमारे साथ ही रहेंगे।

भूत०। तो क्या हम लोगों का भेद इनसे जाहिर कर दिया गया?

भैया०। हाँ, इनसे हम लोगों का कोई भेद छिपा नहीं रह सकता।

भूत०। मगर इनका भेद हमसे छिपा ही रहेगा?

भैया०। हाँ, कुछ दिनों के लिये तो ऐसा ही रहेगा।

भूत०। तो ऐसी हालत में हम लोगों का मिल जुल कर काम करना बहुत कठिन है।

भैया०। कुछ भी कठिन नहीं है।

भूत०। जरूर कठिन है बल्कि असम्भव है।

भैया०। सो क्यों?

भूत०। जब कि इनका भेद हमसे छिपा रहेगा तो अपने भेद की बातें हम

इनसे क्यों कहेंगे ? ऐसी अवस्था में ठीक काम भी न हो सकेगा।

भैया०। तुम इन्हें अपना दोस्त समझो और विश्वास रक्खो कि इनसे सिवाय नफे के नुकसान कभी न पहुँचेगा।

भूत०। आप तो सब कुछ समझते हैं मगर मेरा दिल भी कुछ समझे तब तो !!

भैया०। दिल को समझाओगे और दिलासा दोगे तो सब कुछ समझ लेगा।

भूत०। मेरा दिल ऐसा कच्चा और नादान नहीं है।

भैया०। तब कैसे काम चलेगा ?

भूत०। काम चले या अटका रहे अथवा जहन्नुम में जाय! मैं उस आदमी के साथ क्षण भर भी रहना पसन्द नहीं करता जिसका कुछ भी हाल अपने को मालूम न हो। पहिले दफे जब इनसे मुलाकात हुई थी तब भी आपने इनका परिचय मुझे नहीं दिया और आज भी वही हाल हो रहा है। केवल इतना ही नहीं, मुझे अलग छांट कर आप इन लोगों से बातें करते हैं और ऐसे काम में मुझे इनका साथी बनाते हैं जिसमें कदम कदम पर जान जोखम का सामना है। नहीं नहीं, गदाधरसिंह ऐसा बेवकूफ नहीं है। हजारों दुश्मनों से अपने को बचाये रहने वाला गदाधरसिंह ऐसी बेवकूफी करके गन्दी नादानी के साथ अपने गले पर अपने हाथ से छुरी नहीं चलावेगा।

भैया०। फिर तुम क्या चाहते हो ?

भूत०। बस इनका परिचय चाहते हैं !!

भैया०। इनका परिचय तो अभी तुम्हें नहीं मिल सकता क्योंकि ये अपना भेद अभी प्रगट नहीं किया चाहते।

भूत०। फिर आपको क्या हक था कि मेरी इच्छा के विरुद्ध आप मेरा भेद इनसे प्रगट कर दें।

भैया०। इसलिये कि मैं इन्हें खूब जानता हूँ और मेरा इन पर विश्वास है।

भूत०। आप इन पर भले ही विश्वास रक्खें मगर मैं तो इन पर भरोसा नहीं रखता अस्तु मेरे भेद के मालिक ये कैसे हो सकते हैं ? यह आपकी जबर्दस्ती है कि मेरा भेद मेरी आज्ञा के बिना आप इनसे कहते हैं और इनका परिचय तक मुझे कुछ भी नहीं देते !

भैया०। गदाधरसिंह ! मेरा भेद बहुत दिनों तक तुमसे छिपा न रहेगा

और जब तुम मुझे जानोगे तो इतने दिनों तक भेद छिपाये रखने की शिकायत न करोगे।

भूत०। चाहे ऐसा ही हो मगर जब कि मैं तुमको जानता ही नहीं तो तुम्हारी बातों पर क्योंकर विश्वास कर सकता हूँ।

मेघ०। (कुछ तीखेपन से) तुम्हारी इन बातों से रञ्ज होकर मैं अभी चला जाता और तुम्हारा साथी नहीं बनता मगर इसलिये जाना पसन्द नहीं करता कि दारोगा तथा दारोगा के मकान से जितना तुमको और भैयाराजा को सम्बन्ध है उससे कहीं ज्यादा मुझको सम्बन्ध है, इसलिये मैं दारोगा के मकान में जरूर जाऊँगा और अपना काम करूँगा।

भूत०। हाँ हाँ, तुम भले ही दारोगा के मकान में जाओ मगर मेरे बनाये हुए रास्ते से क्यों जाओगे? अपने लिये खुद अपना रास्ता बनाओ! मैंने जो कुछ मेहनत की है वह तुम जैसे एक अनजान आदमी के फायदा उठाने के लिये नहीं की है।

भैया०। सुनो गदाधरसिंह! तुम व्यर्थ ही क्रोध करते हो और मेरी बात मान कर कुछ दिनों के लिये सब्र नहीं करते। जब कि हम इन्हें और तुम्हें अपना समझते हैं तब हमारी और तुम्हारी कार्रवाई से अगर बिना नुक्सान के हो सके तो ये भी फायदा उठा सकते हैं इसके लिये तुम्हें रंज न होना.....

भूत०। (बात काट कर) मैं यह सब दिलासे की बातें नहीं सुना चाहता, आप साफ कहिये कि इनका परिचय मुझे देंगे या नहीं?

भैया०। इस समय नहीं क्योंकि इनकी मरजी नहीं है।

भूत०। तो बस मुझे भी इनके साथ रहना मंजूर नहीं है। आपने बहुत ही बुरा किया कि मेरी आज की कार्रवाई का हाल इनसे कह दिया। इस समय बातचीत करते हुए आपने जरूर कह दिया होगा यह मुझे अन्दाज से मालूम हो गया।

भैया०। हां कह तो दिया है।

भूत०। तब बेशक आपने बुरा किया। अच्छा अब जो आपके जी में आवे कीजिए मैं जाता हूँ।

भैया०। कहाँ जाओगे?

भूत०। जहां मेरे जी में आवेगा।

भैया०। मतलब यह है कि इस समय तुम मेरा साथ छोड़ते हो?

भूत०। हां साथ छोड़ता हूँ।

भैया०। अच्छा तो एक ठिकाने बैठ कर हम लोगों का इन्तजार करो और देखो कि हम लोग क्या करते हैं।

भूत०। मैं इस बात का वादा नहीं कर सकता।

भैया०। तो तुम बना बनाया काम बिगाड़ा चाहते हो।

भूत०। मेरी नीयत तो यह नहीं थी मगर आप खुद अपने हाथ से सब काम चौपट किया चाहते हैं। मैं आपसे जो कुछ प्रतिज्ञा कर चुका था उसे निबाहता रहा परन्तु आप अपनी प्रतिज्ञा भंग कर रहे हैं। जो हो, अब मैं स्वतन्त्र होता और अपने मालिक के पास जाता हूँ तथा इन सब झञ्झटों को सदैव के लिये तिलाञ्जली देता हूँ।

भैया०। (चलते हुए भूतनाथ को रोक कर) सुनो सुनो, जरा ठहरो तो, मैं एकान्त में इन्हें समझाता हूँ और इनका भेद प्रगट करने के लिये इनसे आज्ञा लेता हूँ, तब तक कुछ देर के लिये तुम इसी जगह खड़े रहो।

भूतनाथ को उसी जगह छोड़ कर और मेघराज तथा उसके साथी को लेकर भैयाराजा कुछ दूर पेड़ों की आड़ में चले गये और मेघराज से बातें करने लगे :—

भैया०। गदाधरसिंह तो बेतरह हठ कर रहा है!

मेघ०। वह लड़कपन ही का हठी है, मगर आप खुद सोच सकते हैं कि इस समय हमारा भेद खोलना कहाँ तक उचित होगा।

भैया०। नहीं नहीं, आपका भेद तो कभी खुलना ही नहीं चाहिये परन्तु मालूम होता है कि भूतनाथ अब हम लोगों का साथ नहीं देगा।

मेघ०। केवल हम लोगों का साथ न दे कर ही वह सब्र कर जाय तो कोई चिन्ता नहीं, मगर वह जरूर हम लोगों का दुश्मन बन जायगा और दारोगा से जा मिलेगा, उससे रुपये वसूल करेगा और हम लोगों का भेद खोल देगा, रामेश्वरचन्द वाला मामला भी छिपा न रहने देगा।

भैया०। अजी वह सब ही काम चौपट करेगा! ऐसी अवस्था में हम

लोगों का दारोगा के घर में घुसना खतरे से खाली नहीं है और साथ ही इसके मेरी स्त्री का भी उसके पंजे से छुटकारा मिलना असम्भव है।

मेघराज का साथी०। और मेरी उम्मीदों पर भी बिल्कुल ही पाला पड़ जायगा! गदाधरसिंह बड़ा ही बेईमान है, चुप होकर बैठे रहना उससे कदापि न होगा अस्तु बेहतर तो यह होगा कि उसे इसी जगह गिरफ्तार कर लिया जाय।

भैया०। (मेघराज से) आपकी क्या राय है?

मेघ०। इसके सिवाय दूसरी तर्कीब ही कौन है? अगर वह दारोगा के पास जा कर सब हाल कह देगा तो अनर्थ ही हो जायगा।

कुछ देर तक इन तीनों में इसी तरह की बातें होती रहीं। अन्त में यह निश्चय करके कि भूतनाथ को गिरफ्तार कर लिया जाय, वे तीनों आदमी वहां पहुँचे जहां भूतनाथ को छोड़ गये थे, मगर अफसोस! भूतनाथ वहां से भाग गया था और उस जगह सिवाय पेड़ पत्तों के और कुछ भी दिखाई नहीं देता था!

आठवाँ बयान

भूतनाथ! क्या तू भूल कर नेक रास्ते पर चला आया था? क्या तू इस साफ और सुथरी राह को छोड़ कर पुनः उसी कटीली पगडण्डी पर चला चाहता है? अगर तू वास्तव में ऐसा करता है तो निःसन्देह बदकिस्मत है! अबकी दफे तू चूकेगा तो कहीं का भी न रहेगा, दुनिया में किसी को मुंह न दिखला सकेगा और जीते जी कब्र के अन्दर ढकेल दिया जायगा। खैर देखा चाहिये तेरी किस्मत में क्या है और तू क्या करता है।

भूतनाथ का वहां से चला जाना भैयाराजा मेघराज और उनके साथी को बहुत गढ़ाया और ये तीनों आदमी बड़े तरद्दुद में पड़ गये, तथापि मेघराज ने हिम्मत नहीं हारी और उसने अपने साथी तथा भैयाराजा को भी अपनी उमंग भरी बातों से उत्साहित किया। पर ये लोग अब जो कुछ करेंगे पीछे देखा जायगा, हम इस समय भूतनाथ के पीछे चलते हैं और देखते हैं कि वह क्या करता है।

दिन लगभग तीन पहर के ढल चुका था और दारोगा साहब नागर के यहां बैठे हुए जैपाल के आने का इन्तजार कर रहे थे। ज्यों ज्यों जैपाल के आने में देर

होती थी त्यों त्यों उनका तरद्दुद बढ़ता जाता था। उन्होंने नागर के आदमियों को कई दफे बाहर भेजा कि आगे बढ़ कर देखें कि जैपाल आता है या नहीं मगर किसी ने भी लौट कर कोई दिल खुश करने वाला जवाब नहीं दिया, हां आखिरी मर्तबे जो आदमी भेजा गया था उसने लौट कर एक चीठी दारोगा के हाथ में दी जिसे दारोगा ने उछलते हुए कलेजे के साथ लिया और पढ़ने लगा। यह लिखा हुआ था :—

"दारोगा साहब! जय माया की!!

आप यहां चुप चाप बैठे हुए किसका इन्तजार कर रहे हैं? रात को आपका दुश्मन आपके दोस्त जैपाल को आपके पास ही से गिरफ्तार करके ले गया और आपको कुछ खबर तक न हुई। सुबह को जिस जैपाल को आपने कई काम सपुर्द करके बाहर भेजा था वह वास्तव में आपका जैपाल नहीं था बल्कि आपका दुश्मन था। बस इसी से समझ जाइये कि आपने कितना बड़ा धोखा खाया और अब आपका काम किस तरह चौपट हुआ चाहता है!!

आपका—

(अगर मानें तो) दोस्त, गदाधरसिंह।"

इस चीठी को पढ़ते ही दारोगा साहब के तो होश उड़ गये। घबराहट के मारे उनके सर में चक्कर आने लगा। उनकी ऐसी अवस्था देख कर नागर ने जो उनके पास ही बैठी हुई थी पूछा, "कहिये क्या मामला है, यह चीठी किसकी है?"

इसके जवाब में दारोगा ने हाथ बढ़ा कर वह चीठी नागर के हाथ में दे दी और बड़ी बेचैनी से उसका मुंह देखने लगा।

नागर०। (चीठी पढ़ कर) बात तो ठीक मालूम होती है!!

दारोगा०। अब जो मैं सुबह के मामले पर ध्यान देता हूँ तो मुझे यही निश्चय होता है कि गदाधरसिंह का लिखना ठीक है। (उस आदमी की तरफ देख कर जो चीठी लाया था) जिसने यह चीठी तुम्हें दी वह है या गया?

आदमी०। मैं समझता हूँ कि वह अभी तक बाहर खड़ा होगा।

दारोगा०। तो उसे बहुत जल्द मेरे पास बुलाओ।

'जो आज्ञा!' कह कर वह आदमी बाहर चला गया और थोड़ी ही देर में

बाद गदाधरसिंह को साथ लिये हुए पुनः उस कमरे में दाखिल हुआ।

दारोगा साहब ने उठ कर और आगे बढ़ कर बड़ी खातिर के साथ गदाधरसिंह को लिया और अपने पास बैठाने बाद नौकर को बिदा करके इस तरह बातचीत करने लगे :—

गदाधर०। कहिये मिजाज तो अच्छा है ?

दारोगा०। मिजाज क्या खाक अच्छा होगा ! आपकी बदलत तरह तरह की तकलीफें उठा रहा हूँ।

गदाधर०। (आश्चर्य की सूरत बना कर) मेरे बदौलत ? मैंने आपको क्या नुकसान पहुँचाया है ?

दारोगा०। हा हां, बशक आपकी बदौलत ! जितना मैं आपको मानता हूँ उसका चौथाई भी अगर आप मेरा खातिर करते तो मेरे बराबर दुनिया में कोई भी सुखी नहीं दिखाई देता और आपको भी कभी किसी बात की कमी न होती। जब कभी आप कहते हैं मैं आपकी मदद करता हूँ और भविष्यत् में भी मदद करने के लिए तैयार रहता हूँ मगर आपको मेरा कुछ भी खयाल नहीं होता।

गदाधर०। यह आप कैसे कहते हैं ? अगर आपका मुझे खयाल न होता तो इस समय मैं यहां आकर आपका सचेत क्यों करता ? और अगर मैं सचेत न करता तो क्या आप बेतरह मुसीबत में गिरफ्तार न हो जाते !

दारो०। इसको मैं मानता हूँ और आपकी इस कृपा का धन्यवाद देता हूँ, इसी से तो इतना कहने का मुझे हौसला भी हुआ, नहीं तो यदि मैं आपका बिल्कुल ही बेगाना समझता तो उलाहना ही क्यों देता ? मगर फिर भी मुझे कहने के लिये बहुत जगह है। अभी उस दिन की बात है कि भैयाराजा के साथ आपने मुझ पर और मेरे आदमियों पर हमला किया था और मेरी दुर्दशा में शरीक हुए थे।

गदाधर०। यह आपका भ्रम है, आपकी शिकायत तब ठीक होती जब आप अपनी असली सूरत में होते। मैंने दारोगा साहब समझ के पीछा नहीं किया था बल्कि भैयाराजा का दुश्मन समझ कर पीछा किया था। फिर भी जब उस घाटी में आपकी सूरत दिखाई पड़ी तब मैंने आपकी जान बचाने की चेष्टा

की नहीं तो भैयाराजा उस समय आपको जान से ही मार डालने के लिये तैयार थे, मैंने बड़ी कोशिश से आपको बचाया।

दारोगा०। अगर आपका यह कहना ठीक है तो अब भी मैं अपने को धन्य मानूंगा।

गदाधर०। बेशक यही बात है। हां इस बात का मैं दोषी जरूर हूँ कि भैयाराजा के विरुद्ध मैं आपकी मदद नहीं कर सका और न कर सकूंगा क्योंकि उन्हें मित्रभाव से देखने के लिये मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ।

दारोगा०। (कुछ चिन्ता करके) यह बात तो ठीक नहीं है, मैं आपसे बहुत बड़ी उम्मीद रखता हूँ और आपके लिये सब कुछ करने को तैयार हूँ!

गदाधर०। माफ कीजियेगा, मेरी तरफ से आपका दिल भी स्वच्छ नहीं है, यदि स्वच्छ होता तो आप दयाराम वाला भेद मुझसे कदापि न छिपाते।

दारोगा०। छिः छिः आपके दिल से अभी तक यह भ्रम दूर नहीं होता! न मालूम किस कम्बख्त ने आपसे कह दिया कि दयाराम अभी तक जीते हैं और मेरी कैद में हैं! इस काम के कर्ताधर्ता तुम खुद होकर फिर ऐसी बात कहते हो!

गदा०। स्वयम् ध्यानसिंह ने यह बात मुझसे कही है और यह भी समझा दिया है कि दयाराम के विषय में मैं बिल्कुल ही निर्दोष हूँ।

दारोगा०। वह झख मारता है जो ऐसा कहता है! आपके और हमारे बीच में लड़ाई करा कर फायदा उठाया चाहता है!!

भूत०। शायद ऐसा ही हो, खैर देखा जायगा। अच्छा अब मैं अपना काम कर चुका, दुश्मनों की कार्रवाई से आपको सचेत कर दिया, अब जाता हूँ।

दारोगा०। वाह वाह! अभी तो मैंने इस बारे में आपसे कुछ पूछा ही नहीं!

भूत०। (मुस्कुराते हुए) अच्छा पूछिये पूछिये क्या पूछते हैं?

दारोगा०। पहिले तो यह बताइये कि मेरा वह दुश्मन कौन है जिसने मेरे साथ ऐसी धूर्तता की, और जैपालसिंह का क्या हाल है, दुश्मनों के हाथ से किस तरह उसकी जान बचेगी, और इस मामले में आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं?

भूत०। मैं आपके उस दुश्मन को अभी तक पहिचान न सका क्योंकि वह सदैव ही अपनी सूरत बदले रहता है, हाँ भैयाराजा और इन्द्रदेव वगैरह उसे

जरूर जानते होंगे मगर उसका असल भेद वे लोग मुझसे कुछ भी नहीं कहते। मेघराज के नाम से वे लोग उसे सम्बोधन करते हैं, बस इतना ही मुझे मालूम है। बड़ी मुश्किल से मैंने उसके स्थान का पता लगाया है मगर उस तक पहुँचना अथवा उसको धोखा देना बड़ा ही कठिन है।

दारोगा०। तो इस समय जैपालसिंह भी उसी के कब्जे में होंगे?

भूत०। जरूर! जैपालसिंह को ले जाने के समय वह अपने कई ऐयारों को लेकर खुद यहाँ आया हुआ था बल्कि अब भी वह इसी जगह इर्द गिर्द में घूम रहा है और आपके मकान में घुसा तथा आपको फंसाया चाहता है।

दारोगा०। (कुछ सोच कर) तो आपका इस मामले में जरूर मेरी मदद करनी पड़ेगी, मैं आपका बहुत कुछ भरोसा रखता हूँ।

भूत०। बेशक मैं आपकी मदद करूंगा, मगर.....

दारोगा०। मगर की कसर अभी तक लगी हुई है!!

भूतनाथ०। खैर मैं आपसे कुछ देर के लिए एकान्त में बातें किया चाहता हूँ, इसके बाद (नागर की तरफ देख कर) इनसे भी दो चार बातें एकान्त में करूंगा।

दारोगा०। (मुस्कुराता हुआ) इनसे तो आप सदैव ही एकान्त में बातें किया करते हैं और करेंगे, इन पर आपका हक है, मगर मैं अपने लिये अभी एकान्त करा देता हूँ।

इतना कह कर दारोगा ने हंसते हुए नागर की तरफ देखा। नागर उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई कमरे के बाहर चली गई कि, "ऐसी मुसीबत में भी दिल्लगी से बाज नहीं आते!!"

करीब आधे घंटे तक भूतनाथ और दारोगा में इस मामले की बातचीत होती रही। दोनों ने तरह तरह के वादे किए, दोनों ने तरह तरह की कसमें खाईं, और अन्त में दोनों ही ने एक दूसरे को गले लगाकर अपनी अपनी मुहब्बत दिखलाई इसके बाद भूतनाथ दारोगा से बिदा होकर कमरे के बाहर निकला जहाँ नागर चेहलकदमी करती हुई उसके आने का इन्तजार कर रही थी। नागर ने भूतनाथ की कलाई पकड़ ली और अठखेलियों के साथ चलती हुई उसे एक दूसरे कमरे में ले गई।

नौवाँ बयान

दारोगा को तो भूतनाथ ने ठीक कर लिया और उसे अच्छी तरह धोखे में डाल कर उसका दोस्त भी बन बैठा मगर जब वह दारोगा से विदा होकर नागर के मकान से बाहर निकला तो उसका ध्यान रामेश्वरचन्द वाली दूकान की तरफ गया और वह सोचने लगा कि वहाँ मैं हरनामसिंह को कैद कर आया हूँ और अपने को उस पर प्रगट भी कर चुका हूँ, वह इस बात को जान चुका है कि मुझे गदाधरसिंह ने कैद किया है, ऐसी अवस्था में मुझे उचित है कि यदि मैं अपने को दारोगा का दोस्त बनाना चाहता हूँ तो हरनामसिंह से भी दोस्ती का ढङ्ग रचूं और उसके दिल से इस खयाल को दूर कर दूँ कि मुझे कैद करने वाला भूतनाथ है। अगर ऐसा न हुआ तो जब कभी हरनामसिंह छूटेगा और दारोगा के पास पहुँचेगा तो मेरी चालबाजी प्रगट हो जायगी और दारोगा मुझे झूठा और दगाबाज समझ कर मुझसे खटक जायगा, अस्तु ऐसी तर्कीब करनी चाहिये कि हरनामसिंह के दिल में मेरी तरफ से दुश्मनी का खयाल न रहे और उसे विश्वास हो जाय कि मेरा कैद करने वाला भूतनाथ नहीं बल्कि कोई दूसरा ही है।

रास्ते में चलते ही चलते भूतनाथ ने इन बातों पर विचार किया और कोई तर्कीब सूझ जाने पर पीछे की तरफ लौट कर पुनः दारोगा से मुलाकात करने के लिये नागर के मकान में घुस गया।

आधे घण्टे के बाद जब भूतनाथ अपनी असली सूरत में नागर के मकान के बाहर निकला तो तेजी के साथ चल कर सीधा रामेश्वरचन्द वाली ऐयार की दूकान में पहुँचा।

अबकी दफे भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द से मिलने के लिए एक परिचय का शब्द बना लिया था जिसमें किसी तरह का धोखा न हो, अस्तु सामना होने पर भूतनाथ रामेश्वरचन्द को एकान्त में ले गया और परिचय देने तथा लेने के बाद जो कुछ घटना हुई थी सब बयान करके अन्त में बोला, "इस समय मैं इसी लिए यहाँ आया हूँ कि हरनामसिंह को कैद से छुड़ा कर अपना दोस्त बनाऊं। यद्यपि मैं अपने हाथ से उसे कैद कर चुका हूँ परन्तु मैं उसे धोखे

देने के लिए अच्छा सामान अपने साथ लाया हूँ। तुम जल्द ताला खोल कर मुझे उसके पास तहखाने में ले चलो। (कुछ सोच कर) नहीं, मैं अकेला ही उसके पास जाऊंगा।"

इतना कह कर भूतनाथ ने अपना जो कुछ इरादा था और भविष्य में जो कुछ किया चाहता था पुनः रामेश्वरचन्द से बयान किया और इसके बाद तहखाने का ताला खोल कर हरनामसिंह के पास पहुँच कर बोला :—

भूत०। वाह वाह हरनामसिंहजी ! तुम इतने बड़े ऐयार होकर इस तरह कैदखाने की हवा खा रहे हो ?

हर०। यह सब तुम्हारी ही बदौलत है ! यद्यपि मैं ऐयार हूँ परन्तु तुम्हारा मुकाबला किसी तरह भी नहीं कर सकता।

भूत०। भला तुम इस विषय में मुझे क्यों बदनाम करते हो ? यद्यपि तुमने मेरे शागिर्द को धोखा देकर भैयाराजा के साथ ही साथ उसे भी कैद कर लिया था परन्तु मैंने तुमसे उसका बदला कुछ भी नहीं लिया बल्कि इस समय तुम्हें इस कैद से छुड़ाने के लिए आया हूँ।

हर०। यदि तुम वास्तव में गदाधरसिंह हो तो मैंने जो कुछ कहा है वह निःसन्देह सच है। परन्तु तुम्हारी बातों से मुझे आश्चर्य्य होता है। तुम खुद अपने हाथ से मुझे कैद कर गये हो और अब कहते हो कि मैं तुम्हें छुड़ाने के लिये आया हूँ !!

भूत०। बेशक तुम्हें आश्चर्य होता होगा परन्तु मैं तुम्हारे इस आश्चर्य को अभी अभी दूर किये देता हूँ। मेरी बातें सुनने से तुम्हें अच्छी तरह सन्तोष हो जायगा। मैं कई दिनों के बाद इस दूकान में आया हूँ। रामेश्वरचन्द से मुलाकात होने पर मुझे सब हाल मालूम हो गया। भैयाराजा और रामेश्वरचन्द को कैद से छुड़ाने और तुम्हें यहाँ कैद करनेवाला वास्तव में भैयाराजा का दोस्त दलीपशाह था जिसने अपने को गदाधरसिंह बना कर तुम्हें धोखे में डाला और अपने मित्र भैयाराजा को छुड़ा कर ले गया। मेरे शागिर्द को इस कैद से छुड़ा कर उसने बेशक मुझ पर भी अहसान किया परन्तु तुम्हारे ऊपर मेरी शिकायत जरूर बनी रही। इस समय मैं दारोगा साहब का काम कर रहा हूँ इसलिये

तुम्हारे साथ भी दोस्ताना ही बर्ताव करना पड़ता है। लो पहिले तुम इस चीठी को पढ़ा ।

इतना कह कर भूतनाथ ने हरनामसिंह के हाथ पैर खोल दिये और दारोगा साहब की लिखी हुई एक चीठी हरनामसिंह के हाथ में दी जिसे उसने चिराग की रोशनी के सामने ले जाकर अच्छी तरह पढ़ा ।

हरनाम० । इस चीठी के पढ़ने से मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारा कहना ठीक है । निःसन्देह दारोगा साहब ने बुरा धोखा खाया । परन्तु यदि तुम बराबर उनका साथ दोगे तो उन पर किसी तरह की आंच न आ सकेगी और यह तुम्हारे तथा उनके दोनों ही के लिये सौभाग्य की बात होगी ।

भूत० । बेशक मैं उनकी मदद करूंगा और बराबर उनका दास्त बना रहूँगा। इस समय जैपालसिंह का पता लगाना बहुत करूरी है अस्तु अब तुम जल्द इस तहखाने के बाहर निकलो और मेरे साथ जैपाल की खोज में चलो । मुझे जैपालसिंह का कुछ पता लग भी चुका है-अस्तु रास्ते में सब बातें होती रहेंगी और उधर जो कुछ घटना हो चुकी है वह सब भी मैं तुमसे बयान करूंगा ।

हर० । मैं हर तरह से तुम्हारा साथ देने के लिये तैयार हूँ ।

भूत० । अच्छा तो आओ मेरे पीछे चले आओ ।

दसवां बयान

ऊपर लिखी घटना के दूसरे ही दिन जमानिया में बेढब कोहराम मच गया और सब तरफ उदासी छा जाने के साथ ही साथ सभों के चेहरे पर शोक के चिन्ह दिखाई देने लगे । सबब इसका यह था कि रात को एकाएक राजारानी अर्थात् कुंअर गोपालसिंह की माता का देहान्त हो गया । आश्चर्य इस बात का था कि वे न तो कुछ बीमार थीं और न किसी कारण से किसी को उनके यकायक इस तरह मर जाने की आशा थी ।

बेचारी रानी साहेबा बहुत ही नेक रहमदिल और धर्मात्मा थीं घर के लोग तो उन्हें जी जान से चाहते और मुहब्बत करते ही थे उनकी रिआया भी उन्हें माता ही के समान मानती थी क्योंकि समय समय पर उनकी तरफ से रिआया को अच्छी तरह मदद पहुँचा करती थी और यही सबब था कि उनके यकायक

मर जाने का गम तमाम शहर में छा गया था यहां तक कि छोटे छोटे लड़के और लड़कियां की भी सूरत उदास और आंखें नम दिखाई देती थीं।

राजा साहब का दिल इस हादसे से एक दम टूट गया और कुंअर गोपालसिंह की उदासी का तो कहना ही क्या है, उनके लिये तो मानों आज उनके सुख और सौभाग्य का जहाज ही डूब गया।

जाहिर में यह एक मामूली घटना थी और इस विषय में विस्तार के साथ लिखने की कुछ जरूरत भी नहीं है, अगर लिखने की कोई बात है भी तो केवल इतनी ही कि कुंअर गोपालसिंह ने बड़े दुःख के साथ उनकी क्रिया की, घर में और बाहर बहुत दिनों तक उदासी छाई रही, कुंअर गोपालसिंह बहुत दिनों तक अपने कमरे से बाहर निकले ही नहीं और राजा साहब ने भी दारोगा पर भरोसा करके राज्य के काम से एक तरह पर दिल ही खैंच लिया जिससे कुछ दिनों के लिये दारोगा का भाग्य उदय हो गया और उसे दौलत जमा कर लेने का अच्छा मौका हाथ लगा।

मातमपुर्सी के लिये बहुत से लोग जमानिया आये और गये, उन्हीं में एक भैयाराजा भी थे। यद्यपि वे इस घर से बहुत दुःखी होकर चले गये थे और पुनः आने की इच्छा नहीं थी परन्तु इस मौके पर उन्होंने अपने भाई भतीजे के पास आना बहुत जरूरी समझा और यही उनके लिये मुनासिब भी था। यद्यपि उनको घर में रहने के लिये बहुत आग्रह किया गया मगर वे तीन दिन से ज्यादे न रहे और पुनः अपने गुप्त स्थान की तरफ चले गये।

मातमपुर्सी के लिये अपने मालिक की तरफ से भूतनाथ को भी जमानिया जाना पड़ा और इन्द्रदेव भी गये और कई दिनों तक रहे मगर प्रभाकरसिंह जमानिया नहीं गये और न राजा साहब या कुंअर गोपालसिंह ही से मुलाकात की, यद्यपि उनसे और राजा साहब से किसी तरह की रिश्तेदारी भी थी।

आगे चल कर हमारे किस्से को कदाचित् इस घटना से कुछ सम्बन्ध पड़ जाय इसलिये हमने मुख्तसर में यहां पर इसका बयान कर दिया।

ग्यारहवाँ बयान

अब हम कुछ समय के लिये इन्द्रदेव की तिलिस्मी घाटी की तरफ चलते तथा अपने पाठकों को वहां की सैर कराते और दिखलाते हैं कि वहां के रहने

वाले इन्द्रदेव के नये मेहमान और रिश्तेदार लोग किस धुन में हैं और क्या कर रहे हैं।

पाठक महाशय भूले न होंगे कि उस तिलिस्मी घाटी में जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह और दयाराम को हम लोग छोड़ आये हैं जो कि वहां बड़ी ही बेफिक्री और स्वतन्त्रता के साथ रह कर उस मलामत को सुख के साबुन से धो रहे हैं जो कि बहुत दिनों तक मुसीबत झेलने और दुश्मनों के सताने से उनके दिलों पर बैठ गई थी परन्तु अब देखना चाहिये कि वे लोग वहां बैठे क्या कर रहे हैं। अपने सुख के आगे दुनिया को बिल्कुल ही भूल गये हैं या उस घाटी के बाहर की भी कुछ फिक्र रखते हैं।

इन सभों को उस घाटी में रहते बहुत दिन बीत गये और इस बीच में इन्द्रदेव की तालीम और उनकी सच्ची मदद ने उनका दिल ही मजबूत नहीं कर दिया बल्कि हिम्मत और उत्साह की दौलत से भी वे लोग मालामाल हो रहे हैं। ऐयारी का भरोसा हो जाने के अतिरिक्त इन्द्रदेव ने उन सभों की सूरतें भी कुछ ऐसी हिकमत से बदल दी हैं कि सूरत के लेहाज से कई दिनों तक साथ रहने पर भी कोई उनको पहिचान नहीं सकता और न कोई ऐयार ही उनकी सूरत धोकर उसके पक्के रंग की सफाई कर सकता है, अर्थात् उनकी सूरत शक्ल बल्कि तमाम बदन की हालत में ऐसा फर्क डाल दिया था कि अब अगर वे चाहें तो बिना कुछ ऐयारी का ढङ्ग किये ही हर तरफ घूम फिर सकें और पहिचाने जाने का कुछ खौफ न रहे।

यह सूरत शक्ल की तबदीली कुछ कच्चे ढङ्ग की न थी बल्कि पक्के तौर से थी जो कि मुद्दत तक बिना दवा के मदद के कायम रह सकती थी और जिससे खूबसूरती और सुघड़ता में भी किसी तरह का फर्क नहीं आता था।

यद्यपि इन लोगों को इस घाटी से बाहर निकलने की कोई खास जरूरत न थी परन्तु प्रभाकरसिंह का एक बहुत बड़ा काम रुका हुआ था जिसका पूरा होना भैयाराजा की मदद के भरोसे पर निर्भर था अर्थात् बिना भैयाराजा की मदद के वह काम हो ही नहीं सकता था और भैयाराजा आज कल स्वयं संकट में पड़े हुये थे, उन्हें स्वयं दूसरे के मदद की जरूरत थी, अतएव प्रभाकरसिंह को उस घाटी से बाहर निकलने की जरूरत थी और दयाराम भी दिलोजान से

उनकी मदद किया चाहते थे।

पाठकों को याद होगा और वे भूले न होंगे कि प्रभाकरसिंह को एक महात्मा बाबाजी ने इस बात का भरोसा दिलाया था कि ईश्वर की कृपा से तुम अपने माता पिता से भी मिल जाओगे † जिनके मिलने की प्रभाकरसिंह को कुछ भी आशा नहीं थी और जिन्हें वे पञ्चतत्त्व में मिल गया हुआ जानते थे। अस्तु इस समय प्रभाकरसिंह को यही धुन लगी हुई है कि किसी तरह भैयाराजा के इष्ट की सिद्धि हो और उनकी मदद से मुझे अपने माता पिता का दर्शन हो।

सूर्य भगवान अस्त होने के लिये उतावली कर रहे हैं और अपनी लालिमा को अपने स्थान पर छोड़ जाने की इच्छा करते हैं परन्तु नहीं, वह लालिमा जो सन्ध्या होने के कुछ पहिले ही उनकी सेवा में उपस्थित होती है उनका अनुकरण कर रही है और उनका साथ छोड़ना नहीं चाहती। इस समय इन्द्रदेव की उस तिलिस्मी घाटी की कुछ विचित्र ही शोभा हो रही है। पहाड़ी की चोटी पर लालिमा की एक सुनहरी लकीर इस प्रकार की खिंच गई है मानो सूर्य भगवान ने इस काले पहाड़ को सोने का यज्ञोपवीत पहिरा दिया है जिसे देख चारों तरफ के गुलबूटे बहुत ही प्रसन्न हो रहे हैं और यहां के रहने वाले जमना सरस्वती इन्दुमति दयाराम और प्रभाकरसिंह भी एक साफ सुथरे स्थान पर बैठे उस अपूर्व शोभा को देख रहे हैं और कुछ बातें भी करते जाते हैं। बातें सुनने लायक हैं और इनसे कई भेदों का पता लग जायगा।

प्रभा०। भैयाराजा मुझे विश्वास दिलाते हैं कि 'तुम अपने माता पिता से अवश्य मिलोगे, मैं अपने काम से निश्चिन्त होकर उनका पता लगा दूँगा जो कि निःसन्देह दारोगा के कब्जे में हैं।'

दया०। उन्हें कोई बात मालूम हुई होगी तभी तो ऐसा कहते हैं, मुझे विश्वास नहीं होता कि वे इस तरह पर झूठ बोल कर तुम्हारा दिल बहलावें, वे ऐसे आदमी नहीं हैं।

प्रभाकर०। बेशक मेरा भी यही खयाल है, अस्तु किसी तरह उनकी स्त्री का पता लग जाय और वह दारोगा के कब्जे से निकाल ली जाय तब भैयाराजा का दिल ठिकाने हो और वे हमारे लिये कुछ उद्योग करें।

† देखिये तीसरा हिस्सा, छठवां बयान।

दया० । आशा है कि यह काम बहुत जल्द हो जायगा । काम तो परसों ही हो गया होता मगर कम्बख्त भूतनाथ ने हम लोगों से चिढ़ कर और दारोगा से मिल कर सब मेहनत बर्बाद कर दी और भैयाराजा के काम में बाधक बन बैठा ! खैर कोई चिन्ता नहीं, अबकी दफे (अपनी छाती ठोंक कर) मेघराज बिना कोई काम किये कदापि घर न आवेगा । कल सवेरे तुम भी तैयार होकर मेरे साथ चलो और देखो तो सही कि मैं क्या करता हूँ ।

प्रभाकर० । बेशक मैं तुम्हारे साथ चलूंगा, कल भैयाराजा बड़ी उत्कण्ठा के साथ हम लोगों का इन्तजार करेंगे, भूतनाथ के इस तरह पर फिसल जाने का उन्हें बड़ा ही दुःख है । इसके अतिरिक्त आशा है कि उनके दोस्त नन्दराम ने दारोगा के किसी आदमी को जरूर गिरफ्तार कर लिया होगा और स्वयं उसकी सूरत बन कर कोई काम करता होगा ।

दया० । आशा तो मुझे भी ऐसी ही है क्योंकि उसकी मदद पूरे तौर पर कर दी गई थी ।

प्रभा० । इसके अतिरिक्त अब तो आपको उस तिलिस्म के अन्दर घूमने की ताकत भी हो गई है जिसमें भैयाराजा ने मेरी मदद की थी अतएव आप वहां के कई स्थानों में घूम कर दारोगा के कैदियों को तलाश कर सकते हैं ।

दया० । बेशक तलाश कर सकते हैं मगर दारोगा ऐसा उल्लू नहीं है जो अपने कैदियों को उस तिलिस्म में रक्खे जिसे तिलिस्म का बाहरी हिस्सा कहते हैं और जहां हमारे तुम्हारे ऐसे बहुत से आदमी जा सकते हैं । उसने अपने कैदियों के लिये जरूर कोई खास जगह मुकर्रर की होगी । इसका सबूत इससे बढ़ कर और क्या होगा कि मुझ ऐसे कैदी को भी उसने कभी उस तिलिस्म में नहीं पहुँचाया और न निश्चिन्ती से कुछ दिन तक एक जगह रहने दिया, बराबर स्थान बदलता ही रहा, अस्तु जो कुछ हो मैं जो प्रतिज्ञा करता हूँ कि अबकी दफे बिना कोई काम निकाले कभी घर लौट कर न आऊंगा ।

प्रभा० । ईश्वर तुम्हारी मदद करे । इन्द्रदेव ने तुम्हें सब लायक बना दिया है, तुम जो चाहे कर सकते हो । जिस समय तुम मेघराज की सूरत में सज कर और तन कर खड़े हो जाते हो उस समय तुम्हारे ऊपर ऐसा रोआब छा जाता है कि यकायक दुश्मन निगाह भर कर तुम्हारी तरफ देख नहीं सकता । उस

दिन तुम्हें देख कर भूतनाथ कैसा चक्कर में आया !!

दया०। निःसन्देह मेरे चाचा (इन्द्रदेव) की मुझ पर बड़ी कृपा है और उनकी बदौलत आज मैं अपने दुश्मनों से अच्छी तरह बदला लेने लायक हो गया हूँ परन्तु सब कुछ कर सकने पर भी मैं कोई काम ऐसा न करूंगा जिसमें उनके बंधे हुए मार्ग में किसी तरह का कांटा पैदा हो। हर तरह से अपने को और चाचाजी के प्रण को बचाता हुआ मैं तुम्हारा और भैयाराजा का काम करूंगा। भैयाराजा के कथन पर मुझे भी विश्वास होता है, अब जो मैं अपने कैद के जमाने को याद करता हुआ अपने साथी कैदियों की अवस्था को सोचता हूँ तो निश्चय होता है कि मेरे साथ ही साथ तुम्हारे माता पिता भी अवश्य कम्बख्त दारोगा के यहां कैद थे।

प्रभाकर०। (आश्चर्य और उत्कण्ठा के साथ) क्या तुमने अपने साथ और भी किसी कैदी को देखा था। जिस पर कि आज इस तरह का शक तुम्हें होता है?

दया०। हां बेशक देखा था। अफसोस है कि मैं तुम्हारे माता पिता को नहीं पहिचानता और न वे ही मुझे पहिचान सके, नहीं तो मैं उनके विषय में बहुत कुछ तुमसे कहता।

प्रभा०। तथापि उन कैदियों का हुलिया अथवा शिखनख यदि कुछ बयान करोगे तो मैं उस पर गौर करूंगा।

दया०। मेरे साथ ही साथ दारोगा के यहां चार कैदी और थे जिनमें एक स्त्री और तीन मर्द थे। उन मर्दों में एक का चेहरा वृद्धावस्था होने पर भी बहुत ही सुन्दर गंभीर और रोबीला था। कैद की सख्तियां सहने पर भी उसकी हिम्मत ने उसका साथ नहीं छोड़ा था और जब कभी दारोगा का सामना होता था तो वह उसे तुच्छ समझता था और उसकी धमकियों से उसका दिल नहीं टूटता था। उम्र उस आदमी की लगभग पैंसठ वर्ष के होगी, रंग यद्यपि गोरा था मगर मुद्दत तक अन्धेरे कैदखाने में बन्द रहने के कारण पीला पड़ गया था। लांबा कद और बदन की हड्डियां मजबूत तथा मोटी मालूम पड़ती थीं। बदन के लेहाज से सर उसका बहुत बड़ा था और बाल बारीक तथा घुंघराले थे। यद्यपि कैद की अवस्था में हजामत न बनने के कारण उसके बाल बहुत बढ़ गये थे परन्तु उनमें ऐंठन इतनी ज्यादे थी कि कभी भी कन्धे से नीचे लटकते हुए

दिखाई न पड़े। बातचीत के समय बनिस्बत ऊपर के निचले दांत ज्यादे दिखाई देते थे और कुछ रुकता अथवा हकलाता भी था। दाहिनी कनपटी में एक जख्म का निशान था जिसके बारे में उसने कहा था कि किसी समय में नेजे की चोट लगी है। "हर हर" शब्द का उच्चारण वह बहुत किया करता था और कभी कभी यह भी कहता था कि "हाय! न मालूम मन्नो पर क्या गुजरती होगी !!" कई दफे पूछने पर भी उसने अपना परिचय न दिया और न यह बतलाया कि मन्नो उसका कौन था। यद्यपि हम कैदी लोग अलग अलग रक्खे गये थे मगर एक दफे चार पांच महीने के लिये हम लोगों का एक साथ रहना पड़ा था इसी लिये उसके विषय में आज मैं इतना कह सका। अब बताओ कि उस कैदी के विषय में तुम क्या खयाल करते हो?

दयाराम की बातें सुनते सुनते प्रभाकरसिंह का जी उमड़ आया और उनकी आंखों से आंसूओं की धारा बहने लगी। जब दयाराम की बातें खतम हुईं तब आखिरी जुमले के जवाब में प्रभाकरसिंह ने रूमाल से आंसू पोंछ कर कहा :—

प्रभा०। निःसन्देह वे मेरे पिता थे। कनपटी का दाग और मन्ना शब्द का उच्चारण किसी तरह का शक रहने नहीं देता। उनका मन्ना नामी कम्बख्त बच्चा मैं ही हूँ और मुझी को वे हद से ज्यादे प्यार करते थे। हाय! क्या मैं उनका दर्शन पा सकता हूँ! मैं उन्हें मरा हुआ समझता था इसलिये निश्चिन्त था, बेफिक्र था, लापरवाह था, मगर अब इस समय मेरे दिल की क्या अवस्था हो रही है सो मेरे प्यारे भाई दयाराम, तुम खुद समझ सकते हो मैं क्या कहूँ।

दया०। (बेचैनी से) क्या तुम्हें विश्वास होता है कि वे ही तुम्हारे पिता होंगे?

प्रभा०। इसमें किसी तरह का भी सन्देह मत समझो। अफसोस इन्द्रदेवजी को ये बातें मालूम न हुईं! अगर होतीं तो कदाचित् वे तुम्हारे साथ ही साथ उनको भी कैद से छुड़ा ही लाते।

दया०। बेशक उन्हें ये बातें मालूम न होंगी मगर साथ ही इसके यह भी तो है कि इधर साल भर से वे मुझसे अलग ही रहे हैं अर्थात् दारोगा ने उन्हें किसी दूसरी जगह ले जा कर रख दिया है तथा और कैदी लोग भी वहाँ नहीं थे जहां मैं था।

प्रभा० । बेशक इन्द्रदेवजी को भी मेरी तरह विश्वास था कि उनका देहान्त हो चुका है और भैयाराजा की बातों पर भी मुझे पूरा पूरा विश्वास न था कि उनसे कुछ कहता । इस समय मुझसे जो कुछ बातें हुई हैं उन्हें जब इन्द्रदेवजी सुनेंगे तो उन्हें भी विश्वास हो जायगा कि मेरे माता पिता अभी तक जीते हैं और दारोगा की कैद में हैं।

दया० । बेशक उन्हें भी विश्वास हो जायगा और वे मदद करने के लिये तैयार हो जायंगे । मेरा खयाल है कि भैयाराजा को पहिले से इस बात की खबर नहीं थी, इन्हीं दिनों में उन्हें भी इस मामले की कुछ आहट लगी है।

प्रभा० । मैं भी ऐसा ही समझता हूँ ।

दयाराम० । अच्छा तो अब रात भर में हम लोगों को हर तरह से तैयार हो जाना चाहिये, प्रातःकाल यहां से हम दोनों आदमी श्रीगणेशजी का ध्यान करके बिदा होंगे और चाचा जी से सब हाल कह कर.....देखो देखो, चाचाजी तो स्वयम् यहां आ रहे हैं, लक्षण अच्छे मालूम पड़ते हैं, हमारा काम करूर सिद्ध होगा !

इन्द्रदेव को आते देख सब कोई उठ खड़े हुए और इस्तकबाल के लिये उस तरफ बढ़े जिधर से वे आ रहे थे पास पहुँचने पर सभों ने उन्हें दण्ड प्रणाम किया और बातचीत करते हुए सब कोई धीरे धीरे बंगले की तरफ रवाना हुए ।

बारहवां बयान

दोपहर की कड़ी धूप में भी भूतनाथ को चैन नहीं है । देखिये किस तेजी के साथ सन्नाटे मैदान में सर पर कपड़ा रक्खे हुए चला जा रहा है। जमानिया को छः सात कोस पीछे छोड़ आया है और दक्खिन झुकता हुआ पश्चिम की तरफ चला जा रहा है । सामने कोस डेढ़ कोस की दूरी पर एक जंगल है जिसकी तरफ वह कभी कभी सर उठा कर देख लेता है और पुनः सर झुका तेजी के साथ रवाना होता है ।

जंगल के पास पहुँच कर उसने अपनी चाल धीमी कर दी और चौकन्ना होकर इधर उधर देखता हुआ जंगल के भीतर जाने लगा । एक कोस से ज्यादे न गया होगा कि बहुत घने और भयानक जंगल में जा घुसा और घूमता फिरता

ऐसे ठिकाने पर पहुँचा जहां पानी का एक सुन्दर चश्मा बह रहा था और किनारे पर बड़े बड़े साखू और शीशम के घने पेड़ बहुतायत के साथ मौजूद थे जिनके नीचे पत्थर के बड़े बड़े चट्टान थे जो इस समय पेड़ों की सूखी पत्तियों से प्रायः ढके से दिखाई दे रहे थे।

चारों तरफ अच्छी तरह निगाह दौड़ाने के बाद भूतनाथ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और सर झुका कर कुछ सोचने तथा किसी के आने की इन्तजार करने लगा। थोड़ी थोड़ी देर में जब कभी पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज उसके कान में पड़ती सर उठा कर उस तरफ देख लेता और जब किसी पर उसकी निगाह न पड़ती तो फिर सर झुका कर कुछ सोचने लग जाता।

इसी तरह पर सर उठा कर देखते और सोचते हुए उसे डेढ़ घण्टे से ज्यादे बीत गया और तब वह घबड़ा कर इधर उधर घूमने के लिये उठा और यह कहता हुआ सामने की तरफ बढ़ा कि 'ओफ! उसके आने में बड़ी देर हो गई! कदाचित् कोई विघ्न तो नहीं पड़ा!' उसी समय सामने से उसका एक शागिर्द आता हुआ दिखाई पड़ा किसका चेहरा खून से रंगा हुआ था और कपड़े भी उसके खून से तरबतर हो रहे थे।

पास पहुँचने पर भूतनाथ ने ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखा और कहा, "पारस! यह क्या मामला है? तुम इस तरह पर जख्मी क्यों हो रहे हो?"

पारस०। आपकी आज्ञानुसार हम तीनों आदमी जैपालसिंह की गठड़ी बारी बारी से पीठ पर लादे हुए इस तरफ आ रहे थे। जब यहां से सिर्फ एक कोस की दूरी पर रह गये तब एक सवार ने वहां पहुँच कर हम लोगों का मुकाबला किया जो कि बहुत ही बहादुर और नौजवान जान पड़ता था तथा उसका घोड़ा भी बहुत ही अनमोल खूबसूरत और ताकतवर था। उसने हम लोगों से डपट कर पूछा, "तुम लोग कौन हो और कहां जाते हो?" परन्तु हम लोगों ने उसे किसी तरह का साफ और सच्चा जवाब न दिया, इस पर उसने रंज होकर हम लोगों पर चाबुक का वार किया। मैंने जैपालसिंह की गठड़ी जमीन पर रख दी और तीनों आदमी एक साथ उस पर टूट पड़े मगर उसका कुछ भी बिगाड़ न सके। उसने भी तलवार म्यान से निकाल ली और हम तीनों को अच्छी तरह हमले का जवाब दिया। हम तीनों उसके हाथ से जख्मी हुए मगर उसके बदन

पर एक जख्म भी न लगा सके, हम तीनों का दम भर गया मगर उसके करारेपन में कुछ भी फर्क न पड़ा, हम तीनों जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़े मगर वह ज्यों का त्यों बना रह कर हम लोगों के सामने खड़ा रहा और अन्त में बोला कि 'तुम लोग कौन हो इसे हम खूब जानते हैं।' इतना कह कर वह घोड़े से नीचे उतरा और जैपालसिंह की गठड़ी खोल कर उसने उसे अच्छी तरह देखा, तब अपनी जेब में से लखलखे की डिबिया निकाल कर जैपाल को सुंघाया और जब वह होश में आया तो उससे कहा कि 'उठो और जल्दी से भाग जाओ। क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि गदाधरसिंह ने तुम्हें कैद किया है और ये तीनों गदाधरसिंह के आदमी हैं जो तुम्हें कहीं लिये जाते हैं? मैंने तुम्हें इस आफत से रिहाई दिलाई है, अब जाकर तुम दारोगा से कह दो कि गदाधरसिंह पर कदापि भरोसा न करे। उठो, उठो, और जल्दी के साथ यहाँ से भागो!'

उस सवार की बातें सुन कर जैपालसिंह चैतन्य हो गया और बड़े गौर से हम लोगों को देख कर सवार से बोला, "हम खूब अच्छी तरह से पहिचान गये बेशक ये लोग गदाधरसिंह के शागिर्द हैं। आपने हम पर बड़ी ही कृपा की कि इस आफत से हमारी जान बचाई। क्या आप अपना परिचय हमको दे सकते हैं?" इसके जवाब में सवार ने कहा कि 'हम अपना परिचय तुम्हें नहीं दे सकते हाँ इस घोड़े पर अपने साथ सवार करा कर तुम्हें कुछ दूर तक पहुँचा दे सकते हैं जिसमें ये लोग तुम्हारा पीछा करके तुम्हें पुनः गिरफ्तार न कर सकें।'

हम लोगों में इतनी हिम्मत न थी कि उठ कर उस सवार का मुकाबला करते या उससे कुछ कहते। देखते ही देखते उस सवार ने जैपालसिंह को अपने घोड़े पर बैठा लिया और एक तरफ का रास्ता लिया। घण्टे भर के बाद हम लोगों में उठने की ताकत हुई, मैं यहाँ आपके पास पहुँचा हूँ और मेरे साथी भी पीछे पीछे आ रहे हैं।

पारस की बातें सुन कर भूतनाथ ने उदासी के साथ कहा, "यह बहुत ही बुरा हुआ! हम जैपालसिंह के दिल में यह बात जमा दिया चाहते थे कि तुम्हें तुम्हारे एक दुश्मन मेघराज नामी ने गिरफ्तार कर लिया था और हमने उसके हाथ से तुम्हारी जान बचाई है, मगर अफसोस! तुम लोगों के किये कुछ न हुआ!"

पारस०। आखिर हम लोग करते ही क्या ?

भूत०। तुम लोग तीन ऐयार होकर एक आदमी का मुकाबला न कर सके तो अब क्या कहा जाय !

पारस०। दुश्मन ही ऐसा जबर्दस्त था, अगर आपका उसका मुकाबला हो जाता तो आपको भी मालूम हो जाता कि उसका मुकाबला.....

भूत०। (चिढ़ कर) अजी रहने भी दो ! अगर मेरा और उसका मुकाबला हो जाता तो मैं उसे मजा भी चखा देता और तुम लोगों को भी दिखा देता कि ऐयारी और बहादुरी किसे कहते हैं।

पारस०। शायद ऐसा ही होता। आपकी बराबरी हम लोग क्योंकर कर सकते हैं ! (घबराहट के साथ सामने की तरफ देखता हुआ) ईश्वर कुशल करे ! लीजिये वह यहाँ भी आ ही पहुँचा !! अब आप भी इसका मुकाबला करके अपने दिल का हौसला मिटा लीजिये !!

भूतनाथ ने चौकन्ना होकर उस तरफ देखा जिधर पारस ने इशारा किया था। एक खुशरू नौजवान और बहादुर शहसवार पर उसकी निगाह पड़ी जिसका घोड़ा भी बहुत खूबसूरत और ताकतवर मालूम होता था और जो अठखेलियाँ करता हुआ भूतनाथ की तरफ बढ़ा आता था।

इस सवार की पौशाक अमीराना थी और कई तरह के हरबों से वह अपने को सजाये हुए था। रंग गोरा, चेहरा साफ और सुडौल तथा बड़ी बड़ी खाँखों से हिम्मत और मर्दानगी की झलक पाई जाती थी। पर उसकी सुकड़ी हुई चौड़ी पेशानी की मददगार चढ़ी हुई भृकुटी की तरफ ध्यान देने से मालूम होता था कि इस समय वह बड़े ही क्रोध में है। यद्यपि ढाल तलवार खंजर नेजा कमान और तीर इत्यादि उसके पास सभी कुछ थे परन्तु हाथ में वह एक मजबूत कोड़ा ही लिये हुए था जिसकी सुनहली डण्डी पर नेहायत ही नफास जड़ाऊ काम किया हुआ था और उसमें जड़े हुए कीमती हीरे दूर ही से अपनी चमक दमक दिखा रहे थे।

देखते ही देखते वह सवार भूतनाथ के पास आकर खड़ा हो गया और मीठी तथा गम्भीर आवाज में बोला, "तुम्हारे पास हम तुम्हारे सिर्फ एक ही शागिर्द को देखते हैं, बाकी के दो कहाँ गये जो मेरे हाथ से जख्मी हुए थे?"

भूत० । (बड़े क्रोध के साथ सवार की तरफ देखता हुआ) यद्यपि तुम्हारे चेहरे पर नकाब नहीं है तथापि मैं तुम्हें पहिचान न सका कि तुम कौन हो और मेरे साथ ऐसी बेअदबी करने का कारण क्या है ?

सवार० । यद्यपि तुम मुझे पहिचानते नहीं मगर मेरा और तुम्हारा कई दफे सामना हो चुका है ! मेरी और तुम्हारी दुश्मनी पुरानी है, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैं तुम्हारा पुराना खैरख्वाह मगर अब बदख्वाह हूँ, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैंने तुम्हारा बहुत कुछ भला किया है और अब बुरा करने के लिये तैयार हूँ, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैं तुम्हारी हर एक कार्रवाइयों को जानता हूँ, तुम्हारी नीयत को पहिचानता हूँ, तुम्हारी चालबाजियों का हाल रोज ही सुना और समझा करता हूँ, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! भैयाराजा के साथ जिस जिस तरह पर दारोगा से मिल कर तुमने दुश्मनी की और पुनः भैयाराजा के कब्जे में फँस कर तथा उनकी कुदरत को जान कर उनके ताबेदार बने और सदैव ताबेदार बने रहने की कसम खाई वह भी मुझसे छिपा हुआ नहीं है और अब जो तुम एक अदनी बात पर भैयाराजा से चिढ़ गये और दारोगा को अन्धा बना कर उसे धोखा देते हुए अपना काम सिद्ध किया चाहते हो उसे भी मैं देख सुन रहा हूँ, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैं ही ने तुम्हारे कब्जे से जैपाल को छुड़ा कर दारोगा के पास भेज दिया है और अब पुनः तुम्हारा सामना करने के लिये तैयार हूँ, यद्यपि·····!

भूत० । (झुँझला कर) मगर इन सब बातों से तुम्हें मतलब ही क्या है ! तुम हो कौन सो बताओ !!

सवार० । मैं वही हूँ जिसे तुम जानते हो मगर पहिचानते नहीं, मैं वही हूँ जिसने तुम्हारी वह सब दौलत छीन ली जो किसी महात्मा ने तुम्हें दी था, मैं वही हूँ जिसने भोलासिंह बन कर तुम्हारे कैद से प्रभाकरसिंह को छुड़ाया, और मैं वही हूँ जिसके अधीन में तुम्हारे वे सब शागिर्द काम कर रहे हैं जिनके साथ तुमने उस खोह में बड़ी ही बेइज्जती का बर्ताव किया था। मगर अफसोस ! मैं तुम्हें अभी अपना नाम नहीं बता सकता ।

भूत० । (म्यान से तलवार खैंच कर) खैर तो मालूम हो गया कि मेरे सब से बड़े दुश्मन तुम ही हो और तुमसे मुझे जरूर बदला लेना चाहिये ।

इतना कह कर भूतनाथ ने उस सवार पर तलवार से हमला किया जिसे उसने बड़ी खूबी के साथ अपने चाबुक की डण्डी पर रोका और उसी से भूतनाथ की गर्दन पर एक ऐसा हाथ मारा कि भूतनाथ का सर घूम गया और वह बेचैन हो कर जमीन पर बैठ गया। सवार ने ललकारा और कहा, "बस! सिर्फ एक ही चाबुक में तुम्हारा यह हाल है? मैं तो तुमसे लड़ने और तुम्हारा हौसला देखने के लिये आया हूँ, तुम्हारी बहादुरी की बड़ी तारीफ सुनता था, मगर अब जो मैं देखता हूँ तो मालूम होता है कि तुम्हारे लिये मुझे तलवार या खञ्जर निकालने की जरूरत न पड़ेगी सिर्फ इस चाबुक ही से मैं अच्छी तरह तुम्हारा मुकाबला कर सकूंगा!!"

भूतनाथ फिर सम्हल कर उठ खड़ा हुआ और बोला, "खैर यह इत्तफाक की बात थी कि तुम्हारी एक जरा सी लकड़ी से मैं चोट खा गया, आओ मैं अब अच्छी तरह तुमसे मुकाबला करने के लिये तैयार हूँ।"

सवार०। मगर गदाधरसिंह, तुम इस बात का भी खयाल कर लेना कि इस समय मेरे पास वह तलवार भी मौजूद है जो तुमने धोखा देकर प्रभाकरसिंह की कमर से निकाल ली थी और जिसे तुम्हारे एक शागिर्द ने तुम्हें उल्लू बना कर तुम्हारे कब्जे से ले लिया था (तलवार निकाल कर और दिखा कर) देखो यही तलवार है और इसके जोड़ की यह अंगूठी। मगर सम्भव है कि तुम्हारे लिये इसे काम में लाने की जरूरत न पड़े। लो उस तरफ देखो, तुम्हारे वे दोनों शागिर्द भी यहाँ आ पहुँचे जो मेरे हाथ से जख्मी हुए थे।

सवार की बातें सुन कर और उस अजीब तलवार की सूरत देख कर भूतनाथ का कलेजा काँप उठा और वह घबड़ा कर उस सवार का मुंह देखने लगा। सवार ने पुनः भूतनाथ से कहा, "तुम्हारा वह शागिर्द भी मेरे साथ है जिसने यह तलवार तुमसे ले ली थी और जो चन्द्रशेखर के नाम से तुम्हारी खबर लिया करता है।"

भूत०। मेरे साथ तुम्हारे दुश्मनी करने का सबब क्या है?

सवार०। यही कि मैं भैयाराजा और प्रभाकरसिंह का दोस्त हूँ।

भूत०। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम है कि भैयाराजा और प्रभाकरसिंह से अच्छा बर्ताव रखने के लिये मैं कसम खा चुका हूँ और भैयाराजा से प्रतिज्ञा कर

चुका हूँ कि अब कदापि आप लोगों के साथ बुरा बर्ताव न करूँगा।

सवार०। हाँ मालूम है मगर अब जो तुम्हारी नीयत पुनः खराब हो गई है तो क्या किया जाय?

भूत०। मेरी नीयत कुछ खराब नहीं है। आपको कोई भी बात ऐसी मालूम नहीं हुई होगी जो कि इन दिनों मैंने उन लोगों को नुकसान पहुँचाने के खयाल से की हो।

सवार०। उस दिन मेघराज का परिचय न पाने के कारण जो तुम भैयाराजा से रूठ कर और तनक कर चले गये क्या वह मामूली बात थी? या उसके बाद जो तुम जाकर दारोगा के दोस्त बन बैठे और हरनामसिंह को कैद से छुड़ाने के बाद जैपाल को जिसे तुमने खुद गिरफ्तार किया था दोस्त बना कर दारोगा के पास ले चले थे यह क्या ध्यान देने योग्य नहीं है?

भूत०। मगर तुम नहीं समझ सकते कि ये सब काम मैं किस नीयत से कर रहा हूँ।

सवार०। मैं खूब समझता हूँ। तुम्हारी नीयत का हाल किसी से छिपा हुआ नहीं है। लालच बदनीयती और बेईमानी तो मानो तुम्हारे ही लिये बनाई गई है। अब हम लोग तुम्हारे धोखे में कभी नहीं आ सकते।

भूत०। खैर जब तुम्हारी ऐसी ही समझ है तो तुम्हारे साथ बहस करने की कोई जरूरत नहीं।

भूतनाथ ने इतना कहने को तो कह दिया मगर वास्तव में वह बहुत ही डरा हुआ था और आश्चर्य के साथ सोच रहा था कि यह सवार कौन है और मेरे भेद की बातें इसे कैसे मालूम हुईं तथा अब देखा चाहिये कि यह मेरे साथ कैसा बर्ताव करता है।

इतने ही में भूतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पड़ी और उसने दो नकाबपोश सवारों को अपनी तरफ आते हुए देखा। उसे विश्वास हो गया कि ये दोनों नकाबपोश सवार भी जरूर इस सवार के साथी और मददगार ही होंगे। भूतनाथ को उत्कण्ठा के साथ मैदान की तरफ देखते पा उस सवार ने भी घूम कर देखा और कहा, "लो गदाधरसिंह! हमारे दोनों साथी भी यहां आ पहुँचे! अब तो तुम्हारी हिम्मत बिल्कुल ही टूट गई होगी!!"

भूत० । अगर ईमानदारी और धर्म्म का मार्ग छोड़ा न जाय तो मेरी हिम्मत कभी टूट नहीं सकती ।

सवार० । इसका क्या मतलब ? ईमानदारी और धर्म्म की क्या बात है ?

भूत० । इसका मतलब यही है कि अगर मुकाबले की लड़ाई की जाय, एक पर दो न टूट पड़ें, पैदल के मुकाबले में सवार न लड़ें और मामूली हर्बे के मुकाबले में तिलिस्मी हर्बा न बर्ता जाय,—तो मेरी हिम्मत कभी नहीं टूट सकती । यों तो आप तीनों सवारों के मुकाबले में मैं अभी से हार मानता हूँ, हर्बा छोड़े देता हूँ, और हुक्म मानने के लिये तैयार हूँ परन्तु यदि आपको बहादुरी का घमण्ड है और मेरी बहादुरी भी देखा चाहते हैं तो उन दोनों सवारों को दूर खड़ा कीजिये, तिलिस्मी तलवार कमर में रखिये और घोड़े से नीचे उतर कर मुकाबले में आइये ।

सवार० । बेशक मैं ऐसा ही करूँगा ।

इतने ही में वे दोनों सवार भी वहाँ आ पहुँचे । पहिले सवार ने उनसे अपनी खास भाषा में जिसे भूतनाथ समझ न सका कुछ कहा जिसे सुन कर वे दोनों कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और तब पहिला सवार तिलिस्मी तलवार कमर में रख कर घोड़े से नीचे उतर पड़ा और खञ्जर हाथ में लेकर भूतनाथ के सामने आया ।

भूतनाथ० । हाँ अब आप मेरे हौसले को देख सकते हैं ।

सवार० । खैर वार करो, मैं जवाब देने के लिये तैयार हूँ ।

भूतनाथ और उस सवार में लड़ाई होने लगी । यद्यपि वह सवार बहादुर और लड़ाका था परन्तु भूतनाथ ने भी उसका खूब ही मुकाबला किया । पूरे घण्टे भर तक लड़ाई हुई मगर कोई किसी को परास्त न कर सका, हाँ दोनों बहादुर कुछ कुछ जख्मी जरूर हुए मगर हताश न हुए ।

लड़ते और पैंतरा बदलते हुए भूतनाथ ने कई चक्कर काटे और मौका देखता हुआ सवार के घोड़े के पास जा पहुँचा जो बिना बंधे हुए चुपचाप खड़ा अपने टापों से जमीन खोद रहा था । फुर्ती के साथ छलाँग मार कर भूतनाथ उस घोड़े पर सवार हो गया और एक तरफ को भाग निकला ।

यह सवार जो भूतनाथ से लड़ रहा था पैदल होने के कारण भूतनाथ का पीछा न कर सका मगर उसके दोनों दोस्त नकाबपोश सवारों ने बड़ी तेजी के

साथ भूतनाथ का पीछा किया।

वह घोड़ा बहुत ही उम्दा था जिस पर सवार होकर भूतनाथ भाग निकला था परन्तु इन दोनों नकाबपोशों के घोड़े भी उससे कम न थे इसलिये बराबर भूतनाथ का पीछा किये चले गये, यद्यपि उसके पास नहीं पहुँच सके परन्तु उसके और अपने बीच में फासला भी न पड़ने दिया। जब नकाबपोशों ने देखा कि भूतनाथ हम लोगों को अपने पास पहुँचने नहीं देता और सोचा कि अगर इसी तरह हम लोग पीछा किये चले जायेंगे तो तीनों घोड़े बेकार हो जायेंगे और अपने साथी से भी (जो भूतनाथ से लड़ा था) बहुत दूर निकल जायेंगे, लौट कर पुनः उसके पास पहुँचना कठिन हो जायगा, तब उन दोनों में से एक ने घोड़े की लगाम तो काठी के साथ अड़ा दी और तीर कमान निकाल कर वार करने के लिये तैयार हो गया। यह देख कर दूसरे नकाबपोश ने आवाज दी और कहा, "देखना मेघराज! गदाधरसिंह पर तीर मत चलाना!!" इसके जवाब में मेघराज ने कहा, "नहीं, गदाधरसिंह को नहीं मारूंगा बल्कि घोड़े को कुछ जख्मी करूंगा। यद्यपि वह अपना ही घोड़ा है मगर लाचारी है!" इतना कह कर मेघराज ने तीर चलाया जो कि भूतनाथ के घोड़े के पिछले पैर में लगा और जख्मी हो जाने के कारण उसकी चाल धीमी पड़ गई।

कुछ ही मौका मिलना इन दोनों पीछा करने वालों के लिये काफी था। बात की बात में ये दोनों भूतनाथ के पास जा पहुंचे और भूतनाथ को ललकारा। जब भूतनाथ ने देखा कि अब भागना व्यर्थ है और घोड़ा भी जिस पर वह सवार था बेकार हो गया है तब वह खड़ा हो गया और न मालूम क्या क्या सोचता हुआ उन दोनों सवारों की तरफ देखने लगा।

मेघ०। क्यों जी गदाधरसिंह! तुम तो अपने को बहादुर कहते थे और एक पर एक लड़ने के लिये ललकारते थे, फिर इस तरह धोखा देकर भागने की क्या जरूरत थी?

भूत०। जब मैंने देखा कि तुम तीनों आदमी नाहक मेरे पीछे पड़े हुए हो और इन्साफ पर कुछ भी ध्यान नहीं देते तब मुझे यही रास्ता अच्छा मालूम हुआ।

मेघ०। ईश्वर को धन्यवाद दो कि हम तीनों आदमी तुम्हारे दोस्त हैं, अगर

इस समय हमारे बदले में कोई तुम्हारा दुश्मन होता तो जान से तुम्हें मारे बिना न रहता।

भूत०। (हंस कर) क्या अच्छे दोस्तों से सामना पड़ा है! यद्यपि मेरा दिल भी यही गवाही देता है कि आप लोग मेरे दुश्मन नहीं हैं परन्तु इस दोस्ती की बलिहारी है कि नाहक मेरे बने बनाये काम को आप लोगों ने बिगाड़ दिया और मेरे प्यारे दोस्त और बहादुर भैयाराजा के पुनः कुछ दिनों तक संकट में पड़े रहने का सामान कर दिया।

मेघराज०। सो क्योंकर! कौन सा तुम्हारा काम हम लोगों ने बिगाड़ दिया है?

भूत०। यही कि जैपालसिंह को मेरे कब्जे से बाहर कर दिया जिसकी बदौलत मैं आज ही किसी समय भैयाराजा की स्त्री को दारोगा के पंजे से रिहाई दिलाने वाला था।

मेघ०। मगर हम लोगों को कैसे विश्वास हो सकता है कि जो कुछ तुम कह रहे हो वह सच है और तुम हम लोगों को धोखे में नहीं डाला चाहते?

भूत०। अब आप लोगों को विश्वास हो या न हो हमारा काम तो बिगड़ ही गया।

मेघ०। ऐसा तुम नहीं कह सकते, क्योंकि यद्यपि हमारे दोस्त ने जैपालसिंह को तुम्हारे कब्जे से बाहर निकाल दिया मगर अपने कब्जे से बाहर नहीं निकाला।

भूत०। (आश्चर्य्य और कुछ भरोसे के साथ) क्या वास्तव में जैपाल अभी आप लोगों के कब्जे में है?

मेघ०। बेशक!!

भूत०। तब आप लोग अपना ठीक ठीक परिचय मुझे क्यों नहीं देते कि मैं भी अपना खुलासा हाल आप लोगों से बयान करूं? जैपाल का आपके कब्जे में बने रहना बेशक मेरे लिये खुशी की बात होगी यदि आप लोग वास्तव में मेरे विपक्षी न होंगे।

इतना सुन कर मेघराज के साथी ने भूतनाथ से कहा, "और कोई चाहे अपना परिचय तुम्हें दे या न दे परन्तु मैं अपना परिचय तुम्हें जरूर दूँगा। यद्यपि तुम बड़े बेमौके मुझसे रूठ कर भाग गये और मेरे बने बनाये काम में

बाधा डाल कर तुमने मेरा मन मैला कर दिया तथापि मैं इसी समय अपना परिचय देता हूँ।"

इतना कह कर उस सवार ने जो वास्तव में भैयाराजा थे अपने चेहरे पर से तिलिस्मी झिल्ली उतार दी और भूतनाथ से कहा—"देखो और पहिचानो कि मैं कौन हूँ?"

भैयाराजा को पहिचान कर भूतनाथ हंसा और झुक कर सलाम करने के बाद बोला, "बस सिर्फ एक मौके पर रूठ कर मेरे चले जाने से आपका दिल इतना बदल गया! अच्छा अब इसके पहिले कि मैं आपसे कोई मार्के की बात कहूँ आप अपना निशान भी दे दीजिये, सिर्फ इस झिल्ली के उतर जाने से मेरा सन्तोष नहीं होता।"

भैया०। क्या अब मैं शंखध्वनि करूं?

भूत०। नहीं, कोई जरूरत नहीं, मुझे विश्वास हो गया। अब यह बताइये कि ये आपके साथी साहब कौन हैं?

भैया०। इन्हीं का परिचय न पाने से तुम रूठ गये थे, और इस समय भी तुम इनका परिचय नहीं पा सकते।

भैयाराजा की यह आखिरी बात सुन कर भूतनाथ बड़ा ही क्रोधित हुआ परन्तु अपने दिल के इस भाव को भी उसने खूब दबाया और कहा, "खैर इनका परिचय पाने की मुझे कोई जरूरत भी नहीं। अब मैं इनके बारे में कभी भी कुछ न पूछूंगा, हां उन साहब के बारे में आप कुछ कहियेगा जिनसे लड़ता हुआ मैं भाग आया हूँ।"

भैया०। नहीं, उनके बारे में भी मैं कुछ नहीं कह सकता जब तक कि वे खुद अपना परिचय देने के लिये तैयार न हो जाँय।

भूत०। खैर उन्हें भी जाने दीजिये और यह बताइये कि मेरे साथ अब आप कैसा सलूक किया चाहते हैं?

भैयाराजा०। इसका जवाब देना तब तक मुश्किल है जब तक तुम्हारी नीयत का ठीक ठीक हाल न मालूम हो जाय। सच तो यों है कि मैं अभी तक तुम पर भरोसा करता हूँ और तुम्हारी कसमों पर विश्वास रखता हूँ मगर तुम्हारी करतूतों को देख कर मुझे लोगों के सामने शर्मिन्दा होना पड़ता है। लोग यही

कहते हैं कि "तुम्हारा गदाधरसिंह पर भरोसा करना पहले सिरे की बेवकूफी है, तुम उसके हाथ से जरूर सताये जाओगे और धोखा उठाओगे।"

भूत०। बेशक लोग आपसे ऐसा कहते होंगे और मैं अपनी तरफ ध्यान देता हूँ तो यही निश्चय होता है कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ वही मेरी नादानी और बेवकूफी है। बैठे बैठाये नाहक जी तोड़ कर मेहनत करना और उसके बदले में बदनामी उठाना बस इसके सिवाय और कुछ भी नहीं होता। मेरे सिर पर जो पाप का टोकरा लदा हुआ है उसका बोझ दिनों दिन बढ़ता ही जाता है। दोस्तों के दिल में मैल बैठती जाती और दुश्मनों की गिनती तरक्की कर रही है। जिसके साथ नेकी करो वही बदी करने के लिये तैयार हो जाता है। जिसकी खिदमत करो वही नालायक बनाता है और जिसका साथ करो वही घृणा करता है। ऐसी अवस्था में मैं नहीं समझता कि मेरे लिये अब क्या कर्तव्य है। यदि मैं सब झञ्झटों को छोड़ कर अपने घर बैठता हूँ तो लोग आराम से बैठने नहीं देते। इसके अतिरिक्त मेरा पेशा ऐयारी का भी ऐसा खराब है कि बिना मालिक का या अपना काम किये चुपचाप बैठ ही नहीं सकता और जब काम करने के लिये निकलूंगा तो किसी से दोस्ती और किसी से दुश्मनी जरूर ही पैदा होगी अस्तु क्योंकर कह सकता हूँ कि मेरी जिन्दगी किसी तरह आराम से बीत सकती है। आप ही देखिये कि आपके लिये मैं कितनी मेहनत कर रहा हूँ और अपनी मेहनत का अच्छा फल भी पा चुका हूँ मगर इस समय आप ही को मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता और मेरी सचाई का आप सबूत खोजते हैं जिसका कि मुझे बड़ा ही दुःख है। मैं खूब समझता हूँ कि जिस तरह आप मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते उसी तरह मेरी कसमों पर भी विश्वास न करेंगे, परन्तु कोई चिन्ता नहीं, मैं बहुत अच्छा सबूत देकर आपको अपनी बातों पर विश्वास दिलाऊंगा और फिर इसके बाद आज ही से दुनिया के सब मामलों से हाथ धो बैठूंगा। आज से आप गदाधरसिंह को किसी काम में हाथ डालते न देखेंगे। अच्छा अब आप लोग घोड़ों पर से नीचे उतरें और मैं जो कुछ अपनी सचाई का सबूत दिखाता हूँ उसे देखें।

भैया०। (मुस्कुराते हुए) इस समय तो तुम बड़े ही ज्ञानी मालूम पड़ते हो! ईश्वर करे तुम्हारा यह ज्ञान बराबर बना रहे और तुम्हारे सिर पर पाप का

बोझ बढ़ने न पावे। अगर इस समय तुमने कोई वाजिब सबूत देकर अपने को सच्चा साबित कर दिया तो बेशक मैं तुमको अपना दोस्त मानूँगा और तुम्हारी तरफ से जो कुछ मैल मेरे दिल में बैठ गई है उसे साफ कर दूँगा।

इतना कह कर भैयाराजा घोड़े से नीचे उतर पड़े। भूतनाथ और मेघराज भी घोड़ों से नीचे उतरे और तीनों आदमी घोड़ों का उचित प्रबन्ध करने के बाद एक सायेदार पेड़ के नीचे बैठ कर पुनः बातचीत करने लगे।

भूत०। बेशक मैं अपनी सचाई के लिये जो कुछ सबूत दूंगा उसे आप किसी तरह भी रद्द न कर सकेंगे। आप लोगों के खयाल से मैं दारोगा का दोस्त बना हूँ सही, मगर मेरे दिये सबूत को देख कर आपका यह खयाल भी बदल जायगा और आपको विश्वास हो जायगा कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ वह केवल आपकी स्त्री को उस दुष्ट के पंजे से छुड़ाने के लिये। बस, अब मेरे लिये इस दुनिया में इतना ही काम बाकी है। फिर मैं किसी का मुंह न देखूंगा और न मेरा ही मुंह कोई देख सकेगा। सबूत ढूंढ़ने के लिये भी मुझे कहीं जाने की जरूरत नहीं है, सब इसी जगह मेरे बटुये के अन्दर मौजूद है।

इतना कह कर भूतनाथ अपने ऐयारी के बटुये को खोल कर उसकी हर एक चीजें देखने जांचने और इधर उधर करने लगा। साथ ही साथ बात भी करता जाता था।

भूत०। सब के पहिले मुझे इस बात का बन्दोबस्त करना है कि आपका शक दूर कर देने के बाद फिर मुझे कोई काम न करना पड़े (अपने बटुये में से कोई दवा निकाल कर और अपने मुंह में रख कर) मेरे और दारोगा के बीच जो कुछ एकरार नामा हुआ है वह भी इसी में मौजूद है। जैपालसिंह ने आपकी स्त्री का पता जिस चीठी में लिख कर मेरे पास भेजा था वह भी इस बटुये के अन्दर है और उस आजायबघर में जिसमें आपकी स्त्री कैद है मुझे किस तरह पहुँच कर उसे छुड़ाना चाहिये वह भी एक कागज पर लिखा हुआ इसी बटुये में रक्खा है जिसे आप स्वयं निकाल कर देख सकते हैं।

इतना कहते हुए भूतनाथ ने दवा की एक शीशी जिसमें किसी तरह का अर्क भरा हुआ था और जो इसी बटुये में थी, खोल कर उसकी सब दवा उसी बटुये के अन्दर लुढ़का दी और इसके बाद एक चीठी निकाल कर भैयाराजा के

हाथ में देते हुए कहा, "लीजिये इस चीठी को पढ़िये, आप तो दारोगा के अक्षर अच्छी तरह पहिचानते हैं, देखिये उसी के हाथ का लिखा हुआ है या नहीं?"

भैया० । (चीठी देख कर) बेशक यह उसी कम्बख्त के हाथ का लिखा हुआ है ।

इतना कह कर भैयाराजा ने वह चीठी पढ़ी, यह लिखा हुआ था:—

"मेरे प्यारे गदाधरसिंह,

देखो, मैं तुम्हारी बात नहीं टालता मगर तुम्हें भी हमारी इज्जत का खयाल रखना चाहिये ! परसों शाम को तुम मुझसे मिलो, मैं भैयाराजा की स्त्री को तुम्हारे हवाले करूंगा, मगर खूब होशियार ! शिकार खराब न जाय ।

वही—दा०"

भैया० । यह चीठी तुम्हें कब मिली थी ?

भूत० । परसों ।

भैया० । तो आज तुम उसे लेने के लिये दारोगा के पास जाओगे ?

भूत० । हां मैं जरूर जाने वाला था ।

भैया० । तो अब क्या हुआ ?

भूत० । अब तो जो होना था हो गया । आपने देखा नहीं कि मैंने इस बटुये में से एक दवा निकाल कर खा ली है । वह जहर कातिल है जो कि मेरा प्राण लिये बिना कभी न रहेगी । एक दवा और भी इसी बटुये में थी जिससे उस जहर का असर दूर हो सकता था, मैंने वह दवा इसी बटुये में उड़ेल कर बर्बाद कर दी, इस खयाल से कि कहीं आप लोग जहर उतारने के लिये मुझे जबर्दस्ती वह दवा पिला न दें क्योंकि मैं अब इस दुनिया में रहना नहीं चाहता (बटुये में से खाली शीशी निकाल कर और भैयाराजा को दिखा कर) देखिये यह शीशी खाली हो गई । इस पर लिखा हुआ है, "यह दवा सब तरह के जहरों को दूर करती है ।" अब यह दवा भी इस दुनिया से उठ गई, सिर्फ इसकी गन्ध थोड़ी देर के लिये रहेगी । इसी बटुये में और भी कई चीठियां हैं ।

भैया० । (बात काट कर) भला यह दवा तुमने बटुये के अन्दर क्यों उड़ेल दी ?

भूत० । अगर मैं बाहर फेंकता तो शायद आप लोग मेरा हाथ पकड़ लेते और शीशी में कुछ दवा बच रहती तो ताज्जुब नहीं कि आप लोग मुझे बचा

लेते। जो हो अब मैं जीता रहना नहीं चाहता.....

भैया०। मगर गदाधरसिंह! यह तुमने बहुत ही बुरा किया कि...

भूत०। खैर, अब तो जो कुछ होना था हो गया (भयानक चेहरा बना कर) ओफ! अब मुझे तकलीफ हो रही है! मेरी थोड़ी सी बातें और सुन लीजिये, शायद थोड़ी देर के बाद मैं कुछ भी न बोल सकूं! मेरे इस बटुये में बहुत सी चीठियां हैं जो दारोगा और जैपाल के हाथ की लिखी हुई हैं, कोई खुली है, कोई डिबिये में है, कोई कपड़े में बंधी हुई है, जिनके देखने से आपको मालूम हो जायगा कि मैंने दारोगा के साथ मिल कर आपका नुक्सान किया था या.....ओफ! अब मेरा हाथ नहीं चलता, आप लोग स्वयं इस बटुये में से.....आह.....

इतना कह कर भूतनाथ चुप हो गया और सर पर हाथ रख कर उसने आंखें बन्द कर लीं, परन्तु यह अवस्था भी उसकी ज्यादे देर तक न रही और कुछ ही देर में वह जमीन पर लेट कर लम्बी लम्बी सांसें लेने लगा।

मेघराज (जो वास्तव में दयाराम थे) और भैयाराजा को उसकी इस अवस्था पर बहुत दुःख हुआ और दोनों आदमी उसके बटुये की इस खयाल से भी तलाशी लेने लगे कि शायद कोई चीज ऐसी निकल आवे जिससे गदाधरसिंह की हालत कुछ सुधर जाय। थोड़ी देर बाद जब उन्होंने गौर किया तो मालूम हुआ कि गदाधरसिंह बिल्कुल ही बेहोश है, ताज्जुब नहीं कि थोड़ी ही देर में उसका दम निकल जाय।

यह सब कुछ तो हुआ मगर मेघराज और भैयाराजा की अवस्था भी अच्छी न रही। भूतनाथ ने जो दवा बटुये के अन्दर उड़ेल दी थी उसकी तेज महक ने इन दोनों का भी दिमाग फिरा दिया और भूतनाथ के बटुये की तलाशी लेते लेते ये दोनों भी बेहोश हो कर जमीन पर लेट गये। उस समय भूतनाथ मुस्कुराता हुआ उठ बैठा और खड़े होकर मूछों पर ताव देता हुआ बोला, "वह मारा! कैसा छकाया है बच्चाजी को!! अपने को बड़ा होशियार लगाते थे!!!"

तेरहवां बयान

बेशक भूतनाथ ने मेघराज और भैयाराजा को बुरा धोखा दिया। उसे इस बात की प्रबल इच्छा थी कि किसी तरह मेघराज और उसके साथी का परिचय

मिले परन्तु यह बात इस समय भी असम्भव जान पड़ती है।

भूतनाथ ने पहिले तो यह चाहा कि भैयाराजा के चेहरे पर से झिल्ली ले लूँ परन्तु फिर यह सोच कर छोड़ दिया कि ऐसी झिल्ली तो मेरे पास मौजूद ही है, फिर भैयाराजा से बुराई लेने की जरूरत ही क्या है। अस्तु वह भैयाराजा को छोड़ कर मेघराज की तरफ झुका और चाहा कि किसी तरह उन्हें पहिचाने परन्तु इस बात का विश्वास हो जाने पर कि उनके चेहरे पर तिलिस्मी झिल्ली नहीं है वह रुका और इधर उधर देख कर धीरे से बोला, "यहां तो नजदीक में कोई कुंआ भी नहीं है कि मैं जल भर कर लाऊं और इनका चेहरा धोकर पहिचानने का उद्योग करूं! खैर जाने दो, इन दोनों को यहीं पड़ा रहने दो और पहिले उस दुष्ट पर कब्जा करो जो मुझे नीचा दिखा चुका है और जिसे अपने साथियों के साथ छोड़ कर मैं यहां भाग आया हूँ। ये दोनों अभी कई घण्टों तक होश में न आवेंगे और न यहां कोई मुसाफिर ही पहुँच कर इन दोनों की मदद कर सकेगा।"

भूतनाथ ने अपने बटुये में से आग पैदा करने वाला सामान निकाला और सूखे पत्ते बटोर कर आग सुलगाने के बाद उस पर अपने ऐयारी के बटुये को सेंक कर सुखाया तथा उस बेहोशी वाली दवा के असर को दूर किया और उस बटुये का सामान भी जो बहुत छितर बितर हो गया था अपने कायदे के साथ ठीक करके पुनः सोचने लगा कि क्या करना चाहिये। एक दफे उसका ध्यान पुनः अपने शागिर्दों और उस दुश्मन की तरफ गया जिससे लड़ता हुआ हार कर वह इस तरफ भाग आया था और वह उस पर कब्जा करने का ढंग सोचने लगा मगर फिर विचार किया कि कदाचित् इस समय वह मेरे ढंग पर न चढ़ा या पुनः मुझ ही को नीचा देखना पड़ा तो इधर की मेहनत बिल्कुल बर्बाद हो जायगी और अगर ये होश में आकर चले जायंगे तो भैयाराजा से गहरी दुश्मनी पैदा हो जायगी और मेघराज पर भी पुनः कब्जा करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव हो जायगा। मुझे इस बात का पता लगाना बहुत ही जरूरी है कि यह मेघराज कौन है और भैयाराजा से इसका क्या सम्बन्ध है। साथ ही इसके भैयाराजा को भी मैं किसी तरह का नुक्सान नहीं पहुँचाया चाहता, मेघराज को पहिचान लेने के बाद मैं भैयाराजा से माफी मांग लूंगा और यदि वे मुझे माफी

न देंगे तो मैं उनकी खिदमत करके उन्हें खुश कर लूंगा मगर क्या मेरे शागिर्द उस जगह फंसे ही रह जायंगे और वह दुश्मन इस समय मेरे कब्जे में न आवेगा ? मेरे पास तो और भी कई तरह की दवाईया हैं जिनसे मैं इन दोनों को कई दिनों तक बेहोश रख सकता हूँ। तो इनकी बेहोशी बढ़ा कर और इन्हें इसी जगह छोड़ कर उस दुश्मन की तरफ मेरा इस समय जाना उचित होगा ? नहीं, अब दिन बहुत कम रह गया है, थोड़ी ही देर में अन्धकार अपना दखल जमा लेगा, इतने थोड़े समय में वह काम नहीं हो सकता, इन दोनों को भी इस जगह पड़े रहने देना ठीक न होगा, अस्तु भैयाराजा को तो उनकी बेहोशी कम करके इसी जगह छोड़ दिया जाय जिसमें घण्टे भर के अन्दर ही वे होश में आ कर जहा जी चाहे चले जांय और इस मेघराज को घोड़े पर लाद कर अपने अड्डे पर ले चलें, फिर जो कुछ हागा देखा जायगा।

इस तरह की बातें कुछ देर तक भूतनाथ सोचता रहा, अन्त में वह मेघराज के पास गया और गौर से उसकी सूरत देख कर आप ही आप बोला, "मगर पानी का यहां बिल्कुल ही अभाव है ! खैर अपने डेरे पर ही चल कर इनका चेहरा साफ करेंगे। अब इन्हें घोड़े पर लादना चाहिये।" इतना सोच कर भूतनाथ एक घोड़ा खोल लाया और उस पर मेघराज को लादने की फिक्र करने लगा मगर अफसोस, भूतनाथ का इरादा पूरा न हुआ। जैसे ही भूतनाथ ने मेघराज के बदन पर हाथ रक्खा वैसे ही उसके तमाम बदन में एक बिजली सी दौड़ गई। उसका तमाम शरीर कांप गया और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

भूतनाथ की यह बेहोशी बहुत देर तक कायम नहीं रही। आधी घड़ी के अन्दर ही वह होश में आ गया और उठ कर बड़े गौर और आश्चर्य से मेघराज को देखने लगा। उसने देखा कि मेघराज ने सिर से पैर तक एक अजीब किस्म का कपड़ा पहिरा हुआ है जो कि बहुत ही बारीक तार का बना हुआ है और वह सुनहरा तार इतना पतला और मुलायम है कि सूत की तरह से उसका कपड़ा बीना गया है। उस कपड़े के ऊपर से सूत का एक बारीक कपड़ा पहिरे हुये है जिसके अन्दर से उस सुनहरे तार के कपड़े की चमक छन कर बाहर निकलती और बहुत ही भली मालूम होती है। आश्चर्य के साथ भूतनाथ ने कुछ

देर तक उस कपड़े को देखा और पुनः उसे छूआ। छूने के साथ ही वह फिर बेहोश हो गया और आधी घड़ी तक बेहोश रहा।

जब भूतनाथ होश में आकर उठा तो धीरे से बोला, "अफसोस, मैं इसे किसी तरह भी अपने कब्जे में नहीं कर सकता! मेरी तमाम मेहनत ही व्यर्थ हो गई! अब मुझे भैयाराजा और इन्द्रदेव के सामने भी शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। तो क्या मैं भैयाराजा और इस मेघराज दोनों ही को इस दुनिया से उठा दूं? इन्द्रदेव को क्या मालूम हो सकता है कि मैंने इन दोनों को मार डाला!!"

इतने ही में भूतनाथ ने सामने से अपने उस दुश्मन को आते हुए देखा जिससे लड़ कर और भाग कर वह यहां तक चला आया था।

चौदहवां बयान

अब हम अपने पाठकों को एक कैदखाने के अन्दर ले चल कर थोड़ी देर के लिये वहां का दृश्य दिखलाना चाहते हैं। इस कैदखाने में इस समय केवल जैपालसिंह ही कैद है जिसे इस बात का कुछ भी खबर नहीं है कि यह कैदखाना किस शहर में है, इसका मालिक कौन है, तथा उसे किसने गिरफ्तार करके कैद कर रक्खा है।

उसके हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी पड़ी हुई है। कपड़े बिल्कुल ही मामूली दर्जे के हैं। एक कम्बल बिछावन के लिये तथा दूसरा ओढ़ने के लिये उसे दिया गया है। उससे सिर्फ चार पांच हाथ की दूरी पर पानी से भरा हुआ एक मट्टी का घड़ा तथा पीतल का एक गिलास दिखाई दे रहा है। बस इसके अतिरिक्त उस कैदखाने में कुछ भी नहीं है। हां एक तरफ चिराग जरूर जल जल रहा है जिसकी रोशनी इस कैदखाने के अन्धकार को दूर कर रही है।

कैदखाने की कोठड़ी लगभग पाँच हाथ चौड़ी और आठ या नौ हाथ लम्बी होगी। तीन तरफ संगीन दीवार और चौथी तरफ लोहे का जंगला है और उसी जंगले में आने जाने के लिये छोटा सा एक दर्वाजा भी बना हुआ है।

जंगले के आगे एक मुख्तसर सा दालान, मोरी और दोनों तरफ दो कोठड़ियाँ हैं तथा कोने में ऊपर चढ़ जाने के लिये छोटी छोटी सीढ़ियाँ भी दिखाई

दे रही हैं जिससे मालूम होता है कि यह कैदखाना किसी मकान के निचले हिस्से में बना हुआ है।

जैपालसिंह कदाचित् इस बात को जानता है कि यह समय रात का है और कुछ ही देर बाद उसकी दुर्दशा होने वाली है। वह सर झुकाये हुए किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न है मगर थोड़ी थोड़ी देर में उन सीढ़ियों की तरफ देख लेता है जो बाहर दालान में ऊपर चढ़ जाने के लिये बनी हुई हैं।

कैदखाने के ऊपर वाली छत पर कुछ धमधमाहट की आवाज हुई और जैपाल ने पुनः सर उठा कर सीढ़ियों की तरफ देखा। एक औरत हाथ में कोड़ा लिये हुए नीचे उतरती दिखलाई पड़ी, उसके बाद दूसरी और फिर तीसरी औरत भी नीचे उतरी जिनके हाथों में नंगी तलवारें थीं। इन्हें देख कर एक दफे जैपाल थर्रा उठा और उसके चेहरे पर मुर्दनी सी छा गई। हम नहीं कह सकते कि उन औरतों को वह पहिचानता था या नहीं।

उन औरतों के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और उनका तमाम बदन स्याह लबादे से ढका हुआ था। तीनों औरतें दरवाजा खोल कर कैदखाने के अन्दर गईं। जिस औरत के हाथ में कोड़ा था वह आगे बढ़ा और जैपाल के पास खड़ी होकर बोली, "कहिये आपने अपने सोच विचार का क्या नतीजा निकाला? मेरी बातों का ठीक ठीक जवाब देंगे या नहीं?"

जै०। हाँ, जो कुछ मैं जानता हूँ वह जरूर कह दूंगा, मगर जिन बातों का मुझे गुमान भी नहीं है उनके विषय में मैं क्या कह सकता हूँ!

औरत०। मैं खूब जानती हूँ कि तुम्हें क्या क्या भेद मालूम हैं, इसलिये मैं वही बात पूछूंगी जिसका जवाब तुम दे सकते हो। यह बात हम लोगों से छिपी हुई नहीं है कि तुम दारोगा के कैसे दोस्त हो, दारोगा तुम्हें कितना मानता है, और अपने पापकर्म तथा भेदों में तुम्हें कहाँ तक साथी बनाता है।

जै०। दुनिया में गप्पें बहुत उड़ा करती हैं मगर उनमें सार कुछ भी नहीं होता या बहुत ही कम होता है। दारोगा साहब का दोस्त बनने के लिये जितनी हैसियत ताकत होशियारी बुद्धिमानी और ऐयारी की जरूरत है उसका सौवाँ हिस्सा भी मुझमें नहीं है, ऐसी अवस्था में वे क्योंकर मुझे अपना सच्चा हितैषी या दोस्त मान सकते हैं? मगर हाँ गप्प उड़ाने वालों की जुबान रोकी नहीं

जाती और न उसमें से असल तत्व को छाँट कर कोई अपनी दिलजमयी कर सकता है।

औरत०। बुरे और दुष्ट तथा दुराचारी लोगों के दोस्त बनने में पाण्डित्य की कोई आवश्यकता नहीं है, कोई विद्वान् बुद्धिमान होशियार और सच्चा ऐयार दारोगा जैसे पतित और दुष्ट प्रकृति के आदमी का दोस्त नहीं बन सकता। जो तुम्हारे ऐसे अदूरदर्शी और नालायक हैं वे ही उसके साथी बन सकते हैं। इसी तरह गप्पें भी बेबुनियाद नहीं हुआ करतीं, बिना एकवचन के बहुवचन का होना असम्भव है। किसी विद्वान् का कथन है कि 'जब तक कोई एक चीज नहीं होती तब तक लोग उसे बहुत चीजें कह कर मशहूर नहीं कर सकते।' अस्तु तेरी ही कही बातों की पुष्टि करके मैं कहती हूँ कि तुझमें किसी तरह की हैसियत ताकत होशियारी और बुद्धिमानी नहीं और न तू सच्चा ऐयार ही है, इसी लिये दारोगा से पटती है और वह तुझे उल्लू समझ कर अपने पाप का साथी और भागी बनाये हुए है और वास्तव में तू उसी के योग्य है भी। इसके अतिरिक्त जिस बात को हम लोग जानते हैं उसके छिपाने की कोशिश करना भी तेरा व्यर्थ है।

जै०। (कुछ सोच कर) मैं भी आप लोगों से बहस करना नहीं चाहता, जो कुछ मैं जानता हूँ उसे सच सच कह दूँगा क्योंकि आपके हाथ का कोड़ा मुझे किसी तरह पर भी बहाना नहीं करने देगा इसे मैं खूब समझता हूँ, मगर आप लोग भी व्यर्थ अन्याय करके मुझे दुःख न देंगी इसका भरोसा है।

औरत०। अच्छा पहिले यह बता कि दयारामजी कितने दिनों तक दारोगा के कैदखाने में रहे और इन दिनों वे कहाँ हैं?

जैपाल०। इन दिनों वे कहाँ हैं सो तो मैं नहीं जानता मगर यह कह सकता हूँ कि दारोगा के कैदखाने में वे चार पाँच वर्ष से ज्यादे ही दिनों तक रहे। अभी हाल ही में उनका कोई दोस्त उन्हें छुड़ा ले गया।

औरत०। बेशक यह बात तूने सच कही, अच्छा यह तो बता कि आज कल उसके कैदखाने में कौन कौन हैं?

जैपाल०। मेरी जानकारी में तो इन दिनों उनके यहाँ कोई भी कैद नहीं है।

औरत०। (बिगड़ कर) कैद है और जरूर है! तू इस बात को खूब

जानता है और कैदियों को अच्छी तरह पहिचानता भी है !

जैपाल० । नहीं नहीं, मैं सच कहता हूँ कि और किसी कैदी के विषयमें कुछ भी नहीं जानता, हाँ भैयाराजा की स्त्री जरूर उनके कब्जे में है ।

औरत० । उसे उसने कहां पर रक्खा है ?

जैपाल० । सो मैं नहीं जानता ।

औरत० । (सिर हिला कर) बेशक सो तू नहीं जानता, क्योंकि कल की मार तुझे याद नहीं है ! खैर कोई चिन्ता नहीं, मेरे हाथ का यह कोड़ा पता लगा लेगा कि कम्बख्त दारोगा ने उसे कहां पर कैद कर रक्खा है, मगर पहिले तुझे यह बताना पड़ेगा कि और कितने आदमियों को दारोगा ने कैद कर रक्खा है और वे सब इस समय कहां हैं ? इस विषय में बहाना करना तेरे हक में अच्छा नहीं है । कैदियों का हाल ठीक ठीक बता देने ही से मैं तुझे छोड़ दूँगी, नहीं तो समझ रख कि इसी कैदखाने में तेरी जिन्दगी समाप्त हो जायगी और इस कोड़े से हर रोज तेरी खातिरदारी की जायगी !

जैपाल० । (कुछ देर तक सोच कर) मैं नहीं कह सकता कि मेरी बातों पर किस तरह आपको विश्वास होगा, तथापि जो कुछ मैं जानता हूँ वह साफ साफ कहे देता हूँ । दारोगा साहब के यहां अब भी चार पांच कैदी हैं परन्तु सिवाय भैयाराजा की स्त्री के और किसी को भी मैं नहीं पहिचानता । पहिले तो वे कैदी उनके घर ही में किसी तहखाने के अन्दर कैद थे परन्तु जब से दया-राम को कोई छुड़ा कर ले गया है तब से अपने मकान में वे किसी कैदी को भी नहीं रखते । महाराज से उन्होंने अजायब घर की ताली ले ली है और सब कैदियों को उसी अजायब घर में पहुँचा दिया है ।

औरत० । मैंने भी ऐसा ही सुना है परन्तु तेरी इस बात को मैं आजमा-ऊंगी, अगर तू सच्चा निकला तो जरूर तुझे छोड़ दूँगी ।

जैपाल० । क्या उस अजायबघर को तुम जानती हो ?

औरत० । मैं खूब जानती हूँ ।

जैपा० । मगर उसके अन्दर तुम्हारा जाना बिल्कुल ही असम्भव है ।

औरत० । कदाचित ऐसा ही हो परन्तु तुझे इससे कोई मतलब नहीं, तेरा कहना सच साबित होने ही से मैं तुझे छोड़ दूँगी ।

जैपाल० । जब कि वहां तक तुम पहुँच ही नहीं सकती हो बल्कि और भी किसी का पहुँचना असम्भव है तब मेरी बातों की सचाई का हाल तुम्हें जल्द कैसे मालूम हो सकता है ? ऐसी अवस्था में सच कह देने पर भी व्यर्थ में मैं कैद की मुसीबत झेलता रहूँगा !

औरत० । नहीं ऐसा न होगा, मैं बहुत जल्द वहां पहुँचने का बन्दोबस्त कर लूंगी और तुझे ज्यादे दिनों तक यहां सड़ना न पड़ेगा ।

जै० । अगर मुझे अपने साथ ले चलो तो मैं इस काम में तुम्हारी मदद भी कर सकूंगा ।

औरत० । (हंस कर) तेरी मदद की मुझे कोई जरूरत तो नहीं, तथापि मैं सोच कर कल इस बात का जवाब तुझको दूंगी ।

इतना कह कर वह औरत वहां से हट गई । कैदखाने का दर्वाजा बन्द कर दिया गया और तीनों औरतें जिस राह से आई थीं ऊपर चली गईं । ये तीनों औरतें जमना सरस्वती और इन्दुमति थीं जो कि आज कल इन्द्रदेव के कैलाश-भवन में दिखाई दे रही हैं और जैपाल भी कैलाशभवन ही के एक कैदखाने में बन्द है जिसे दयाराम भैयाराजा और प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ के कब्जे से निकाल कर यहां भेज दिया था तथा जिसका कुछ हाल ऊपर बयान हो चुका है और होगा ।

उस समय दो ढाई घण्टे रात जा चुकी थी, कैदखाने से निकल कर वे तीनों औरतें इन्द्रदेव के पास पहुँचीं जो कि इस समय पूजा वाले कमरे में संगमर्मर की एक चौकी पर बैठे श्री भगवद्गीता का पाठ करते हुए उसके गूढ़ अर्थों की गुत्थियों को सुलझाने का उद्योग कर रहे थे ।

जमना सरस्वती और इन्दुमति उनके पास जा कर चौकी के नीचे दाहिनी तरफ बैठ गईं । इन्द्रदेव ने मुस्कुराते हुए उनकी तरफ देखा और कहा, "कहो तुम तीनों जैपाल से मिल आईं ?

जमना० । जी हां, वह तो बड़ा ही डरपोक है, उसमें इतनी हिम्मत कहां कि अपने मित्रों के भेदों को छिपाने के लिए जान समर्पण करे या कष्ट उठावे ।

इन्द्र० । दुनिया में जितने लोभी लालची और खुदगरज आदमी हैं उन सभों का यही हाल है । अच्छा कुछ हाल उसकी जुबानी मालूम हुआ ?

जमना० । जी हां, यह भी उसी बात की पुष्टि करता है, अर्थात् कहता है कि 'दारोगा ने अपने सब कैदियों को अजायबघर में ले जा कर बन्द कर दिया है।'

इन्द्र० । वास्तव में यही बात ठीक भी है। जिस दिन मुझे यह खबर लगी कि दारोगा ने अजायबघर की ताली राजा साहब से ले ली है उसी दिन मैं समझ गया कि अब वह अपने कैदियों को वहा ही ले जा कर रक्खेगा अस्तु कोई चिन्ता नहीं, दयाराम प्रभाकरसिंह और भैयाराजा जिस उत्साह के साथ गये हैं आशा है कि अपने काम में अवश्य सफल मनोरथ होंगे। यद्यपि वे तीनों बहुत कुछ कर गुजरने के योग्य हैं तथापि मुझे सन्तोष नहीं हुआ, आज सबेरे ही अपने दो योग्य शिष्यों को भी उनकी मदद के लिये मैंने भेज दिया है।

जमना० । तो क्या मेरा मनोरथ सिद्ध न होगा ।

इन्द्र० । तुम तो व्यर्थ ही इस लामले में पड़ा चाहती हो। बहुत दिनों तक दुःख भोगने के बाद ईश्वर ने तुम्हारे लिये अपूर्व सुख का सामान कर दिया है तो अब तुम पुनः दुःख भोगने का बन्दोबस्त करती हो ! भला दारोगा और गदाधरसिंह का मुकाबला करना और उस अजायबघर के अन्दर जाना तुम औरतों का काम है ? मैंने तुम दोनों के वास्ते गदाधरसिंह का मुकाबला करने के लिये कितना बड़ा सामान पैदा कर दिया था और उस समय भूतनाथ का इस बात का गुमान भी नहीं था कि तुम इस दुनिया में हो तब तो तुम लोगों के किए कुछ हुआ ही नहीं ! आज गदाधरसिंह हर तरह से होशियार और जानकार हो रहा है तथा दारोगा भी उसका साथ दे रहा है तब तुम भला इस समय क्या कर सकती हो ? मैं तुम्हारे इस इरादे को कदापि पसन्द नहीं करता ।

जमना० । (हाथ जोड़ कर) आपका कहना बहुत ठीक है, मैं उसी शर्मिन्दगी को मिटाने के लिए इस समय आपसे प्रार्थना कर रही हूँ और दारोगा तथा गदाधरसिंह ने जो कुछ मुझे दुःख दिया है उसका बदला अपने हाथ से लिया चाहती हूँ। अगर मैं ऐसा न कर सकी तो सब तरह का सुख पाने पर भी जिन्दगी भर मेरे दिल में यह दाग बना ही रहेगा। उस समय यदि हम लोगों से भूल हो गई तो क्या सदैव ही भूल हुआ करेगी ? इसके अतिरिक्त जमाने का दुःख सुख भोग कर पहिले की बनिस्बत आज हम लोग होशियार हो रहे हैं तथा हर तरह का तजुर्बा भी हो गया है और सबसे बढ़ कर यह कि आपका भरोसा

हम लोगों के साथ है।

इन्द्र०। बेशक पहिले की अपेक्षा आज तुम लोगों की शक्ति बढ़ी हुई है मगर गदाधरसिंह भी पहिले की अपेक्षा आज चैतन्य है और दारोगा ऐसे दुष्ट को अपना साथी बनाये हुए है, क्या दारोगा की होशियारी मक्कारी और चालाकी गदाधरसिंह से कम है?

जमना०। यह सब कुछ सच है परन्तु यदि मेरे दिल की अभिलाषा पूरी न हुई तो इस दुनिया में मेरी जिन्दगी व्यर्थ है, तब तो मुझमें और एक निःसहाय कंगाल अबला में कुछ भी भेद न रहा।

जमना और सरस्वती की आखों से आंसुओं की धारा बह चली।

इन्द्र०। उन दोनों ने जो कुछ तकलीफें तुम्हें दी हैं उसका बदला यदि तुम्हारे पति अपने हाथ से लेंगे तो क्या इससे तुम दोनों की संतुष्टि न होगी?

जमना०। नहीं, कुछ भी नहीं, इसके अतिरिक्त उनका भी दिल और दिमाग कुछ आप ही सा है, वे गदाधरसिंह को कभी भी दुःख न देंगे।

इन्द्र०। मैं तो अजब संकट में पड़ रहा हूँ, सभी जिद्दियों से वास्ता पड़ा है!

जमना०। नहीं नहीं, यदि आपको संकट है तो मैं जिद्द न करूंगी और अब इस विषय में कुछ भी न कहूँगी।

इसके बाद कई सायत तक सन्नाटा रहा और तब पुनः इन्द्रदेव ने कहा:—

इन्द्र०। अच्छा, तुम दोनों जाओ और अपना हौसला निकालो परन्तु और हर तरह का बन्दोबस्त करने के अतिरिक्त मैं अपना एक आदमी तुम्हारे साथ दूँगा।

जमना०। (प्रसन्नता के साथ) कौन मेरे साथ रहेगा?

इन्द्र०। उसे तुम नहीं पहिचानती और न पहिचान सकोगी।

जमना०। तो फिर किस तरह उस पर हम लोगों को विश्वास होगा?

इन्द्र०। जिस आदमी को मैं तुम दोनों के साथ करूंगा उस पर अविश्वास करने की कोई जरूरत नहीं। मैं स्वयम् उस आदमी को तुम्हारे सुपुर्द कर देता परन्तु इस समय वह यहां है नहीं और मैं घंटे दो घंटे में किसी काम के लिये बाहर जाने वाला हूँ, अस्तु मैं उसके घर पर से होता हुआ जाऊंगा और सब बातें उसे समझा दूँगा। प्रातः काल जब घंटा भर रात रहते ही तुम दोनों यहां

से बाहर निकलोगी तो दर्वाजे ही पर वह आदमी तुम्हें मिलेगा। 'दत्त' के नाम से वह तुमको अपना परिचय देगा और दो अदद तिलिस्मी खञ्जर भी तुम दोनों को देगा जिसका गुण वह स्वयं तुम्हें बतावेगा। बस उस आदमी को अपने साथ ले लेना और उसकी राय के खिलाफ कभी कोई काम मत करना।

जमना०। (प्रसन्नता से हाथ जोड़ कर) बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा!

कुछ देर तक और उन लोगों में बातें होती रहीं, इसके बाद इन्द्रदेव की आज्ञानुसार वे सब उठ कर अपने ठिकाने चली गईं और सफर का इन्तजाम करने लगीं।

पन्द्रहवाँ बयान

नहीं कह सकते कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती को इतने बड़े कठिन और साहस का काम करने के लिये इजाजत क्यों दे दी। जब तक दयाराम मरे हुए समझे जाते थे और जमना तथा सरस्वती बिल्कुल इन्द्रदेव के आधीन थीं तब तक तो जो कुछ इन्द्रदेव ने मुनासिब समझा किया और कर सकते थे परन्तु ऐसी अवस्था में जब कि दयाराम प्रगट हो गये और वे दोनों अपने पति के पास पहुँचा दी गईं तब उन पर सिवाय दयाराम के और किसी का अधिकार न रह गया, अस्तु न तो जमना और सरस्वती ही को दयाराम की आज्ञा के बिना घर से बाहर निकलना और ऐसे काम में हाथ डालना उचित था और न इन्द्रदेव ही का ऐसी आज्ञा देने और उनका उत्साह बढ़ाने की जरूरत थी। सम्भव है कि इन्द्रदेव ने किसी तरह का फायदा समझ लिया हो परन्तु.....

सुबह की सुफेदी आसमान पर कुछ कुछ फैल चुकी थी जब कि जमना और सरस्वती अपने सामान से हर तरह से दुरुस्त हो मरदाने भेष में तिलिस्मी झिल्ली चेहरे पर लगाये हुए घर से बाहर निकलीं। मकान के सदर फाटक पर दो कसे कसाये घोड़े लिये साईस तैयार था, तथा और भी एक आदमी घोड़े पर सवार इन दोनों के आने का इन्तजार कर रहा था। जमना और सरस्वती दोनों घोड़ों पर सवार हो गईं और मैदान की तरफ चल निकलीं, वह आदमी भी पूछने पर 'दत्त' के नाम का परिचय दे कर उन दोनों के साथ हो गया। दो तीन जगह ठहर कर दिन भर बल्कि आधी रात तक सफर करने के बाद ये तीनों आदमी

उस जंगल में जा पहुँचे जिसमें कि अजायबघर की इमारत थी।

इस अजायबघर का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में पूरा पूरा लिखा जा चुका है, आशा है उसे हमारे पाठक भूले न होंगे इसलिये यहां दोहरा कर उसके लिखने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती।

जब ये तीनों उस अजायबघर के पास पहुँचे तो कुछ दूर पहिले ही घोड़ों पर से नीचे उतर पड़े और घोड़ों को पेड़ों के साथ बांध कर पैदल ही अजायबघर की तरफ चल पड़े। जब उस चश्मे के पास पहुँचे जो अजायबघर के नीचे से होकर बहता था तब इन तीनों को अजायबघर के बंगले से बाहर निकलती हुई एक रोशनी दिखाई दी। यह लोग अटक कर बड़े गौर से उस रोशनी की तरफ देखने लगे। यद्यपि ये लोग पास पहुँच चुके थे मगर पेड़ों के ऐसे झुरमुट में खड़े थे कि इस अंधेरी रात के समय किसी के देख लेने का इन लोगों का बिल्कुल ही डर न था, अस्तु बड़ी बेफिक्री के साथ ये लोग उस रोशनी की तरफ देखने लगे। कुछ ही क्षण में भूतनाथ पर इन लोगों की निगाह पड़ी जो कि अपने हाथ में रोशनी लिये हुए अजायबघर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था, उसके पीछे पीछे चलते हुए जमानिया के दारोगा साहब भी दिखाई पड़े। ये दोनों अभी सीढ़ियों के नीचे नहीं उतरे थे कि तीन लाशों को लिये हुए और भी छः आदमी मकान के अन्दर से निकल कर इनके पीछे पीछे आते दिखाई पड़े।

इन सभों को देखकर जमना सरस्वती और दत्त तीनों घबड़ा उठे और उनके दिल में तरह तरह के सोच विचार पैदा और नष्ट होने लगे। जमना ने दत्त की तरफ घूम कर कहा :—

जमना०। क्या यह सम्भव है कि यह सब उन्हीं लोगों को निकाल कर लिये जाते हों जिनको छुड़ाने के लिये हम लोग यहां आये हैं?

दत्त०। मुझे तो यही विश्वास होता है, क्योंकि जैपालसिंह का गिरफ्तार हो कर तुम लोगों के कब्जे में पहुँचना ही इस बात की पुष्टि करता है। भैयाराजा प्रभाकरसिंह और दयाराम ने भूतनाथ के कब्जे से जैपालसिंह को छुड़ा कर इन्द्रदेव के यहां भेज दिया और भूतनाथ को छोड़ दिया तो ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ ने दारोगा से मिल कर यह सब हाल नमक मिर्च लगा कर बयान किया हो और दारोगा यह खयाल करके कि शायद जैपालसिंह की जुबानी किसी तरह

वे लोग हमारे कैदियों का पता लगा लें और हमारे कैदियों को छुड़ा कर ले जाय, अपने कैदियों को दूसरी जगह रखने के लिये यहां से निकाल कर लिये जाता हो।

जमना०। बेशक यही बात है, वह देखो बंगले के अन्दर से एक आदमी और निकला, इसके हाथ में नंगी तलवार भी है।

दत्त०। यह आदमी बहादुर मालूम पड़ता है और जान पड़ता है कि यही सभों का निगहबान है।

जमना०। ऐसी हालत में जिस तरह बन पड़े इन लोगों को रोकना और कैदियों को इनके कब्जे से छुड़ाना चाहिये नहीं तो हम लोगों की मेहनत बिल्कुल बरबाद जायगी और पुनः कैदियों का पता लगाना बहुत मुश्किल हो जायगा।

दत्त०। यह तो ठीक है मगर इतने आदमियों के कब्जे से इन कैदियों को छुड़ा लेना मुझ अकेले के लिये बहुत ही कठिन है। भूतनाथ साधारण ऐयार नहीं है, दारोगा भी लड़े बिना रह नहीं सकता, और उनके पीछे पीछे जो आदमी चला जा रहा है यह भी मुझे उन दोनों से बढ़ कर ताकतवर और बहादुर जान पड़ता है। इसके अतिरिक्त जो लोग तीनों कैदियों को उठा कर लिये जा रहे हैं वे भी मुकाबला करने से बाज न आवेंगे।

जमना०। आप अकेले क्यों हैं? हम दोनों भी तो आपका साथ दे सकती हैं! यद्यपि हम दोनों औरत हैं मगर जो तिलिस्मी खंजर इन्द्रदेवजी ने हमलोगों को दे रक्खा है उसका मुकाबला करना इन सभों के लिये कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

दत्त०। हां ठीक है, मुझे भी इन्द्रदेवजी ने एक ऐसे ही गुण की तिलिस्मी तलवार दी है जिसके भरोसे पर मैं अकेला ही इन सभों का मुकाबला कर सकता हूं यदि इन लोगों के पास कोई उसके मुकाबले का हरबा न हो तो।

जमना०। इन लोगों के पास भला इनके मुकाबले का हरबा कहां से आवेगा?

दत्त०। नहीं की हालत में कोई बात ही नहीं है, हमलोग जरूर फतह पावेंगे, परन्तु यदि कोई हरबा उसके जोड़ का इन लोगो के पास हुआ तो बड़ी ही मुश्किल होगी, हमलोग बिना गिरफ्तार हुए बाकी न रहेंगे। (कुछ रुक कर) अच्छा

देखो मैं इनका मुकाबला करता हूँ, जरा इन लोगों को और आगे बढ़ लेने दो। तुम दोनों मेरी मदद के लिये तैयार रहना मगर दूर रहना, अगर देखना कि ये ऐसे ही तिलिस्मी हरबे से मेरा मुकाबला करने के लिये तैयार हो गये हैं तो तुम दोनों जरूर यहां से भाग जाना, मेरे लिये किसी तरह की चिन्ता न करना।

जमना०। भला मैं आपको ऐसे संकट में अकेले छोड़ कर.....

दत्त०। नहीं नहीं, मैं जो कहता हूँ कि तुम दोनों किसी बात का बिचार न करके एक दम यहां से भाग जाना मैं अपने को किसी न किसी तरह बचा ही लूंगा।

जमना०। खैर, जैसा आप कहते हैं मैं वैसा ही करूंगी।

भूतनाथ और दारोगा वगैरह कैदियों को लिये हुए लगभग दो ढाई सौ कदम के आगे न बढ़े होंगे कि दत्त तेजी के साथ आगे बढ़ा और भूतनाथ का रास्ता रोक सामने खड़ा हो कर बोला, "बस खबरदार, कदम रोक लो, बिना मेरी बातों का जवाब दिये आगे मत बढ़ना नहीं तो अपनी जान से हाथ धो बैठोगे।"

भूत०। (रुक कर और मशाल की रोशनी में अच्छी तरह दत्त का चेहरा देख कर) तुम कौन हो जो इस तरह से आकर मेरा रास्ता रोकते हो? तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ और मेरे पास इस समय कितने आदमी हैं।

दत्त०। मैं तुम्हें खूब जानता हूँ और तुम्हारे साथियों का भी देख रहा हूँ।

भूत०। तो क्या तुम हम लोगों का मुकाबला करने के लिये तैयार हो?

दत्त०। बेशक! अगर तुम मेरी बातों का साफ साफ जवाब न दोगे तो मैं अकेला तुम सभों से मुकाबला करूंगा।

भूत०। तुम क्या पूछा चाहते हो?

दत्त०। मैं सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ कि तुम लोग किस किस को उठा कर कहां लिये जा रहे हो।

भूत०। इसका जवाब तुम कदापि नहीं पा सकते।

दत्त०। तो मैं तुम लोगों को जीता छोड़ भी नहीं सकता।

यह कह कर दत्त ने म्यान से तलवार निकाल ली और मुकाबला करने के लिये भूतनाथ को ललकारा। भूतनाथ ने घूम कर दारोगा की तरफ देख कुछ इशारा किया और तब पीछे की तरफ हट मशाल ऊंची करके अपनी खास बोली में कुछ कहा। दारोगा ने म्यान से तलवार निकाल ली और दत्त के मुकाबले में जा

खड़ा हुआ। भूतनाथ की आवाज सुन कर वह आदमी भी आगे बढ़ आया जो सब के पीछे पीछे आ रहा था, इसके अतिरिक्त वे लोग भी जो तीनों लाशों को उठाये हुए थे अपना बोझ जमीन पर रख कर आगे बढ़ आये और दत्त को पकड़ने के लिये तैयार हो गये। दारोगा ने दत्त पर तलवार का वार किया मगर उसका कोई नतीजा न निकला। दत्त ने हंस कर दारोगा से कहा, "दारोगा साहब! क्या आप भी अपना नाम बहादुरों में लिखाया चाहते हैं!!"

दारोगा०। क्या मैं मर्द नहीं हूँ?

दत्त०। आज तक तो कोई काम मर्दानेपन का आपने नहीं किया!

दारोगा०। खैर बहस की कोई जरूरत नहीं, तुम जो कुछ किया चाहते हो करो और समझ रक्खो कि (हाथ के इशारे से बता कर) इतने आदमियों का तुम कदापि मुकाबला नहीं कर सकते।

इतना कह कर दारोगा ने पुनः दत्त पर तलवार का वार किया और दत्त ने भी उसका जवाब तलवार ही से दिया। दत्त समझता था कि वे लोग सब बेईमान हैं, जरूर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे मगर ऐसा न हुआ, सब अलग खड़े तमाशा देखने लगे और दत्त तथा दारोगा साहब में लड़ाई होने लगी।

दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ जब दारोगा साहब ने बड़ी मर्दानगी और दिलावरी के साथ उसका मुकाबला किया क्योंकि दत्त यही जानता था कि दारोगा साहब अपने घर के अन्दर ही के बहादुर हैं किसी वीर के साथ वीरता प्रगट नहीं कर सकते।

लगभग आधे घण्टे के लड़ाई होती रही मगर दारोगा साहब को दत्त किसी तरह से नीचा दिखा न सका, लाचार होकर दत्त ने कमर से तिलिस्मी तलवार निकाली और उससे दारोगा पर वार किया जिससे दारोगा के बदन पर एक छोटा सा जख्म तो लगा मगर वह बेहोश नहीं हुआ।

यह तिलिस्मी तलवार वैसी ही थी जैसी कि प्रभाकरसिंह के पास थी और जो कुछ दिनों के लिये भूतनाथ के पास भी चली गई थी। इस समय दारोगा के पास भी वैसी ही तलवार और उसके जोड़ की अंगूठी मौजूद थी और यही सबब था कि दारोगा साहब जख्म खा कर भी बेहोश नहीं हुए मगर यह जान

गये कि वह तलवार तिलिस्मी है और दत्त को भी विश्वास हो गया कि इसके पास कोई तिलिस्मी हर्बा जरूर है।

मजबूर होकर दत्त ने यह तलवार भी म्यान के अन्दर रख ली और मुकाबला करने के लिये तिलिस्मी खञ्जर कमर से निकाला।

यह खञ्जर वैसा ही था जैसा कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को कमलिनी ने दिया था और जिसका खुलासा बयान चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है अर्थात् जिसका कब्जा दबाने से बिजली की तरह रोशनी पैदा होती थी और दुश्मनों की आंखें झिप जाती थीं अथवा बदन के साथ लगाने ही से आदमी बेहोश हो सकता था।

दत्त ने खञ्जर का कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह रोशनी पैदा हुई जिससे दारोगा और भूतनाथ वगैरह सभों ही की आंखें बन्द हो गईं मगर उस आदमी पर जो इन सभों के पीछे पीछे आया था और अब आगे बढ़ कर दत्त के पास पहुँच चुका था इस रोशनी का कुछ असर न हुआ। थोड़ी देर के लिये हम इस आदमी का नाम भीम रखते हैं क्योंकि इस जगह पर कह नहीं सकते कि वास्तव में उसका क्या नाम था।

दत्त के खञ्जर की अवस्था देख कर भीम आगे बढ़ आया और दत्त के मुकाबले में खड़ा होकर बोला, "तुम्हारे इस खञ्जर का जवाब मैं दूँगा और साबित कर दूँगा कि तुम इससे भी हम लोगों पर फतह नहीं पा सकते। क्यों व्यर्थ अपनी जान के दुश्मन बनते हो और हमारा हर्ज कर रहे हो!"

भीम ने वैसा ही तिलिस्मी खञ्जर कमर से निकाला और दत्त का मुकाबला किया अर्थात् दत्त और भीम में तिलिस्मी खञ्जर से लड़ाई होने लगी। खञ्जरबाजी में दोनों ही निपुण और होशियार मालूम पड़ते थे। लगभग आध घण्टे के दोनों में लड़ाई होती रही मगर दोनों में से कोई भी एक दूसरे पर फतह न पा सका। भीम अथवा दारोगा के साथियों में से कोई भी इस बहादुराना और लड़ाई का लुत्फ देख न सका क्योंकि खञ्जरों की चमक से उन सभों की अर्थात् दारोगा तक की आंखें बन्द हो जाती थीं। हां जमना और सरस्वती जरूर उन दोनों की लड़ाई ताज्जुब के साथ देख रही थीं जो कि उन सभों से थोड़ी ही दूर झुरमुट में छिपी हुई खड़ी थीं।

जब खञ्जरों की लड़ाई का कुछ भ नतीजा न निकला तब दत्त और भीम दोनों एक दूसरे का मुकाबला छोड़ कर खड़े हो गये और खञ्जरों की चमक में एक दूसरे का मुंह देखने लगे। भीम ने धीरे से दत्त से कहा, "मालूम होता है कि बादलों में अब बरसने की ताकत नहीं रही।"

दत्त०। बेशक ऐसा ही है क्योंकि हवा पानी और धूएं का सच्चा जमावड़ा नहीं हो सका।

दत्त का जवाब सुनते ही भीम उसके पैरों पर गिर पड़ा और दत्त ने उसे उठा कर छाती से लगा लिया। इसके बाद वे दोनों आदमी वहां से कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और आपुस में धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे। उस मामले को सभों ही ने आश्चर्य और खेद के साथ देखा तथा जमना और सरस्वती को उन दोनों का ऐसा करना बहुत ही बुरा मालूम हुआ। केवल इतना ही नहीं, बल्कि उन दोनों को दत्त पर एक तरह का शक पैदा हो गया।

सरस्वती ने जमना से कहा, "यद्यपि हम लोगों ने उन दोनों की बातें नहीं सुनीं मगर उनके ढंग से मालूम होता है कि दत्त ने अपने को कमजोर पाकर गिरफ्तार हो जाने के डर से दुश्मन को दोस्त बना लिया।

जमना०। मेरा भी यही खयाल है, और अगर यह बात सच है तो हम दोनों के लिये भी खैरियत नहीं है।

सरस्वती०। बेहतर तो यही होगा कि हम दोनों यहां से हट जाय और किसी दूसरी जगह छिप कर तमाशा देखें, जिसमें दत्त हमारे दुश्मनों को लेकर अगर यहां आवे तो यकायक हम दोनों को पा न सके।

जमना०। हाँ, ऐसा ही करो।

इतना ही कह कर वे दोनों वहां से हट गईं और बहुत धीरे धीरे कदम उठाती हुई दूसरी तरफ चलीं।

जब दत्त और भीम की बातें समाप्त हो गईं तब वे दोनों पुनः उसी जगह पहुँचे जहां भीम के साथी लोग खड़े थे। भीम ने भूतनाथ और दारोगा का हाथ पकड़ कर कहा, "आओ आओ जरा जमना और सरस्वती से मुलाकात करो। वे दोनों भी तुम लोगों को गिरफ्तार करने के लिये इसी जगह आई हुई हैं।"

दत्त भीम दारोगा और भूतनाथ उधर रवाना हुए जहां जमना और सरस्वती को दत्त छोड़ गया था, मगर ठिकाने पहुँच कर जब जमना और सरस्वती को नहीं पाया तब दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह खञ्जर की अद्भुत रोशनी में घूम घूम कर जमना और सरस्वती को ढूंढने लगा। उसी समय बहुत से आदमी हाथ में नंगी तलवारें लिये हुए वहां आ पहुँचे जिन्होंने उस सारी जमीन को घेर लिया जहां दत्त भीम दारोगा भूतनाथ और उसके साथी लोग थे तथा एक जगह मौका देख कर जमना और सरस्वती भी छिपी हुई थीं।

सोलहवां बयान

भूतनाथ अपने दुश्मन को सामने से आते हुए देख कर एक दफे तो घबड़ा उठा मगर तुरत ही उसकी हिम्मत और दिलेरी ने उसकी पीठ ठोंकी और वह बड़ी दिलावरी के साथ मुस्कुराता हुआ दुश्मन के पास आ जाने का इन्तजार करने लगा।

थोड़ी ही देर में उसका दुश्मन उसके सामने आकर खड़ा हो गया और आश्चर्य तथा जांच की निगाह से भूतनाथ भैयाराजा और मेघराज की तरफ देखने लगा।

भूतनाथ को यह निश्चय हो गया कि मेरा यह दुश्मन जरूर प्रभाकरसिंह ही है क्योंकि वह भैयाराजा का साथी है, भैयाराजा ने उसकी बहुत मदद की है और इन दोनों में इस समय बहुत गहरी मित्रता हो रही है।

वास्तव में बात भी यही थी इस समय प्रभाकरसिंह भूतनाथ के सामने पहुँच कर ताज्जुब के साथ सोच रहे थे कि क्योंकर गदाधरसिंह ने मेघराज और भैयाराजा पर कब्जा कर लिया जो कि हर हालत में भूतनाथ को दबा सकते थे। भूतनाथ ने मुस्कुरा कर प्रभाकरसिंह से कहा :—

भूत०। आप जरूर ताज्जुब करते होंगे कि इन दोनों को मैंने क्योंकर बेहोश कर दिया !!

प्रभा०। बेशक यही बात है क्योंकि इन दोनों से तुम किसी तरह भी जीत नहीं सकते थे।

भूत०। अब भी मैं यही कहूँगा कि इन दोनों को जीतने की ताकत मुझमें

नहीं है मगर अपनी चालाकी और ऐयारी का नमूना दिखा देने की इच्छा प्रबल होने ही से मैंने यह कार्रवाई की।

प्रभा०। अस्तु इन दोनों को बेहोश कर देने के बाद तुम यहां से भाग क्यों नहीं गये?

भूत०। भागने की तो मुझे कोई जरूरत नहीं थी। आप लोग चाहे मुझे जिस निगाह से देखें मगर मैं आप लोगों से अब दुश्मनी का बर्ताव नहीं रखता और मुझे विश्वास है कि आप लोग मेरे साथ कदापि बुराई नहीं करेंगे, इसी से इन दोनों को बेहोश करने के बाद भी मैं बेफिक्री के साथ यहां खड़ा आपके आने का इन्तजार कर रहा था।

प्रभा०। तुम हम लोगों को जानते पहिचानते भी हो या यों ही दोस्त मान बैठे हो?

भूत०। हां, इन मेघराज को तो मैं नहीं जान सका कि कौन हैं मगर आपको प्रभाकरसिंह और (हाथ का इशारा करके) इनको भैयाराजा समझ लेने में मैं किसी तरह की भूल नहीं करता।

प्रभा०। तुम्हारी धूर्तता और चालाकी की मैं जरूर तारीफ कर सकता हूँ मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी नीयत बहुत ही खराब है और तुम्हारा दिल साफ नहीं है।

भूत०। यही शक तो आप लोगों का नुक्सान कर रहा है नहीं तो अभी तक कितना काम हो चुका होता और भैयाराजा की स्त्री को भी दुश्मनों की कैद से छुटकारा मिल गया होता।

प्रभा०। खैर मैं तब तक तुमसे विशेष बातें न करूंगा जब तक कि ये दोनों होश में न आ जायंगे क्योंकि इन दोनों के सामने ही बातचीत करना मुनासिब होगा।

भूत०। आशा है कि बहुत जल्द ये दोनों होश में आ जायंगे।

प्रभा०। तो तुम लखलखा सुंघा कर इन दोनों की बेहोशी क्यों नहीं दूर कर देते?

भूत०। बेहतर होगा कि आप ही अपने हाथ से यह काम कीजिये।

प्रभा०। (मुस्कुरा कर) मालूम होता है कि मेघराज के बदन पर हाथ

लगा कर तुम धोखा खा चुके हो इसी से ऐसा कहते हो ! खैर कोई चिन्ता नहीं, मैं खुद इन दोनों की बेहोशी दूर करने की कोशिश करता हूँ।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने अपने ऐयारी के सामान में से निहायत उम्दा लखलखा निकाल कर भैयाराजा और मेघराज को सुंघाया जिससे बात की बात में दोनों की बेहोशी दूर हो गई और वे आश्चर्य्य के साथ अपने चारो तरफ निगाह दौड़ा कर देखने लगे।

॥ छठवां हिस्सा समाप्त ॥